



शरतचन्द्र चटर्जी (बंगला) एवं मुंशी प्रेमचन्द (हिन्दी) की कहानियों में नारी चरित्र : एक तुलनात्मक अध्ययन

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की
पी-एचडी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निर्देशक

प्रोफेसर टीबी० चक्रवर्ती

डिपार्टमेन्ट ऑफ मॉडर्न इण्डियन लैंग्वेजेज
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

शोधार्थी

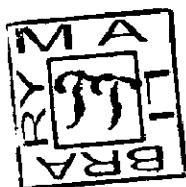
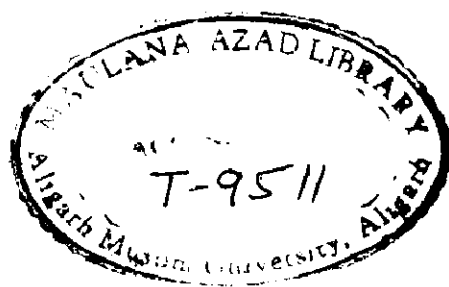
जसीम मोहम्मद

सेण्टर फॉर कम्परेटिव स्टडी ऑफ
इण्डियन लैंग्वेजेज एण्ड कल्चर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

सेण्टर फॉर कम्परेटिव स्टडी ऑफ
इण्डियन लैंग्वेजेज एण्ड कल्चर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

उ०प्र० भारत

2013



14 DEC 2015



T9511

Prof. A. R. Fatihi
Director

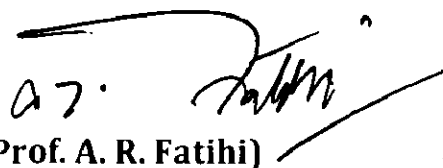


**Centre for Comparative Study of
Indian Languages & Culture
Aligarh Muslim University
Aligarh-202002, U.P. (India)
Tel: +91-571-2700920 Extn. 1725**

Certificate

This is to certify that **Mr. Jasim Mohammad** (Date of Admission 26.12.2007) research scholar in Centre for Comparative Study of Indian Languages & Culture has submitted his Ph.D. thesis. Topic: **"Female Characters of the short stories of Sharat Chandra Chatterjee (Bengali) and Munshi Premchand (Hindi) – A Comparative Study"**.

He was a regular for two years from the date of admission in the Centre for Comparative Study of Indian Languages & Culture (CCSIL&C) and has completed his Ph.D. thesis in Hindi under the supervision of Prof. (Dr.) T. B. Chakraborty, Department of Modern Indian Languages, Aligarh Muslim University, Aligarh.


(Prof. A. R. Fatihi)
Director



Centre for Comparative Study of Indian
Languages & Culture
Aligarh Muslim University
Aligarh-202002, U.P. (India)
Tel: +91-571-2700920 Extn. 1725

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled "**Female Characters of the short stories of Sharat Chandra Chatterjee (Bengali) and Munshi Premchand (Hindi) – A Comparative Study**" submitted for the award of Ph.D. Degree in Hindi to the Centre for Comparative Study of Indian Languages and Culture, Aligarh Muslim University, Aligarh has been completed by **Jasim Mohammad** under my supervision.

It is original in nature and I have permitted the candidate to submit it for the award of Ph.D. Degree. He has fulfilled all the Rules, Regulations and the Ordinances of this University.

[Prof. (Dr.) T.B. Chakraborty]

Supervisor

शरतचन्द्र चटर्जी (बंगला) एवं मुंशी प्रेमचन्द (हिन्दी) की कहानियों में नारी चरित्र : एक तुलनात्मक अध्ययन

विषयानुक्रमणिका

भूमिका	i – vi
प्रस्तावना	1–15
प्रथम अध्याय – शरतचन्द्र: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	16–56
द्वितीय अध्याय – प्रेमचन्द: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	57–89
तृतीय अध्याय – शरतचन्द्र की कहानियों में नारी चित्रण	90–133
चतुर्थ अध्याय – प्रेमचन्द की कहानियों में नारी चित्रण	134–175
पंचम अध्याय – शरतचन्द्र तथा प्रेमचन्द की कहानियों में नारी चरित्र: एक तुलनात्मक अध्ययन	176–210
षष्ठ अध्याय – उपसंहार	211–231
ग्रंथपंजि – संदर्भ, सहायक ग्रन्थ की सूची पत्र-पत्रिकायें आदि	232–240
परिशिष्ट –	

भूमिका



भूमिका

बंगला साहित्य में जब रवीन्द्र नाथ ठाकुर तथा प्रभात कुमार की कहानियों का डंका बहुत जोर शोर से बज रहा था तब अनायास ही शरतचन्द्र पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हुये। शरतचन्द्र बंगला साहित्य में अत्यन्त लोकप्रिय साहित्यकार के रूप में उभर कर सामने आये। शरतचन्द्र की रचनाएँ विभिन्न भाषाओं में अनुवाद होने के कारण वे केवल बंगला साहित्य की धरोहर ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत के लिये महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शरतचन्द्र ने बंगाली समाज की मूलभूत मान्यताओं पर ही प्रश्न चिन्ह नहीं लगाये बल्कि उनकी कथाओं के विषय निर्बल तथा निम्न वर्ग के व्यक्ति थे। शरतचन्द्र ने अपनी कथाओं के माध्यम से व्यक्ति को उसकी सारी कमियों के साथ भी सहानुभूति से देखा और उसे आत्मीयता के साथ अनुभव कर उसकी सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की।

शरतचन्द्र ने अपनी कहानियों में सभी प्रकार के चित्रण स्थापित करते हुये नारी के प्रेम एवं त्याग को भी लेखन का भाग बनाया। शरतचन्द्र का वैचारिक दृष्टिकोण कार्ल मार्क्स के कम्युनिस्ट मसविदे से भी अधिक विस्तृत एवं व्यापक है। शरतचन्द्र के लेखन में जिस सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ है वह अन्य किसी कथाकार के लेखन में आसानी से नहीं देखने को मिलता है।

शरतचन्द्र का बचपन बहुत निर्धनता और अभावों में गुजरा था। इनका जन्म 1876 में हुगली के देवानन्दपुर गाँव में हुआ था। शरतचन्द्र बचपन में बहुत शरारती बालक के रूप में प्रसिद्ध थे।

अभावों से ग्रस्त जीवन गुजरने के दौरान ही उन्होंने भागलपुर में एक साहित्यिक गोष्ठी स्थापित की और प्रसिद्ध साहित्यकार उसमें सम्मिलित थे। बाद में शरतचन्द्र ने नौकरी कर ली और गरीब कन्या से विवाह किया। प्लेग की बीमारी से शरतचन्द्र की पत्नी और बेटे की मृत्यु हो गयी। तब इन्होंने दूसरा विवाह किया। सन् 1919 तक साहित्य जगत में शरतचन्द्र की स्थिति बहुत सुदृढ़ हो चुकी थी। शरतचन्द्र ने 'बगान' नाम से तीन खंडों में अपनी रचनाओं का एक संग्रह तैयार किया जिसमें 'बोझा', 'काशीनाथ', 'अनुपमार प्रेम', 'कोरेल ग्राम', 'बड दीदी', 'चन्द्रनाथ', तथा हरिचरण देवदास और बाल्य स्मृति थी।

इसके बाद शरतचन्द्र श्रेष्ठ से श्रेष्ठ लेकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हुये। 'पंडित मशाई', बैकुंठेर विल, मेजदीदी, दर्पपूर्ण, पल्ली समाज, श्रीकान्त, अरक्षणीया, निष्कृति, मामलार फल, ग्रहराह, देना पावना, वना वेधान, हरि लक्ष्मी, एकादशी, वैरागी, विलासी, अभागीर स्वर्ग, अनुराधा, सती ओ परेश, शेष प्रश्न आदि उनकी प्रमुख रचनायें हैं।

शरतचन्द्र के साहित्य को लेकर असंख्य शोध और अनुसंधान हुये हैं। विभिन्न भाषाओं में शरतचन्द्र की कृतियों पर शोध प्रबन्ध आदि होते रहे हैं। शरतचन्द्र की कहानियों में नारी पात्र और प्रेमचन्द ही कहानियों में नारी पात्रों को लेकर तुलनात्मक

अध्ययन की आवश्यकता को लेकर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध तैयार करने का प्रयास किया गया है। उक्त विषय पर संयोग से प्रो० टी०बी० चक्रवर्ती से चर्चा करने पर मेरा जिज्ञासू मन शरतचन्द्र और प्रेमचन्द के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन के लिये प्रेरित हुआ। उक्त विषय पर अमुवि के भारतीय आधुनिक भाषा विभाग के प्रो० टी०बी० चक्रवर्ती का ज्ञान अकथनीय है, इससे मेरा हौसला बढ़ा और मैंने प्रो० टी०बी० चक्रवर्ती से उक्त विषय पर शोध प्रबन्ध का निर्देशक बनने का अनुरोध किया। मेरे हर्ष की सीमा न रही जब प्रो० चक्रवर्ती ने मेरे प्रस्ताव को मान कर प्रस्तुत शोधप्रबन्ध का निर्देशन करना स्वीकार कर लिया। विभिन्न पुस्तकों तथा विद्वज्जनों के सहयोग तथा अपने अथक परिश्रम से मुझे इस विषय पर शोध प्रबन्ध पूर्ण करने का अवसर प्राप्त हुआ।

उक्त शोध प्रबन्ध को अध्ययन की दृष्टि से छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रस्तावना के बाद प्रथम अध्याय में शरतचन्द्र के जीवन और कृतित्व का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शरतचन्द्र के जीवन तथा कृतियों के विषय में इस अध्याय में विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में हिन्दी साहित्यकार प्रेमचन्द के जीवन और कृतित्व के विषय में विस्तारपूर्वक बताया गया है। प्रेमचन्द भी एक श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। कुछ विषयों को लेकर प्रेमचन्द और शरतचन्द्र की रचनायें साहित्य जगत में एक जैसे मुद्दों पर अपने-अपने रूप से अभिव्यक्त हुई हैं। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के तृतीय अध्याय में शरतचन्द्र

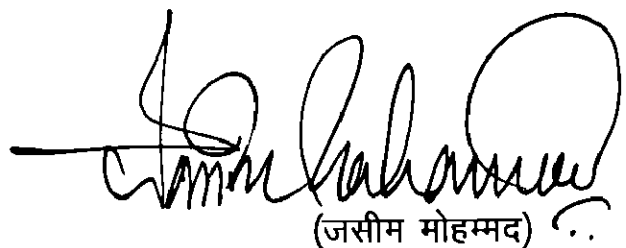
की कहानियों में अभिव्यक्त नारी पात्रों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। शरतचन्द्र ने पुरुषों एवं स्त्रियों के अनुपात में नारीपात्रों को प्रधानता प्रदान की है। शरतचन्द्र ने तत्कालीन बंगाली समाज में व्याप्त प्रत्येक प्रकार की समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन किया है। बंगाली समाज के नारी विषयक समस्याओं विशेष रूप से विधवा समस्या को शरतचन्द्र ने प्रमुखता के साथ उठाया है। साहित्य की परम्परा के अनुसार शरतचन्द्र ने रचना कौशल से नारी की दुर्बलता को बड़े सबल अंदाज में उठाया है। बंगाल की नारियों की दुरावस्था को देखकर तत्कालीन कलाकारों विचारकों ने अपने-अपने अंदाज में इस मुद्दे को उठाया है किन्तु शरतचन्द्र का विद्रोह सबसे सशक्त, तर्कपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक था।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में प्रेमचन्द की कहानियों में अभिव्यक्त नारी पात्रों का समुचित विश्लेषण किया गया है। प्रेमचन्द ने ग्रामीण परिवेश में नारी की समस्याओं तथा तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को भली-भाँति प्रस्तुत किया है। इस शोध प्रबन्ध में अध्याय पाँच में शरतचन्द्र और प्रेमचन्द की कहानियों में अभिव्यक्त नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। दोनों कहानीकार ही अपने अपने क्षेत्र के उच्च कोटि के रचनाकार के रूप में पाठकों में लोकप्रिय हैं। प्रेमचन्द जहाँ नारी पात्रों में प्राचीन संस्कृति पर आधारित कथाओं को प्रस्तुत करते हैं। वहीं शरतचन्द्र प्राचीन संस्कृति के साथ पाश्चात्य संस्कृति को भी समुचित रूप से अभिव्यक्त करते हैं। तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि विभिन्न विषयों पर दोनों की विचारधारा में

समानता पाई जाती है तो कुछ अलग भी देखने को मिलता है। प्रेचन्द्र ने निर्बल वर्ग को अधिक उभारा है जबकि शरतचन्द्र ने अपनी कथाओं के माध्यम से नारी पात्रों में प्रत्येक वर्ग विशेष रूप से मध्यम वर्ग को समावेशित किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का अन्तिम एवं छटा अध्याय उपसंहार के रूप में है जिसमें सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध की संक्षिप्त रूप से समीक्षा की गई है। अपने निर्देशक प्रो० टी०बी० चक्रवर्ती के विद्वत्पूर्ण निर्देशन में यह मेरा एक प्रयास है। समुचित शोध प्रबन्ध में मेरे विभाग के अन्य विद्वानों प्रो० शेख मस्तान, प्रो० अबुल कलाम कासमी, उर्दू विभाग, प्रो० ए०आर० फतही, भाषा विभाग, डॉ० अमानुल्लाह ख़ॉन, प्रो० अब्दुल अलीम, श्री अजय विसारिया, डॉ० आशिक अली, हिन्दी विभाग, डॉ० क्रान्तिपाल, डॉ० मोहम्मद शाहिद, प्रो० शमीम अहमद, प्रो० हुमायूँ मुराद, प्रो० सय्यद इकबाल अली, प्रो० शाहबुद्दीन ईराकी, प्रो० ज़किया अतहर सिद्दीकी, डॉ० गुलाम फरीद साबरी, डॉ० फातिमा जेहरा, डॉ० आमिना खातुन एवं अस्माँ जावेद आदि का अतुलनीय सहयोग रहा है। प्रोफ़ेसर रज़ाउल्ला खान का मेरे जीवन में विशेष सहयोग रहा है जो समय समय पर मुझे चुनौती पूर्ण कार्यों को करने की प्रेरणा देते रहे हैं। मैं सभी सहयोगियों श्री फरहत अली खान, श्री दौलत राम, श्री जॉनी फोस्टर, डॉ० सय्यद सिराज अजमली, श्री सय्यद एम०टी०टी० नियाज़ी, श्री खालीद अमीर, श्री रघुराज सिंह, डॉ० राहत अबरार, श्री एन० जमाल अंसारी, श्री उवैस जमाल शम्सी, अजरा शहज़ाद, श्री पीर बक्श, श्री शरीफ अहमद तथा सम्बन्धियों डॉ० मोहम्मद अमीरउल्लाह खान अग्रेंजी विभाग, अमुवि, श्री

इबरार खान (डा० इबरार), श्री जमील अहमद खान (बब्लू), श्री जमील अहमद खान (मुन्नु चचा), श्री शहनवाज़ खान (एडवोकेट), श्री फ़िरोज़ खान, श्री जमालुद्दीन खान (प्रधानजी), श्री गुलाम मजहर खान, श्री एजाज खान, श्री मेराज खान, श्री एकराम खान, श्री एकराम खान (मामा) का आजीवन आभारी रहूँगा। इस शोध प्रबन्ध को छापने में जो सहयोग श्री मोहम्मद इकबाल सैफी एवं श्री मोहम्मद मेहमूद अंसारी का रहा है वह सराहनीय है। मैं अपना शोध प्रबन्ध अपनी अर्धांगिनी श्रीमती निकहत परवीन को पूर्ण निष्ठा के साथ समर्पित करने का गौरव प्राप्त करना चाहूँगा।



(जसीम मोहम्मद)

शोधार्थी

सेण्टर फॉर कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ
इण्डियन लैंग्वेजेज एण्ड कल्चर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़

प्रस्तावना

प्रस्तावना

शरत चन्द्र बंगला साहित्य में अनायास ही पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हुये। रवीन्द्र नाथ ठाकुर तथा प्रभात कुमार उस समय कहानी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। तत्कालीन युग में अचानक एक साधारण परिवार से सम्बन्ध रखने वाले शरत चन्द्र चटर्जी के कहानी क्षेत्र में पदार्पण से एक हलचल सी पैदा हुई। यह बात अपने आप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है कि बंगला कहानी में एक युग 1876 –1938 को शरत युग के नाम से जाना जाता है। शरत चन्द्र की रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है और वे साहित्यिक रूप से अत्यन्त लोक-प्रिय हैं कि वो केवल बंगला साहित्य की धरोहर न होकर सम्पूर्ण भारत के लिये महत्वपूर्ण हैं।

शरत चन्द्र ने अपनी रचनाओं के द्वारा बंगाली समाज की मूलभूत मान्यताओं पर ही प्रश्न चिन्ह नहीं लगाये वरन् उन्होंने अपनी कथाओं में निर्बल तथा निम्न व्यक्ति को विषय के रूप में ग्रहण किया। उन्होंने व्यक्ति को उसकी सारी कमियों के बावजूद भी सहानुभूति और आत्मीयता के साथ देखा। उन्होंने ने अपनी कहानियों में सभी प्रकार के चित्रण स्थापित करते हुये नारी के प्रेम एवं त्याग को भी लेखन का भाग बनाया। उनकी रचनाओं में वे सारे बिन्दु सम्मिलित हैं जिन पर विश्वव्यापी आंदोलन होते रहे हैं। निम्न तथा निर्बल वर्ग के लिये तो शरत चन्द्र ने मार्क्सवाद से भी अधिक व्यापक सोच के साथ अभिव्यक्ति दी। शरत चन्द्र ने अपनी रचनाओं में जिन सामाजिक

परिस्थियों का चित्रण किया है वह अन्य किसी बंगला कहानीकार रवीन्द्र नाथ टैगोर को छोड़ कर और किसी की रचनाओं में देखने को नहीं मिलता है। अध्ययन की दृष्टि से समस्त शोधप्रबन्ध को छः अध्याओं में प्रस्तुत किया गया है।

1. प्रथम अध्याय 'शरत चन्द्र चटर्जी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' नाम से है। इसमें उनके जीवन परिचय और कृतित्व के विषय में बताया गया है।

इनका जन्म सन् 1876 में बंगाल के हुगली में स्थित गाँव देवानंदपुर में हुआ था। इनके पिता एक साधारण व्यक्ति थे। बचपन में शरत चन्द्र का मन पढ़ाई में नहीं लगता था। वह बच्चों की टोली के साथ मछली के शिकार में तथा शरारतों में लगे रहते थे। शरत चन्द्र के पिता परिवार सहित भागलपुर आ गये थे। उन्होंने भागलपुर विद्यालय में दाखिला लिया किन्तु उस में अच्छी शिक्षा न होने के बावजूद भी अपनी बुद्धिमता के कारण ज्ञानी लड़कों में गिने जाते थे। सन् 1894 में भागलपुर में शरत चन्द्र ने 18 साल की आयु में एंट्रेंस परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद वे भागपुर के तेजनारायण जुबिली कॉलेज में भर्ती हुये। शरत चन्द्र ने रवीन्द्र साहित्य के साथ साथ अंग्रेजी उपन्यासकारों की रचनाओं का अध्ययन किया। एफ०ए०की० परीक्षा शुल्क के लिये 20 रुपये उनके पास न होने के कारण उन्हें परीक्षा से वंचित होना पड़ा।

शरत चन्द्र के नेतृत्व में भागलपुर में एक साहित्यिक गोष्ठी की स्थापना हुई जिसमें सुरेन्द्र गंगोपाध्याय, गिरीन्द्र नाथ गंगोपाध्याय, निरुपमा देवी, विभूति भूषण भट्ट योगेश चन्द्र मजूमदार आदि प्रसिद्ध बंगला साहित्यकार सम्मिलित थे। क्रान्तिकारी विचारों तथा विद्रोही स्वभाव के कारण वे समाज से बाहर कर दिये गये। सन् 1895 में माता के स्वर्गवास के बाद आर्थिक बदहाली को दूर करने की लिये बानली एस्टेट में नौकरी करने लगे। 1903 में पिता की मृत्यु के बाद उनके संस्कारों हेतु इन्होंने अपनी साइकिल बेच दी। सन् 1906 में शरत चन्द्र ने एग्जामिनर ऑफ पब्लिक वर्क्स एन्ड एकाउन्ट्स विभाग में 30/— रुपये महीना पर नौकरी कर ली।

सन् 1916 तक शरत चन्द्र की स्थिति साहित्यिक रूप से बदल चुकी थी। 1919 तक शरत चन्द्र साहित्यकार के सफल रूप में दिखने लगे थे। शरत चन्द्र ने 'बगान' नाम से तीन खंडों में अपनी रचनाओं का एक संग्रह तैयार किया जिसमें बोझा, काशीनाथ, अनुपमार प्रेम, कोरेल ग्राम, बड़ दीदी, चन्द्रनाथ तथा हरिचरण देवदास और बाल्य स्मृति थी। छः वर्षों की खामोशी के बाद शरत चन्द्र ने श्रेष्ठ से श्रेष्ठ रचनायें अपने पाठकों को प्रदान कीं। पंडित मशाई, बैकुंठेर विल, भेज दीदी, दर्पचूर्ण, पल्ली समाज, श्रीकान्त, अरक्षणीय, निष्कृति, मामलाल फल, ग्रहदाद, देना पावना, नवावेधान, हरिलक्ष्मी एकादशी, वैरागी, विलाती, अभागीर स्वर्ग, अनुराधा, सतीओं परेश, शेष प्रश्न आदि का सफल प्रकाशन हुआ।

‘पथेर दाबी’ शरत चन्द्र की ऐसी पुस्तक थी जो ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पाठकों को उत्तेजित करती थी। इसकी हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गई। अंग्रेजी शासन ने इस पुस्तक को ज़ब्त कर लिया। कुछ प्रभावशाली लोगों के कारण सरकार इन पर मुकदमा नहीं चला सकी। पाठकों की स्वीकृति शरत चन्द्र के लिये कितनी थी इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। शरत चन्द्र का रचना कौशल ऐसा था कि यदि वो कहानी में अश्लीलता भी दिखाते तो उसके अन्त में वही समाज के लिये एक पाठ होता था जो सामाजिक मर्यादा हेतु मान्य होता था। शरत चन्द्र की कथाओं में मानवीय सुख-दुख पर विस्तार पूर्वक विचार देखने को मिलते हैं।

शरत चन्द्र कृतित्व का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इनके लेखन में दुख एक स्थायी तत्व बन कर नहीं आया है। वह सुख के समर्थक थे। वह दुख को भी सकारात्मक रूप से ग्रहण करते थे। उनके कृतित्व में प्रेम तत्व भी परिपूर्ण मात्रा में देखने को मिलता है। उन्होंने जीवन में प्रेम तत्व को बहुत महत्ता दी है। वे प्रेम में मर्यादा और संयम के पक्षपाती हैं। शरत चन्द्र विज्ञान में भी काफी रुचि रखते थे और सन् 1915 में ‘भारत वर्ष’ पत्र में ‘जड़जगत’ नामक लेख में उन्होंने प्रतिवाद पर प्रकाश डाला है। शरत चन्द्र के कृतित्व से यह ज्ञात होता है कि वे अपने पात्रों के माध्यम से समाज की सफल अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। शरत चन्द्र का रचना संसार इतना व्यापक है कि रवीन्द्र नाथ और

बंकिमचन्द्र चटर्जी के बाद शरत चन्द्र को सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त है। इनके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय शक्ति दिखाई देती है और वह इसी लिये सर्वप्रिय हैं। शरत चन्द्र ने अभाव ग्रस्त जीवन में जो कुछ भी देखा और भोगा उसी को प्रस्तुत किया है।

2. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में हिन्दी कहानीकार प्रेमचन्द्र के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुये उसका गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचन्द्र 13 वर्ष की आयु तक हिन्दी नहीं जानते थे। 13 वर्ष की आयु में ही उन्होंने सन् 1893 में अपनी प्रथम रचना लिखी। प्रेमचन्द्र का जन्म बनारस के लमही ग्राम में सन् 1880 में हुआ था। प्रेमचन्द्र के पिता एक साधारण व्यक्ति थे। प्रेमचन्द्र का जीवन भी अभावों से भरा हुआ था और निर्धनता को उन्होंने बहुत समीप से देखा था।

सन् 1899 में प्रेमचन्द्र सरकारी अध्यापक पद पर नियुक्त हुये। इन्होंने 1898 में उपन्यास लिखना आरम्भ कर दिया था। प्रेमचन्द्र ने अपनी साहित्य साधना के द्वारा हिन्दी साहित्य को अनमोल रत्न प्रदान किये। प्रेमचन्द्र का जीवन बहुत ही सादगी भरा हुआ था। सन् 1921--1936 के काल में प्रेमचन्द्र ने नौकरी करने के बाद त्यागपत्र दे दिया और लेखन कार्य में व्यस्त हो गये। प्रेमचन्द्र ने जीवन में जिन विषमताओं का अनुभव किया था उससे वह कट्टर भाग्यवादी बन गये। इन्हें जीवन में कई असफलताओं का सामना करना पड़ा। प्रेमचन्द्र ने 1923 में

बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की। 1928 में 'माधुरी' का सम्पादन प्रारम्भ किया तथा 1930 में 'हंस' पत्रिका का सम्पादन किया। प्रेमचन्द ने 'जागरण' पत्र निकाला किन्तु उसमें उन्हें भीषण घाटा हुआ। बम्बई के मूवीटोन कम्पनी में 9000/- रुपये सालाना में लग गये किन्तु वहाँ की दुनिया उन्हें रास नहीं आयी।

प्रेमचन्द्र का जीवन निर्धनता से परिपूर्ण था वह शादी करके भी खुश नहीं थे। अधिकतर खामोश रहते थे। वह सदैव आडम्बरों से दूर रहे। उनके व्यक्तित्व में सरलता, सौजन्यता तथा सहानुभूति के साथ चित्त की उदारता भी दिखाई देती है। नारी को उन्होंने पुरुष की उन्नति का प्रेरणा स्रोत बताया है। वे नारी को केवल भोग विलास की वस्तु नहीं मानते थे। नारी को वह मातृत्व के पथ पर बढ़ती हुई अखण्ड शक्ति मानते थे। उन्होंने नारी की चरमता उसके मातृत्व में मानी है। प्रेमचन्द के व्यक्तित्व के गहन अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी उद्देश्य से यदि रचना लिखी तो वह यही मानवतावाद है और क्रान्ति भी।

प्रेमचन्द ने 56 वर्ष की आयु और 36 वर्ष के रचना काल में बहुत कुछ सीखा और जीवन संघर्ष को देखा संस्कार, अनुभव और परिस्थितियों की प्रतिक्रिया जितनी सबल प्रेमचन्द में हुई उतनी उनके समकालीन किसी अन्य साहित्यकार में नहीं है। प्रेमचन्द के लिये साहित्य रचना विलास नहीं था विवशता थी, उनके

भीतर की कुरेदन और तड़प उन्हें अभिव्यक्ति के लिये मजबूर करती थी। प्रेमचन्द ने 1901 से लेकर 'सेवा सदन' के प्रकाशन तक अनेक कहानियाँ और उपन्यास लिखे। इनमें कृष्णा, वरदान, प्रेम और श्यामा उपन्यास हैं सोजे वतन सप्त सरोज और नवनिधि कहानी संग्रह हैं। उनके सोजे वतन कहानी संग्रह की कहानियाँ देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत हैं। प्रेमचन्द ने 'सप्त सरोज' और नवनिधि की कहानियों में से बड़े घर की 'बेटी', 'पंच परमेश्वर', 'सौत राजा हरदौल', 'सनी सारन्ध', 'विक्रमादित्य की कटार' को अपनी सर्वश्रेष्ठ कहानियों में गिना है।

प्रेमचन्द का मानना था कि ऐसी कहानी जिसमें जीवन के किसी अंग पर प्रकाश न पड़ता हो जो सामाजिक रूढ़ियों की तीव्र आलोचना न करती हो जो मनुष्य में सद्भावों को द्वन्द्व न करे या जो मनुष्य में कुतूहल का भाव न जाग्रत करें वो कहानी नहीं है। कृतित्व के आधार पर इनके द्वारा रचित उपन्यास वरदान, सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, काया कल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन कर्मभूमि, गोदान आदि हैं। प्रेमचन्द का कहानी संग्रह निम्न प्रकार है— सप्त सरोज, नवनिधि, प्रेमपूर्णिमा, प्रेमपचीसी, प्रेम प्रसून, प्रेम प्रमोद, प्रेम प्रतिभा, प्रेम द्वादशी, प्रेमतीर्थ, प्रेम चतुर्थी, अग्नि समाधि तथा अन्य कहानियाँ, पाँचफूल, समरयात्रा और ग्यारह अन्य राजनैतिक कहानियाँ, सप्त सुमन, प्रेरणा, प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, मानसरोवर आदि संग्रह के रूप में हैं।

3. प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के तृतीय अध्याय में शरत चन्द्र द्वारा चित्रित कहानी के नारी पात्रों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शरत चन्द्र ने कहानी साहित्य में व्यक्ति और समष्टि के अनुसार व्यक्ति के हृदय के समस्त पक्षों को उभारने का प्रयास किया है। शरतचन्द्र की प्रतिभा को श्रेष्ठ विकास एक परस्पर विरोधी शक्तियों के संघर्ष के चित्रण में हुआ है। इसी लिये उनके द्वारा रचित नारी एवं पुरुष पात्रों के चरित्र विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। नारी के चरित्र में प्रवृत्ति के साथ सचेतन संस्कार की इस टक्कर को शरतचन्द्र ने व्यापक रूप में देखा है। प्रेम के आकर्षण को शरत चन्द्र ने अपनी कहानियों के नारी पात्रों में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है।

शरत चन्द्र ने अपने निबन्ध 'नारीर मूल्य' में बहुत ही विदग्धतापूर्ण ढंग से नारी के महान मूल्य का निर्धारण किया है। उनके नारी पात्रों का सूक्ष्म अध्ययन उनकी नारी संबंधी विशिष्ट धारणाओं का स्पष्ट परिचायक है। शरत चन्द्र ने जब लेखन कार्य आरम्भ किया था तब सारे संसार में सुधारवादी आन्दोलनों का बोलबाला था। कलकत्ता में ब्रह्म समाज के आंदोलन के फलस्वरूप जातीय विभेदों के विरोध में स्वर मुखर हो रहे थे। सती प्रथा, बाल विवाह का विरोध हो रहा था। नारी शिक्षा में बाल विवाह के कारण व्यवधान होता था। बाल विवाह के कारण 18-20 वर्ष तक पहुँचते बहुत सारी नारियाँ विधवा बन जाया करती

थीं। विधवा विवाह निषिद्ध था इसलिये विधवाओं की एक बड़ी संख्या समाज के लिये एक विकट समस्या बन कर सामने खड़ी थी।

तत्कालीन कलाकारों, विचारकों ने बंगाल की नारी की दुरावस्था को देखकर आवाज़ उठाई। परन्तु शरतचन्द्र का विद्रोह सबसे सशक्त, तर्कपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक था। बंगाल के नारी समाज को लिये शरत चन्द्र ने अपनी रचनाओं को माध्यम बनाकर जो कुछ किया वो निश्चित रूप से आने वाले युग के सामाजिक इतिहासकार विश्लेषित करेंगे। जिस कार्य को बड़े से बड़े सुधारवादी न कर सके उसको शरत चन्द्र ने अनायास ही कर दिखाया। नारी के मन को शरत चन्द्र ने एक संघर्ष के बीच देखा है जहाँ उसकी स्वतः उठी हुई आकांक्षा की धारा को संस्कारों से सामना करना पड़ता है। शरत चन्द्र मानते थे कि नारी का नारीत्व वात्सल्य में है, इस तथ्य का प्रतिपादन उनकी रचना 'रामेर सुमति' में देखा जा सकता है।

शरत चन्द्र ने अपनी कहानियों में नारी के मन की मूल संवेदना और मनोवेगों की अनुभूति अधिक व्यापक रूप में की है। शरत चन्द्र ने 'अरक्षणीय' के माध्यम से यह प्रस्तुत किया है कि नारी के व्यक्तित्व में यदि रूप रंग की कमी भी होती है तो उसकी विनम्रता उसे पूरी कर देती है। 'अभागी का स्वर्ग' में निर्धनता और सम्पन्नता के दोनों पक्षों से सम्बन्धित नारियों का चित्रण शरत चन्द्र ने मार्मिक ढंग से किया है। 'प्रकाश और छाया' में नारी पात्रों की संवेदनाओं को उन्होंने

स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है। एक अन्य रचना 'दिल्ली' में पाठकों को नारी के उस स्वरूप की अभिव्यक्ति मिलती है जिसमें निम्न जाति की लड़की बड़ी बहादुरी का प्रदर्शन करती है। 'मुकदमे का परिणाम' में शरतचन्द्र ने एक ही नारी के दो रूपों को बहुत अच्छी तरह चित्रित किया है। ममता, करुणा और प्रतिशोध दोनों ही एक ही नारी की अभिव्यक्ति बन कर सामने आई है। नारी के मन की समस्या को समझकर उसे समस्या के रूप में पाठकों के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत किया है जो सर्वमान्य है। शरत चन्द्र द्वारा चित्रित नारी पात्रों में धर्म-परायणता तथा कर्तव्यनिष्ठता का स्वरूप देखने को मिलता है।

4. प्रस्तुत शोध प्रबंध में चतुर्थ अध्याय प्रेमचन्द की कहानियों में नारी पात्र की समुचित विवेचना करता है। इस अध्याय में दर्शाया गया है कि प्रेमचन्द के नारी पात्र किस प्रकार विश्लेषित हुये हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में समसामयिक राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव को उनके नारी पात्रों के चित्रण में सहज रूप से देखा जा सकता है। इस काल में बाल विवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह आदि रीतियाँ प्रचलित थीं जिनका सीधा प्रभाव नारियों पर ही था। समाज की विसंगतियों में नारी एक दुर्बल स्वरूप धारण किये हुये चुपचाप अत्याचारों से संघर्षरत दिखाई देती है।

समाज में व्याप्त कट्टरता के कारण नारी को वेश्यावृत्ति के लिये विवश होना पड़ा। प्रेमचन्द ने इन नारीगत समस्याओं को अपनी कहानियों, वेश्या, दो कब्रें,

नरक का मार्ग, एक्स्ट्रेस, आगा पीछा आदि में स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। प्रेमचन्द ने अपनी विभिन्न कहानियों में राष्ट्रीय आंदोलन को चित्रित करते हुये नारी की भागीदारी पर समुचित रूप से प्रकाश डाला है। प्रेमचन्द ने नारी के गृहिणी रूप को सामाजिक और आर्थिक अनिवार्यता के रूप में महत्व प्रदान करते हुये, उसके आत्मसम्मान की सर्वत्र रक्षा की है। प्रेमचन्द ने नारी के विभिन्न स्वरूपों का चित्रण करते हुये उसकी वात्सल्य मयी ममता की सुन्दर अभिव्यक्ति की है।

‘स्वर्ग की देवी’ कहानी में प्रेमचन्द ने सन्तान के वियोग को एक माता के लिये असहनीय स्वरूप में चित्रित किया है। प्रेमचन्द के नारी पात्रों में प्रेम के साथ एक विश्वास भी दिखाई देता है। प्रेमचन्द की कहानियों में प्रेम पतित और पथभ्रष्ट स्त्रियों को भी कर्तव्य, त्याग और सेवा में प्रेरित देखा जा सकता है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में विधवा समस्या के किसी भी पक्ष को नहीं छोड़ा है और उसके दुख दर्द के प्रत्येक पक्ष को चित्रित किया है। प्रेमचन्द ने उच्च शिक्षित नारियों का चित्रण भी युग के यथार्थ रूप में किया है। उन्होंने मध्यवर्गीय जमींदार तथा उच्चवर्गीय एवं किसान मजदूर वर्ग की नारियों को भी अपनी कहानियों में भतीभांति चित्रित किया है। नारी की भाग्यवादिता को भी उन्होंने स्पष्ट रूप से चित्रित किया है जिसमें नारी का दुर्बल पक्ष पाठकों के सामने आया है।

प्रेमचन्द ने ग्रामीण परिवेश की कहानियों को प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किया है। ग्रामीण समाज की नारियों की समस्याएँ अधिक विकाराल रूप में सामने आती हैं। इन्हीं समस्याओं को प्रेमचन्द ने साहित्यिक स्वरूप प्रदान करके विभिन्न नारी पात्रों के माध्यम से अपनी कहानियों को सुदृढ़ अभिव्यक्ति प्रदान की है। प्रेमचन्द द्वारा यँ तो पुरुष पात्र भी दयनीय अवस्था में दिखाई देते हैं किन्तु नारियाँ तो विशेष रूप से एक समस्या ग्रस्त नारी के रूप में सामने आकर पाठकों के मन को द्रुवित कर देती हैं। ये प्रेमचन्द का रचना कौशल ही है जो नारी पात्रों की परिस्थितियों को स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

5. इस शोध प्रबन्ध में पाँचवा अध्याय शरतचन्द्र और प्रेमचन्द की कहानियों में अभिव्यक्त नारी पात्रों के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। इस अध्याय में दोनों कहानीकारों के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। साहित्यिक रूप से शरतचन्द्र और प्रेमचन्द को उनके रचनात्मक लेखन कार्यों से पहचाना जाता है। दोनों ने ही साहित्यिक रूप से पाठकों का मन विभोर कर देने वाली कहानियों का सृजन किया है। दोनों कहानीकारों ने ही मानवीय जीवन की समग्रता को अपना कर अनेक समसामयिक नारीगत समस्याओं को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने समस्याओं के समाधान योजना को लक्ष्य बनाकर अपने कलाशिल्प का श्रेष्ठ सदुपयोग किया है। दोनों कहानीकारों की कहानियों के आधार पर उनके नारी पात्रों के तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा

ज्ञात होता है कि दोनों की दृष्टि कहीं-कहीं तो समान रूप से नारीगत समस्याओं की ओर गई है और कहीं-कहीं उनकी जीवन दृष्टि में अन्तर होने के कारण रचना दृष्टि में भी अन्तर दिखाई देता है।

प्रेमचन्द की कहानियों में जीवन के स्वरूप को दुख के साथ जोड़ा गया है। शरतचन्द्र भी अपनी कथाओं में मानव जीवन के दुख-सुख पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं। प्रेमचन्द ने ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करते हुये नारी को भाग्य वादिता के अनुरूप चित्रित किया है जबकि शरतचन्द्र की कहानियों में नारी पात्र आशावादिता के साथ दिखाई देते हैं। शरतचन्द्र सुख को दुख के साथ नहीं जोड़ते हैं। प्रेमचन्द की तुष्टि नैतिक मूल्यों पर आधारित होने पर भी जीवन की नवीन मान्यताओं की ओर उन्मुख रही है। शरतचन्द्र ने अन्धविश्वास और भावुकता से पूर्ण पाप पुण्य की भावना का समर्थन नहीं किया है। मानव हृदय की दुर्बलता को अधिक सहानुभूतिपूर्वक सोचने के कारण शरतचन्द्र ने नवीन मान्यतायें स्थापित की हैं। परिणामस्वरूप पाप-पुण्य की सार हीन मान्यताओं का विरोध शरतचन्द्र की कहानियों में देखने को मिलता है।

प्रेमचन्द के नारी पात्र आर्थिक तंगी एवं विषमताओं तथा सामाजिक विसंगतियों के चलते अनेक द्वन्द्वों से गुजरते हैं। आर्थिक विपन्नता पात्रों के दुखी दाम्पत्य को जन्म देती है। आर्थिक सम्पन्न नारी सुखी ही होगी ये भी आवश्यक नहीं है। इस विषय पर दोनों कहानीकारों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ज्ञात होता है कि

शरतचन्द्र ने अपने नारी पात्रों की आर्थिक विपन्नता एवं सम्पन्नता को बहुत कुशलता के साथ अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। दोनों कहानीकार यह बात समानता के साथ मानते हैं कि आर्थिक सम्पन्नता की दशा में सदाचारों का हनन होता है। शरतचन्द्र ने बंगाल की नारियों की दुरावस्था को देखकर सबसे सशक्त तर्कपूर्ण तथा प्रभाव पूर्ण विद्रोही भावना को अभिव्यक्त किया है। प्रेमचन्द्र की कहानियों के नारी पात्र भारतीय संस्कृति से परिपूर्ण दिखाई देते हैं। प्रेमचन्द्र ने पाश्चात्य संस्कृति की सतही मान्यताओं का विरोध किया है। जबकि शरतचन्द्र की कहानियों में प्राचीन एवं पाश्चात्य दोनों ही प्रकार की संस्कृति से परिपूर्ण नारी पात्रों के दर्शन होते हैं।

प्रेमचन्द्र उत्तर प्रदेश के क्षेत्र के लोक जीवन की झाँकी को प्रस्तुत करते हैं जब कि शरत चन्द्र के नारी पात्र इस तरह क्षेत्र विशेष के न होकर विभिन्न संस्कृतियों से सम्बन्ध रखते हैं। शरतचन्द्र ने अधिकतर शहरी क्षेत्र की नारियों को प्रस्तुत किया है। हालांकि उनकी कहानियों में ग्रामीण नारी पात्र भी हैं किन्तु प्रेमचन्द्र की विचारधारा से कुछ अलग दिखाई देते हैं। शरतचन्द्र की कहानियों में मध्यवर्ग अपने युग की सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा प्रभावों से परिपूर्ण रूप से अंकित हुआ है। प्रेमचन्द्र और शरतचन्द्र की सौन्दर्य भावना में एक अन्तर देखने को मिलता है। फिर भी दोनों की सौन्दर्य भावना विश्व मंगल की ओर उन्मुख हुई है।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में संघर्षरत मनुष्य की विविध स्थितियाँ प्रस्तुत की हैं। शरतचन्द्र की कहानियों का सत्य व्यक्ति के रागात्मक संबंधों के बीच अभिव्यक्त हुआ है। शरतचन्द्र की कहानियों में नारी पात्रों में सौन्दर्य एवं कल्पना की चरम अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। शरतचन्द्र ने सौन्दर्य में कल्पना का सहारा लिया है। जबकि प्रेमचन्द के नारी पात्रों में सौन्दर्य वास्तविकता तथा यथार्थ से परिपूर्ण है। शरतचन्द्र ने अधिकतर कहानियों में जो पात्र प्रस्तुत किये हैं वो कहीं न कहीं उनके सम्मुख गुजर चुके हैं और पर्याप्त अनुभव के आधार पर ही उन्होंने ऐसे नारी पात्रों का चित्रण किया है जो वास्तविकता की अभिव्यक्ति के साथ पाठकों के हृदय में अपना स्थान बना लेते हैं।

6. प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के अन्त में छटा अध्याय उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध के संक्षिप्त रूप एवं निष्कर्ष को उपसंहार अध्याय में देखा जा सकता है।

प्रथम अध्याय
शरतचन्द्रः व्यक्तित्व
एवं कृतित्व

शरतचन्द्र: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार शरत चन्द्र का जन्म 15 सितम्बर, सन् 1876 में बंगाल प्रांत के हुगली जिले के एक छोटे से गाँव देवानन्दपुर में हुआ था। इनके पिता मोतीलाल चट्टोपाध्याय तथा माता श्रीमती भुवन मोहिनी गाँव के साधारण व्यक्ति थे। शरतचन्द्र के पिता को साहित्य तथा चित्रकारी से लगाव था। उन्होंने उपन्यास लिखे किन्तु पूर्ण नहीं कर सके थे। मोतीलाल साधना तो जीवन भर करते रहे किन्तु सांसारिक रूप से वे नितान्त असफल व्यक्ति थे। मोतीलाल की मृत्यु के बाद शरतचन्द्र की माता ने निर्धनता में परिवार का जीवनयापन किया। शरतचन्द्र ने अपने बाल्यकाल के विषय में स्वयं लिखा है— “बचपन की बात याद है। गाँव में मछली का शिकार कर डोंगियों को ढकेलकर तथा नाव खेकर दिन करते थे। कभी-कभी नौटंकी (यात्रा) के दल में जाकर शागिर्दी करते थे। फिर उससे जी उब जाता था तो अंगोछा कंधे पर रखकर निकल पड़ते थे। यह निकल पड़ना विश्व कवि के काव्य की निरुद्देश्य यात्रा नहीं थी, हमारी यात्रा ज़रा दूसरे ढंग की थी। वह भी जब खतम हो जाती तो एक दिन फिर अपने चोट खाये हुये चरणों तथा निर्जीव देह को लेकर घर वापिस होते थे। वहाँ जब आवभगत की बारी समाप्त हो जाती तो फिर पाठशाला में चालान किया जाता। वहाँ फिर एक बार आवभगत होने के बाद 'बोधोदय' तथा 'पद्यपाठ' से दिल

लगाते। फिर एक दिन सब की करी कराई प्रतिज्ञा भूल जाते थे दुष्ट सरस्वती कन्धे पर सवार हो जाती थी। फलस्वरूप फिर शागिर्दी शुरू होती फिर घर से नौ दो ग्यारह हो जाते फिर एक बार आवभगत की झड़ी लग जाती। इस प्रकार 'बोधोदय' तथा 'पद्य पाठ' पढ़ते बचपन का एक अध्याय समाप्त हो गया"।¹

बचपन में शरत चन्द्र पढ़ने लिखने से दिल चुराते थे तथा सदैव मछली पकड़ने के लिये आतुर रहते थे। इस काम के लिये वो किसी भी प्रकार के जोखिम को तुच्छ समझते थे। जीवित तितलियाँ पकड़ने का इन्हें शौक था। इसके साथ ही बागवानी के भी ये अत्यन्त शौकीन थे। उनके पिता मोती बाबू को लड़के की इन बातों पर कुछ विशेष आपत्ति न थी, शायद लड़के के सब जौहरों का उनको पता भी नहीं लगता था, पर जब उन्होंने शरतचन्द्र को बिल्कुल ही विद्याविमुख पाया तो वे लड़कों को लेकर भागलपुर पहुंचे। इस संदर्भ में स्वयं शरतचन्द्र ने लिखा है— "अब शहर में आया। केवल बोधोदय की विद्या पर ही गुरुजनों ने छात्रवृत्ति श्रेणी में भर्ती कर दिया था। उसमें सीतार वनवास, चारपाठ, सदभाव सदगुरु और प्रकांड व्याकरण पढ़ना पड़ता था। यह कोई पढ़ जाना नहीं था, मासिक या साप्ताहिक में समालोचना लिखना नहीं था, बल्कि स्वयं पंडित जी के सामने खड़े होकर प्रतिदिन परीक्षा देनी थी। इसलिये यह बात निसंकोच ही कही जा सकती है कि साहित्य के साथ मेरा प्रथम परिचय आँसुओं के साथ हुआ। फिर किसी तरह दुख के ये दिन भी कट गये। उस समय मुझे मालूम

1. शरत चन्द्र (उद्धित: शरत चन्द्र व्यक्ति और साहित्यकार, मन्मथनाथ गुप्त, प्र० 23 नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।

ही नहीं था कि मनुष्य को दुख पहुँचाने के अलावा भी साहित्य का कोई उद्देश्य हो सकता है” ।

शरत चन्द्र ने भागलपुर में एक विद्यालय में प्रवेश लिया किन्तु उसमें अच्छी शिक्षा न होने के बावजूद भी वह ज्ञानी लड़कों में गिने जाते थे। भागलपुर में मामा के घर एक पुस्तक भी ‘संसार-कोष’। वह अपने आप में महत्वपूर्ण पुस्तक में ही शरद चन्द्र की मुलाकात राजेन्द्र नामक नौजवान से हुई। वह उनके भले बुरे कामों का गुरु बन गया। राजू को बंशी बजाने में महारत हासिल थीं शरत चन्द्र पर राजू की अमिट छाप पड़ी। शरत चन्द्र लड़कपन से ही मध्यवित्त श्रेणी के उन शरीफ लड़कों से भिन्न थे, जो केवल अपने विषय की पुस्तक पढ़ते हैं और जीवन के संस्पर्श से दूर रहते हैं, जिनमें न तो भला होने का ही साहस होता है, न बुरा होने का बल। शरत चन्द्र घर से बार-बार भाग चुके थे, एक बार तो बिना किसी पैसों के जगन्नाथपुरी तक हो आये थे। इस बार शरत चन्द्र बार-बार उन बातों की विशेष अभिज्ञता प्राप्त करते जा रहे थे जिन के बूते पर वे शरत चन्द्र होने वाले थे। राजू से भेंट होने के कारण इस अभिज्ञता का दायरा और बड़ा तथा गहरा हो गया।

शरत चन्द्र के पिता मोती बाबू भागलपुर में न टिक सके क्योंकि वहाँ घरेलू मामलों को लेकर आये दिन झगड़े ही होते रहते थे। वह सपरिवार देवानन्दपुर पहुँचे। वहाँ शरतचन्द्र हुगली ब्रांच स्कूल में भर्ती हुये और राजू की दी हुई शिक्षा के कारण शीघ्र ही लड़कों के सरदार हो गये। एक समय ये भी आया कि शरत चन्द्र छुरा लेकर

घूमते थे। शरत चन्द्र ने इन हरकतों को अपने उपन्यासों तथा कहानियों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आस पास के गाँव वाले शरतचन्द्र तथा उनकी मण्डली से इतना परेशान हो गये थे कि उन्हें रंगे हाथों पकड़ कर सबक सिखाना चाहते थे।

शरत चन्द्र में उस आयु में इतनी दयालुता थी कि वे बहुत से गरीबों की सहायता करते रहते थे। उनकी चोरी फलों और मछलियों तक ही सीमित थी, पर वे व्यापक रूप से करते थे। इनकी मण्डली में सदानन्द नाम का लड़का उनका दाँया हाथ बनता था। जब सदानन्द के घर वालों को ये ज्ञात हुआ कि वे शरत चन्द्र के साथ उठता बैठता है तो उस पर निगरानी रखी गयी और ये आज्ञा हुई कि वे शरत चन्द्र का साथ छोड़ दे। शरत चन्द्र ने तय किया कि सदानन्द के मकान से लगे हुये आम के पेड़ से सीढ़ी लगाकर रोज रात के समय सदानन्द की छत पर पहुँचेंगे और वहाँ बैठ कर शतरंज खेलेंगे।

मोती बाबू आवेश में देवानन्दपुर आ तो गये थे किन्तु उनका आना सफल नहीं रहा। वह फिर भागलपुर वापिस आ गये। शरत चन्द्र उन दिनों स्कूल की निम्न श्रेणी में पढ़ते थे। भागलपुर आकर वे फिर स्कूल में भर्ती हुये और सन् 1894 में 18 साल की आयु में ऐंट्रेंस पास हुये। ऐंट्रेंस पास करने के बाद ही उन्होंने 'वासा' (घर) नाम से एक उपन्यास लिखा फिर उस रचना को उन्होंने मन की पसन्द के अनुसार न होने पर फाड़ डाला। इनके पिता भी साहित्यिक रुचि वाले इंसान थे। वे भी अपनी रचनायें

लिखते लिखते बीच में निराश होकर छोड़ देते थे। बहुत से लोग यह समझते हैं कि शरत चन्द्र एकाएक परिपूर्ण प्रतिभा के साथ साहित्य क्षेत्र में आये। लेकिन उन्हें यह मानना चाहिये कि बाल्यवास्था से ही शरत चन्द्र साहित्यिक रुचि से प्रभावित थे। लेखों के सम्बन्ध में शरत चन्द्र का एक उच्च आदर्श था, तभी वे अपनी अपुष्ट रचनाओं को जनता के समक्ष नहीं लाना चाहते थे।

ऐंट्रेन्स परीक्षा पास करने के बाद शरत चन्द्र भागलपुर के तेजनारायण जुबिली कॉलेज में भर्ती हुये। उन्होंने रवीन्द्र साहित्य के साथ-साथ अंग्रेजी उपन्यासकार विकेन्स, थैकरे, मिसेज हेनरी उड आदि के उपन्यासों को पढ़ा। जब शरत चन्द्र पढ़ने-लिखने में व्यस्त हो गये तब उनके घरवालों ने भी उनकी पुरानी हरकतों पर नाराज होना छोड़ दिया। शरत चन्द्र अपनी धुन के पक्के थे। शरत चन्द्र ने सवय अपने विषय में लिखा है— “जिस परिवार में मैं पनपा, वहाँ काव्य उपन्यास पढ़ना, असच्चरित्रता का प्रतीक तथा संगीत अस्पृश्य था। वहाँ सभी लोग परीक्षा पास करके वकील बनने में ही अपनी इतिकर्तव्यता समझते थे, पर अकस्मात यहाँ भी एक क्रान्ति-सी हो गई। हमारे एक रिश्तेदार विदेश में रह कर कालेज में पढ़ते थे, वे घर में आये तो देखा गया कि वे संगीत और काव्य के अनुरागी हैं। एक दिन उन्होंने सारी औरतों को इकट्ठा कर रवीन्द्रनाथ की रचना ‘प्राकृतिक प्रतिशोध’ सुनाया। किसने कितना समझा पता नहीं, पर जो पढ़ रहे थे उनके साथ मेरी आँखों में भी आँसू आ गये, फिर भी दुर्बलता न जाहिर हो जाये, इसलिये मैं उठकर जल्दी से बाहर चला

गया। फिर रवीन्द्र काव्य के साथ दोबारा परिचय हुआ तो उसका पहला यथार्थ परिचय मिला। अब ऐसा हुआ कि इस परिवार के वकील बनने के वातावरण में जी घबड़ा गया, और मैं लौटा पुराने गाँव के मकान में। पर अबकी बार बोधोदय नहीं, पिताजी की टूटी हुई अलमारी खोलकर मैंने 'हरिदास की गुप्त बातें' तथा 'भवानी पाठक' निकाला। गुरुजनों को दोष नहीं दे सकता, ये पुस्तकें स्कूल की पाठ्य पुस्तकें तो थी नहीं, इसलिये बुरे लड़कों के योग्य अपाठ्य पुस्तकें थीं। अतः उनको पढ़ने के लिये मुझे चोरी का आश्रय लेना पड़ा। मैं पढ़ता, साथी सुनते। अब पढ़ता नहीं हूँ, लिखता हूँ, उन्हें कौन पढ़ता है, पता नहीं।

शरत चन्द्र बंकिम ग्रन्थावली से विशेष प्रभावित रहे। उनकी सारी रचनायें इन्हें याद हो गई थीं। शरतचन्द्र का बचपन और यौवन निर्धनता में बीता था इस लिये उनकी शिक्षा सुचारु रूप से नहीं चल पा रही थी। उनके पिता का पांडित्य अगाध था। कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता आदि साहित्य की सारी विधाओं में इनके पिता का दखल था। पर इनमें से किसी को भी उन्होंने पूर्ण नहीं किया। शरत चन्द्र को इस बात का दुख था कि इनके पिताजी ने इस रचनाओं को पूर्ण स्वरूप प्रदान क्यों नहीं किया। शरत चन्द्र ने मात्र सतरह वर्ष की आयु में कहानियाँ लिखना आरम्भ कर दिया था परन्तु यह सोच कर छोड़ दिया कि ये तो आलसियों के काम हैं। अठारह वर्ष की आयु के बाद उन्होंने पुनः लिखना आरम्भ किया। इनके कुछ पुराने मित्रों की योजना बनी कि

योगेशचन्द्र मजूमदार आदि थे। इन सभी ने बंगला साहित्य में प्रसिद्धि प्राप्त की। इस गोष्ठी के सभापति शरतचन्द्र थे। कविता तथा कहानी लिखना ही इस गोष्ठी का ध्येय था। इसमें सभापति एक विषय देते थे और सदस्यों को सात दिन के अन्दर अपनी रचनायें सभापति को प्रस्तुत करनी होती थीं। सभापति द्वारा सब को नम्बर दिये जाते थे। इतनी आयु में भी शरतचन्द्र इस प्रकार नम्बर प्रदान करते थे और सब होनहार नौजवान उनकी पेशवाई को मान लेते थे, इससे शरत चन्द्र की साहित्यिक उत्कृष्टता को देखा जा सकता है।

भागलपुर के बंगालियों में उन दिनों दो दल थे। एक तो बिलकुल कट्टर जिनका नेतृत्व शरत चन्द्र के नाना केदारनाथ करते थे। दूसरा सुधारक दल का इसके नेता शिवचन्द्र थे जो विलायत से वापिस आने के बाद वकालत करते थे। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें राजा की उपाधि भी प्रदान की थी। शरत चन्द्र शिवचन्द्र के यहाँ जाकर बैठा करते थे। शरत चन्द्र को समाज से बाहर कर दिया गया था। वे बाद में हावड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के सभापति भी बनाये गये थे। उनके मन में भी क्रान्तिकारी विचारधारा बलवती रहती थी। इस संदर्भ में स्वयं शरत चन्द्र ने नन्दी ग्राम नामक पुस्तक में लिखा है— “ब्रिटिश सरकार ने और्डीनेन्स जारी करके बंगाल के क्रान्तिकारियों को बड़े पैमाने पर गिरफ्तार करना शुरू कर दिया था। क्रान्तिकारी छिपे फिर रहे थे। आन्दोलन पूरे जोर शोर से बढ़ता जा रहा था। उन्ही दिनों बंगवाणी में शरत चन्द्र का ‘पथेर दाबी’ (पथ के दावेदार) धारावाहिक प्रकाशित हो रहा था। तब

शरत चन्द्र हावड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के सभापति थे। कई कांग्रेसी शरतचन्द्र से अचानक पूछ बैठे अहिंसक सत्याग्रह और हिंसात्मक विप्लव इन दोनों में आप किसके समर्थक हैं? आप हावड़ा कांग्रेस के सभापति हैं और कांग्रेस हाई कमान्ड का आपके प्रति स्थायी निर्देश है अहिंसात्मक सत्याग्रह का मगर आपके 'पाथेर दाबी' उपन्यास में हिंसा का संकेत है।

उत्तर में शरत चन्द्र ने कहा— मैं उनका समर्थन नहीं करता यह सच है, फिर भी न जाने क्यों इन क्रान्तिकारियों के प्रति मेरे अन्दर एक कमजोरी रह गई है। इसलिये खतरा उठाकर भी इनसे सम्पर्क रखने और कभी कभी यथासंभव आर्थिक मदद करने में मैं तनिक भी आगा पीछा नहीं करता। तुम लोगों में शायद कोई भी नहीं जानता कि इनमें से दो एक गहरी रात के अंधेरे में मेरे पास आया करते हैं। काम खतम करके वे फिर छिपकर रूपनारायण के रास्ते लौट जाते हैं। अभी उस दिन दिन दहोड़ सबकी आँखों में धूल झोंक कर एक क्रान्तिकारी मेरे घर पर कुछ घन्टे काट गया।”¹

शरत चन्द्र अपनी गतिविधियों के कारण समाज से बाहर कर दिये गये थे। इस घटना से इनके भावुक हृदय को ठेस पहुँची और वे सब छोड़-छाड़ कर घर से चले गये। इस समय वे एफ०ए० के द्वितीय वर्ष के छात्र थे। छः महीने बाद वे प्राइवेट परीक्षा देने के लिये भागलपुर लौटे। 1895, नवम्बर में शरत चन्द्र की माता का स्वर्गवास हो गया। घर की आर्थिक स्थिति की बदहाली को दूर करने के लिये बानली एस्टेट के शिवशंकर शाहू के यहां नौकरी कर ली। यहाँ से इनको शिकार का शौक

1. शरत चन्द्र, नन्दी ग्राम, प्र० 23, नवप्रभात साहित्य दिल्ली 1997.

पैदा हुआ और पिस्तौल चलाने का हुनर प्राप्त किया। शरत चन्द्र के पिता को तरह-तरह के पत्थरों के संग्रह का बहुत शौक था। किन्तु शरत चन्द्र की दृष्टि में यह कोई आकर्षक बात नहीं थी, उन्होंने पिता की अनुपस्थिति में इन पत्थरों को उठाकर उनमें से एक पत्थर अपने एक धनी मित्र को दे दिया। जब उनके पिता को इस बात का ज्ञान हुआ तो वह बहुत बिगड़े। शरत चन्द्र को इस बात की बहुत ग्लानि हुई और वह फिर एक बार घर छोड़ कर चले गये।

एक समय ऐसा आया जब शरत चन्द्र ने गेरूये वस्त्र धारण कर लिये और संन्यासी का रूप धारण कर लिया। इनके उपन्यास श्रीकांत में जो संन्यासी जीवन का वर्णन है वह संभव है इसी से प्रेरित है। "श्रीकांत ने भटकते-भटकते एक दिन देखा कि आम के बाग से धुआँ निकल रहा है। मुझे न्याय शास्त्र मालूम था, इसलिये धुआँ देखकर आग का होना मैंने निश्चित समझा, सच बात तो यह है कि मैंने आग के हेतु का भी अनुमान कर लिया, इसलिये जल्दी ही उस तरफ बढ़ा तो देखता क्या हूँ कि यह तो संन्यासी का अच्छा खासा आश्रम है। प्रकांड धूनी के ऊपर लोटे में चाय का पानी चढ़ा हुआ था। बाबाजी आधी आँख मूंदे हुये सामने ही विराजमान थे और उन्हीं के आस पास गांजा पीने के सब साधन थे। दो ऊँट, दो टट्टू तथा बछड़ा समेत एक गाय पास ही बंधे थे। एक चेला भाँग घोंट रहा था। देखकर मैं भक्ति से गदगद हो गया और पलक झमकते ही बाबा जी के श्रीचरणों में लोट गया। बाबाजी बोले क्यों बेटा— मैंने विनय से कहा— मैं गृहत्यागी, मुक्तिपथान्वेषी हतभाग्य शिशु हूँ। मुझे दया

कर अपने चरणों की सेवा करने की आज्ञा दीजिये। बाबाजी हंसे, बोले— बेटा घर लौट जाओ, यह पथ बड़ा ही दुर्गम है। मैंने उसी समय करुण स्वर में कहा — बाबाजी, महाभारत में लिखा है कि महा पापी जगाई माधाई वशिष्ठ मुनि के पैर पकड़कर स्वर्ग चले गये थे, फिर क्या मैं आपका पैर पकड़ कर मुक्ति भी नहीं पा सकता? अवश्य ही पा सकता हूँ। — बाबाजी की बाँछे खिल गई, बोले— बात तो तेरी सच है, अच्छा बेटा राम जी की खुशी। हाँ बेटा जो है सो तुझ में अच्छे करतब हैं, तुझमें मेरा चेला होने की लायक बरी है— मैंने हर्ष से गदगद हो कर बाबाजी के पैर की धूल फिर एक बार सिर पर ले ली। प्रधान चेले ने मुझे गेरुये वस्त्रों का एक नया सेट, कोई दस रुद्धाक्षमाला तथा एक जोड़ा पीतल के कंकण दिये। जहाँ जो चीज़ फबती थी मैंने उस चीज़ को पहिना, फिर धूनी की कुछ राख ले कर चेहरे पर तथा सिर पर मल ली। आँख मार कर मैंने चेले से कहा— बाबाजी कोई शीशा वीशा भी रखे हो? मुँह देखने के लिये तड़प रहा हूँ। दो मिनट बाद शीशा लेकर एक पेड़ की आड़ में गया। छोटा ही सही पर देखते ही समझ गया कि बराबर इस्तेमाल होने के कारण साफ है। चेहरा देखकर हँसी के मारे बुरा हाल था। कौन कह सकता था कि यह वही श्रीकान्त है जो कल ही रजवाड़ों में बैठकर बाईजी का मुजरा सुन रहा था।”¹

शरत चन्द्र की लेखन प्रवृत्ति से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि वह कल्पना के घोड़े पर सवार लेखक नहीं थे, वे जिस बात का प्रत्यक्ष अनुभव करते थे उसी को लिखते थे। इस बार शरत चन्द्र की आवारा गर्दी का यह जीवन कई वर्षों तक चला।

1. श्रीकान्त, शरतचन्द्र, प्र० 37.

संन्यासी जीवन के आखिरी दिनों में वे मुजफ्फरपुर में थे, वहाँ 1903 में उनको ये समाचार प्राप्त हुआ कि उनके पिता का स्वर्गवास हो गया है। वह वहाँ से साइकिल पर भागलपुर पहुंचे। इस पितृवियोग रूपी भयंकर विपत्ति को समय भी मामा— कुल की विरुद्धता के कारण उनको पिता का श्राद्ध आदि करने के लिये एक कौड़ी की सहायता नहीं मिली। अतएव उन्हें अपनी एकमात्र जायदाद साइकिल बेचकर किसी तरह यह सब करना पड़ा। अब उनके सामने बड़ा कठिन प्रश्न ये था कि छोटे भाई बहनों का भार उन्हें ही उठाना था। इस गुरुभार से उनका आवागमन का मन विद्रोह कर उठा। साथ ही प्रेम तथा कर्तव्य बोध ने उन्हें विवश कर दिया। वे नौकरी करने को तैयार हो गये। इसलिये वे कलकत्ता जाने को तैयार हो गये, पर भाई बहनों को यहाँ छोड़ते?

खंजरपुर के जिस मकान में मोती बाबू रहते थे, उसकी मालकिन उनकी छोटी बहिन को बहुत चाहती थी, इसलिये वह तो वहीं रही। आसनसोल में एक रिश्तेदार ने एक भाई को अपने पास रखकर तार का काम सिखलाना स्वीकार कर लिया। जलपाईगुड़ी के एक रिश्तेदार ने छोटे भाई को अपने पास रखना स्वीकार किया। कलकत्ते के एक वकील रिश्तेदार के पास शरत बाबू स्वयं रहकर नौकरी की तलाश करने लगे, पर इसके लिये उन्हें वकील साहब के पास आये हुये हिन्दी कागजात का अनुवाद करना पड़ता था तथा रोज जाकर तरकारी खरीदनी पड़ती थी। इस प्रकार मोती बाबू के मरते ही शरत परिवार छिन्न—भिन्न हो गया। शरत चन्द्र आचारा गर्दी के

अभ्यस्त थे अतः उन्हें वकील साहब का नौकर बनकर रहना पसन्द नहीं आ रहा था।

ऐसी निराशा जनक तथा नीरस स्थिति में भी वे कहानी लिखते रहे।

पिता की मृत्यु के वर्ष में वह कलकत्ते में नौकरी न मिलने के कारण निराश हो गये थे और फिर से आवारगी के जीवन को व्यतीत करना चाहते थे। उन्हीं की आयु के कुछ उनके रिश्तेदारों को यह धुन सवार हुई कि एक हारमोनियम खरीदा जाये। परन्तु पैसे न होने के कारण यह निश्चय हुआ कि शरत बाबू एक कहानी लिखें और उसे बेच कर हारमोनियम खरीदा गया। उनकी 'मन्दिर' नाम की कहानी ने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनके रिश्तेदारों तथा समाज ने तब भी उनकी योग्यता को नहीं स्वीकार किया। शरत चन्द्र वकील साहब की अनुवादक और तरकारी खरीदने की नौकरी छोड़ कर रंगून चले गये। इनके संदर्भ में मन्माथनाथ ने लिखा है— "इसके बाद के युग को बहुत से लेखकों ने शरत चन्द्र के जीवन का अन्धकारमय युग कह कर स्मरण किया है क्योंकि इस बीच में अन्न चिन्ता ने ही उनका सारा ध्यान बंटा दिया पर नतीजे को देखते हुये हमें तो ऐसा मालूम होता है कि इस प्रकार रंगून जाना उनके साहित्य के हक में अच्छा ही हुआ। यदि वे रंगून जाने पर मजबूर न होते तथा वहाँ बेकारी में लटकते रहते तो हम उनके सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों के सर्वश्रेष्ठ दृश्यों से वंचित हो जाते। 'चरित्रहीन' तथा 'श्रीकांत' में रंगून यात्रा के सजीव दृश्य तो हैं ही, साथ ही मनुष्य जीवन की बहुत सी गुत्थियों पर भी रोशनी डाली गई है। शरत चन्द्र की तकलीफ हुई, कष्टों, दुखों ने, अभावों ने उन्हें झिंझोड़ डाला, पर

इससे उनके साहित्य को लाभ ही पहुंचा, उनमें विचित्रता आई, पैना पन आया¹ काट पैदा हुई, चोर की सामर्थ्य उत्पन्न हुई। रंगून पहुंच कर उनके मौसा अधोरनाथ चट्टोपाध्याय के घर में टिके। वे धनी तथा विद्वान व्यक्ति थे। उन्होंने शरत बाबू को देखते ही कहा तुम नौकरी की फिक्र मत करो पहले यहां ढंग से जरा रहो तो। इस में कोई सन्देह नहीं है कि वे उन्हें नौकरी पर लगाते पर उससे पहले ही उनके मौसा का देहान्त हो गया¹।

शरत चन्द्र ने 1906 में फिर नौकरी करने का इरादा बनाया और 'एग्जामिनर आफ पब्लिक वर्क्स एन्ड एकाउन्ट्स विभाग में 30/- रुपये मासिक पर नौकरी कर ली। वे मणीन्द्र कुमार मित्र नामक एक अध्ययनशील युवक के साथ रहते थे। कहा जाता है कि शरत चन्द्र ने इनके साथ पाश्चात्य दर्शन का अध्ययन किया। तभी रंगून में प्लेग की बीमारी का प्रकोप हुआ। उनके साथी तो रंगून छोड़कर अन्यत्र चले गये किन्तु शरत चन्द्र की नौकरी छोटी थी वह नहीं जा सकते थे। वह दफ्तर के बाबुओं के मेस में रहने लगे। यहां इनको बंगचन्द्र दे नामक एक साथी मिले। वे बहुत विद्वान थे उनके लेख अंग्रेजी मासिक पत्रों में छपते थे परन्तु वे पक्के शराबी और दुष्चरित्र थे। इसी जमाने में शरत चन्द्र ने 'चरित्रहीन' की रचना की। उसमें नायिका का स्थान मेस की एक नौकरानी को दिया गया तथा मेस जीवन का विशद वर्णन किया गया है। बाद में

1. शरत चन्द्र: व्यक्ति और साहित्यकार, मन्मथनाथ गुप्त प्र० 48, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

बंगचन्द्र दे प्लेग में मारे गये। शरतचन्द्र ने उनकी बीमारी में बहुत सेवा की। इनकी मृत्यु से शरत चन्द्र को बहुत दुख हुआ और उन्होंने संगीत चर्चा भी छोड़ दी।

शरत चन्द्र जिस मकान में रहते थे उसी के निचले भाग में एक ब्राह्मण मिस्त्री का परिवार भी रहता था। मिस्त्री की एक विवाह योग्य लड़की थी, इसके अलावा कोई न था। वह घर का सारा काम काज संभालती थी। शरत चन्द्र ने इस लड़की के साथ विवाह कर लिया। यह विवाह भी अजब हाल में हुआ था। एक वृद्ध शराबी की उस लड़की के साथ शादी की जा रही थी। वह रोते हुये शरत के कमरे में आ गई। जब शरत चन्द्र अपने कमरे में आये तो लड़की को देखकर अचंकित हो गये और उस लड़की ने रोते हुये सारी व्यथा बताई। दूसरे दिन शरत चन्द्र ने लड़की के पिता को बताया कि वृद्ध के साथ शादी करना ठीक नहीं है। तब लड़की के पिता ने कहा कि इससे अच्छा वर नहीं मिल सकता। अगर तुम्हें इतनी ही पीड़ा है तो तुम इससे शादी क्यों नहीं कर लेते। तब शरत चन्द्र ने उस मिस्त्री की लड़की से शादी की। कुछ दिन बाद प्लेग की बीमारी के कारण शरत चन्द्र की पत्नी और बेटे का निधन हो गया। इस प्रकार वह फिर जीवन में अकेले रह गये।

शरत चन्द्र ने फिर एक शादी की। हिरणमयी देवी नामक एक गरीब ब्राह्मण महिला के साथ बंगाल में ही इनकी शादी हुई। शरत चन्द्र अक्सर कलकत्ता हो आते थे। इधर इनकी नौकरी में भी तरक्की हो रही थी। शरत बाबू तम्बाकू बहुत अधिक मात्रा में पीते थे। बर्मा में रहते हुये शरत बाबू पर होम्योपैथी का भूत अक्सर सवार हो

जाता था। वे दवाइयों का पूरा बक्स रखते थे और लोगों की चिकित्सा करते थे। उनकी चिकित्सा से बहुत से बीमार ठीक भी हो जाते थे। वे बर्मा में बर्मावासियों से भी सम्बन्ध रखते थे और उनके घर आया जाया करते थे। एक मकान में रहते समय पड़ोस में रहने वाले एक परिवार से उनका घनिष्ठ परिचय हुआ। इस परिवार में एक मिस्त्री और उसकी बहू, केवल दो ही लोग थे। ये लोग शरत बाबू को पिता समान मानते थे, शरत चन्द्र के जीवन की सारी घटनाओं का उल्लेख उनके द्वारा रचित कहानी एवं उपन्यासों में मिल जाता है।

बर्मा में बंगला निवासियों ने एक 'सोशल क्लब' खोल रखा था। वहाँ पर अक्सर साहित्य की आलोचनायें होती रहती थीं एक बार इस क्लब में नारी मनोविज्ञान पर चर्चा हुई जिसमें शरत चन्द्र ने अपने वक्तव्य में पश्चिम के लेखकों के संदर्भ से प्रभाव जमा लिया। शरत चन्द्र बर्मा में लगभग चौदह वर्ष रहे। वैसे तो शरत चन्द्र ने भागलपुर में ही लिखना आरम्भ कर दिया था पर बर्मा में उनके ज्ञान में जो वृद्धि हुई उसने उन्हें परिपक्व लेखक बना दिया। बर्मा जाने से पहले वे अपनी सभी रचनायें एक मित्र के यहां रख गये थे। उस युग की प्रसिद्ध पत्रिका 'भारती' से सम्बन्धित सौरीन्द्र मोहन मुखोपाध्याय ने शरत बाबू की रचना बड़िदिदि (बड़ी दीदी) बिना बताये धारावाहिक के रूप में प्रकाशित कर दी। शरत बाबू को पत्रिका भी नहीं भेजी गई और कोई सूचना भी नहीं दी। 1907ई० में भारती में जब बड़ी दीदी की पहली किश्त प्रकाशित हुई तभी लोग उसे पढ़कर आश्चर्य में पड़ गये। लिखने की परिपाटी इतनी सुन्दर थी तथा भाषा

और शिल्प के आधार पर इतनी सशक्त कथा को पढ़कर लोग हैरान रह गये। पहली किश्त में शरत चन्द्र का नाम उसमें नहीं था। लोग तो यह तक मानने लगे थे कहीं ये रचना रवीन्द्र नाथ टैगोर ने तो नहीं लिखी है। उन दिनों मजूमदार लाइब्रेरी से रवीन्द्र नाथ के सम्पाद कत्व में 'बंगदर्शन' प्रकाशित हो रहा था। लाइब्रेरी के मालिक ने रवीन्द्रनाथ से इसकी शिकायत भी की थी कि आपने इतनी उत्कृष्ट रचना इस पत्रिका में न देकर 'भारती' में क्यों दी। रवीन्द्रनाथ ने भी इस रचना को पढ़ा और तीरीफ की। अन्त में चलकर 'भारती' में लेखक का नाम शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय प्रकाशित हुआ था।

लगभग साढ़े पांच साल बाद शरत चन्द्र को इस कथा के धारावाहिक प्रकाशित होने का पता मिला। श्री सौरीन्द्र मोहन ने इस सम्बन्ध में लिखा है— 1319 (बंगाली सन्) की पूजा अर्थात् दशहरे के समय शरत चन्द्र अकस्मात् आ धमके और कहा मुझे जरा बड़ी दीदी कहानी पढ़ने दो। मुझे अच्छी तरह से याद है उस दिन काली पूजा थी। दिन के दो बजे थे, हमारे घर के बाहर के कमरे में शरत चन्द्र उपेन्द्र नाथ तथा मैं था। बँधी हुई 'भारती' में से बड़ी दीदी पढ़ने लगा। शरत चन्द्र लेटकर सुनने लगे। बीच-बीच में उठ बैठते थे। मेरे हाथों को दबा हर कह उठते चुप रहो। उनकी आँखों में आँसू थे, गला रोंधा हुआ था। शरत चन्द्र ने मुग्ध विस्मय चकित दृष्टि से कहा यह मेरी रचना है इसे मैंने लिखा है! मानो उनको विश्वास ही नहीं होता था। हम लोगों ने उनको झड़पा— लिखना छोड़कर तुमने कितना बड़ा अपराध किया है जरा समझो तो।

शरत चन्द्र उदासीन होकर बड़ी देर तक बैठे रहे, फिर बोले— अच्छा लिखेंगे, लिखना छोड़कर मैंने अच्छा नहीं किया, रचना अच्छी है, मेरा ही हृदय हिल गया था। उन्होंने रुककर कहा— सौ रुपये मिलते हैं, बहुतों को देना पड़ता है। शरीर भी ठीक नहीं है। उन्होंने यह भी कहा— यदि मैं और अधिक दिन रंगून रहा तो मुझे तपैदिक हो जायेगा। मैंने कहा— बहरहाल तीन महीने की छुट्टी लेकर चले आओ, सौ रुपये तुम्हें मिलें, इस की व्यवस्था हम लोग कर लेंगे। इसके तीन साल बाद शरत चन्द्र वापिस कलकत्ता आ गये। 'यमुना' के सम्पादक कणीन्द्रनाथ ने मुझे बताया कि 'यमुना' को वे अपने जीवन का सर्वस्व बनाना चाहते हैं'¹

शरत चन्द्र ने तय किया कि 'चरित्र हीन' यमुना पत्रिका में छपेगा। उन्होंने अनिला देवी उपनाम से 'नारी मूल्य' को देकर कहा कि उनके असली नाम के बिना इसे छापा जाय। ऐसा ही किया गया। फिर उनकी एक और कहानी 'रामेर समति तथा 'पथनिर्देश' यमुना के लिये दी गयी। शरत बाबू को चरित्रहीन पहले भारतवर्ष पत्र द्वारा ठुकरा दिया गया था। बाद में भारत वर्ष वाले भी शरत बाबू की प्रतिभा का लोहा मानने लगे और उनके द्वार पर रचनायें मांगने गये तब उन्हें एक उपन्यास 'विराज बहू' मिला। शरत चन्द्र को जब रुपयों की आवश्यकता थी तब उन्होंने विराजबहू, रामेर सुमति तथा विंदुर छेले एवं पथ निर्देश कहानियों को पुस्तक रूप में छापने के लिये 300/- रुपये में बेच दिया। 'परिणीता' तथा चरित्रहीन को एम०सी० सरकार ने पहली बार जब पुस्तक

1. श्री सौरीन्द्र मोहन मुखोपध्याय।

के रूप में प्रकाशित किया तो पहले ही दिन चार सौ कापियाँ बिक गई। बाद को उनकी पुस्तक 'पाथेर दावी' एक ही दिन में इससे भी अधिक बिकी। इसके बाद तो शरत चन्द्र का जीवन एक सफल साहित्यकार के रूप में सामने आया।

शरत चन्द्र ने जब बर्मा में नौकरी की थी तब परिस्थितियों को अंदाजा उनके रंगून से लिखे हुये 31.5.1913 के पत्र से इस प्रकार मिलता है— “पहले मैं अपनी नौकरी की बात बताऊँ। हमारे बड़े साहब न्यूमार्च नामक अंग्रेज हैं। गोरा उपन्यास में रवीन्द्रनाथ ने कहलाया है मैं माधव चटर्जी हूँ, नील साहबों का गुमास्ता। इससे अधिक बताने की आवश्यकता नहीं है। न्यूमार्च भी ठीक उसी तरह हैं। इन्होंने आते ही एक साल में 37 कलर्कों को रिड्यूस किया। अपराध यह था कि एक ने चिट्ठी डिस्मैच करने में तीन दिन देर कर दी और एक के पास 15 दिन पुरानी एक चिट्ठी निकली। इनके मारे डिप्टी एकाउन्टेन्ट जनरल मिस्टर चैन्टर और श्रीनिवास अय्यर, असिस्टेंट एकाउन्टेन्ट जनरल सुन्दरम और मैक्सेट एक ही महीने के अन्दर मेडीकल सर्टिफिकेट देकर भाग खड़े हुये। हम लोगों में से हर एक काम लगभग दुगना कर दिया गया है। और हम पी०डबल्यू०डी० वालों को अपने आफिस में ले जाया जा रहा है। हम लोगों के आफिस में रहने के घंटे साढ़े दस से साढ़े छः है। लिखना दिखना असम्भव हो गया है। इतने दिनों का नौकर हूँ। ऐसी भयंकर दुर्दशा में कभी नहीं पड़ा। मुझे तो यहाँ से

जाना ही होगा। मैंने बहुत से पाजी आदमी देखे, पर अपने आफीसर जैसा नहीं देखा"।¹

शरत चन्द्र का एक अन्य पत्र भी रंगून की परिस्थितियों की सम्पूर्ण झलक दिखलाता है जो उन्होंने 17.7.1913 को रंगून से लिखा— "तुम मेरी नौकरी की चेष्टा कर रहे हो, यह जानकर मुझे खुशी हुई। बात यह है कि साहित्य चर्चा से पेट नहीं भरता। इसके अलावा मान लो कि एक महीना कुछ नहीं लिख पाया तो मुसीबत बनेगी। इसलिये इतने संशय युक्त मार्ग में पैर डालने की इच्छा नहीं होती। जो कुछ भी हो। दुर्गा पूजा के बाद दो एक महीने की छुट्टी लेकर तुम लोगों से भेंट कर आऊंगा। उसी समय मित्र जी से भी मिलूंगा। पर वहाँ नौकरी मेरे बस की नहीं है। सुनता हूँ कि हड्डी तोड़ परिश्रम कर और साहित्य चर्चा भी बन्द हो जायें। यह तो मैं नहीं कर सकता"।²

शरत चन्द्र पढ़ने लिखने में कोई नियम का पालन समुचित रूप से नहीं कर पाते थे। वे एक बार यदि रात को लिखने बैठते थे तो रात के तीन या चार बजे तक भी लिखते रहते थे। सन् 1916 तक साहित्यिक रूप में शरत चन्द्र की परिस्थिति बदल चुकी थी। इन दिनों उन्हें एक प्रकाशक गुरुदास चटर्जी ने 100 रुपये महीना देने का वायदा किया और कहा कि शरत चन्द्र जल्दी बर्मा छोड़ दें। इन सौ रूपयों में 50 रुपये भारत वर्ष पत्रिका के लेखक के रूप में और 50 रुपये पुस्तकों पर अग्रिम रायल्टी के

1. शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखा गया पत्र 31.5.1913.

2. शरत चन्द्र द्वारा, अपने एक मित्र को लिखा गया पत्र। दिनांक 17.7.1913.

रूप में देगें स्वीकार किया था। कुल मिला तीन सौ रुपये देने थे। यद्यपि शरत चन्द्र अभी साहित्यिक जगत में अभी पूर्ण रूप से चमके नहीं थे फिर भी वे काफी प्रसिद्ध हो चुके थे। इतने पर भी वे रंगून छोड़ने के लिये 300/- रुपये पाकर काफी कृतज्ञ थे, इस बात को वो एक पत्र में व्यक्त करते हैं— “आपने मुझे जो दान दिया है, वह यथेष्ट है, यदि एक साल के अन्दर न मर जाऊं तो उसे चुका कर ही रहूंगा हों जो कृतज्ञता का कर्ज है, उससे मैं कभी उऋण नहीं हो सकता। जो कुछ जमा था, वह दो महीने की बीमारी में सब जा चुका बल्कि कुछ कर्ज भी चढ़ चुका है। अपनी जरूरत और गर्ज के कारण मैं आप की दया पर जुल्म कर रहा हूँ ऐसा मालूम पड़ रहा है। इसलिये यदि आप समझें कि इतना देना उचित नहीं है तो जितना देते बने भेज दें, मैं उसी को कृतज्ञता के साथ ग्रहण करूंगा”।¹

कृतित्व के आधार पर शरत चन्द्र सफल साहित्यकार कहे जा सकते हैं। 1919 ई. तक साहित्य जगत में शरत चन्द्र की स्थिति बहुत मज़बूत हो चुकी थी। उन्होंने ग्यारह अगस्त 1919 में हरिदास चट्टोपाध्याय को लिखा था— उस रोज़ रात को मेरी ग्रन्थ माला प्रकाशित करने की जो कल्पना सामने आई थी, उसे मैंने छोड़ दिया क्योंकि मैंने सोचकर देखा, ऐसा करना नीचता रहेगी। जिसके लिये वसुमती के मालिक सतीश बाबू एक साल से मेरे पीछे दौड़ रहे हैं, वह भले ही न हो, पर उन्हें न देकर दूसरे को ग्रन्थमाला का अधिकार देना घृणित नीचता होगी और जिसे मैं नीचता समझूंगा उसे

1. मन्मथनाथ गुप्त, शरत चन्द्र: व्यक्ति और साहित्यकार, प्र० 66

नहीं करूंगा। सतीश बाबू आज सबेरे भी आये थे, मैं राजी नहीं हुआ। पर वे अपने पिता की मृत्यु के बाद इस तरह फंस गये हैं कि सुनने पर बड़ा दुख होता है। आप के आसरे में मेरा एक तरह से चल जाता है आज यहीं तक सोच सकता हूँ। “एक बार शरत बाबू ने अपने प्रकाशक से कहा मेरा कलकत्ते का मकान लगभग बन चुका है, इस समय आप मुझे पांच हजार रुपये दे तो चिन्ता दूर हो जाये। इन्होंने गाँव के मकान पर भी काफी रुपया खर्च किया था।

शिवपुर बाजे में शरत चन्द्र एक छोटा सा मकान किराये पर लेकर रहने लगे। उन्होंने अपने पास अपने छोटे भाई प्रकाश चन्द्र को लाकर अपने पास रख लिया था। इस बीच उनके भाई प्रभासचन्द्र ने संन्यास व्रत धारण कर स्वामी वेदानन्द का नाम ग्रहण करके वृन्दावन में राम कृष्ण आश्रम में सेवा कार्य करते थे। जब कभी वे कलकत्ता आते तो शरत बाबू के मकान पर ही ठहरते थे। शरत बाबू की बड़ी बहन अनिला देवी भी पति के साथ उनके कलकत्ता वाले घर में आती रहती थीं। शरतचन्द्र के जीवन में इसके बाद कोई बड़ा परिवर्तन देखने में नहीं आया। वे बारबार गतिशीलता के साथ पुस्तक दर पुस्तक लिख कर प्रकाशित कराते रहे। अब कहीं जाकर उन्हें अर्थिक रूप से सफल कहा जा सकता है। हेमेन्द्र कुमार ने उनके बारे में कहा है कि शरत बाबू ही प्रथम बंगाली साहित्यकार हैं जिन्होंने केवल कलम के बल पर कलकत्ते में बड़ा मकान तथा निजी मोटर खरीद लिया था। शरत चन्द्र की प्रतिभा

उच्च कोटि की थी, साथ ही उसमें प्रजनन शक्ति भी महत्वपूर्ण थी। वे एक ही साथ कई पत्रिकाओं में अपना धारावाहिक उपन्यास चलाया करते थे।

शरत चन्द्र ने ईस्टलिन के अनुकरण में 'अभिमान' नामक उपन्यास लिखा तथा आइटी एटम के अनुकरण में 'पाषाण' नामक उपन्यासों की रचना की किन्तु अब ये उपलब्ध नहीं हैं। इनके अतिरिक्त उन्होंने 'बगान' नाम से तीन खंडों में अपनी रचनाओं का एक संग्रह तैयार किया था इसमें 'बोझा', 'काशीनाथ', 'अनुपमार प्रेम', 'कोरेल ग्राम', 'बड़दीदी', 'चन्द्रनाथ' तथा 'हरिचरण', 'देवदास' और 'बाल्य स्मृति' थी। कुछ दिन के बाद शरतबाबू ने 'शुभदा' नामक उपन्यास लिखा पर इस उपन्यास में जिन लोगों का उल्लेख था वो जीवित थे, इसलिये उन्होंने इसे अपनी मृत्यु तक इसे प्रकाशित नहीं होने दिया। उनकी मृत्यु के बाद ही 'शुभदा' छपकर प्रकाशित हो सका। कुछ रचनायें इनकी ऐसी भी रही जो खो गई थीं। 'बाला', 'शिशु', 'छायार प्रेम', 'बामुन' ठाकुर आदि ऐसी ही रचनायें थीं।

बड़ी दीदी के प्रकाशन के बाद शरत चन्द्र छः वर्ष तक तो खामोश रहे फिर उसके बाद वे साहित्य में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ लेकर आये। बाद में एक के बाद एक 'पंडित मशाई', 'बैकुंठेर विल', 'मेजदीदी', 'दर्पचूर्ण', 'पल्ली समाज', 'श्रीकान्त', 'अरक्षणीया', 'निष्कृति', 'मामलार फल', 'गृहदाह', 'देना पावना', 'नवावेधान', 'हरिलक्ष्मी', 'एकादशी', 'वैरागी', 'विलासी', 'आभागीर स्वर्ग', 'अनुराधा', 'सती ओ परेश', 'शेष प्रश्न' आदि प्रकाशित हुये। इनमें से अधिकांश भारतवर्ष पत्रिका में निकले। पल्ली समाज को पहले शरत चन्द्र ने जैसे

लिखा था, पुस्तकाकार छपने के पहले उन्होंने उसका अन्त एकदम बदल कर उसे दूसरा रूप दे दिया था। कहां जाता है कि पहले श्रीकान्त और चरित्रहीन को एक ही पुस्तक के अन्तर्गत किया था, पर बाद में दोनों की अलग-अलग पुस्तक बना दी गई।

नारायण नामक एक पत्र देशबन्धु चितरंजन दास के सम्पादन में प्रकाशित होता था। इसमें शरत चन्द्र की 'स्वामी' नाम कहानी प्रकाशित हुई। इस कहानी पर क्या पुरस्कार दिया जाय यह स्वयं न निर्णय कर देशबन्धु ने शरतचन्द्र को एक दस्तखत किया हुआ चेक दे दिया और कहा जो अंक आप उचित समझें लिख लें। शरतचन्द्र ने 100 रुपये का अंक लिख कर चेक भुनाने भेजा। इस समय शरत चन्द्र बंगला साहित्य में दूसरे महारथी व्यक्ति तथा उपन्यास में प्रथम माने जा चुके थे, अतएव यह 100 रुपये का अंक उनके लिये संयम ही था। शरत चन्द्र का 'पथेर दावी' नामक उपन्यास बंगवाणी पत्रिका में प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त महेश, सती आदि कहानियाँ भी इसी में प्रकाशित सम्पादक रमाप्रसाद मुकर्जी स्वभावतः चाहते थे कि तरुणों के प्रिय उपन्यासकार शरत चन्द्र का कोई उपन्यास उसमें धारावाहिक रूप से निकले। शरत चन्द्र के घर दौड़ते दौड़ते उनकी मोटर की टायर घिस गयी, पर सफलता नहीं मिली। उन्होंने एक दिन देखा कि शरत चन्द्र के लिखने की मेज पर 'पथेर दावी' के कुछ अध्यायों की पाण्डुलिपि रखी है। वे इस पर खुशी से उछल पड़े, पर शरत बाबू ने कहा— इतने खुश होने की आवश्यकता नहीं है इसको प्रकाशित करने में तुम्हारे लिये

खतरा है— सोच लो— इस पर वे डरने के बजाय और भी खुश हुये कि बंगवाणी के लिये ऐसी ही चीज़ तो चाहिये।

बंगवाणी में यह सुवृहत उपन्यास दो साल तक छपता रहा। अन्त में यह जब सम्पूर्ण हुआ तो शरत चन्द्र ने वादे के अनुसार इसे सुधीर सरकार को दिया, पर वे डरे। सुधीर बाबू ने शरत चन्द्र को एक हजार रुपया पेशगी इस वादे पर दिया था कि ज्यों ही वह पुस्तक बंगवाणी में समाप्त हो जाय त्यों ही वह छपने के लिये उनकी कम्पनी को सौंपी जाये। इसीलिये शरत चन्द्र ने पुस्तक उनको दीं सुधीर बाबू की गति सांप छछूंदर जैसी हो गई। अन्त में उन्होंने शरत बाबू से कहा कि कानून की दृष्टि से पुस्तक का जो जो अंश आपत्तिजनक ठहर सकता है उसे निकालकर वे इसे छापना चाहते हैं। इस पर शरत चन्द्र ने सब फाइल उनसे छीन ली और कहा कि एक हजार रुपयों का हिसाब कर दिया जायेगा। शरत चन्द्र अपनी पुस्तक का एक भी अर्ध विराम चिह्न कम नहीं करना चाहते थे। उनके सभी प्रकाशकों ने इस पुस्तक को प्रकाशित करने से इंकार किया। अंत में सर आशुतोष के दो पुत्र 'बंगवाणी' संपादक रमाप्रसाद मुखोपाध्याय तथा उमाप्रसाद ने अपने खर्चे पर तथा खतरा सहकर इसको प्रकाशित करना स्वीकार किया।

अन्त में काटन प्रेस ने इसको छापा। पहले संस्करण में 3000 प्रतियां छपीं, तीन रुपये इसका दाम रखा गया। एक महीने में ही ये संस्करण समाप्त हो गया। दूसरे संस्करण में 5000 प्रतियां छापी गईं जो कि तीन महीने में ही समाप्त हो गईं। इसके

बाद पुस्तक जब्त हो गई। सरकार मुकदमा भी चलाने जा रही थी, पर कुछ प्रभावशाली लोगों के कारण वह रुक गया। रवीन्द्र नाथ ने भी इस पुस्तक को पढ़ा और कुछ आपत्तिजनक बातें लिखीं— “मैंने तुम्हारी पुस्तक ‘पथ के दावेदार’ पढ़ी। पुस्तक उत्तेजक है यानी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पाठक के मन को उत्तेजित करती है। यदि हम अंग्रेजी शासन की निन्दा इसलिये करें कि अंग्रेज जरूर हमें क्षमा करेंगे तो इसमें कोई पौरुष की बात नहीं है। राजशक्ति में पशुवत है, यदि कर्तव्य के बिना पर उसके विरुद्ध खड़ा ही होना पड़े तो दूसरे पक्ष में चारित्रिक जोर का होना यानी आघात सहने का जोर होना चाहिये, पर हम अंग्रेजी शासन से ही उस चारित्रिक जोर की मांग करते हैं, अपने से नहीं। इससे प्रमाणित होता है कि हम मुंह से चाहे कुछ भी कहें, पर अपने अनजान में हम अंग्रेजों की पूजा करते हैं और इस पूजा का अनुष्ठान हम यों करते हैं कि अंग्रेजों को गालियाँ देकर हम उनसे सजा की आशंका नहीं करते। हम भारतीयों के हाथों में राजशक्ति होती तो हम क्या करते यह हमारे जमींदारी और भारतीय रजवाड़ों के तरह तरह के व्यवहारों से अनुमेय है। पर इसलिये लेखनी थोड़े ही बन्द करनी है। यदि तुम अखबार में राज विरोधी बात लिखते तो उसका प्रभाव बहुत थोड़ा और क्षणिक होता पर तुम्हारे जैसे लेखक ने कथाच्छलेन में जो बात लिख दी उसका प्रभाव निरन्तर चलता ही रहेगा। देश और काल में उसकी व्यक्ति का विराम नहीं है। ऐसी अवस्था में यदि अंग्रेजी शासन तुम्हारी इस पुस्तक का प्रचार बन्द न कर देता तो इससे यही मालूम होता है कि साहित्य में तुम्हारी शक्ति या देश की प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में या तो

उसे कुछ मालूम नहीं है या वह अवज्ञा दर्शाना चाहता है। आघात के गुरुत्व को लेकर विलाप करने पर उस आघात के मूल्य को एकदम नष्ट कर देना होगा।

तुम लोगों का रवीन्द्र नाथ ठाकुर

27 मार्च 1933

इस पत्र के उत्तर में शरत चन्द्र ने रवीन्द्र नाथ को जो पत्र लिखा वह इस प्रकार था— “आपका पत्र मिला अच्छी बात है ऐसा ही हो। यह पुस्तक मेरी लिखी हुई है इसलिये दुख हो तो मुझे है, पर वह खास बात नहीं है। आपने जो कर्तव्य और उचित समझा है, उसके विरुद्ध न तो मेरा कोई अभिमत है और न कोई अभियोग। पर आपकी चिट्ठी में जो दूसरी बातें आ गई हैं, उस सम्बन्ध में मेरे मन में दो एक प्रश्न हैं और कुछ वक्तव्य भी हैं। यदि तुर्की ब तुर्की लगे, तो वह भी आप की ही शराफत का कारण समझिये। आपने लिखा है कि मेरी पुस्तक से अंग्रेजी शासन के प्रति पाठक का मन उत्तेजित हो जाता है। हो तो कोई बेजा बात तो नहीं है। यदि मैं ऐसा असत्य प्रचार के ज़रिये से करने की चेष्टा करता तो लेखक की दृष्टि से उसमें मेरे लिये लज्जा और अपराध दोनों बातें होतीं, पर अपनी जानकारी में मैंने ऐसा नहीं किया। यदि ऐसा करता तो वह पोलिटिशियनों का प्रोपेगंडा होता पर कृति न होती। नाना कारणों से बंगला भाषा में इस तरह की पुस्तक किसी ने नहीं लिखी। जब मैंने इसे लिखा तथा छपाया तो इसका सिला जानकर ही ऐसा किया था। जब बहुत मामूली कारणों से भारत में सर्वत्र लोगों को बिना मुकदमे के अन्याय पूर्वक या न्याय का दिखावा करके

कैद और निर्वासन दिया जा रहा है तो मुझे इससे छुट्टी मिलेगी यानी राजपुरुष मुझे बचा कर चलेंगे ऐसी दुराशा मैंने नहीं की। आज भी नहीं है। इन लोगों में से मैं भी एक हूँ इसलिये बातचीत या आचरण में आपको ज़रा भी व्यथा पहुंचाने की चेष्टा मैं सोच भी नहीं सकता।

सेवक

दिनांक— 2 फाल्गुन

शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय

133 (बंगला सन्)

शरत चन्द्र का उपन्यास 'बामुनेर भेये' शिशिर पब्लिशिंग हाउस में पहली बार प्रकाशित हुआ था। 'विचित्रा' में उनका 'विप्रदास' निकला तथा 'शरतेर फूल' नामक वार्षिक पत्रिका में शरत चन्द्र की एक बड़ी कहानी 'परेश' नाम से प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक नलिनी रंजन पण्डित थे। शरत चन्द्र के उपन्यासों से ब्राह्म सम्प्रदाय वाले बहुत प्रसन्न थे क्योंकि इन उपन्यासों में हिन्दू समाज के खोखलेपन को स्पष्ट कर उस पर तीव्र आक्रमण किया गया था। जब शरत बाबू ने ऐसी विसंगतियां ब्राह्म समाज के संदर्भ में लिखीं तो वो उनके खिलाफ हो गये। शरत बाबू को बंगाल की प्रसिद्ध पत्रिका 'प्रवासी' के सम्पादक पहले तो हेय दृष्टि से देखते थे और उनकी रचनाओं को तिरस्कृत श्रेणी में रखते थे, किन्तु जब शरत चन्द्र प्रसिद्ध हो गये उनके लेखों की माँग सर्वत्र होने लगी, तो प्रवासी के सम्पादक रामानन्द चट्टोपाध्याय इस प्रतीक्षा में रहते थे कि किस प्रकार शरत बाबू की रचना उन्हें छापने को मिले।

‘प्रवासी’ पत्रिका वालों ने शरत बाबू से कहलवाया कि वो अपनी रचना छपने के लिये भेजें किन्तु वे नहीं माने क्योंकि वो व्यस्त थे और उनके पास बहुत काम था। फिर ‘प्रवासी’ वालों ने कवि रवीन्द्र का सहारा लिया और उनसे कहा कि किसी प्रकार शरत बाबू को समझायें और उनकी रचनायें हमें भिजवायें। रवीन्द्र नाथ की बात शरत बाबू टाल नहीं सके और मान गये। उन्होंने ‘प्रवासी’ वालों से ये भी कहलवाया कि शीघ्र ही वे उन्हें उपन्यास भेजेंगे। किन्तु जब प्रेस की यह शर्त रही कि पहले उसका संक्षिप्त वर्णन भिजवा दें कहीं उसमें ब्रह्म समाज के विषय में गलत न लिखा हो तब शरत बाबू ने किसी शर्त पर उनके लिये लिखना स्वीकार नहीं किया। इसी कारण ‘प्रवासी’ में कभी कोई शरत बाबू की रचना प्रकाशित नहीं हुई।

शरत चन्द्र ने अपनी कथाओं में उसी विषय को अधिक लिखा है जिसको उन्होंने स्वयं जीवन में प्रत्यक्ष किया था। उनकी कथाओं में जो कथानक है वह थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ उन्होंने जैसा सुना एवं देखा अभिव्यक्त कर दिया। उनके कृतित्व में हम उनके जीवन के किसी न किसी भाग को अवश्य महसूस कर सकते हैं। शरत चन्द्र को कथा लिखने में कभी प्लॉट या कथानक की कमी महसूस नहीं हुई। इस संदर्भ में मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है— “अपने आवारा गर्द जीवन में वे सैकड़ों तरह के लोगों के संस्पर्श में आये, यहाँ तक कि स्वयं उन्हीं लोगों की तरह बन कर रहे, फिर उन्हें प्लॉट की कमी क्यों होती? वे गाँव में रहे, शहर में रहे, देश में रहे, विदेश में रहे, पराश्रित रहे, साधू रहे, शराबी-कबाबी रहे, कुछ दिन तक कांग्रेस में रहे,

क्रान्तिकारियों के हमदर्द रहे, वे क्या नहीं रहे, पर जैसा कि उन्होंने लिखा है, सब तरह की सोसाइटी में रहते हुये भी वे हमेशा अनुभव करते रहे कि वे उनमें नहीं हैं कलाकार की यह एकाकिता बहुत से कलाकारों की विशेषता है और शरत चन्द्र की रचनाओं में हम यद्यपि दलितों की विशेषकर दलित नारियों की आवाज़ सुन सकते हैं, फिर भी इन सारे क्रन्दनों को कोई दिशा न दे सकने के कारण तथा उसी क्रन्दन से करीब करीब मनोरंजन का एक मात्र उद्देश्य सिद्ध करने के प्रयत्न के कारण उनकी कला पूर्व के सब लेखकों की कला की अपेक्षा जनता के अधिक नज़दीक की चीज़ होने पर भी अधिकांशतः कला समस्या पेश करके ही रह गई है।¹

शरत चन्द्र के उपन्यास तथा कहानियों में समसामयिक समाज का आर्थिक पक्ष भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हालांकि यह उनकी विशेषता नहीं है। शरत चन्द्र ने आनन्द को जीवन का तत्त्व मानने की अपेक्षा संसार के सुख और ऐश्वर्य का उपभोग करने का समर्थन किया। सुखवाद उनकी रचना 'शेष प्रश्न' में स्पष्ट रूप से प्रतिष्ठित हुआ है। इस रचना की नारी पात्र कमल की जीवन दृष्टि सुखवाद पर ही आधारित दिखाई देती है— "हमारी साधना है संसार का सम्पूर्ण ऐश्वर्य सम्पूर्ण सौन्दर्य, सम्पूर्ण जीवन को लेकर जीवित रहना।"² इस रचना के कथानक में स्पष्ट रूप से चित्रित हुआ है कि आनन्द के छोटे छोटे कण ही उसके मन में मणि माणिक्य की तरह संचित हुये

1. शरत चन्द्र: व्यक्ति और साहित्यकार, ले० मन्मथनाथ गुप्त, पृ० 86-87.

2. शेष प्रश्न, शरत चन्द्र, पृ० 128.

हैं। वास्तव में मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवन में सुख और आनन्द की प्राप्ति के लिये संघर्षरत रहता है। यह संघर्ष ही उसके जीवन को प्राणवान बनाता है।

समाजिक विसंगतियों से त्रस्त मनुष्य जब संघर्ष की मुद्राओं के लिये स्वयं को तैयार करता है तब उसे भाववियों के अनेक द्वन्द्वों के बीच से गुजरना पड़ता है। शरत चन्द्र के कृतित्व से यह बात स्पष्ट रूप से पाठकों के सम्मुख अभिव्यक्त हुई है। शरत चन्द्र ने अपने कथा साहित्य में जीवन में व्याप्त उदासीनता को प्रति विचार व्यक्त लिये हैं। इन्होंने अपनी कथाओं में मानव मन की निर्बलता को ही जीवन के प्रति उदासीनता अथवा विरक्ति का कारण माना है। शरत चन्द्र की कथाओं के पात्रों में यह दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। 'शेष प्रश्न' उपन्यास की कमल का दृष्टिकोण इस प्रकार देखा जा सकता है— "कमल अपने अतीत के क्षणों की याद करके अपने वर्तमान जीवन से कभी कभी उदास हो जाती है, ऐसे ही एक बार वह सोचती है— घर से उसे कोई ममता नहीं, फिर भी किस लिये वह दिन भर मेहनत करती रही, अकस्मात् इसकी क्या जरूरत आ पड़ी— इसी तरह ही एक धुंधली सी जिज्ञासा उसके मन में घूम रही थी। काम छोड़ कर वह छज्जे पर जा बैठती है और शून्य दृष्टि से सड़क की तरफ देखती हुई न जाने क्या भूलने की कोशिश करती और फिर आकर काम में लग जाती है।"¹

शरत चन्द्र के कृतित्व के सम्बन्ध में अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा उसको पाठकों की व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई। वह यदि

1. शेष प्रश्न, शरत चन्द्र, प्र० 150.

अपने लेखन में अश्लीलता भी दिखाते थे तो उसके अन्त में वही समाज के लिये एक ऐसा पाठ होता था जो सामाजिक मर्यादा के लिये मान्य होता था। शरत चन्द्र के कथानक में मानवीय सुख दुख पर विस्तार पूर्वक विचार देखने को मिलते हैं। शरत चन्द्र जीवन में सुख के समर्थक प्रतीत होते हैं। इसी से दुख को उन्होंने जीवन का स्थायी तत्व नहीं माना है। वे कहानियों में सुख को ही जीवन का लक्ष्य मानते हैं। फिर भी शरत बाबू के कई अन्य उपन्यासों में गरीबी एक घटक के रूप में सामने आई है। सेनगुप्त ने इस संदर्भ में बताया है कि पल्ली समाज में गरीबी भी है, साथ ही आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता भी है पर रमा और रमेश के हृदय के आदान प्रदान के व्यापार से उसका कोई विशेष संबंध नहीं है।

शरत चन्द्र की एक प्रधान रचना 'चरित्रहीन' में यह देखने को मिलता है कि किरणमयी अनंग डाक्टर के प्रति आकृष्ट होती है, इसमें शायद आर्थिक तत्व भी है। श्री सेन गुप्त इस विषय पर बताते हैं— किरणमयी में उत्कट प्रेम लिप्सा भी और डॉक्टर पर उसकी सकान्त निर्भरता भी थीं श्री सेन गुप्त ने शरत साहित्य में आर्थिक पहलू के चित्रण के अभाव की जिस प्रकार से पैरवी की है, वह बिल्कुल ही हल्की हो एसी बात नहीं है क्योंकि बहुत से लेखक इसी रूप में सोचते हैं। इसके अतिरिक्त सबसे बड़ी बात है, जिस लेखक ने जिस तरफ दृष्टि डाली, वह उसे ही चित्रित कर सकता था। यहाँ तक तो ठीक है पर जब इससे आगे बढ़कर यह कहने की चेष्टा की जाती है कि जिन लोगों ने आर्थिक द्वन्द्व को प्रधानता दी है, वे ऊँचे दर्जे के कलाकार नहीं हो

सकते, वहाँ वह एक असहनीय बात हो जाती है। श्री सेन गुप्त ने यह भी कहा है— यदि समाज के जटिल प्रश्न उनके लिये मुख्य हो जाते और वे पुलिस कोड के विचार, सूदखोर के अत्याचार और मजदूरों की हड़ताल में ही रह जाते तो तरह-तरह की रूपहीन शक्ति के संघर्षों में पड़कर नर नारी के हृदय का माधुर्य लुप्त हो जाता। उनके साहित्य में वर्तमान युग की विशेष छाप तो नहीं दिखाई देती परन्तु उन्होंने समाज को युग युगान्तर से चली आई हुई नीति की दृष्टि से स्पष्ट रूप से देखा है।

जीवन के प्रति गहरी दृष्टि कथाकार की कृति को असाधारण रूप प्रदान करती है। टालस्टाय की मर्मभेदी दृष्टि से प्रकार 'निधोलस' और 'नताशा' न बच सके उसी प्रकार शरत चन्द्र की लेखनी से श्रीकान्त जैसे स्थायी पात्रों का सृजन हुआ। जीवन के प्रति इस प्रकार की दृष्टि के सम्बन्ध में विचार करते हुये एडविन म्योर ने लिखा है— "अन्ततोगत्वा तथ्य यह है कि उपन्यासकार जीवन के सम्बन्ध में जो कुछ लिखता है वह बहुत साधारण नहीं होता, बात केवल यही है कि जीवन के सम्बन्ध में वह कुछ भी जानता है। यह भी आश्चर्यजनक नहीं कि जब वह लिखे तो उसे जीवन को अनिवार्यतः क्रम से एक सांचे में प्रस्तुत करना चाहिये और इस सम्बन्ध में वह क्या सोच सकता है कोई महत्व की बात नहीं है। वह ऐसा करता है, क्योंकि वह एक कथन प्रस्तुत करता है और जीवन ऐसा कर नहीं सकता। उस कथन में वह कह सकता है कि जीवन एक उपद्रव है अथवा एक क्रम।"¹

1. द स्ट्रक्चर आफ दि नावेल, लेखक, एडविन म्योर, प्र० 10.

शरत चन्द्र के जीवन परिचय और कृतित्व के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि उन्होंने दुख को भी सकरात्मक स्वरूप देने का प्रयास किया है। अपनी कहानियों में शरत बाबू ने कई स्थलों पर सुख और दुख के अनेक पहलुओं पर विचार व्यक्त किये हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि शरत चन्द्र यह भी नहीं मानते कि सुख की प्राप्ति के लिये दुख भोगना अनिवार्य है तथा बिना दुख के सुख की उपलब्धि सम्भव नहीं है। उन्होंने इस तर्क की सारहीनता के विषय में कहा है— “सुख प्राप्त करने के लिये दुख प्राप्त करना चाहिये— यह बात सत्य है, किन्तु इसलिये यह स्वतः सिद्ध नहीं हो जाता कि जिस तरह हो बहुत सा दुख भोग लेने से ही सुख हमारे कन्धों पर आ बैठेगा। यह इहलोक में भी सत्य नहीं है और पर लोग में भी नहीं।”¹ दुख की स्वीकारोक्ति न करने के कारण शरत चन्द्र की रचनाओं में दुख को भी सुख की भांति भोगने पर विश्वास व्यक्त किया गया है। वह मानते थे कि स्वेच्छा से ग्रहण किये हुये दुख को ऐश्वर्य के समान भोगा जा सकता है। वास्तव में दुख न तो अभाव का रूप है और न शून्य का रूप। भयहीन जो दुख है उसका उपभोग सुख की तरह किया जा सकता है। उनका यह भी मानना था कि सदैव दुख भोगते रहना ही जीवन का उद्देश्य नहीं होता है। दुख और सुख तो मानव की नितान्त वृत्तियां हैं जो एक दूसरे को प्रभावित नहीं करतीं। शरत चन्द्र की इस विचार धारा का उनकी रचनाओं पर स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

1. श्रीकान्त (पर्वदी) शरत चन्द्र, प्र० 101.

शरत चन्द्र की रचनाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनका कृतित्व प्रेम तत्व से परिपूर्ण है। उन्होंने प्रेम को जीवन में अत्यधिक महत्व दिया है। वे स्वयं इस विषय में लिखते हैं— “प्रेम की तो कोई जाति नहीं कर्म नहीं, विचार विवेक और भलाई-बुराई का उसे ज्ञान नहीं। जो इस तरह भर सकता है वो तो समाज के हाथ के बनाये सब कायदे कानूनों से बहुत ऊपर है, यह सब विधि निषेध उसे स्पर्श भी नहीं कर सकते”।¹ शरत चन्द्र ने अपनी कहानियों में प्रेम के महत्व को प्रस्थापित किया है तथा प्रेम की अनुभूति को विभिन्न पात्रों तथा प्रसंगों में व्यक्त किया है।

शरत चन्द्र की कथाओं में प्रेम एक मर्यादा के रूप में देखने को मिलता है। उन्होंने अपने इस दृष्टिकोण को अपने एक पात्र में चित्रित करते हुये स्पष्ट रूप से कहा है— “समाज में जिसे गौरव प्रदान किया जा सकता है उसे केवल प्रेम के द्वारा सुखी नहीं किया जा सकता। मर्यादा हीन प्रेम का भार शिथिल होते ही दुस्सह हो जाता है”।² प्रेम में शरत चन्द्र मर्यादा और संयम के समर्थक अवश्य है किन्तु उनके अनुसार संयम और मर्यादा शब्दों को बड़ा कहकर अतिरंजित कर डाला गया है। वे वास्तविकता के पक्षपाती दिखाई देते हैं तथा हृदय की सुमधुर भावना का समर्थन ही उनकी कृतियों में अभिव्यक्त हुआ है।

शरत चन्द्र के जीवन पर अध्ययन करने से ये भी ज्ञात होता है कि वो विज्ञान में रुचि रखने वाले इंसान थे। वे विज्ञान की पुस्तकों को बड़े चाव के साथ पढ़ा करते

1. ग्रहदाह, शरत चन्द्र, प्र० 203.

2. शरत पत्रावली, प्र० 74.

थे। सन् 1915 में भारत वर्ष पत्र में 'जड़ जगत' नामक एक लेख छपा था, जिस पर उन्होंने पत्र के प्रकाशक को 25.12.1915 को लिखा था— "अच्छ एक बात है, यदि जड़ जगत नाम को कोई प्रतिवाद करना चाहे, मान लीजिये मेरी अपनी दीदी (वे अपनी बहन अनिला देवी के नाम से भी लिखा करते थे) से मैं कुछ लिखा लू तो क्या आप उस प्रतिवाद को छापेंगे? अवश्य आप इस पर सारी बातें सोच लीजिये। जर्मनी के सभी पंडितों ने यह नहीं माना है कि सिम्बल या कल्पना की प्रतिमा को समाने रख कर ही सब काम चल रहा है।

शरत चन्द्र ने एक पत्र में राधारानी देवी को लिखा था— असल में दीदी मैं कोई साहित्यकार नहीं हूँ, मेरे लिये तो साहित्य सृजन वैसे ही हैं जैसे एम.एस.सी. पास करके वकालत करना। साहित्य में मुझे कभी भी उतना आनन्द नहीं मिला जितना विज्ञान में मिला। इसी के लिये शायद मैं तैयार ही हुआ था, पर ग्रहों के फेर के कारण सब कुछ बदल कर ही रहा। सोचता हूँ कि यदि फिर कभी जन्म हो, तो एसी भूल न हो। इनके संदर्भ में श्री गोपालचन्द्र राम ने लिखा है कि— साहित्य में उन्हें आनन्द नहीं मिलता था, यह तो सहज रसिकता थी, पर विज्ञान में भी उन्हें आनन्द मिलता था, इसमें कोई सन्देह नहीं क्योंकि उन्होंने कभी विज्ञान के बहुत सारे ग्रन्थ पढ़े थे। इसके अलावा सभी समय उनकी अलमारियों में वैज्ञानिक ग्रन्थ लगे रहते थे ?

शरतचन्द्र ने सदैव पाखण्ड और पोंगापन्थ के विरुद्ध लिखने का प्रयास किया है। बंगाल के एक अन्य स्वनामधन्य महापुरुष श्री अरविन्द के शिष्यों के प्रति शरत बाबू

के मन में कभी श्रद्धा नहीं रही, यह उनके कुछ पत्रों में स्पष्ट रूप से सामने आता है। उनके कृतित्व में मानवीय जीवन के उज्ज्वल स्वरूप की झलक देखने को मिलती है। शरत चन्द्र ने अपनी रचनाओं में पाश्चात्य संस्कृति, उसके अंधानुकरण और गलत प्रभाव का विरोध किया है। पाश्चात्य संस्कृति से उत्पन्न कुरीतियों का उन्होंने स्पष्ट उल्लेख किया है।

शरत चन्द्र ने अपने कथा साहित्य में पात्रों की अभिव्यक्ति को मानव समाज के अनुकूल बनाकर प्रस्तुत किया है। उनके प्रत्येक पात्र में इस प्रकार का पाठ एवं संदेश देखने को मिलता है जो उन्हें सफल कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित करता है। इस संदर्भ में डॉ० सुरेन्द्र नाथ तिवारी ने लिखा है— “शरत चन्द्र मनुष्य को गिराकर भी कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देते हैं, कुछ ऐसे गुण अनावृत कर देते हैं तथा चरित्र में कुछ ऐसी असाधारणता भर देते हैं कि उसके प्रति अकृतिम श्रद्धा और सहानुभूति करनी पड़ती है। ‘ग्रह दाह’ का सुरेश नितांत भोग लोलुप मनुष्य है। उसने अचला की देह को हर तरह से चाहा है और उसे पाने के लिये उसने सभी सम्भव प्रयत्न किये हैं इसी प्रकार शरत चन्द्र ने ‘सतीश’ में जिस आदर्श की परिकल्पना की है वह अप्रतिम है। सतीश जिसे इंगित करके ही चरित्रहीन की रचना हुई है, प्रचलित नीति के अनुसार घृणा का ही पात्र होगा। किन्तु उसके प्रति यदि निष्पक्ष और उदार

दृष्टिकोण अपनाया जाय तो वह सामान्य व्यक्तियों के बीच असाधारण है तथा जिसके आगे उपेन्द्र की निष्ठुर पवित्रता भी भीख सी मांगने लगती है”¹

कृतित्व के आधार पर उनके रचना संसार को एक सफल तथा समाज के उपयोगी अंग के रूप में स्वीकार करने की चेष्टा सामान्यतः प्रत्येक पाठक करता है। रवीन्द्रनाथ तथा बंकिम चन्द्र चटर्जी के बाद शरत चन्द्र की लोकप्रियता भी उनकी रचनाओं के आधार पर की जाती है। अत्यन्त अभावग्रस्त तथा जीवन के बिखराव की परिस्थितियों में उन्होंने जो कुछ भी समाज में देखा, सुना तथा अनुभव किया उसको विभिन्न पात्रों की सहायता से अपने पाठकों तक पहुँचा कर एक पाठ बनाकर प्रस्तुत किया। शरत चन्द्र की रचनाओं के क्रम को इस प्रकार चित्रित किया जा सकता है: —

कालानुक्रमक ग्रन्थ-तालिका

1913	सितम्बर	बड़दिदि	(उपन्यास)
1914	मई	विराजबहू	(.. ..)
	जुलाई	बिन्दुर छेले तथा अन्यान्य गल्प	(गल्प समष्टि)
	अगस्त	परिणीता	(गल्प)
	सितम्बर	पण्डित महाशय	(उपन्यास)
1915	दिसम्बर	गेजदिदि तथा अन्यान्य गल्प	(गल्प समष्टि)
1916	जनवरी	पल्ली—समाज	(उपन्यास)
	मार्च	चन्द्रनाथ	(उपन्यास)

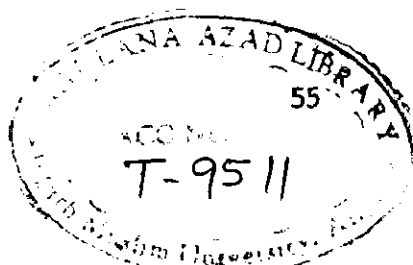
1. डॉ० सुरेन्द्रनाथ तिवारी, प्रेमचन्द्र और शरत चन्द्र के उपन्यास: मनुष्य का बिम्ब, प्र० 115, सुषमा पुस्तकालय दिल्ली-1969.

	जून	वैकुण्ठेर बिल	(गल्प)
	नवम्बर	अरक्षणीया	(गल्प)
1917	फरवरी	श्रीकान्त-प्रथमपर्व	(उपन्यास)
	जून	देवदास	(.. ..)
	जुलाई	निष्कृति	(गल्प)
	सितम्बर	काशीनाथ	(गल्प समष्टि)
	नवम्बर	चरित्रहीन	(उपन्यास)
1918	फरवरी	स्वामी	(गल्प समष्टि)
	2 सितम्बर	दत्ता	(उपन्यास)
	24 तिम्बर	श्रीकान्त-द्वितीयपर्व	(उपन्यास)
1920	जनवरी	छवि	(गल्प समष्टि)
	मार्च	गृहदाह	(उपन्यास)
	अक्टूबर	वामुनेर मेये	(.. ..)
1923	अप्रैल	नारीर मूल्य	(सन्दर्भ)
	अगस्त	देना-पावना	(उपन्यास)
1924	अक्टूबर	नव-विधान	(.. ..)
1925	मार्च	हरिलक्ष्मी	(गल्प समष्टि)
	अगस्त	पथेरदावी	(उपन्यास)

1927	अप्रैल	श्रीकानत-तृतीयपर्व	(उपन्यास)
	अगस्त	षोडशी	(देना-पावना का नाट्य रूपान्तर)
1928	अगस्त	रमा	(पल्ली-समाज का नाट्य रूप)
1929	अप्रैल	तरुणेर विद्रोह	(सन्दर्भ)
1931	मई	शेष प्रश्न	(उपन्यास)
1932	अगस्त	स्वदेश और साहित्य	(सन्दर्भ संग्रह)

राजनीति: आमार कथा (भाषण, हावड़ा जिला कांग्रेस कमेटी, 24 जुलाई 1322); स्वराज्य साधनाय नारी (भाषण, शिवपुर इन्स्टीट्यूट पौष 1328); शिक्षार विरोध (1328 में गौड़ीया सर्वविद्या आयतन में पठित); स्मृति कथा (देशबन्धु के सम्बन्ध में); अभिनन्दन (1328 के जून में देशबन्धु को दिया गया)।

साहित्य:— भविष्यत् वंग-साहित्य (वरिशाल शाखा साहित्य परिषद् का अभिनन्दन भाषण, ज्येष्ठ 1330); गुरु शिष्य सम्वाद ('यमुना' फाल्गुन 1320); साहित्य और नीति (नदिया शाखा साहित्य परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में दिया गया भाषण, 10 आश्विन 1331); साहित्य आर्ट और दुर्नीति (1331, चैत्र मास में मुंशीगंज में सम्पन्न बंगीय- साहित्य सम्मेलन के साहित्य शाखा के सभापति के रूप में दिया गया भाषण), भातीय उच्च संगीत ('भारतवर्ष' फाल्गुन 1331); आधुनिक साहित्येर कैफियत (भाषण, शिवपुर इन्स्टीट्यूट, 15 आषाढ़ 1330); साहित्येर रीति ओ नीति ('बंगवाणी' आश्विन 1334); अभिभाषण (1335, भाद्रमास में 53वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में यूनीवर्सिटी इन्स्टीट्यूट);



अभिभाषण (1338 में 53वीं जन्मतिथि के उपक्षय में, प्रेसीडेन्सी कालेज वकिम शरत् समिति में); यतीन्द्र सम्बर्धना; शेष प्रश्न; (सुमन्द भवन की श्रीमती..... सेन को लिखित); रवीन्द्रनाथ (1338 में रवीन्द्र जयन्ती के उपलक्ष्य में पठित)।

1933	मार्च	श्रीकान्त-चतुर्थपर्व	(उपन्यास)
1934	मार्च	अनुराधा सती और परेश	(गल्प समष्टि)
	अगस्त	विराजबहू	(नाट्य रूप)
	दिसम्बर	विजया	(दत्ता का नाट्य रूप)
1935	फरवरी	विप्रदान	(उपन्यास)
		(मृत्यु के बाद प्रकाशित)	
1938	मार्च	शरत्चन्द्र ओ छात्र समाज	(भाषण समष्टि)
	अप्रैल	छेलेवेलार गल्प	(तरुणों के लिए गल्प समष्टि)
	जून	शुभदा	(उपन्यास)
1939	जून	शेषर परिचय	(" " ")
1948	फरवरी	शरत्चन्द्रेर पत्रावली	

द्वितीय अध्याय
प्रेमचन्दः व्यक्तित्व एवं
कृतित्व

द्वितीय अध्याय

प्रेमचन्द: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रेमचन्द्र के साहित्यकार की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सामाजिक जागरूकता है। इस सामाजिक जागरूकता ने उनके साहित्य को निर्माण का एक अद्भुत बल प्रदान किया है और यही जागरूकता उन्हें हिन्दी के साहित्यिकारों में एक अनोखे वैशिष्ट्य से प्रस्तुत करती है। प्रेमचन्द की सर्व ग्राही दृष्टि ने भारत की अंतरात्मा के रोम-रोम से साक्षात्कार किया है। प्रेमचन्द का जन्म शनिवार, 31 जुलाई, 1880 को बनारस से चार मील दूर लमही नामक गाँव में हुआ था। इनका नाम धनपत राय रखा गया और इनके चाचा इन्हें नवाब राय के नाम से पुकारते थे। इनके पिता अजायबराय निम्न मध्य परिवार के व्यक्ति थे। बनारस मिले के पाण्डेपुर गाँव में उनकी वंशागत थोड़ी सी काश्त थी, लेकिन इससे निर्वाह ठीक ढंग से नहीं हो पाता था।

बालक धनपतराय की पढ़ाई पांचवे वर्ष में प्रारम्भ हो गई थी। ये पहले मौलवी साहेब से उर्दू पढ़ते थे। पढ़ने में ये बहुत ज़हीन थे। इनकी पढ़ाई और मौलवी साहब के संदर्भ में अमृतराय ने लिखा है — “इसमें कोई शक नहीं कि इन मौलवी साहब ने उनकी फारसी की बुनियाद खूब पक्की कर दी थी, कि उस पर यह महल खड़ा हो सका। प्राइवेट तौर पर जब इण्टर और बी०ए० करने की नौबत आई उस वक्त नवाब राय को यह तय करने में एक मिनट नहीं लगा कि एक विषय ज़रूर फारसी होना

चाहिये। इस तरह थोड़ा बहुत पढ़ते और सारे दिन मटरगश्ती करते, खेलते कूदते मजे में दिन गुज़र रहे थे।¹ सन् 1892 में अजायबराय का तबादला जीमनपुर को हो गया। प्रेमचन्द निर्धनता के साथ परिवार की गतिविधियों में लिप्त थे।

प्रेमचन्द जब आठ वर्ष के थे माँ का देहान्त हो गया और कुछ दिन बाद पिताजी ने दूसरी शादी कर ली। दादी घर में रहने लगी किन्तु उनका स्वभाव ठीक नहीं था। निर्धनता के कारण खाना पीना तो अपर्याप्त था ही, माता के अभाव के कारण वे उस स्नेह से भी सदा वंचित रहे, जिसमें शैशव फूलता फलता है। बचपन जिस वातावरण का इच्छुक होता है, वह प्रेमचन्द को कभी नहीं मिला। प्रेमचन्द्र 13 वर्ष की आयु तक हिन्दी बिल्कुल नहीं जानते थे। उर्दू के उपन्यास पढ़ने का उन्माद था। मौलाना शरर, पं० रतननाथ सरशार, मिर्जा रूसवा, मौलवी मुहम्मद अली उस समय के सर्वप्रिय उपन्यास कार थे। फिराख गोरखपुरी ने इनके सम्बन्ध में लिखा है— “उन्होंने (प्रेमचन्द ने) बताया कि उनकी दोस्ती एक तमाखू बेचने वाले लड़के के साथ हो गई थी। स्कूल से वापिसी पर प्रेमचन्द उस लड़के के घर जाते। वहाँ बुजुर्गों में हुक्के का दौर जारी रहता था। और तिलिस्मे होशरूबा प्रतिदिन पढ़ा जाता था। तिलिस्मे होशरूबा सुनते सुनते बचपन ही में प्रेमचन्द की सोई हुई कल्पना जाग उठी थी, जैसे बचपन में अलिफ—लैला पढ़ कर डिकिन्स की सुप्त प्रवृत्तियां जागी थीं।²

1. प्रेमचन्द, कलम का सिपाही, अमृतराय, प्र० 16, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962

2. फिराख गोरखपुरी, लरत, आजकल, अक्टूबर, प्र० 9, 1952 दक्षित: प्रेमचन्द: एक अध्ययन, ले० राजेश्वर गुरु, प्र० 27 मध्य प्रदेशीय प्रकाशक समिति, भोपाल

प्रेमचन्द्र ने 13 वर्ष की आयु में प्रथम रचना 1893 में लिखी। सन् 1865 में हाईस्कूल में भरती होने के लिये बनारस आये। 15 वर्ष की आयु में प्रेमचन्द्र का विवाह कर दिया गया और कुछ समय बाद इनके पिताजी का स्वर्गवास थी हो गया। इस संदर्भ में शिवरानी ने प्रेमचन्द्र के कथन को प्रस्तुत किया है— “मेरा विवाह बस्ती जिले के मेंहदावल तहसील में रामापुर गांव में ठीक हुआ। उमर में वह मुझसे ज्यादा थी। जब मैंने उनकी सूरत देखी तो मेरा खून सूख गया वह बदसूरत तो थीं ही उसके साथ-साथ ज़बान की भी मीठी न थीं। पिताजी चाचाजी से बोले—लाला जी ने मेरे लड़के को कुर्रें में ढकेल दिया। अफसोस— मेरा गुलाब सा लड़का और उसकी यह स्त्री।”¹

प्रेमचन्द्र जब नौवी कक्षा में पढ़ते थे इनके पिता का तबादला लखनऊ में हो गया। परिवार में इनकी चाची के कारण इनका अपनी पत्नी से मतभेद हो गया। पिताजी छः महीने बीमार रह कर स्वर्ग सिधार गये। घर में चाची, विमाता और उनके दो बालक थे आमदनी कुछ थी नहीं। एक वकील साहब के लड़कों को पांच रुपये वेतन पर पढ़ाने का काम मिल गया था। प्रेमचन्द्र को 1899 में एक स्कूल में 18 रु० माहवार पर सहकारी अध्यापक की नौकरी मिल गयी। प्रेमचन्द्र ने 1893 में साहित्य सर्जना का काम नाटक लिख कर प्रारम्भ किया था। सन् 1898 में इन्होंने उपन्यास लिखना प्रारम्भ कर दिया था। 1898 में इसरारे मुहब्बत नामक उपन्यास लिखा। इसी

1. प्रेमचन्द्र घर में, शिवरानी, पृ०-48.

समय रूठी रानी नाम से इन्होंने एक एतिहासिक उपन्यास लिखा। सन् 1902 में इलाहाबाद के ट्रेनिंग कॉलेज में भरती हुये और 1904 में प्रथम श्रेणी में जे०सी०टी० की परीक्षा पास की। 1908 में हैडमास्टरी से पदोन्नति होकर सब डिप्टी इंस्पेक्टर पद पर हमीरपुर स्थानान्तरित हुये। 1905 में शिवरानी देवी नामक विधवा से अपना दूसरा विवाह किया। राजेश्वर गुरु ने अपनी पुस्तक में लिखा है— “प्रेमचन्द का पारिवारिक जीवन सुखी न था। वे चाहते कि अपनी सौतेली माँ के प्रति अपना उत्तर दायित्व निभाये रहें और अपनी अबोध पत्नी को भी सन्तुष्ट रख सकें। सौतेली माता के प्रति वे सदैव सजग, त्यागपूर्ण कर्तव्यशीलता निबाहते रहे, लेकिन पत्नी को अनुकूल न बना सके।”¹

प्रेमचन्द ने साहित्य साधना के द्वारा अनमोल रत्न प्रस्तुत किये। उनकी मृत्यु 1936 में हो गयी। प्रेमचन्द बहुत सीधे सादे, बेलौस मुहब्बत करने वाले इंसान थे। उनके जीवन में कोई दोहरा रूप नहीं था, वो जो घर में थे वही बाहर भी थे। सब जगह वह एक ही थे, झील के पानी की तरह साफ, पारदर्शक। वह हर ओर से साधारण निम्न वर्ग के प्रतिनिधि दिखाई देते थे। प्रेमचन्द की सादगी और निर्धनता के संदर्भ में उनके छोटे पुत्र अमृतराय ने लिखा है— “मुझे उनके दोनों पौरों की धानी उंगली की अच्छी तरह से याद है जो जूते को चीर कर बाहर निकलती रहती थी। सादगी इससे ज्यादा नहीं जा सकती। अपने ऊपर कम से कम खर्चयह उनकी

1. प्रेमचन्द घर में शिवरानी, प्र० 48.

जिन्दगी का साधारण नियम था। घर के बाकी लोग भी कोई मखमल नहीं पहनते थे। मगर उनसे सभी अच्छे थे यों तो कभी खैर इतने पैसे ही नहीं हुये कि कोई बड़ी एशो-इशरत से रहता लेकिन जहां तक मैं तक समझता हूँ उस आदमी को एशो इशरत की भूख या हविस भी नहीं थी।”¹

प्रेमचन्द अत्यन्त ही सादगी और साधारण कपड़ों में रहते थे कि कोई आसानी से ये नहीं सोच सकता था कि वे वही प्रेमचन्द हैं तथा सम्राट। दुबले पतले शरीर पर खददर का कुरता और धोती, बड़ी बड़ी मूंछें, कमजोर आंखें और सूखा हुआ चेहरा, खददर की टोपी और पैरों में चप्पल, यही उनका साधारण व्यक्तित्व का स्वरूप था। प्रेमचन्द का आकर्षण उनके बाह्य में जरा भी नहीं था, परन्तु जो जरा भी अधिक उनके सम्पर्क में आया, वह बिना उनका चिर-श्रद्धालु बने नहीं रह सका। इलाचन्द जोशी ने उनके विषय में हंस पत्रिका में लिखा है— “उनका चमकता हुआ विस्तृत ललाट, अन्तर्भेदिनी तथा सुगंभीर और शान्त आंखें, मोटी भौंहें और बड़ी मूंछें मिलकर एक ऐसे विधित्र व्यक्तित्व को व्यक्त करती थीं, जो पूर्णतः भारतीय होने पर भी अपने भावलोक के एकाकीपन में एक निराली वैदेशिक विशेषता रखता था। जार युग में नाना कड़वे अनुभवों से निष्पेषित प्रताड़ित रूस के प्रतिभाशाली मनीषियों के अतल व्यापी अव्यक्त विक्षोभ की सघन गहनता उनके व्यक्तित्व में लक्षित होती थी”।²

1. अमृतराय, लेख नवभारत, नागपुर 25.7.1954

2. इलाचन्द जोशी, हंस पत्रिका, दक्षित: राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द: एक अध्ययन मध्य प्रदेशीय प्रकाश, समिति, प्र० 48, भोपाल।

प्रेमचन्द अधिक बातें नहीं करते थे लेकिन जब एक बार वह खुले दिल से बातें करने लगते थे, तब वह केवल बहुत ज्यादा बातें ही नहीं करते थे, बल्कि बहुत बढ़िया और तार्किक बातें भी करते थे। उनसे बात करने वाले को भी सम्मोहन प्रतीत होने लगता था। उनके चेहरे से प्रसन्नता झलकती थी और आंखें करुणा पूर्ण थी और उनमें एक कोमलता दिखाई देती थी जो जीवन की समस्याओं पर गम्भीर विचार करने और अनेक प्रकार के कष्ट सहने से उत्पन्न होती है। वे बहुत मजाक परसंद व्यक्ति थे और अवसर के अनुसार तुरन्त ही एक से बढ़कर एक बात कहते थे। प्रेमचन्द के जीवन के लगभग अन्तिम समय में रघुपति सहाय फिराक गोरखपुरी उनसे मिले थे, उस भेंट के विषय में वह लिखते हैं— “उनके मस्तिष्क में यथेष्ट विचार धारा प्रभावित होती थी और वह लोगों से अपनी भावी रचनाओं की उपयोगी योजनाओं की चर्चा करते थे। उनकी बातचीत उसी प्रकार स्वाभाविक और आवेशपूर्ण होती थी और उसमें बराबर सूक्ष्मदर्शिता, तत्परता, चिन्तन, सूक्ष्मता की झलक दिखाई देती थी। बातों बातों में वह ऐसे ठहाके लगाते थे, जिन्हे सुनने वाले जल्दी भूल नहीं सकते और उस बीमारी के दिनों में भी जब कोई हास्यापद बात उनके सामने आ जाता थी, तब उस पर वह उसी प्रकार मगर कमजोर ठहाके लगाया करते थे।”¹

प्रेमचन्द के उन्मुक्त ठहाके उनकी उस जीवनी शक्ति के द्योतक हैं, जिसने उन्हें सदैव अक्षुण्ण रखा, जीवन की घटनाओं और अनुभवों के आधार पर प्रेमचन्द ने जीवन

1. फिराक गोरखपुरी, हंस पत्रिका, प्रेमचन्द अंक, प्र० 778, दक्षिण राजेश्वर गुरु, ले० प्रेमचन्द: एक अध्ययन, प्र० 48, मध्यप्रदेशीय प्रकाशक समिति, भोपाल, 1958

की समस्याओं और आवश्यकताओं के बारे में कुछ सिद्धान्त बना लिये थे। प्रारम्भ में ये सिद्धान्त इतने स्पष्ट न थे, लेकिन उम्र के साथ सिद्धान्त उनके लाखों भाषणों और व्यवहार बरताव का अंग बनते गये। सरलता, सौजन्य, सहानुभूति के साथ चित्त की उदारता प्रेमचन्द में थी, जो उदार से उदारतर होती गई। वे सदा मनुष्यत्व के बहुत पास और आडम्बर से बहुत दूर थे। वे अपने कर्मचारियों को अधीनस्थ नहीं मानते थे, यहाँ तक कि नौकर से भी काम कराते सकुचाते थे। सन् 1933 में अपने ही प्रेस में हो गई हड़ताल में वे मजदूरों की तकलीफों की कल्पना से विहल हो गये थे। वह बहुत ऊँचे हृदय के आदमी थे। यहां तक कि उन मजदूरों को भी वे अपने समान समझते थे। इस सदर्भ में शिवरानी ने लिखा है— “कभी—कभी मैं जिद करके पैर दबा देती। वे विवश होकर दबवा लेते थे। स्त्रियों से काम करवाना उन्हें पसंद न था। नौकर दरवाजे पर बैठा रहता था, लेकिन वे अन्दर आकर पानी पीते थे। धोती भी खुद धो लेते थे, यद्यपि नौकर खाली ही रहता। कभी कभी मैं इन हरकतों पर बिगड़ भी जाती और कहती कि नौकर फिर क्यों है। आप बोलते अपनी जरूरतें खुद पूरी करना आदमी का धर्म है। आज तो नौकर है, हो सकता है कि कभी नौकर न रहे, फिर मैं पांच रुपये का नौकर तो खुद हूँ।”¹

प्रेमचन्द की उर्दू कहनियाँ सोजे वतन के क्रम में चाचा द्वारा प्रदत्त नाम नवाब राय के नाम से निकली थीं। पिता को दिया गया नाम धनपत राय उनके जीवन की

1. शिवरानी देवी, ल० प्रेमचन्द घर में, प्र० 36

विषमताओं से कभी मेल न खा सका। मुंशी दया नारायण निगम ने प्रेमचन्द नाम सुझाया और सोजे वतन के अग्नि समर्पण कांड के बाद नवाब राय सदा के लिये प्रेमचन्द बन गये। प्रेमचन्द का लेखन कार्य अनवरत रूप से चलता रहा। नवाब राय के सदा के लिये विलोप के बाद प्रेमचन्द का उदय हुआ। प्रेमचन्द की पहली कहानी 'ममता' थी जो 1909 में 'जमाना' में निकली थी। अंग्रेजी शासन नीतियों से क्षुब्ध होकर देशसेवा की दिशा में उन्होंने सरकारी नौकरी को त्याग दिया। नौकरी छोड़ने के संदर्भ में प्रेमचन्द ने स्वयं 'कफन' में लिखा है— "यह बात 1920 की है। असहयोग आन्दोलन जोरों पर था। जलिया वाला बाग का हत्याकाण्ड हो चुका था। उन्हीं दिनों महात्मा गांधी ने गोरखपुर का दौरा किया। गाजी मियां के मौदान में ऊंचा प्लेटफार्म तैयार किया गया। दो लाख से कम का जमाव न था। क्या शहर क्या देहात, श्रद्धालु जनता दौड़ी चली आती थी। ऐसा समारोह मैंने अपने जीवन में कभी न देखा था। महात्मा जी के दर्शनों का यह प्रताप था कि मुझ जैजा मरा हुआ आदमी भी चेत उठा। इसके दो ही चार दिन बाद मैंने अपनी 20 साल की नौकरी से इस्तीफा दे दिया।"¹

प्रेमचन्द के जीवन के 1921-1936 के काल में नौकरी के इस्तीफे के बाद वह लेखन कार्य में व्यस्त हो गये। उनके मन पर पड़ा अप्रत्यक्ष प्रतिबन्धों का बोझ एक बारगी उठ गया। मन ने तो स्वास्थ्य हासिल किया ही, साथ साथ शरीर भी निरोग हो गया। सरकारी नौकरी के लम्बे काल में प्रेमचन्द पेट के रोग के मरीज हो गये थे और

1. प्रेमचन्द, कफन, प्र० 67 दक्षित राजेश्वर गुर ले० प्रेमचन्द: एक अध्ययन, प्र० 35

नौकरी की गुलामी छोड़ते ही नौ साल पुराना जीर्ण रोग दूर हो गया। प्रेमचन्द अब कर्मण्यता और व्यस्तता के जीवन में उतर आये। सन् 1935 में डॉ० इन्द्रनाथ मदान को उनकी जिज्ञासा के उत्तर में प्रेमचन्द ने लिखते हुये अपने नितान्त कर्मशील और व्यस्त जीवन के साथ साथ अपने जीवन के व्यक्तिगत पक्ष को भी जानने का अवसर दिया। वे लिखते हैं— “नहीं, मेरे जीवन में कोई प्रेम प्रसंग नहीं घटा। मेरे विवाहित जीवन में कोई रोमांस नहीं है। मेरी पहली पत्नी 1904 में मर गई। वह एक अभागी स्त्री थी। वह देखने में तनिक भी अच्छी नहीं थी और मैं उससे संतुष्ट नहीं था। फिर भी जैसे सभी पति करते हैं, मैं बिना किसी शिकवे शिकायत के उसका निर्वाह करता रहा। जब वह मर गई, तो मैंने एक बालविधवा से शादी कर ली।”¹

प्रेमचन्द जीवन की जिन विषमताओं से गुजरे थे उनके अनुभव ने उन्हें कट्टर भाग्यवादी बना दिया था। जीवन में मिलने वाली असफलताओं और विषमताओं के आधार पर प्रेमचन्द भाग्यवादी हो गये थे। लेकिन क्या एसी ही भाग्यवादिता तो हम अन्य साहित्यकारों में नहीं पाते? 1920 में इन के दूसरे बच्चे की मृत्यु हो गयी, जिसका इनके मन पर गहरा सदमा हुआ। प्रेमचन्द घोर नास्तिक थे। वे भगवान के अस्तित्व पर कभी विश्वास नहीं कर सके। प्रेमचन्द ने नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद सबसे पहले महावीर प्रसाद पोद्दार के साथ साझे में चर्ये की दुकान की फिर बनारस आकर कर्घों का काम आरम्भ किया दोनों में सफलता न मिली तो कानपुर में स्वदेशी आंदोलन में

1. इन्द्रनाथ मदान, कफन, प्र० 68, उद्धित — वही—

प्रारम्भ किये गये एक विद्यालय में नौकरी कर ली। वहां भी न पटी तो बनारस आकर डेढ़ वर्ष तक 'मर्यादा' का सम्पादन किया, जब तक श्री सम्पूर्णानन्द जेल में रहे। उनके छूटकर आने के बाद काशी विद्यापीठ में अध्यापक हो गये। इस कार्य से भी एक वर्ष बाद अलग हो गये, लमही चले आये और देहात में बैठ कर कुछ प्रचार और कुछ साहित्य सेवा में जीवन सार्थक करने लगे।

सन् 1923 में कुछ साझेदारों के साथ उन्होंने बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की और अपने अनुज महताब राय को उसकी व्यवस्था में लगाया। स्वयं लखनऊ की गंगा पुस्तकमाला में नौकर हो गये। तब तक वे 'रंगभूमि' की रचना कर चुके थे। सन् 1926 में लौटकर 'सरस्वती' प्रेम की देख रेख में लग गये। सन् 1928 में प्रेमचन्द ने 'माधुरी' का सम्पादन स्वीकार किया और सन् 1931 तक वहां रहे। इसी बीच सन् 1930 में बनारस से 'हंस' का सम्पादन किया। आर्थिक रूप से प्रेमचन्द को घाटा हो रहा था। 'जागरण' निकाला उसमें घाटा, प्रेस में घाटा, घाटा जब सहनशीलता पार कर गया तो धन की चिन्ता हुयी। संयोग से सत्र 1934 में बम्बई के अजन्ता मूवीटोन से 9000/- रु० सालाना का आमंत्रण मिला। किन्तु फिल्मी दुनिया उनको रास न आई वे अपने निश्चित सिद्धान्तों के साथ समझौता करने को तैयार नहीं थे। जैनेन्द्र कुमार को बम्बई से लिखे पत्र में उन्होंने फिल्मी संसार के बारे में व्यक्त किया—
“फिल्म में डायरेक्टर सब कुछ है। लेखक कलम का बादशाह ही क्यों न हो, यहां डायरेक्टर की अमलदारी है। वह यह कहने का साहस नहीं रखता, मैं जनरुचि को

जानता हूँ, आप नहीं जानते। डायरेक्टर कहता है, मैं जानता हूँ जनता क्या चाहती है। हमने व्यवसाय खेला है। धन कमाना हमारी गरज है। जो चीज़ जनता हमसे मांगेगी, वही हम देंगे। इसका जवाब यही है— अच्छा साहब हमारा सलाम लीजिये। हम घर जाते हैं। वही मैं कर रहा हूँ।”¹

बम्बई से लौटने के बाद से उनका स्वास्थ्य फिर गिर चला। आर्थिक चिन्तायें अलग सर उठाये खड़ी थीं। तथा जीवन को एक मिशन का रूप देने के बाद उसमें विराम की गुंजाइश नहीं थीं। भारतीय साहित्य परिषद के साथ ‘हंस’ और अपने को संलग्न करने के बाद उनका कार्यक्षेत्र और विस्तृत हो गया था। उनका स्वास्थ्य गिरने लगा और वे बीमारी में तिल तिल कर घुलने लगे। प्रेमचन्द ने वर्ग संघर्ष को समाज की अनिवार्य घटना माना। ‘प्रगतिशील लेखक संघ’ की स्थापना में योगदान देने में भी उनका सक्रिय सहयोग रहा। 18 जून 1936 में यह महान साहित्यकार इस संसार को अलविदा कह गया। प्रेमचन्द का जीवन स्वयं एक उच्च कोटि की रचना है। उनके जीवन को विकास के तीन क्रमों के रूप में देखा जा सकता है— पहला क्रम जन्म से 16 वर्ष की अवस्था तक। जिसे जीवन संग्राम के लिये तैयारी का समय मान सकते हैं, दूसरा क्रम इकतालीस वर्ष की अवस्था तक, जिसमें उन्होंने उस जमाने की सरकारी नौकरी का अभिशाप झेलते हुये साहित्य साधना की और तीसरा क्रम मृत्यु पर्यन्त चला,

1. प्रेमचन्द अंक, प्र० 900, दक्षित: राजेश्वर गुरु वही, प्र० 43.

जिसमें उन्होंने जीवन और युग से निरन्तर युद्ध करते हुये साहित्य के अनमोल रत्न प्रस्तुत किये।

प्रेमचन्द का जीवन आर्थिक रूप से अत्यन्त अभावों में व्यतीत हुआ। जब से काशी के क्वीन्स कॉलेज में पढ़ते थे तक इनकी फीस तो माफ हो गयी थी किन्तु इनके पास पांव में पहनने के लिये जूते तक नहीं थे। एक लड़के को द्यूशन पढ़ाकर छः बजे तक वहाँ से निकलते थे और फिर अपने देहात के घर में पांच मील पैदल चलकर आठ बजे पहुँचते थे। सुबह आठ बजे फिर घर से स्कूल निकल पड़ते किन्तु समय पर नहीं पहुँच पाते थे। रात को भोजन करके कुष्पी के सामने बैठ कर पढ़ते पढ़ते सो जाया करते थे। जब इनके पिताजी की मृत्यु हुयी उस समय के विषय में इनका कहना है— "घर में मेरी स्त्री थी, विमाता थीं, उनके दो बालक थे और आमदमी एक पैसे की नहीं। घर में जो कुछ लेई—पूँजी थी, वह पिताजी की छः महीने की बीमारी और क्रिया कर्म में खर्च हो चुकी थी। और मुझे अरमान था, वकील बनने का और एम०ए० करने का। नौकरी उस जमाने में भी दुष्प्राप्य थी, जितनी अब है। दौड़ धूप करके शायद दस बारह की कोई जगह पा जाता, पर यहाँ तो आगे बढ़ने की धुन थी— पांव में लोहे की नहीं अष्टधातु की बेड़िया थीं और मैं चढ़ना चाहता था पहाड़ पर।"¹

1. कफन और चन्द कहानियाँ, प्रेमचन्द, पृ० 60.

निजी जीवन में प्रेमचन्द शादी करके भी सुखी न रह सके। शिवरानी देवी नामक एक विधवा से अपना दूसरा विवाह इन्होंने किया। घर में इनकी विमाता और इनकी पत्नी में कलह रहती थी और प्रेमचन्द को उसके परिणामों से गुजरना पड़ता था। जीवन की जिन विषमताओं में से प्रेमचन्द गुजरे थे, उनके अनुभव ने उन्हें कट्टर भाग्यवादी बना दिया था। वह कहते थे कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि भगवान की जो इच्छा होती है वही होता है और मनुष्य का उद्योग भी उसकी इच्छा के बना सफल नहीं होता। लेकिन यह भाग्य वादिता अकर्मण्यता की पर्याय नहीं है। प्रेमचन्द का मन ऐसा हारा हुआ नहीं था, वह तो पराजय को परिणाम नहीं मानते थे। उसे वे केवल एक घटना मानकर अपने सबल को टूटने नहीं देते थे। रंगभूमि का सूरदास कहता है—

“तुम जीते मैं हारा। यह बाजी तुम्हारे हाथ रही। मुझसे खेलते नहीं बना। तुम मजे हुये खिलाड़ी हो। तुम जीते मैं हारा तुम मंझे हुये खिलाड़ी हो, दम नहीं उखड़ता खिलाड़ियों को मिलाकर खेलते हो और तुम्हारा उत्साह बहुत है। हमारा दम उखड़ जाता है, हांफने लगते हैं और खिलाड़ियों को मिलाकर नहीं खेलते। आपस में झगड़ते हैं। हम हारे तो क्या मैदान से भागे तो नहीं, रोये तो नहीं, धांधली तो नहीं की। फिर खेलेंगे, जरा दम ले लेने दो। हार-हार कर तुम्हीं से खेलना सीखेंगे। एक न एक दिन हमारी जीत होगी।”¹

1. कफन, प्र० 68 (वही)

प्रेमचन्द के व्यक्तित्व के संदर्भ में प्रो० अशफाक हुसैन बी०ए० आर्क्सफोर्ड ने अपने संस्मरण में पहली मुलाकात के विषय में लिखा है जिसमें उन्होंने प्रेमचन्द को बेहद सादा और आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बताया है। वे लिखते हैं— “मुझे प्रेमचन्द जी बहुत लज्जाशील मालूम हुये और उनमें कोई खास ऐसी बात न मालूम हुई जो किसी का दिल अपनी तरफ खींच सकती। उनका रंग जर्द था। बड़ी बड़ी मूँछे थीं, कमजोर आंखें थीं और करीब करीब बिल्कुल सूखा हुआ चेहरा था। अपने दुबले पतले जिस्म पर वह खददर का कुरता और धोती पहने हुये थे। सिर पर खददर की टोपी और पैरों में चप्पल थी। बस, इसके सिवा ओर कुछ भी नहीं। लेकिन गौर से देखने पर मालूम होता था कि वह बहुत समझदार हैं और अपने इरादे के और ख्यालात के बहुत पक्के हैं। उनकी ये सब खूबियाँ पहले पहल देखने पर इसलिये जाहिर नहीं होती थीं कि वह उनकी लज्जा शीलता के परदे में छिपी रहती थीं। लेकिन फिर भी मुझे दरअसल यह न मालूम हो सका कि ये कौन शख्स हैं, क्योंकि वह बहुत कम बातें करते थे और उनकी बातों से उनके बारे में कुछ भी पता नहीं चलता था। एक तो वह बातें ही बहुत कम करते थे और दूसरे जब वह बोलते थे, तब उनकी बातों से न तो कोई खास लियाकत ही जाहिर होती थी और न उनमें कोई खास दिलचस्पी ही थी। हां उनकी आंखों में जरूर कुछ खास बात थी। और नहीं तो इसके अलावा उनकी शकल से किसी के दिल पर कोई खास असर नहीं पैदा होता था।”¹

1. प्रेमचन्द अंक, प्र० 873 दृ 874 उद्धित।

हिन्दी साहित्य के कथा सम्राट कहे जाने वाले **प्रेमचन्द बहुआयामी व्यक्तित्व के** स्वामी थे। वे खुले दिल से सबसे बातें करते थे। **उन्मुक्त हास्य के साथ निसंकोच** आत्मीयता उनके व्यक्तित्व का प्रमुख आकर्षण था।

प्रेमचन्द आडम्बरों से सदैव दूर रहे तथा एक साधारण व्यक्ति की भूमिका में उनका व्यक्तित्व सर्वविदित है। उनके व्यक्तित्व में सरलता, सौजन्यता तथा सहानुभूति के साथ चित्त की उदारता भी दिखाई देती है। कोई भी व्यक्ति पहली मुलाकात के बाद उनसे अवश्य ही प्रभावित होता था। प्रेमचन्द के व्यक्तित्व में अहंकार तथा ढोंग शब्दों का समावेश नहीं किया जा सकता है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों तथा कहानियों में एक आम आदमी से जुड़े सारे तथ्यों को देखा जा सकता है।

प्रेमचन्द के व्यक्तित्व के आधार पर यह सहज ही कहा जा सकता है कि वे सामाजिक कलाकार हैं जिनका साहित्य, युग को प्रतिबिम्बित करता चला है। युग चेतना, मन के संस्कार और जीवन की परिस्थितियों से मिलकर प्रेमचन्द का व्यक्तित्व हमारे सामने आता है। प्रेमचन्द ने जीवन को अपने अनुभव की आंखों से देखा था और जीवन के संबंध में उनकी अपनी विशिष्ट धारणाएँ थीं। उनका कहना था कि अपने मार्ग, अपने अध्ययन, अपनी फिलासफी के बिना कोई सच्चा कलाकार नहीं हो सकता। अपनी आंखों से जीवन को देखो, अपने अनुभव से उसे जांचो, जैसा पाओ वैसा लिखो। प्रेमचन्द को मानवता वादी कहा जा सकता है। उनका मानव प्रेम इस आधार पर अवलम्बित न था कि प्राणि मात्र में एक आत्मा का निवास है। द्वैत और अद्वैत का

व्यापारिक महत्व के सिवा वह और कोई उपयोग नहीं समझते थे और वह व्यापारिक महत्व उनके लिये मानव जाति को एक दूसरे के समीप लाना आपस के भेद भाव को मिटना और भ्रातृभाव को दृढ़ करना ही था। वे मानते थे कि जीवन की सार्थकता इसी में है कि प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों के बीच में जो सेवा मार्ग है, उसको अपनाया जाये। इससे जीवन पवित्र बनता है। एक स्थान पर प्रेमचन्द लिखते हैं— “सिर्फ रुपया कमाना ही आदमी का उद्देश्य नहीं है। मनुष्यता को ऊपर उठाना और मनुष्य के मन में ऊँचा विचार पैदा करना भी उसका कर्तव्य है। अगर यह नहीं है, तो आदमी और पशु दोनों बराबर हैं।”¹

परम्परागत धर्म में आस्था रखने के लिये जिस दृढ़ आधार की आवश्यकता होती है, उसे प्रेमचन्द ने कभी स्वीकार नहीं किया, वे ईश्वरवादी थे ही नहीं। धर्म के मूल तत्व समता, सेवा और सत्य को लेकर चलने वाले प्रेमचन्द वर्गों और वर्गों की इकाइयों में पतित हो जाने वाले जीवन को प्रेम के बल की आशा देते हैं। प्रेम को वह भोग और आत्म सेवा का साधन नहीं मानते, किन्तु जीवन को विकास और विस्तार देकर उसे मानव सेवा का साधन मानते हैं। स्त्री पुरुष के सम्बन्ध में वे यह तो मानते हैं कि नारी पुरुष के जीवन में प्रेरणा और शक्ति का संचार करती है। लेकिन यह नहीं मानते कि नारी केवल भोग की वस्तु है, नारी को वे मातृत्व के पथ पर बढ़ती हुई अखण्ड शक्ति मानते हैं। उन्होंने नारी की चरमता उसके मातृत्व में मानी है। प्रेमचन्द सामाजिक

1. प्रेमचन्द, प्रेमचन्द अंक, प्र० 915 (दक्षितः प्रेमचन्द एक अध्ययन) प्र० 269.

कलाकार हैं। उनके लिये मात्र-व्यक्ति के सुख दुख विशेष महत्व नहीं रखते। व्यक्ति उनके लिये समाज सापेक्ष है और इसी प्रकार व्यक्ति के सुख दुख भी। वो व्यक्ति को देखते हैं तो उसकी एकान्त सत्ता में देख सकना उनके लिये संभव नहीं है। उसके जीवन क्रम को वह समाज की पृष्ठभूमि पर अंकित करते हैं और इस समाज की सीमा का कोई अन्त नहीं है।

प्रेमचन्द के व्यक्तित्व के गहन सर्वेक्षण के बाद कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी उद्देश्य से यदि रचना की है तो वह यही मानवतावाद है और क्रांति भी। किन्तु प्रेमचन्द का साहित्य ठीक इन दो शब्दों के परिभाषा व्याप्ति से परे है। यदि नाम देने का प्रश्न है तो जीवनवाद ही होगा। प्रेमचन्द में अन्याय और उत्पीड़न के प्रति विद्रोह देखने को मिलता है। हमारे रथ चक्र में कीचड़ की तरह लगकर उसकी प्रगति में बाधा पहुँचाने वाली प्रवृत्तियाँ, अकर्मण्यता, कायरता, शान्तिवाद के विरुद्ध कला का संग्राम भी मिलेगा। किन्तु इन सब की तह में, स्वाकारात्मक पक्ष में हृदय की प्रवृत्तियों के मुक्त विस्तारपूर्ण विकास के बीच प्रेम और आशा का अमर सन्देश भी मिलेगा। प्रेमचन्द साहित्य इसी भव्यता का आलोक तीर्थ है जो कि पूरी तरह उनके व्यक्तित्व की छाप पाठकों पर छोड़ता है।

प्रेमचन्द: कृतित्व

प्रेमचन्द्र के कृतित्व को समझने के लिये उनके युग के यथार्थ स्वरूप की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। यह वह समय था, जब भारत की ग्राम व्यवस्था विश्रृंखल हो चुकी थी, और उसका आर्थिक तथा सामाजिक ढांचा बदल रहा था। देश में अंग्रेजी शासन दृढ़ हो चुका था। प्रथम भारतीय स्वतंत्र युद्ध के बाद सामन्तशाही देश से जा रही थी और एक ओर पूंजीवाद तथा दूसरी ओर नौकरशाही साम्राज्यवाद के रथ पर चढ़कर आ चुके थे। औद्योगिक केन्द्र समाप्त हो गये तो वहां की आबादी गाँव पर बोझ बनने लगी। फिर गाँव के कारीगरों की रोज़िया खत्म होने से उनके पास कृषि के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रह गया। इस प्रकार मजबूरन सारे देश को खेती करने की लाचार हालत में डाल दिया गया। भारत मिले जुले कृषि और उद्योगों के स्तर से गिरकर अंग्रेजी पूंजीवाद के अधीन कृषि उपनिवेश बन कर रह गया। भारतीय ग्राम व्यवस्था के साथ सामन्ती प्रथा का अन्त हुआ और पूंजीवाद साम्राज्यवाद की छत्रछाया में विकसित हुआ। पूंजीवाद को प्रेमचन्द ने 'महाजनी सभ्यता' संज्ञा दी है। पूंजीवाद के साथ वर्ग चेतना आई और मध्यवर्ग अस्तित्व में आया। इन परिस्थितियों के संदर्भ में प्रेमचन्द के विचार हैं— "परिस्थितियों वश मनुष्य इस सभ्यता के चंगुल में जकड़ा रहा, उसके छूटने की कोई गुंजाइश नहीं थी। अबतक दुनिया के लिये इस सभ्यता की रीति नीति का अनुसरण करने के सिवा कोई उपाय न था। उसे झक मारकर उसके आदेशों

के सामने सिर झुकाना पड़ता था। महाजन अपने जौम में फूला फिरता था। सारी दुनिया उसके चरणों पर नाक रगड़ रही थी। बादशाह उसका बन्दा, वजीर उसका गुलाम, सन्धि विग्रह की कुंजी उसके हाथ में। दुनिया उसकी महत्वाकांक्षा के सामने सिर झुकाये हुये, हर मुल्क में उसका बोल बाला है।”¹

प्रेमचन्द का साहित्य रचना काल लगभग सन् 1900 से प्रारम्भ होकर सन् 1936 तक चला। अपनी 56 वर्ष की आयु और 36 वर्ष के रचना काल में प्रेमचन्द ने बहुत कुछ पढ़ा बहुत कुछ जीवन संघर्ष के क्रम में अनुभव से प्राप्त किया और बहुत कुछ लिखा। संस्कार, अनुभव और परिस्थितियों की प्रतिक्रिया जितनी प्रबल प्रेमचन्द में हुई उतनी उनके समकालीन किसी अन्य साहित्यकार में नहीं। प्रेमचन्द के लिये साहित्य रचना विलास नहीं था, विवशता थी, भीतर की कुरेदन और तड़पन उन्हें अभिव्यक्ति के लिये मजबूर करती थी। प्रेमचन्द के साहित्यिक कृतित्व के सम्बन्ध में डॉ० राजेश्वर गुरु लिखते हैं— “साहित्य को कल्पना के क्षेत्र से खींचकर जीवन के क्षेत्र में लाते समय प्रेमचन्द यह ध्यान रखते हैं कि वह जीवन की सीमाओं में कहीं इतना न घिर जाय कि वर्तमान में फंसकर विकास की सम्भावनाओं को भूल जाय। तभी साहित्य का स्वरूप स्थिर करते हुये वे उसमें आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की मांग करते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रेमचन्द साहित्य को सामाजिक जीवन के निकट लाना चाहते हैं। वे जीवन की समस्याओं से साहित्य को परिचित कराना चाहते हैं और आदर्श के आकाश दीप के

1. प्रेमचन्द, प्रभात, ग्वालियर, 6-10-1952, प्र० 8, दक्षिण: प्रेमचन्द एक अध्ययन, राजेश्वर गुरु, प्र० 98.

प्रकाश में उसकी यात्रा को अधिक से अधिक निरापद बनाना चाहते हैं। धर्म भी जीवनोत्कर्ष का हामी है, इसीलिये संभवतः प्रेमचन्द साहित्य को धर्म के समकक्ष मानते हैं।¹

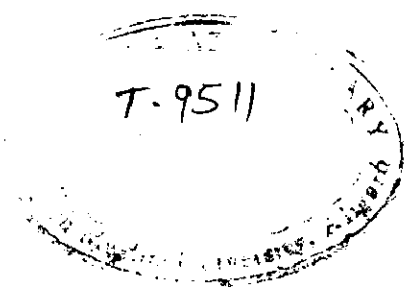
प्रेमचन्द के कृतित्व के विषय में चर्चा करते समय में आवश्यक है कि उन्होंने 'सेवा सदन' से पूर्व भी कुछ रचनायें लिखीं थी जो कि कुछ प्राप्य हैं और कुछ अप्राप्य हैं। उन्होंने सबसे पहले अपने मामा के ऊपर एक घटना घटित होने के बाद प्रहसन की रचना की थी। इस प्रहसन के एक वर्ष बाद उन्होंने एक नाटक और पांच वर्ष बाद एक उपन्यास लिखा। तभी 'रूठी रानी' नाम से उनका एक ऐतिहासिक उपन्यास सामने आया। इस में उन्होंने राजाओं की वीरता और देशभक्ति के आदर्श रूप को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया। 'रूठी रानी' में प्रेमचन्द की दृष्टि देश की अवनत दशा और नारी की निरवलिम्बिता तथा बेबसी की ओर गयी है।

सन् 1901 से लेकर 'सेवा सदन' के प्रकाशन तक प्रेमचन्द ने अनेक उपन्यास और कहानियां लिखी हैं। इनमें कृष्णा, वरदान, प्रेमा और श्यामा उपन्यास हैं। 'सोजेवतन': सप्त सरोज, और नवनिधि कहानी संग्रह हैं। 'वरदान' की कहानी बचपन में संग संग खेले खाये तरुण तरुणी की दुखान्त कथा है। 'वरदान' का एक दृश्य शरत चन्द्र के 'देवदास' के एक दृश्य से मिलता जुलता है।

1. डॉ० राजेशवर गुरू, ले० प्रेमचन्द: एक अध्ययन, प्र० 58.

‘वरदान’ के बाद ‘सोजे वतन’ क्रम की कहानियाँ आती हैं। ये कहानियाँ देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत हैं। अपने कृतित्व के आरम्भिक काल से ही प्रेमचन्द की दृष्टि समाज और देश की दशा की ओर गई थी। सप्त सरोज और नवनिधि कहानी संग्रहों में सामाजिक और ऐतिहासिक कहानियाँ हैं। एक कहानी है ‘यही मेरी मातृभूमि है’। जिसमें प्रेमचन्द ने उन पुरातन वैभव की बातों के लोप हो जाने का रोना रोया है और भक्ति के गीतों में शान्ति मिलने का संकेत किया है। उन्होंने ‘सप्त सरोज’ और ‘नवनिधि’ की कहानियों में से ‘बड़ेघर की बेटी’, ‘पंच परमेश्वर’, ‘सौत राजा हरदोल’, ‘रानी सारन्ध विक्रमादित्य की कटार’ को अपनी सर्वश्रेष्ठ कहानियों में गिना है। सौत कहानी में नारी के उसक चरम त्याग का चित्रण है जो वह अपने पति को सुखी बनाने के लिये करती है। इस संदर्भ में डॉ० राजेश्वर गुरु ने लिखा है— “ये दोनों कहानी संग्रह यद्यपि प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कृतियाँ हैं, किन्तु इनमें प्रेमचन्द का कहानी रूप एक दम निखरा हुआ मिलता है। जिज्ञासा और कुतूहल की रक्षा करते हुये संवेदनात्मक सरस ढंग से प्रेमचन्द कथा को लेकर चलते हैं और कथा का अन्त अकस्मात् चमत्कृत करने वाला, संवेदन की मार्गस्पर्शी चोट के रूप में होता है। यह ठीक है कि प्रेमचन्द इन कृतियों में भी यथासंभव अपनी उपदेशात्मक वृत्ति प्रकट कर ही देते हैं। लेकिन अतीत के गौरव की स्वीकृति के लिये जिस भावुकता की आवश्यकता है, वह इतनी प्रचुर मात्रा में यहाँ विद्यमान है कि इसकी नीरसता मालूम नहीं पड़ती।”¹

1. डॉ० राजेश्वर गुरु, ले० प्रेमचन्द: एक अध्ययन, प्र० 138.



‘सेवा सदन’ प्रेमचन्द की और सम्भवतः हिन्दी साहित्य की वह अदभुत कृति है जिसने 1916-1917 में हिन्दी पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया किया था। इसमें प्रेमचन्द ने नारी की अशिक्षा, गिरी दबी हालत और उन परिस्थितियों की ओर संकेत किया है जिसमें नारी अपने पति को इन्द्रिय सुरत के यन्त्र से अधिक नहीं समझ सकती। सेवा सदन के बाद प्रेमचन्द ने ‘प्रेमाश्रम’ उपन्यास की रचना की। इसमें ज्ञानशंकर की कहानी के माध्यम से समाज के दो वर्गों को आमने सामने नायक और खलनायक के रूप में खड़ा कर दिया है। प्रेमाश्रम इस बात का स्पष्ट सबूत है कि प्रेमचन्द की दृष्टि व्यक्ति पर नहीं, व्यक्ति के माध्यम से समाज पर ठहरती है। प्रेमाश्रम की महत्ता इसी कारण है कि उसमें व्यक्ति मिलता है और वर्ग भी, एक समस्या है उसका हल भी, द्वन्द्व मिलता है और उसका शयन भी और सब मिलाकर वह कहानी है ही ज्ञानशंकर की कहानी।

सन् 1906 में ‘प्रतिज्ञा’ और 1923 में ‘निर्मला प्रेमचन्द’ के शुद्ध रूप से सामाजिक उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं। प्रतिज्ञा और ‘निर्मला’ में प्रेमचन्द ने विवाह के प्रश्न को ही एकमात्र प्रमुखता दी है। भारतीय समाज में विवाह के प्रश्न में सबसे भयंकर अभिशाप दहेज प्रथा का है। इसी प्रथा के कारण सुमन नामक नारी पात्र को वेश्या बनना पड़ा। इसी प्रथा के कारण निर्मला की ट्रेजेडी सामने आती है। निर्मला में नायिका और नायक दोनों के चरित्रों का बड़ा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रेमचन्द ने किया है। इसके बाद प्रेमचन्द ने ‘रंगभूमि’ की रचना कर साहित्य को ऋणी किया। देशी

राज्यों के प्रसंग के अतिरिक्त 'रंगभूमि' की शेष कथा भारतीय कृषि जीवन में ओद्योगीकरण के प्रवेश की कथा है। इसमें एक ओर गाँव का वह परम्परागत जीवन है, जहां सहकारिता है, पंचायत है, और दूसरी ओर आक्रामक ओद्योगीकरण है जो गाँव के सामूहिक जीवन को छिन्न-भिन्न करके रख देता है। रंगभूमि कोरमकोर यथार्थ चित्रण है, जिसमें कोई सेवासदन नहीं है कोई प्रेमाश्रम नहीं। यहाँ संस्थावाद के बजाय व्यक्ति के आन्तरिक गौरव का महत्व है।

प्रेमचन्द के कृतित्व की यात्रा में 'काया कल्प' 1928 नामक उपन्यास महत्वपूर्ण है। इसकी कथा के तीन भाग हैं— एक भाग का सम्बन्ध हिन्दु मुस्लिम समस्या है, दूसरे का किसान प्रजा और राजा से है और तीसरा भाग राजा के अन्तःपुर का यथार्थ चित्रण है। प्रेमचन्द ने 'कायाकल्प' में हिन्दु मुस्लिम दंगों के द्वारा उस समय की दूषित साम्प्रदायिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है। कायाकल्प में दो प्रकार के कल्प मिलते हैं, एक वह जो नित नये भोगों के लिये देवप्रिया कराती है, दूसरा वह जो धन वैभव का दानव निर्मल से निर्मल मन का कर देता है। कायाकल्प वासना को प्रेय, और वैभव को सेवा में बदल देने के सत्य सामने रखता है। प्रेमचन्द ने इस उपन्यास के बाद समाज के मध्यवित्त के यथार्थ जीवन तथा पुलिस तंत्र के कारनामों का पर्दाफाश करने के लिये 'गबन' उपन्यास की रचना की। गबन में प्रेमचन्द ने जीवन को जैसा देखा है चित्रित कर दिया है। गबन की कथा के दो पक्ष हैं। पूर्वाद्ध, जो इलाहाबाद में घटित होता है और उत्तर है जिसकी घटना का क्षेत्र कलकत्ता है। पूर्वाद्ध मध्यवित्त वर्ग के एक

परिवार की कथा है और उत्तरार्द्ध राजनैतिक चेतना की पृष्ठभूमि पर पुलिस के कारनामों का विशद वर्णन है।

सन् 1932 में प्रेमचन्द ने 'कर्मभूमि' उपन्यास की रचना की जिसमें समझोतावादी प्रवृत्ति को चित्रित किया गया है। कर्मभूमि में दो आन्दोलन हैं। एक शहर में एक गांव में। शहर का आन्दोलन म्यूनिसिपल के खिलाफ है, गांव का ज़मींदार के खिलाफ। शहर का आन्दोलन सफल होता है गांव का असफल उसकी समस्या को कमेटी के हाथों सौंप दिया जाता है। शहर का आन्दोलन इसीलिये सफल होता है कि जनता की अजेय दृढ़ अविचलित ताकत उसके साथ थी। कर्मभूमि उपन्यास के संदर्भ में डॉ० राजेश्वर गुरु ने लिखा है— "कर्मभूमि का प्रारम्भ आधुनिक शिक्षा प्रणाली की आलोचना से होता है और अन्त किसानों की शोषित दशा के कमेटीवाद के हल द्वारा। शहर और गांव के अलग अलग चित्र हैं, मानों दोनों में कोई सम्बन्ध न हो। शहर में म्यूनिसिपलटी फिर खलनायक के रूप में आती है। धर्म का जोर शहर और गांव दोनों पर है। लेकिन शहर की अपेक्षा गांव पर उसका कुप्रभाव ज्यादा है। शहर का समाज धर्म और रोजगार अलग-रखता है गाँव की ज़मींदार धर्म को रोजगार में सानकर शोषण करता है। शिक्षा व्यवस्था के सिवा दूसरी प्रमुख समस्या अछुतों की है कि जो शहर और गाँव दोनों में व्याप्त है। तीसरा प्रसंग नारी जागरण का है।"¹ प्रेमचन्द नारी को अनंत प्रेरणा का स्रोत मानते हैं और उस नारी को, जो युगों पुरुषों की दासी

1. डॉ० राजेश्वर गुरु, ले० प्रेमचन्द: एक अध्ययन, प्र० 220.

किया गया उपन्यास है, जिसकी कथा का आधार इन्हीं परिस्थितियों को प्रतिबिम्बित उपन्यास है। इस उपन्यास का कथानक भी महाजनी सभ्यता की परिस्थितियों में प्रारम्भ प्रेमचन्द के काल में 'मंगलसूत्र' उनके द्वारा रचित अन्तिम तथा अन्त

किमानों तथा आत्मा को जगने का काम करते हैं।

परिपक्व चिन्ता का परिणाम है जिसमें वे जागरण को चित्रित करने के साथ नायिकी स्वरूप, प्रेम का रहस्य दर्शन भी गोदान में अछूता नहीं छोड़ा है। गोदान प्रेमचन्द ने मुख्य नायिकी के लिए सम्बन्धों की व्यंजना, समाज की वर्तमान परिस्थितियों में उसकी और शहर की साथ लेकर चलते हैं। इस गांव शहर के विरुद्ध चित्रण के बाद प्रेमचन्द है। प्रेमचन्द इस व्यवस्था को, इसके दोनों स्तम्भों को गिरते हुये दिखाने के लिये गाँव अपने लिये अधिक से अधिक सुविधाएँ और लाभ प्राप्त करने के लिये शहर में रहने एक किसान, दूरिया जमींदार। किसान गांव में रहता है, जमींदार नहीं सभ्यता के बीच दर्शाना चाहते हैं। गांव की छिन्न-भिन्न होती हुई व्यवस्था में दो स्तम्भ दिखाई देते हैं दोनों की कथाओं को एक साथ रखकर प्रेमचन्द महाजनी सभ्यता के व्यापक प्रभाव व प्रभाव को चित्रित करने वाला उपन्यास है। गाँव और शहर की इस समानता के कारण तथा सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'गोदान' की रचना की। 'गोदान' गांव एवं शहर में महाजनों रचना कम के इस अनवरत प्रयासों में प्रेमचन्द ने इसके बाद अपने बहुचर्चित

लिये सदैव प्रयत्नशील रही। कर्मभूमि के सभी पात्र नायिकाओं से प्रेरणा ग्रहण करते हैं बनकर रही, मुख्य की सहभागिनी और यहां तक कि अभागिनी बनने

करता है। मंगल सूत्र में यही धारणा मिलती है। आगे इसी विद्रोह के स्वर को और तीव्रता मिलती है ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। मंगल सूत्र में प्रेमचन्द मैक्सिम गोर्की की उस बात को मानने लगे थे जिसमें गोर्की ने कहा है कि— “मैं आतंकवाद का समर्थन नहीं करता, लेकिन इन्सान की आत्मरक्षा के अधिकार से इन्कार नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि जो एक बार हो चुका है उसकी पुनरावृत्ति की आशंका भय से हत्या की जा सकती है और इस स्वाभाविक इच्छा से भीकि अपनी नैतिक मौत से भी भयंकर कोई घटना घटित न हो”।¹

प्रेमचन्द के कृतित्व में उपरोक्त उपन्यासों के बाद हमें कहानियों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि उनकी पहली कहानी ‘संसार का अनमोल रत्न’ है। यह 1907 में ‘जमाना’ पत्र में छपी थी। 1909 में पांच कहानियों का संग्रह ‘सोजे वतन’ के नाम से छपा था। हिन्दी कहानी का प्रथम विकास उनकी प्रथम कहानी ‘पंचपरमेश्वर’ में मिलता है, जो पहली बार ‘सरस्वती’ में 1916 में प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द ने 1913 से हिन्दी भाषा में कहानियाँ लिखना प्रारम्भ किया था। प्रेमचन्द की कहानियों का विकास स्थिर करते हुये प्रकाश चन्द्र गुप्त ने लिखा है— “जिस क्रम में प्रेमचन्द की कहानियाँ प्रकाशित हुईं। वह लगभग इस प्रकार थी— 1. सप्त सरोज, 2. नवनिधि 3. प्रेम पूर्णिमा

1. कल्चर एन्ड प्यूपिल: मैक्सिम गोर्की, प्र० 72.

4. प्रेम पचीसी 5. प्रेम प्रतिमा 6. प्रेम द्वादशी, 7. समर यात्रा, 8. मान सरोवर भाग एक एवं दो, 9. कफन।”¹

प्रेमचन्द की कहानियों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। 1. प्रारम्भिक युग, 2. विकास युग, तथा 3. यथार्थोन्मुखी कहानियाँ। अन्य आलोचकों ने प्रेमचन्द के कहानी संग्रहों को निम्न स्वरूप में वर्गीकृत किया है:

“सप्त सरोज, नवनिधि, प्रेमपचीसी, प्रेमपूर्णिमा, प्रेमद्वादशी, प्रेमतीर्थ, प्रेमपीयूष, प्रेमकुंज, प्रेमचतुर्थी, पंच प्रसून, सप्त सुमन, कफन, मानसरोवर भाग 1,2,3,4,5 प्रेम प्रतिमा, प्रेरणा, प्रेमप्रमोद, प्रेम सरोवर, कुत्ते की कहानी, जंगल की कहानी, अग्नि समाधि, प्रेम पंचमी तथा प्रेम गंगा”।²

सप्त सरोज प्रेमचन्द का पहला कहानी संग्रह था। इसकी कहानियाँ आदर्शोन्मुखी हैं। इनमें से ‘पंचपरमेश्वर’ और ‘बड़े घर की बेटी’ तो प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती हैं। इस संग्रह की कहानियों में प्रेमचन्द समय की यथार्थता से अत्यन्त आत्मीयता से परिचित दिखाई देते हैं। जहाँ बड़े घर की बेटी ‘पंचपरमेश्वर’ और परीक्षा कहानियों में वे एकदम आदर्शवादी हैं, वहाँ सजजनता का दण्ड, ‘नमक का दरोगा’ और ‘उपदेश’ कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें यथार्थ को बड़ी निर्भीकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। ‘सौत’ कहानी में नारी जीवन के त्याग और करुणा का बड़ा ही

1. हिन्दी साहित्य की जनवादी धारा, ले० प्रकाश चन्द्र गुप्त, प्र० 105.

2. श्रीपति मिश्र ले० कहानी कला और प्रेमचन्द, प्र० 44

मार्मिक चित्र मिलता है। नारी अपने पति की तुष्टि के लिये कितना बड़ा त्याग कर सकती है यह गोदावरी के चरित्र द्वारा स्पष्ट हो जाता है।

‘नवनिधि’ की कहानियों में अधिकांश ऐतिहासिक हैं। ये जातीय गौरव की परिचायक हैं। ‘ममता’ और ‘पछतावा’ हृदय परिवर्तन की कहानियाँ हैं। इनमें किसान जीवन की दुखावस्था और जमींदार के अत्याचार दिखाये गये हैं। इसी समय की दो कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं— एक है ‘यही है मेरी मातृभूमि’, दूसरी है— ‘शिकारी राजकुमार’। दोनों यथार्थवादी रचनायें हैं एवं इनमें जीवन के वास्तविक स्वरूप देखने को मिलते हैं। इसके बाद की कहानी रचना में एक विस्तृति सामने आती है। नारी जीवन, विधवा समस्या अछूत समस्या, दहेज समस्या, आर्थिक समस्याएँ आदि ऐसे विषय हैं जो कि प्रेमचन्द की कहानियों में प्रमुखता के साथ समावेश होने लगे। प्रेमचन्द के कृतित्व का गहन अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि कई भाषाओं के साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। इसी कारण उन्होंने प्रचलित परिपाटी से हटकर कथा के क्षेत्र में एक नवीन दिशा को प्रस्तुत किया। इस संदर्भ में डॉ० गीता लाल ने अपनी पुस्तक में लिखा है— “प्रेमचन्द पर कुछ हद तक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उर्दू, बंगला, अंग्रेजी और हिन्दी साहित्य का प्रभाव पड़ा। किन्तु, वे इससे शीघ्र ही मुक्त हो गये। प्रतिभाशाली और जागरूक कलाकार होने के कारण सबसे प्रभावित होते हुये थी, वे एक स्वतन्त्र साहित्य कार थे। उन्होंने अपनी आखें सदैव खुली रखीं। किसी विषय की कोई नई पुस्तक हो, तो वे बड़ी दिलचस्पी से उसे एक बार देख जाते थे। उनके पास समाज

को कहने के लिये बहुत सी बातें थीं, अतः उनकी भावनाओं और अनुभवों की सच्चाई निर्विवाद है, जो किसी महान कलाकार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण गुण है।¹

प्रेमचन्द का मानना था कि ऐसी कहानी जिसमें जीवन के किसी अंग पर प्रकाश न पड़ता हो, जो सामाजिक रूढ़ियों की तीव्र आलोचना न करती हो, जो मनुष्य में सद्भावों को दृढ़ न करे या जो मनुष्य में कुतूहल का भाव न जाग्रत करे, कहानी नहीं है। प्रेमचन्द के कृतित्व के परिप्रेक्ष्य में यह आसानी से कहा जा सकता है कि वे अपनी कहानी कला के माध्यम से अपने युग का यथार्थ, समुचित विवेचना के साथ इस प्रकार उपस्थित करते हैं कि इस बौद्धिक विवेचन के द्वारा सामाजिक रूढ़ियों की तीव्र आलोचना हो सके और ये आलोचना केवल यथार्थवादी न होकर किन्हीं आदर्श संकेतों से युक्त हों जिसमें मनुष्य में सद्भाव दृढ़ हो सकें। प्रेमचन्द एक साथ ही आदर्श और यथार्थ को लेकर चलते हैं। अन्याय, अत्याचार, शोषण और ऐसे ही अन्य अमानवीय तत्वों के प्रति अब उनका मन अधिक सचल हो चला था और वे यथार्थ की आदर्श में परिणति दिखाने का मोह छोड़ चुके थे। इस प्रकार इस काल की कहानियों में यथार्थवाद के तीन रूप मिलते हैं आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, जैसा 'ममता', 'युक्ति धन' आदि कहानियों में है। एक ऐसा यथार्थवाद जो एक हृदय विदारक चीख की तरह प्राणों के मर्म तक पहुँच जाता है। जिसके साथ मानों प्रेमचन्द का ह्यूमेनिस्टिक मन जुड़ा हुआ है। ऐसी कहानियों में 'सदगति', 'पूँस की रात', 'कफन' आदि हैं। प्रेमचन्द

1. डॉ० गीता लाल, ले० प्रेमचन्द का नारी, चित्रण, प्र० 34 हिन्दी साहित्य संसार, पटना।

का यथार्थवादी रूख उनकी उस प्रसिद्ध कहानी से स्पष्ट हो जाता है, जो वाजिद अली शाह के जमाने के पतनोन्मुख समाज की करुण कथा कहती है। इस कहानी में प्रेमचन्द अत्यन्त कलात्मक ढंग से सामन्ती खण्डहरों में पतन की कगार पर खड़े हुये जन जीवन की दयनीय तस्वीर देते हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों का अन्तिम विकास उनकी राजनैतिक आन्दोलन सम्बन्धी कहानियों में मिलता है। ये कहानियाँ 1930-32 के भारतीय आन्दोलन की विभिन्न तसवीरें प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों में जनता के अदम्य उत्साह के चित्रण हैं। इनमें देशभक्ति की लहर के प्रसंग, जागृत समाज के दुर्लभ साहस की कहानियाँ और अविचलित संकल्पों के उदाहरण, बलिदान की कथाएँ और समझदार लोगों के विचारशील कथोपकथनों द्वारा स्वराज्य की कल्पनाएँ मिलती हैं। ये कहानियाँ भी यथार्थवाद की श्रेणी में रखी जा सकती हैं, यद्यपि ये यथार्थवाद 'कफन', 'पूस की रात', सदगति के यथार्थवाद से भिन्न हैं। प्रेमचन्द की श्रेष्ठ 'कहानियों' में निम्न लिखित कहानियाँ कही जा सकती हैं— सारंधा, मंदिर-मस्जिद, दुर्गा का मन्दिर, पंचपरमेश्वर, बड़े घर की बेटी, कामना तरु, हरदौल, आत्माराम, सुजान भगत, सती। एकट्रेस, बूढ़ी काकी, लैली, सौत, 'नमक' का दरोगा, लांछन, मंत्र, घासवाली, शतरंज के खिलाड़ी।

अग्नि समाधि, विनोद, विध्वंस, विक्रमादित्य का तेगा, बिक्री के रुपये, ईश्वरीय न्याय, घर जमाई, खूचड़, माँ, आभूषण, प्रायश्चित्त, महातीर्थ तथा सत्याग्रह आदि। कृतित्व के आधार पर प्रेमचन्द उपन्यासकार के रूप में अधिक स्वीकारे जाते हैं। इस

संदर्भ में डॉ० रामविलास शर्मा का कथन है— “यदि कहानीकार प्रेमचन्द और उपन्यासकार प्रेमचन्द में एक को ही हिन्दी साहित्य में जगह देने की बात हो तो शायद उपन्यासकार प्रेमचन्द को ही उस जगह के लिये चुना जायेगा।”¹

प्रेमचन्द के उपन्यासों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है।

1. वरदान (प्रकाशन काल उपलब्ध नहीं है)।
2. सेवा सदन — 1918
3. प्रेमाश्रम — 1923
4. रंगभूमि — 1925
5. काया कल्प — 1926
6. निर्मला — 1927
7. प्रतिज्ञा — 1929
8. गबन — 1931
9. कर्म भूमि — 1932
10. गोदान — 1936
11. मंगलसूत्र (अपूर्ण) — 1936

प्रकाशन काल क्रम के अनुसार प्रेमचन्द का कहानी संग्रह निम्न रूप से प्रस्तुत किया जा सकता।

1. सप्त सरोज — 1917
2. नवनिधि — 1918
3. प्रेमपूर्णिमा — 1920
4. प्रेम पचीसी — 1923

1. डॉ० रामविलास शर्मा, ले० प्रेमचन्द और उन का युग प्र० 133।

5. प्रेम प्रसून – 1924
6. प्रेम प्रमोद – 1926
7. प्रेम प्रतिभा – 1926
8. प्रेम द्वादशी – 1926
9. प्रेम तीर्थ – 1929
10. प्रेम चतुर्थी – 1929
11. अग्नि समाधि तथा अन्य कहानियाँ – 1929
12. पांच फूल – 1929
13. समर यात्रा और ग्यारह अन्य राजनैतिक कहानियाँ – 1930
14. सप्त सुमन – 1930
15. प्रेम पचीसी – 1930
16. प्ररेणा और अन्य कहानियाँ – 1932
17. प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ – 1933
18. मान सरोवर - प्रथम भाग – 1936

यद्यपि उपरोक्त सूची में प्रेमचन्द के कई कहानी संग्रहों यथा प्रेम पीयूष, कफन आदि का उल्लेख नहीं है, किन्तु फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि प्रेमचन्द के कहानी संग्रहों का प्रकाशन काल स्थिर करने का यह सर्वप्रथम व्यापक प्रयास है। प्रो० गीता लाल द्वारा दिये गये प्रेमचन्द के प्रमुख कहानी संग्रहों के प्रथम प्रकाशन काल के आधार पर हमें कहानीकार प्रेमचन्द के विकास क्रम की एक सरसरी रूप रेखा अवश्य ज्ञात हो जाती है। लेकिन प्रेमचन्द की विचारधारा पर गांधीवाद तथा दूसरी युग धाराओं के प्रभाव के सम्यक आकलन के लिये इतना पर्याप्त नहीं है। प्रेमचन्द के कहानी संग्रहों के

प्रकाशन काल के आधार पर उनमें संकलित कहानियों के रचना काल तक पहुंचना सर्वदा निरापद या खतरे से खाली नहीं है। क्योंकि अनेक कहानियाँ ऐसी भी हैं जो एकाधिक संग्रहों में पायी जाती हैं। उदाहरण के लिये निम्नलिखित कहानियाँ ऐसी हैं जो उनके विभिन्न कालों के अलग-अलग संग्रहों में पायी जाती हैं: बैंक का दिवाला (प्रेम द्वादशी-प्रेम चतुर्थी) शान्ति (प्रेम द्वादशी-प्रेमचतुर्थी), लाग-डाट (प्रेम-प्रसून-प्रेम चतुर्थी) गृहदान (प्रेमप्रसून, सप्त सुमन-प्रेमद्वादशी) बैर का अंत (सप्त सुमन-प्रेम पचीसी) मन्दिर (प्रेमतीर्थ, प्रेमपीयूष, सप्त सुमन) ईश्वरीय न्याय (प्रेमपूर्णिमा, सप्त सुमन) सुजान भगत (प्रेम पीयूष, सुप्त सुमन) ममता (नवनिधि, सुप्त सुमन) मन्त्रा (प्रेम पीयूष, प्रेमतीर्थ) सती (प्रेम तीर्थ, प्रेम पीयूष, सुमन) कजाकी (प्रेम तीर्थ, प्रेमपीयूष) आत्माराम (प्रेम पचीसी, प्रेमद्वादशी) दुर्गा का मन्दिर (प्रेम पूर्णिमा, प्रेमद्वादशी) बड़े घर की बेटी (सप्त सरोज, प्रेमद्वादशी) बिक्री के रुपये (प्रेमपीयूष, प्रेमद्वादशी) मुक्ति मार्ग (प्रेमपीयूष, प्रेमद्वादशी) पंच परमेश्वर (सप्त सरोज, प्रेमद्वादशी) शंखनाद (प्रेमपूर्णिमा, प्रेमद्वादशी) आहुति (समरयात्रा, कफन) आदि। स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में कहानी संग्रहों के प्रकाशन काल के आधार पर प्रेमचन्द की कहानियों का रचना काल निर्धारित नहीं किया जा सकता।

तृतीय अध्याय
शरतचन्द्र की
कहानियों में नारी
चित्रण

तृतीय अध्याय

शरतचन्द्र की कहानियों में नारी चरित्र चित्रण

शरत चन्द्र के साहित्य से पूर्व के युग में साहित्य का प्रधान विषय मनुष्य के व्यक्तिगत दुख सुख पर केन्द्रित रहता था। शरतचन्द्र ने यह अनुभव किया कि मनुष्य समाज का अंग है। उनके जीवन की प्रत्येक गतिविधियाँ सैकड़ों विधि निषेध द्वारा सीमा बद्ध हैं। शरत साहित्य के युग में व्यक्ति के ऊपर समाज द्वारा किये गये विचार शून्य उत्पीड़न और अलाभकारी नीति के विरुद्ध मन का विद्रोह दिखाई देता है। इस युग का सुन्दर सत्य में सम्मिलित दिखाई देता है। इसमें व्यक्ति और समष्टि की व्यक्ति के हृदय के अविग और रूपहीन समाज शक्ति के गतिवेग का समादेश देखने को मिलता है। शरतचन्द्र के सिरजे हुये साहित्य के रस की उपलब्धि को देखकर उन्हें वर्तमान युग का महान साहित्यकार कहा जा सकता है। इनके संदर्भ में डॉ० सुबोध चन्द्र सेन गुप्त का कथन है— “समाज शक्ति के विरुद्ध जो प्रचंड अभियोग विदेशी साहित्य में आन्दोलित हुआ है, उसकी गूँज शरत चन्द्र की रचनाओं में भी पहुंची है। उनकी रचना की एक प्रधान विशेषता यह है कि समाजशक्ति के उत्पीड़न से व्यक्ति का व्यक्तित्व क्षुण्ण नहीं हुआ है। और यह भी ध्यान में रखना होगा कि शरत चन्द्र ने समाज शक्ति पर चोट की है प्रधानतः उसकी नीति की ओर से अर्थ नीति की ओर से उतना आघात

नहीं किया है। हमारा देश दारिद्र्य से पीड़ित है और इस दैत्य का हाहाकार उनकी रचनाओं में प्रकट न हुआ हो यह बात भी नहीं है”।¹

शरतचन्द्र का मानना था कि समाज शक्ति चिरकाल से चले आ रहे संस्कार से प्रकट होती है। मनुष्य के पास बुद्धि है, अनुभूति है। इनके नारी पात्रों में सारी अनुभूति और बुद्धि जन्म से अर्जित संस्कारों पर निर्भर है। इनके पात्रों में दो स्तर की चेतना देखने को मिलती है एक अनुभूति तो लोगों की बुद्धि संस्कार और समाज से प्राप्त होती है दूसरी अनुभूति की प्रेरणा मनुष्य के हृदय के अन्तर से उत्पन्न हो कर प्रकट होती है। शरत चन्द्र की प्रतिभा का श्रेष्ठ विकास इसी परस्पर विरोधी शक्तियों के संघर्ष के चित्रण में हुआ है। इसी लिये इनके द्वारा रचित नारी एवं पुरुष पात्रों के चरित्र विशेष स्थान रखते हैं। पुरुष बुद्धिजीवी है इसलिये वह सारे कार्य बुद्धि पर आधारित होकर करता है वहीं नारी हृदय के आवेग द्वारा व्यवहार करती है। शरत द्वारा रचित नारी चित्रण में इसीलिये एक द्वन्द्व एवं संघर्ष देखा जा सकता है इसीलिये शरत साहित्य में नारी चरित्र का स्थान ऊँचा है। नारी के चरित्र में प्रवृत्ति के साथ सचेतन संस्कार की इस टक्कर को शरत चन्द्र ने व्यापक रूप में देखा है। प्रेम का आकर्षण चुम्बक के आकर्षण की तरह प्रबल होता है, उस आकर्षण के वेग से बचना बड़ा कठिन होता है। यह प्रेम आकर्षण शरत चन्द्र की कहानियों में उनके द्वारा रचित नारी पात्रों में देखने को भलीभाँति मिलता है।

1. डॉ० सुबोधचन्द्र सेन गुप्त, ले० शरत प्रतिभा, अनुवाद: पं० रूपनारायण पाण्डेय प्र० 25, हिन्दी ग्रन्थ रचनाकर प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई।

शरत चन्द्र बंगला साहित्य के प्रसिद्ध विचारक एवं कलाकार साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित है। उन्होंने जीवन के मानसिक पक्ष का व्यापक अंकन किया है। इनकी कहानियों में नारी जीवन अपनी सभी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ जिस मार्मिक ढंग से प्रस्तुत हुआ है वह अत्यत्र दुर्लभ है। कुछ आलोचकों द्वारा शरत चन्द्र की यह कहकर अलोचना होती रही है कि उनके पुरुष पात्र अधिकतर वह हैं जो नारी की महत्ता का शिकार हो चुके हैं, यह अनुचित है। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि नारी निर्माण में पुरुष का भी हाथ होता है। शरत चन्द्र ने इसी अनुपात से अपनी कहानियों में नारी पात्रों को प्रधानता दी है। शरत चन्द्र ने अपने निबंध 'नारी मूल्य' में बहुत ही विदग्धतापूर्ण ढंग से नारी के महान मूल्य का निर्धारण किया है परन्तु फिर भी नारी की महत्ता वे उसके पुरुष से संबंध में ही आंकते हैं।

शरत चन्द्र के नारी पात्रों का सूक्ष्म अध्ययन उनकी नारी संबन्धी विशिष्ट धारणाओं का स्पष्ट परिचायक है। जिस समय शरत ने लिखना प्रारम्भ किया उस समय सुधारवादी आन्दोलनों की लहर चल रही थी। कलकत्ता में ब्रह्म समाज के आंदोलन के फलस्वरूप जातीय विभेदों के विरोध में आवाज उठाई जा रही थी, सती प्रथा को बंद करने का प्रयत्न किया जा रहा था तथा स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा था। विधवा विवाह को बढ़ावा दिया जा रहा था। नारी शिक्षा में बाल विवाह के कारण रुकावटें आ रही थीं। बाल विवाह एक धार्मिक कार्य की तरह माना जाता था। 18-20 वर्ष की आयु तक पहुंचते पहुंचते अधिकांश नारियां विधवा हो जाया करती थीं। प्रथम

यौवन में ही विधवा हो जाना बहुतों की नियति बन गया था और क्योंकि विधवा विवाह एकदम निषिद्ध था, इसलिये विधवाओं की एक बड़ी संख्या समाज के लिये विकट समस्या बनकर सामने खड़ी थी।

धर्म में जड़ निष्ठा संभवतः पुरुषों से अधिक स्त्रियों का गुण होता है। परंपरा से चले आने वाले आचारों का बिना उनका रहस्य समझे हुये पालन करना धार्मिक जीवन का एक मात्र चिन्ह था। इन मिथ्या आचारों में अशिक्षा के कारण स्त्रियों की ही आस्था अधिक थी। बंगाल की नारियों की दुरावस्था को देखकर तत्कालीन बहुत से कलाकारों विचारकों ने उसके विरुद्ध आवाज़ उठाई, परन्तु शरत चन्द्र का विद्रोह सबसे अधिक सशक्त, तर्कपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक था। इस संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक में लिखा है— “अपने समाज की कुरीतियों का जहाँ उन्होंने चित्रण किया, वहीं वे उसकी अमिट आस्था तथा मर्यादा का भी अंकन करते रहे। इस संबंध में उनका दृष्टिकोण कभी निराशावादी नहीं रहा। स्त्री समाज की वकालत शरत चन्द्र ने नितांत बौद्धिक स्तर पर की है। उनका निबंध नारी का मूल्य उनके गहन अध्ययन, चिंतन तथा संवेदनशीलता का सूचक है। भले को बुरे से अलग करना वह भलीभांति जानते थे। प्राचीन तथा नवीन में जहां भी जो कुछ अच्छा तथा शुभ है वह उनके लिये ग्राह्य है। इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन उन्होंने अपने साहित्य में किया है।..... बंगाल की नारी समाज के लिये शरत चन्द्र ने जो कुछ भी किया, उसका सही सही मूल्यांकन आने वाले युग के सामाजिक इतिहासकार ही कर पायेंगे। जिस कार्य को बड़े से बड़े

सुधारक भी एक साथ मिलकर नहीं कर पाये, उस कार्य को शरत की कला ने मानो अनायास ही सम्पन्न कर दिया। इस दृष्टिकोण से बंगाल के नारी समाज को मुक्ति दिलाने का श्रेय बहुत कुछ शरत चन्द्र को दिया जा सकता है”।¹

नारी के मन को शरत चन्द्र ने एक संघर्ष के बीच देखा है, जहां उसकी स्वतः उठी हुई आकांक्षा की धारा को संस्कारों से सामना करना पड़ता है। ‘रामेर सुमति’ शरत चन्द्र की उत्कृष्टतम कहानियों में से एक है। स्नेह, ममता और वात्सल्य का सर्वोत्तम परिपाक उन्होंने नारी के माध्यम से किया है। नारी का नारीत्व वात्सल्य में है, इस तथ्य का प्रतिपादन हमें शरत की इस कहानी में मिलता है। इस में राम की माता तुल्य भाभी नारायणी का चित्रण अभिव्यक्त किया गया है। नारी का रूप विमाता का है। साहित्य में विमाता को विषम रूप में चित्रित किया जाता है। किन्तु शरत चन्द्र ने इस परम्परा में नारी को सम्मान दिया और नारीत्व के इस अभिशाप के कलंक को अपनी कहानी ‘रामेर सुमति’ में मिटाने की चेष्टा की है। यह स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है कि इस कहानी की नारायणी और दिगंबरी में शरत चन्द्र ने सम्पूर्ण नारीत्व को चित्रित कर दिया है। नारायणी अपने चरित्र की उज्ज्वलता में हिमालय से ऊंची है वहीं दिगंबरी अपने चरित्र की नीचता में समुद्र से भी गहरी है।

‘रामेर सुमति’ कहानी में राम अपनी बड़ी भाभी नारायणी के स्नेह की छाया में पलकर बड़ा होता है, क्योंकि उसकी विधवा जननी की मृत्यु हो चुकी है। नारायणी की

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी ले० शरत के नारी पात्र, प्र० 336, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।

माँ अपनी बेटी के घर पर रहने आ जाती है। उसको राम अच्छा नहीं लगता और वह उसे अपना शत्रु मानने लगती है। नारायणी की ग्रहस्थी में कलह पनपने लगती है। शरत चन्द्र ने बालक राम को आलंबन बनाकर करुण दृश्यों की उत्तम सर्जना की है। अंत में नारायणी के प्रबल स्नेह के आगे दिगंबरी की दुष्ट प्रवृत्तियों को दबना पड़ता है, और वही राम के पीछे घर छोड़कर चल देती है। फिर नारायणी की ग्रहस्थी में स्नेह और ममता का साम्राज्य पूर्ववत् स्थापित हो जाता है।

इस कहानी की मूल संवेदना है नारायणी का अपने पुत्र तुल्य देवर राम के प्रति अगाध स्नेह। वह राम से नाराज होने पर उसे मारती भी है किन्तु हृदय की ममता में कोई कमी नहीं होती। राम को कोई बुरा भला कहे, यह नारायणी को सहन नहीं होता। ऐसे स्थलों पर उसका गला रुंध जाता है। घर की दासी कहती है— “भगवान जाने क्या बात है। हर बात में जिसकी इतनी बुद्धि, इतना धीरज है, वह इतनी सी बात क्यों नहीं समझती ? अब अगर तुम मेरी घर ग्रहस्थी में दखल दोगे तो, सच कहती हूँ, मैं नदी में डूब मरूंगी। तब दूसरा ब्याह करना और राम को न्यारा करके जो जी में आये करना। न मैं देखने आऊंगी, न कुछ कहूंगी सुनूंगी, मगर मेरे सामने नहीं”।¹

शरत चन्द्र ने नारी के इस प्रकार के चित्रण द्वारा वात्सल्य और मातृत्व प्रेम की भावना को अभिव्यक्त किया है। जबकि दूसरी नारी पात्र दिगम्बरी के चित्रण द्वारा नारी मस्तिष्क की संवेदनाओं की विकृति को प्रस्तुत किया है। राम के प्रति दुर्भावना एवं

1. शरतचन्द्र, रामेर सुमति, प्र० 19.

अपनी लड़की के प्रति जड़ एवं कृतिम मोह, यही उसके चरित्र के दो सर्वप्रमुख तत्व हैं। शरत चन्द्र की अन्य कहानी, "बिंदो का लल्ला" (बिंदुर छेले) का कथानक भी लगभग रामेर सुमति जैसा ही है। इस में मूल संवेदना और मनोवेगों की अनुभूति और अधिक व्यापक हो गई है। इस कहानी में संतान बिंदु अपनी जिठानी के एक मात्र पुत्र अमूल्य को अपने सर्वस्व के साथ प्यार करती है। उसके सारे जीवन की वृत्तियां उसी पर केन्द्रित हैं। अमूल्य अपनी सगी माँ को जीजी कहने लगा और चाची को माँ कहने लगा। इस कहानी में शरत चन्द्र ने नारी के खारे आंसुओं से स्नेह का इतना शीतल एवं अगाध सागर प्रस्तुत किया है, जिसकी थाह लेने में बुद्धि की वृत्तियां असमर्थ हो जाती हैं, परन्तु फिर जीवन की सरल एवं अबाध गाति में व्यवधान उपस्थित होता है। घर में यादव एवं माधव की पुफेरी बहिन एलोकेशी, जिन की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है, अपने पति एवं पुत्र के साथ आ जाती है। और यहीं से इस सुखी एवं सम्पन्न ग्रहस्थी में कलह अपनी जड़ जमा लेती है। एलोकेशी की कूटनीति के फलस्वरूप बिन्दु एवं उसकी जिठानी में मनमुटाव हो जाता है और दोनों अलग अलग रहने लगती हैं। पर अगाध स्नेह करने वाली बिन्दु को जेठ, जिठानी और लल्ला का अभाव चिन्तित कर देता है। वह अपने पिता के घर चली जाती है। बीमार होकर वह मरणासन्न हो जाती है। माधव अपने बड़े भाई यादव, भाभी अन्नपूर्णा एवं लल्ला को लेकर उसके पास पहुंचते हैं। तब बिन्दु कहती है— "लाओं जीजी क्या खाने को देती हो। और लल्ला को

मेरे पास लिटाकर तुम सब बाहर जाओ और आराम करो। अब डर नहीं है, मैं मरूंगी नहीं।”¹

इसमें कोई सन्देह नहीं कि बिन्दो के प्रेम का एक बड़ा भाग केवल लल्ला के लिये सुरक्षित है, परन्तु फिर भी इसका अर्थ यह नहीं कि परिवार के अन्य व्यक्तियों के प्रति वह उदासीन है। अपने पति का वह सम्मान करती है। जेठ की बात पर प्राण देने को तैयार है और अन्नपूर्णा का भी वह निजी ढंग से आदर करती है। जिठानी के प्रति एक अज्ञात रोष, एक अपरिचित अवमानना रखते हुये भी वह उनका हृदय से सम्मान करती है। यह शरत चन्द्र की नारियों की महत्ता है कि उन्होंने अपने पुत्रों का कुछ भी ध्यान न रखकर अपने सौतेले पुत्र, देवर एवं भतीजे पर ही सारा प्यार उंडेल दिया है। भारतीय नारी जीवन की इस चरम परिणति को शरत् ने अपने नारी पात्रों के चित्रण में स्वभाविक रूप से प्रस्तुत किया है। उनके नारी पात्र समाज का दर्पण हैं। शरत चन्द्र की नारियों का एक ऐसा वर्ग भी है जिसमें मानव जीवन की सारी दुर्वृत्तियों को अपना रखा है। एलोकेशी इसी वर्ग की प्रतिनिधि पात्र है।

शरत चन्द्र ने रामेर सुमति, बिंदुर छेले तथा भेजदिदी (मंझली बहिन) कहानियों की ऐसी त्रिवेणी प्रस्तुत की है जिसमें मूल संवेदना लगभग एक ही है, किन्तु फिर भी उनके वातावरण में सुस्पष्ट विभिन्नता है। नारी के वात्सल्यपरक स्वरूप पर शरत चन्द्र की श्रद्धा कदाचित्त सर्वाधिक है उसी के अंकन में उनका कलात्मक निखार भी अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है। इस कहानी में परिवार विहीन चौदह वर्ष का बालक किशन

1. शरत चन्द्र, बिंदुर छेले बिंदु का छल्ला, प्र० 41

अपनी स्नेहशीला जननी के देहांत के बाद आश्रय की खोज में अपनी सौतेली बहिन कादंबिनी के पास पहुंचता है। उसकी कठोर प्रवृत्ति की बहिन बड़ी कठिनाई से उसे अपने यहाँ रहने के लिये स्थान देती है। किशन को अपना पेट भरने के लिये जी तोड़कर परिश्रम करना पड़ता है और इतने पर भी बहिन का तिरस्कार और मार-पीट उसका पीछा नहीं छोड़ती। उसे अक्सर भूखा भी रहना पड़ता है। अपार ममता के वातावरण में पले हुए किशन का बाल हृदय किसी प्रकार इन अत्याचारों का अभ्यस्त हो जाता है।

कादम्बिनी की देवरानी हेमांगिनी का हृदय अत्यंत कोमल तथा वात्सल्यपूर्ण है। वह अनाथ किशन के इन कष्टों को देख नहीं पाती और उसकी मंझली बहिन बनकर यथासंभव उसे स्नेह तथा मातृ-सुख का दान देती है। कादम्बिनी को यह अच्छा नहीं लगता और देवरानी जेठानी में कलह रहने लगती है। कादम्बिनी एवं हेमांगिनी दोनों नारी पात्रों के चरित्र का चित्रण उनके व्यक्तित्व के आधार पर अंकन हुआ है। शरत चन्द्र ने बड़ी कुशलता के साथ.... दो अलग-अलग व्यवहार की प्रतिनिधियों के रूप में उनकी साहित्यिक संवेदना को प्रस्तुत किया है। कादम्बिनी अपने आचरण के अनुसार वार्तालाप करती है— “खूब मेरे सगे को बुला लाये हो, रोटियां तोड़ने के लिये। पिता जो कुछ धन सम्पत्ति छोड़ गये थे सभी तो कलमुही ने इसके पेट में टूंस दी है। मुझे तो एक कानी कौड़ी भी नहीं।”¹

1. शरत चन्द्र. भेजदिदी (मंझली बहिन) प्र० 24

कादम्बिनी का कटु आचरण इसलिये भी है कि वो संसार पैसा ही सब कुछ समझती है। इसके लिये वह किसी का भी अपमान कर सकती है। जबकि हेमांगिनी का हृदय कोमल और सरल है। वह अनाथ किशन को देखकर द्रवित हो जाती है और उसका वात्सल्य किशन का रक्षक बन कर सामने आता है। वह किशन से कहती है— “देख किशन, तू अपनी मंझली बहन से कभी कोई बात मत छिपाना। जब जिस चीज़ की जरूरत हो, चुपचाप यहाँ आकर माँग लेना। भाई तुझे मेरे सिर की सौगंध है, आज से मुझे अपनी मरी हुई माँ की जगह ही समझना।”¹ हृदय की सरलता एवं निष्कपटता के कारण ही हेमांगिनी अत्यन्त स्पष्ट वादिनी है। अनाथ किशन के लिये वह अपने पति जेठ तथा जिठानी का सारा आक्रोश सह लेती है किन्तु उसे छोड़ती नहीं।

शरत चन्द्र की कहानियों में माताओं का प्रेम कोरा अतिमानवीय नहीं है। हेमांगिनी भी किशन की गलतियों के लिये उसे दण्ड देती है। यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि अनाथ बालक किशन के प्रति हेमांगिनी का सबल प्रेम ही ‘भेजदिदी’ की मूल संवेदना है। इस कहानी से शरत की यह मान्यता और भी दृढ़ हो जाती है कि वास्तविक वात्सल्य नारी का केवल अपनी संतान के लिये ही नहीं होता वरन् वह किसी भी समय किसी भी बालक के लिये आषाढ़ के प्रथम मेघ की तरह अनायास ही उमड़ सकता है और इस वात्सल्य मूल में मोह, ममता करुणा एवं परोपकार की भावना अबाध गति से बहती है। ‘भेजदिदी’ में हेमांगिनी का प्रेम अपने बच्चों के लिये भी शायद इतना

1. वही प्र० 28.

नहीं जितना किशन के लिये है। नारी का यह व्यापक वात्सल्य सचमुच ही श्रद्धेय है। शरत चन्द्र द्वारा नारी के प्रिया स्वरूप के विकारों का वर्णन करते करते थक जाने के बाद वे उसके जननी स्वरूप का अंकन करके हृदय को पवित्रता एवं शांति देते हैं।

शरत चन्द्र द्वारा रचित लघुउपन्यास 'अरक्षणीया' में निर्धन बंगाली विधवा की विवाह योग्य पुत्री को समाज किन तिरस्कार की निगाहों से देखता है, इसका चित्रण है। निर्धन तथा परिवार से तिरस्कृत विधवा दुर्गा अपनी पुत्री के विवाह के लिये चिन्तित है। ज्ञानदा तेरह वर्ष की हो गई किन्तु धन के अभाव में उसका संबन्ध नहीं बन पाया है। पड़ोस के सम्पन्न परिवार का कलकत्ता प्रवासी पुत्र अतुल ज्ञानदा का बाल सहचर रहा है। अतुल के बीमार पड़ने पर ज्ञानदा ने ही उसकी सेवा करके उसे मौत के मुंह से बाहर निकाला था। दुर्गा के पति के प्राण त्यागने के समय अतुल ने ज्ञानदा का भार वहन करने का वचन दिया था। दुर्गा कुटुम्बियों के व्यवहार से दुखी होकर अपने बड़े भाई के घर चली गई। उसके स्वार्थी भाई ने कर्ज से मुक्ति के लिये ज्ञानदा का ब्याह जबरन कहीं तय कर दिया। परन्तु स्नेहमयी कर्कशा पत्नी के चलते बड़े भाई की इच्छा पूरी नहीं हुई।

दुर्गा अपनी बेटी को लेकर अपने गांव में आ गई। गांव आकर दुर्गा को ज्ञात होता है कि अतुल की शादी अन्यत्र हो रही है और वह उनसे कोई सम्बन्ध नहीं मानता है तो जैसे उनके ऊपर वज्रपात हो जाता है। दुर्गा के शव के जलने के बाद जब शमशान में अतुल ने ज्ञानदा को बहुत पहले दी हुई चूड़ियां तोड़ते हुये देखा तो उसके

हृदय में पुराना प्रेम उमड़ आया। प्रेम के सामने विरोधी शक्तियों को दबना पड़ा और अतुल वहीं शमशान में अरक्षणीया को रक्षा करने का वरदान देता है। शरत चन्द्र की स्त्री पात्रों में शील और नम्रता का पलड़ा भारी रहता है रंग रूप का नहीं— “काली कलूटी होने के कारण उसे कोई ग्रहण नहीं करना चाहता। दुर्गा का आहत मन कह उठता है। अरे जले समाज अगर तू कुछ भी नहीं देखता, कुल शील स्वभाव चरित्र वगैरा किसी गुण की परवा नहीं करता, केवल रंग काला होने से ही तू लड़की को दुरदुरा देता है तो फिर उस लड़की का ब्याह न होने के लिये उसके माता पिता को दण्ड देने का तुझे क्या अधिकार है?”¹

शरत चन्द्र ने अपनी इस कथा के द्वारा यह प्रस्तुत किया है कि नारी के व्यक्तित्व में यदि रूप रंग की कमी भी होती है तो उसकी नम्रता उसे पूरी करती है। किसी आदेश का उल्लंघन करना किसी आज्ञा का प्रतिवाद करना उसकी प्रकृति में नहीं है। इसमें दिखाया गया है कि तत्काली समाज में स्त्री यदि सुन्दर नहीं है तो उसके विवाह में कैसी बाधाएँ आती हैं। ज्ञानदा को चरित्र की नम्रता अपनी माँ दुर्गा से विरासत के रूप में मिली है। बंगाल की विधवा नारी यदि निर्धन भी हो तो उसके ऊपर दुखों का पहाड़ रहता है।

‘अरक्षणीय’ में दुष्ट चरित्र दुर्गा की विधवा जिठानी स्वर्ण मंजरी प्रकृति के साथ साथ स्वभाव की भी दुष्ट है। वह दुर्गा के ऊपर अपने देवर की गृहस्थी को विनष्ट करने के प्रयत्न का आरोप लगाती है। शरत चन्द्र ने अपने नारी पात्रों को उनके

1. शरत चन्द्र अक्षरणीया, पृ० 19

स्वभाव के अनुसार ही उनके चरित्र त्रित्रण प्रस्तुत किये हैं। इसकी कथा में एक अन्य नारी पात्र है भामिनी। वह स्वष्टवादी है और किसी पर अन्याय होते हुये नहीं देख सकती है। वैसे वह देखने में जलाकुंदा लगती है किन्तु अन्दर से वह चंदन के समान शीतल है। अपने पति द्वारा हरामजादी कहे जाने पर वह क्रोधित होकर कहती है— “फिर ज़बान से यह गाली निकाली तो तुम्हारे इस मुंह में जलती हुई चूल्हे की लकड़ी जो न ढूँस ढूँ तो मैं पांचू घोषाल की लड़की ही नहीं तरकारी काटने की मेरी छुरी देख रखो। साले बहनोई की एक साथ नाक काटकर तब जान छोड़ूंगी। मेरा नाम भामिनी है, याद रहे।”

शरत चन्द्र की कहानी 'अभागी का स्वर्ग' में निर्धनता और सम्पन्नता के दोनों पक्षों से सम्बन्धित नारियों का चित्रण बहुत मार्मिक प्रतीत होता है। उन्होंने दिखाया है कि अमीर और धन सम्पन्न लोगों के यहां मौत भी एक उत्सव का वातावरण बना देती है जबकि निर्धनों में जीवन भी एक मौत की तरह व्यतीत होता है। इस कहानी में कंगाली नामक बच्चे की माँ का पति उसे छोड़ कर चला गया है। उसने बच्चे की खुशी के कारण दूसरा ब्याह नहीं किया। वह समाज की निम्न डोम जाति की है, उसे ब्राह्मणों से एक दूरी बनाकर चलना होता है। एक सुख सम्पन्न मुखर्जी परिवार में उनकी पत्नी की मृत्यु पर उसकी शवयात्रा को काफी सजाया जाता है और उसका पुत्र उसे मुखग्नि देता है तथा पति उसके चरणों की धूल प्राप्त करता है। उसके मन में

तभी से ऐसी मृत्यु की इच्छा जागती है जिसमें वह चाहती है उसके साथ भी ऐसा ही हो और वो स्वर्ग की यात्रा पर जायें।

इस कहानी में शरत चन्द्र ने एक अभागी नारी के यथार्थ चित्रण को अभिव्यक्त करते हुये दिखाया है कि वह बड़ी हसरत से मुखर्जी की पत्नी की शवयात्रा को देखती है, उसमें सम्मिलित नहीं हो सकती क्योंकि वो डोम जाति की है। वह सोचती है कि उसका ऐसा भाग्य कहाँ कि उसकी शवयात्रा के साथ भी वैसा ही हो— “बूढ़े मुखर्जी सम्पन्न थे। धान चावल का कारोबार था। उनके चार लड़के और तीन लड़कियां थीं। और फिर उनके लड़के लड़कियां, जमाई पास पड़ोस के लोग, नौकर चाकर सबों के जमघट से घर में मानों किसी उत्सव की रौनक छा गई थी। शवयात्रा देखने के लिये सारे गांव के लोग आगये थे। लड़कियाँ रोती हुई अपनी मृत माँ की मांग में सिन्दूर और पैरों में अलता लगा रही थी। बहुओं ने सास को चन्दन से सजा कर भारी कीमती साड़ी ओढ़ा दी। फिर अपने आंचल में सास के पैरों की धूल को बांधा। फूल माला साज श्रंगार और कोलाहल से लग ही नहीं रहा था कि कोई शोक घटना थी। बल्कि लग रहा था कि जैसे इस घर की गृहिणी पचास वर्ष बाद फिर एक बार नये सिर से सजधजकर ससुराल जा रही थी। बूढ़े मुखर्जी ने शांत मुद्रा में अपनी चिर संगिनी पत्नी को अन्तिम बिदाई देकर सबकी नज़र बचाकर दो बूंद आंसू पोंछ लिये और फिर अपनी

बहू बेटियों को ढाँढस बंधाने लगे। राम नाम से सुबह का आकाश गुंज उठा। सारा गांव शव यात्रा में साथ देने निकल पड़ा।¹

‘अभागी का स्वर्ग’ कहानी में निर्धन नारी पात्र अपने मन में एक कसक और आशा के सपने देख रही है। वह सोचती है यदि मेरी मृत्यु पर भी ऐसा हो तो मैं आज ही मर जाऊँ। इससे तो सीधे स्वर्ग में जाने का मार्ग दिखाई देता है। वह निर्धन तथा निम्न डोम जाति की है इसलिये उसके लिये यह सब कुछ अत्यन्त कठिन है। सब कुछ उसे एक सपने की भांति लगता है। यहां पर शरत चन्द्र ने एक निर्धन नारी की आर्थिक तथा सामाजिक दुर्दशा की प्रस्तुति इस प्रकार की है कि पाठकों का हृदय द्रवित हो उठता है। कंगाली की माँ जब उस शवयात्रा को देखती है उस समय को शरत चन्द्र ने इस प्रकार उसकी भावना से जोड़ा है— “बड़ी इच्छा हुई कि दौड़कर जाकर वह एक बूंद अलता छुलाकर अपने माथे पर लगा ले। राम नाथ की पवित्र ध्वनि के साथ जब बेटे के हाथों मुखग्नि संस्कार हुआ तो उसकी आंखों से अविरल धारा बह चली। मन ही मन बोली, सौभाग्यवती माँ हो तुम, स्वर्ग जा रही हो। हमें भी आशीर्वाद देती जाओ। तुम्हारी तरह मुझे भी कंगाली के हाथ की आग मिले। लड़के के हाथ की आग कोई मामूली बात थोड़े ही है। पति-पुत्र कन्या, नाती, पोते, पौत्री, नौकर चाकर, आत्मीय, परिजन पूरी गृहस्थी भरी पूरी छोड़कर स्वर्ग चला जाना, इतने बड़े सौभाग्य की सीमा वह ढूँढ़ भी नहीं पा रही थी। गर्व से उसका हृदय भर उठा था।”² जब

1. शरत चन्द्र, अभागी का स्वर्ग, प्र० बंगाल की श्रेष्ठ कहानियाँ सम्पादक बासुभट्टाचार्य, पराग प्रकाशन, दिल्ली।

2. शरत चन्द्र, अभागी का स्वर्ग, प्र० 21 (वही)

कंगाली की मृत्यु हुई तो उसे यह सौभाग्य प्राप्त न हो सका। डोम जाति तथा निर्धन होना उसे स्वर्ग की यात्रा पर नहीं ले जा सका। उसके शव की दुनिया में ही बड़ी दुर्दशा का सामना करना पड़ता है। उसका बेटा अपने पिता ऐसे समय पर ढूँढ कर लाता है और अपनी माँ की अन्तिम इच्छा पूरा करने का प्रयत्न करता है किन्तु निर्दयी समाज मृत शरीर तक का सम्मान नहीं करते और धर्म के नाम पर उसका तिरस्कार करते हैं।

शरत चन्द्र की एक लघु कथा 'प्रकाश और छाया' में नारी का एक अलग प्रकार का चरित्र चित्रण देखने का मिलता है। इस कहानी में यज्ञदत्त और सुरमा के मानवीय प्रेम को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। सुरमा वृंदावन के भजन मण्डली में रहती थी और जब तेरह वर्ष की थी तो उसे यज्ञदत्त के घर वालों ने अपने यहां रख लिया था। यज्ञदत्त के माता पिता गुजर चुके थे। घर में दोनो लोग रहते थे। वह स्त्री पुरुष तो अवश्य हैं लेकिन पति पत्नी नहीं है। और उनमें कोई अवैध सम्बन्ध भी नहीं है। उनमें बहुत ही शुद्ध प्रेम है। यहां तक कि सुरमा यज्ञदत्त से शादी के लिये लड़की ढूँढने के लिये कहती है। वह उसके कहने से शादी तो कर लेता है किन्तु अपनी पत्नी को बुआ के घर छोड़ आता है।

सुरमा एक बाल विधवा थी और उसका हृदय एक स्वच्छ एवं निश्छल प्रवृत्ति का था। वह यज्ञदत्त को अपना भाई कहती है और उसकी सेवा करती है। यज्ञदत्त भी सुरमा का बहुत मान रखता है तथा उसकी समुचित देखभाल करता है। शरत चन्द्र ने

सामाजिक परिप्रक्ष्य में बाल विधवा की पीड़ा को अपने इस नारी पात्र में प्रस्तुत किया है जिसने उस परिस्थिति को अपनी नियति बना रखा है। यज्ञदत्त सुरमा से कहता है— “सुरो तुम अपना विवाह क्यों नहीं करती। सुरमा ने यज्ञदत्त के हाथ से चिट्ठी छीनते हुये कहा, छि: विधवा का भी कहीं विवाह होता है? यज्ञदत्त ने कुछ देर चुप रहकर कहा, कौन जाने कोई कहता है, कोई कहता है नहीं होता। सुरमा बोली तो फिर मुझे इस पाप का भागी बनाने का प्रयत्न क्यों? यज्ञदत्त ने लम्बी सांस लेकर कहा, तो क्या हमेशा मेरी सेवा करते करते ही जिन्दगी बिता दोगी? हूँ, कहकर वह टपटप आंसू गिराती हुई रोने लगी। यज्ञदत्त ने आंसू पोंछते हुये कहा, सुरो, तुम्हारे मन की साध क्या है, मुझे साफ साफ नहीं बताओगी? सुरमा बोली मुझे वृन्दावन भेज दो।”¹

शरत चन्द्र ने ‘प्रकाश और छाया’ कहानी में नारी पात्रों की संवेदनाओं को स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है। यज्ञदत्त ने शादी तो कर ली किन्तु अपनी बहू को वह अपनी बुआ के घर छोड़ आया और यह झूठ बोल दिया वह दोनों अलग अलग गण के हैं इसलिये उनका मिलना सम्भव नहीं होगा। यज्ञदत्त यह नहीं चाहता था कि उसकी बहिन तुल्य सम्बन्धों में कोई रुकावट आये। यह भाई बहिन का एक अनोखे तरह का प्रेम था। सुरमा एक नारी होने के नाते अपनी भाभी की संवेदनाओं को समझती है और उससे कहती है कि वो यज्ञदत्त के पास क्यों नहीं आती है। तब यज्ञदत्त की बहू सुरमा को बताती है कि उन्होंने ये कहा है कि हम लोग मनुष्य ओर राक्षक गण के हैं अतः मिलन सम्भव नहीं है। यह सुनकर सुरमा क्रोधित होती है

1. शरत चन्द्र, प्रकाश और छाया, प्र० 125, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1987

क्योंकि ये एक झूठ बात है— “मुझे विश्वास नहीं होता कि ये झूठ बोलेंगे। सुरमा से अब न सहा गया। दोनों बाहों में समेटकर फूट फूट कर रोने लगी, बोली बहू मैं महापापिनी हूँ। बहू ने स्वयं को छुड़ाते हुये धीरे से कहा क्यों दीदी? आह अब उसे मत सूनो मैं नहीं कह सकूंगी। आंधी की तरह सुरमा यज्ञदत्त के सामने जा पहुँची। बोली बहू को इस तरह धोखे में रख छोड़ा है? ओफ, कैसे भयानक झूठे हो तुम? जान बूझ कर पाप करते हो। तुम्हें लज्जा आनी चाहिए थी। क्या सोचकर विवाह किया था? क्या सोच कर उसे छोड़े हुये हो? मेरे लिये? मेरा मुंह देखकर इस तरह धोखा देते आ रहे हो? सुरमा पागल हो गई हो क्या? मैं पागल हूँ ? मुझ में तुमसे अधिक ज्ञान है। मुझे कहीं दूसरी जगह भेज दो। कहते हुये सुरमा की आंखे लाल हो गई। हांफती हुई बोली ‘एक पल भी नहीं रहना चाहती छि: छि:’¹

शरत चन्द्र की अन्य एक कहानी ‘विलासी’ में पाठकों को नारी के उस चित्रण की अभिव्यक्ति मिलती है जिसमें निम्न जाति की लड़की बड़ी बहादुरी से एक पुरुष की घने जंगल में रक्षा करती है। इस कहानी में मृत्युंजय बीमार हो जाता और सपेरे की बेटी उसका जंगल में जाकर इलाज करती है। वह लड़की निम्न जाति की है तथा मृत्युंजय की बहुत सेवा करके उसकी बीमारी को ठीक कर देती है। वह इतनी बहादुर है कि घने जंगल में बिल्कुल भी डरती नहीं है और निडरता के साथ रहती है। मृत्युंजय उसकी सेवा सुश्रुषा से प्रसन्न होकर शादी कर लेता है। शरतचन्द्र अपने नारी पात्र की निडरता और बहादुरी को भी स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करते हैं— “लड़की

1. शरत चन्द्र ‘विलासी’, प्र० 147, 148 (वही)

गर्दन झुकाये हुये खड़ी रही। मृत्युंजय ने दो चार बातों में जो कहा उसका सार ये था कि उसे खाट पर पड़े डेढ़ महीना हो गया है। डर की कोई बात न सही। लेकिन बालक होते हुये भी वह समझ गया कि जिसमें खाट छोड़कर उठने की शक्ति नहीं है उस रोगी को इस जंगल के बीच जिस अकेली लड़की ने बचा लेने का भार अपने ऊपर उठा लिया है। यह भार कितना आधिक है। दिन के बाद दिन, रात के बाद रात। उसकी कितनी सेवा सुश्रुषा, कितना धैर्य और सहन शक्ति है। कितनी रातें जागकर बिताई हैं। कितने बड़े साहस का काम है। वह धीरे धीरे बोली अकेले जाने में डरोगे तो नहीं? थोड़ा आगे तक पहुँचा आऊँ। एक स्त्री पूछ रही हैं, डरोगे तो नहीं। इसलिये मन में चाहे जो भी हो प्रत्युत्तर में ना कह कर आगे बढ़ गया है। उसने फिर कहा वन जंगल का रास्ता है जरा देख देखकर पांव रखते हुये जाना।”¹

शरत चन्द्र ने इस कहानी में विधवा समस्या और सती प्रथा व्यवस्था पर नारी के मन की संवेदनाओं को बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। पुरुष ने बड़े स्वाभाविक ढंग से नारियों के मन में सती प्रथा की व्यवस्था को बैठा दिया है कि नारियाँ उसे करने में अपना दायित्व और धर्म समझती हैं। लोगों के समझाने पर भी उनका मन इसे अस्वीकार करने का प्रयत्न नहीं करता है— “उनकी पत्नी ने शोक के आवेश में छाती पीट कर ऐसा कांड खड़ा कर दिया कि मैं डर गया कि कहीं उसके

1. शरत चन्द्र, विलासी, प्र० 147.148 (वही)

भी प्राण न निकल जायें। रो-रोकर बार-बार मुझसे पूछने लगी जब वह अपनी इच्छा से अपने पति के साथ ही मर जाना चाहती है तो सरकार को क्या है? उसकी अब रस्ती भर भी जीने की इच्छा नहीं है। क्या वे सरकारी आदमी समझेंगे नहीं? उनके घर में क्या स्त्रियां नहीं हैं? क्या वे केवल पत्थर ही हैं? और अगर इस अंधेरी रात में गांव के पांच लोग अगर नदी के किनारे किसी जंगल में उसके सती होने का प्रबन्ध कर दें तो पुलिस वालों को कैसे पता चलेगा? उसने इस तरह की कितनी ही बातें कही लेकिन वहां बैठे बैठे उनका रोना सुनने से तो मेरा काम चल नहीं सकता था।”¹

‘मुकदमें का परिणाम’ शरत चन्द्र की ऐसी कहानी है जिसमें उन्होंने एक ही नारी के दो स्वरूपों की मनोदशा तथा संवेदनाओं को बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। इस कहानी में दिखाया गया है कि पिता की मृत्यु के बाद शंभू और शिवू दो भाइयों में सम्पत्ति के बंटवारे को लेकर झगड़ा हो जाता है। और वो लड़ते झगड़ते छः महीने के बाद एक ही घर के आँगन के दो भाग में बंटवारा कर लेते हैं। किन्तु बाँस का पेड़ किसी एक के हिस्से में नहीं आ सकता इसलिये दोनों उसका प्रयोग करते हैं और उनमें इस पेड़ को लेकर अक्सर झगड़ा होता है। दोनों की पत्नियां भी आपस में झगड़ती रहती हैं। एक भाई का बेटा अपनी ताई से अधिक चाव रखता है क्योंकि उसी ने उसको पाला पोसा है। वह झगड़ा होने के बाद भी उसके हाथ का भात खाने पहुँचता रहता है। उसकी ताई वैसे तो उससे लड़ती झगड़ती रहती है किन्तु अन्दर ही अन्दर उसका हृदय भी उसके लिये ममता प्रकट करता दिखाई देता है।

1. शरत चन्द्र, विलासी, प्र० 148-149 (वही)

एक दिन गंगामणि के पास उसका भतीजा गया उसके पास खाने के लिये आया। ताई परिवारिक झगड़े को भुला नहीं पाई थी इसलिये उसने उसे खाना नहीं दिया। क्रोध में आकर बालक ने घर के रसोईघर के बरतन तोड़ दिये और गुस्से से बाहर चला गया। गंगामणि का पति जब घर में आया तो उसने पत्नी से यह सब मालूम किया तो उसे पता चला कि उसका भतीजा उत्पात मचा कर गया है। गंगा मणि की स्थिति है— “गंगामणि का उस समय हृदय जल रहा था। गर्दन हिलाकर बोला, ठीक है भाई, उसी ने मुंहजले लड़के को सिखाकर मुझे पिटवाया है। इसका तुम्हें जो करना करो, वरना मैं गले में फांसी लगाकर मर जाऊंगी। अब तक न शिबू नहाया था न कुछ खाया था। जमींदार के पास भी ठीक से विचार नहीं हुआ था। वह एक भीषण सौगन्ध खाकर बोला, अब मैं जा रहा हूं थाने में दरोगा के पास। इसका फल न चखा तो बिन्दु सामन्त का बेटा नहीं। साले का हाथ पकड़ कर थाने में दरोगा से मिलने चल दिया।”¹

शरत चन्द्र ने उपरोक्त प्रसंग द्वारा ये अभिव्यक्त किया है कि नारी के अन्दर यदि प्रतिशोध की भावना हो तो उसका व्यवहार क्या हो जाता है। यही कारण है कि वो अपने पाले हुये भतीजे को अपने परिवारिक झगड़े के कारण पुलिस थाने में दिये जाने की बात सोचती है। यहाँ उसके अन्दर की नारी जागती है और वह क्रोधित भी होती है। वह उस से भली भांति बदला लेना चाहती है। उसका देवर परेशान होता है और माफी मांगता है किन्तु वह टस से मस नहीं होती। इस प्रकार शरत चन्द्र अपनी

1. शरत चन्द्र मुकदमे का परिणाम, प्र० 168 (वही)

इस नारी पात्र के माध्यम से नारी सुलभ क्रोध और ईर्ष्या के भाव को दिखाने के लिये ऐसे व्यवहार को चित्रित करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

‘मुकदमे का परिणाम’ कहानी में शरत चन्द्र ने नारी के ममतामयी स्वरूप को भी समुचित रूप से चित्रित किया है। शिबू की पत्नी अपने देवर देवरानी से झगड़ा करलेती है किन्तु उसके पुत्र जिसे कि उसने ही पाला पोसा है, भतीजे का मोह नहीं त्याग पाती है। वह उसे खाना भी खिलाती है। अपने भाई और पति के कहने में आकर वह अपने देवर और भतीजे की पुलिस में रिपोर्ट करवा देती है किन्तु जब पुलिस उसका वारंट लेकर पकड़ने आती है तो वह घर छोड़ कर चली जाती है। उसका पति एवं भाई उसे काफी ढूँढते हैं किन्तु वह कहीं मिल नहीं पाती है। इधर उस भतीजे को भी शिबू और उसका साला वारंट के साथ ढूँढते फिर रहे हैं तभी उन्हें सूचना मिलती है कि वह नाम बदल पुल के निर्माण में मजदूरी कर रहा है। वह दोनों उसे ढूँढने जाते हैं तो उन्हें अलग ही दृश्य देखने को मिलता है— “जब उन्होंने गांव में प्रवेश किया, दोपहर हो चुकी थी। जगह जगह छोटे घर बने थे, जिनमें मजदूर रहा करते थे। वे लोग चुपचाप, दबे पांव उसके पास जा खड़े हुये। अन्दर गया राम की आवाज सुनाई दी। प्रसन्नता से भरकर पांचू प्यादे और शीबू को लेकर विजय दर्प से झोंपड़ी के खुले दरवाजों को रोक कर खड़ा हो गया। लेकिन दूसरे ही पल उसका चेहरा आश्चर्य, क्षोभ और निराशा से स्याह पड़ गया। उसकी दीदी भात परोस कर एक हाथ में पंखा लिये हवा कर रही थी और गयाराम भोजन कर रहा था। शिबू को देखते ही गंगा मणि

ने माथे पर आंचल खींचते हुये बस इतना ही कहा 'तुम लोग ज़रा ठंडे होकर नदी में नहा आओ। तब तक मैं और एक हांडी भात चढ़ाये देती हूँ'।¹

शरत चन्द्र ने अपनी रचना 'चन्द्र नाथ' में नारी के चरित्र की उस अवस्था का चित्रण किया है जब नारी असहाय अवस्था में अपने आपको नितान्त अकेला अनुभव करती है। इस कथा में चन्द्रनाथ अपने पिता की मृत्यु के बाद पैत्रिक सम्पत्ति का स्वामी है और वह घर में अकेली है। काशी में उसे एक पंडे के घर पर एक युवती जो नौकरानी का कार्य करती है, वह पसंद आ जाती है और वह उससे शादी करके उसे अपने घर ले आता है। घर में उसके मामा और मामी उसे गलत मानते हैं। उसके चाचा भी उससे सहमत नहीं होते हैं। मामी के चरित्र को शरत चन्द्र ने एक लालची स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया है। चन्द्र नाथ जब विदेश जाता है तो उसकी मामी यह चाहती है कि उससे कुछ सम्पत्ति लिखवा ली जाये— "ब्रज किशोर को एकान्त में बुलाकर उसकी पत्नी हरिकाली ने कहा, तुमने एक काम नहीं किया ? ब्रजकिशोर ने पूछा 'कौन सा काम'? वह जब विदेश गये तब विदेश गये तब तुमने कुछ लिखवा क्यों नहीं लिया? मनुष्य का कब क्या हो जाये— कुछ कहा नहीं जा सकता। अगर विदेश में कुछ भला बुरा हो जाये तो तुम रहोगे कहाँ? ब्रजकिशोर ने कानों में उंगली डालकर और जीभ काटकर कहा 'छि: छि: ऐसी बात मुँह पर न लाओ। हरिकाली कष्ट हो गई। बोली तुम अत्यन्त मूर्ख हो, इसलिये कहना पड़ा। अगर चालाक होते तो कहने की

1. मुकदमे का परिणाम, शरत चन्द्र, प्र० 176 (वही)

आवश्यकता ही नहीं पड़ती। पत्नी की यह बात ठीक ही थी, ब्रज किशोर ने यह बात पत्नी कृपा से ही दो चार दिन में जान ली। तब पछतावा करने लगे”।¹

‘चन्द्रनाथ’ में शरत चन्द्र ने नारी के लालची चरित्र का चित्रण करने के साथ साथ अन्य नारी के आदर्श रूप का भी चित्रण किया है। चन्द्रनाथ जिस असहाय युवती से प्रेम करता है उसे वह अपने घर में बहुत सम्मानजनक स्थिति में रखता है। किन्तु जब ये ज्ञात होता है कि उसकी पत्नी उससे छोटी जाति की है तथा उसकी माँ वेश्या थी तब वह समाज के आगे झुक जाता है। वह अपने चाचा के कहने से अपनी बहू को घर से बाहर करने का विचार करता है। चन्द्रनाथ की कर्तव्य परायण तथा सुशील पत्नी अपने पति के सामाजिक सम्मान की खातिर घर छोड़ने को सहमत हो जाती है। हांलाकि वह माँ बनने वाली है फिर भी वह यह नहीं चाहती कि समाज उसके पति को बुरा भला कहे। चन्द्रनाथ भी उसे बहुत प्रेम करता है किन्तु समाज की बनाई हुयी व्यवस्था के आगे मौन हो जाता है— “सरयू के पास आने पर चन्द्रनाथ ने जोर से उसका हाथ पकड़ कर कहा लोग तुम्हारा त्याग करने को कहते हैं। लेकिन मुझमें यह साहस नहीं। तुम्हें विश्वास नहीं होता? मैं सारा विश्वास हार चुका हूं। पल भर में ही सरयू के उदास और पीले चेहरे पर रक्त की एक रेखा झलक आई। और भरी आंखों में पल भर के लिये चमक आगई। उसने कहा मुझ पर भी विश्वास नहीं कुछ नहीं— कुछ नहीं तुम सब कुछ कर सकती हो? सरयू ने उसके मुंह के पास लाकर अविचलित स्वर में कहा तुम मेरे क्या हो क्या तुम यह नहीं जानते? एक दिन तुमने ही मुझे अपनी

1. शरत चन्द्र, चन्द्रनाथ, पृ०-6, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली

ओर देखने को कहा था। आज मैं उपाय बता दूंगी। बोलो सुनोगे। सुनूंगा बताओ क्या है? सरयू ने कहा मेरे विष खा लेने के अतिरिक्त किसी अन्य उपाय की क्या आवश्यकता है। चन्द्रनाथ की पकड़ और कड़ी हो गयी। बोला, हो गया सरयू हो गया। विष खा पाओगी? खा पाऊंगी। खूब सावधानी से, खूब छिपाकर? यही होगा। आज ही? सरयू ने कहा आज ही। चन्द्रनाथ को जाते देखकर उसने पति के दोनों चरणों को पकड़ कर कहा, मुझे आशीर्वाद भी नहीं दिया? चन्द्रनाथ ने ऊपर देख कर कहा अभी नहीं जब चली जाओगी, तब आशीर्वाद दूंगा¹।

शरतचन्द्र ने 'चन्द्रनाथ' में नारी की ऐसी व्यथा प्रस्तुत की है जो कि नारी की करुण और दयनीय स्थिति की स्वाभाविक अभिव्यक्ति कही जा सकती है। चन्द्रनाथ की पत्नी अपनी होने वाली संतान के प्रति संवेदनशील है और वह मरने के बजाय घर त्यागने का कदम उठाना चाहती है। समाज की रूढ़ियां और कठोर व्यवस्थाएं सरयू को असहाय और बेजान बना देते हैं। वह उन सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का साहस भी नहीं कर पाती है इसीलिये वह परिस्थितियों से समझौता करती है। चन्द्रनाथ भी सामाजिक व्यवस्था की अवहेलना करने में असमर्थ है। जब चन्द्रनाथ पुरुष होकर सामाजिक व्यवस्था के कठोर घेरे से बाहर नहीं जा पा रहा तो उसकी पत्नी सरयू एक नारी होकर उन कुरीतियों का भला सामना किस साहस के साथ करती। वह घर त्यागने को विवश हो जाती है। वह संतान प्रेम के चलते विष ग्रहण नहीं करती— “उस रात अपने कमरे में लौटकर सरयू रो पड़ी और मन ही मन बोली नहीं मैं किसी तरह

1. वही प्र० 37.

भी विष नहीं खा सकूंगी। अकेली होती तो मर भी सकती थी लेकिन अब मैं अकेली तो नहीं हूँ। मैं तो माँ हूँ। माँ होकर सन्तान की हत्या कैसे कर सकती हूँ? इसीलिये मैं नहीं मरूंगी। लेकिन मेरे सुख के दिन अब बीत चुके हैं। इसमें रत्तीभर भी सन्देह नहीं है। रात गहरी हो गई तो चन्द्रनाथ ने अपनी पत्नी के कमरे में प्रवेश किया। और सारी बातें सुनकर अत्यन्त आवेश से सरयू को छाती से लगा लिया। अस्फुट शब्दों में वह बार बार कहने लगा 'ऐसा कभी मत करना। लेकिन इससे अधिक वह और कोई भरोसा नहीं दे पाया। अपना दुर्भाग्य मैं स्वयं ही भोगूंगी, इसके लिये तुम दुःख मत करो। मेरे जैसी अभागिन को घर लाकर तुमने बहुत कुछ सहा है। अब मत सहो। मुझे विदा देकर फिर गृहस्थ बन जाना। ताकि मेरी गृहस्थी न टूट जाये।'¹

'चन्द्रनाथ' में एक यह बात देखने को मिलती है कि एक स्त्री को समाज की खातिर अपनी बसी बसाई गृहस्थी केवल इस लिये छोड़नी पड़ती है कि वह सजातीय नारी है। जिसमें उसका स्वयं का कोई दोष नहीं है। और उसकी व्यथा यह है कि स्वयं उसका पति भी यह नहीं चाहता कि वह घर त्यागकर कहीं जाये किन्तु समाज की अवहेलना करना उनके लिये एक दुर्भाग्य है। समाज के गन्दे और सड़े गले नियमों को वह दोनो मिलकर नहीं तोड़ पाते। ऐसे में एक स्त्री का गर्भवती अवस्था में गृहस्थी त्यागना बहुत करुणामय स्थिति को वर्णित करता है। "सरयू दिन भर घर की चीज वस्त्र संभालती रही। कीमती कपड़े आदि बन्द कर दिये। सारे गहनों को लोहे के सन्दूक में बन्द करके ताला लगा दिया। फिर धरती पकड़ कर बहुत देर रोती रही। घर

1. (वही) प्र० 34-35 शरत चन्द्र 'चन्द्रनाथ'।

छोड़ने का समय ज्यों ज्यों निकट आता जा रहा था त्यों त्यों दर्द बढ़ता जा रहा था। उसे शंका हुई कि आज अन्तिम दिन कहीं धीरज न छूट जाये। जाने के समय बिल्कुल भिखारिन की तरह इस ओर देखना पड़ेगा। आत्मसम्मान को उसने प्राणपण से दबा दिया था। आज उसे छोड़ने की इच्छा किसी भी तरह नहीं हो रही थी।¹

अपनी रचनाओं के अन्य कथानकों की ही तरह शरत चन्द्र की रचना 'नया विधान' में भी नारी चित्रण के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। इस में शैलेश एक दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर हैं। उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है तथा उनसे एक पुत्र भी है जो पांच साल का है। लोगों के कहने से उन्होंने ऊषा नामक युवती से विवाह किया है। ऊषा ने घर में आकर सारा विधान ही बदल दिया है। बहुत सारे नौकरों को हटाकर अधिकतर काम वह स्वयं ही किया करती है। वह उनके घर के विलायती रहन सहन को शुद्ध देशी वातावरण में ढाल देती है। दिखावे मात्र पर जो रूपया घर में खर्च हो रहा था वह उसे बन्द कर देती है और अपने पति को बहुत ही तर्कपूर्ण ढंग से वह सारी बातें समझाती है। खर्च को बचाकर रखने का उसका प्रत्येक प्रयास सफल रहता है। उसकी नन्द उसकी इस विद्वतापूर्ण व्यवहार से काफी खिन्न रहती है और उस पर अत्याचार आदि करती रहती है। वह अपनी भाभी से चिढ़ती है और उसे नीचा दिखाने की कोशिश करती रहती है। ऊषा फिर भी घर में सबसे ताल मेल बनाकर चलती है। विशेषरूप से शैलेश का पूर्व पत्नी से उत्पन्न पुत्र सोमेन ऊषा को माँ का स्थान देता है क्योंकि वह भी उसे माँ का ही प्रेम प्रदान करती है। इस कहानी में नारी अपने

1. शरत चन्द्र, चन्द्रनाथ प्र० 40 (वही)

अधिकारों को आगे बढ़कर प्राप्त करती है। उस के लिये वह संघर्ष करती है तथा आत्मविश्वास के साथ वह प्रत्येक वातावरण तथा परिस्थितियों को सहन करती है। शैलेश भी ऊषा से प्रसन्न है— “शैलेश ने सिर उठाकर कहा जटायु के लड़के ने जो कुछ भी किया है। इस लड़के ने तो देखता हूँ तुम्हें बिल्कुल ही जकड़ लिया है। ऊषा चुप होकर बालक के सिर पर हाथ फिराती रही। शैलेश ने कहा इसका कारण जानती हो? ऊषा ने कहा कारण और क्या होगा, माँ रही नहीं, छोटा बच्चा है। घर में अकेला। यह ठीक है लेकिन माँ के रहते भी इतना दुलार इतना प्यार शायद इसने कभी नहीं पाया। ऊषा का चेहरा लाल हो उठा”।¹

शरत चन्द्र की कहानियों में ‘महेश’ एक ऐसी कहानी है जिसमें निर्धनता की आह का स्वरूप और शोषण स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। नारियों के चित्रण को शरत बाबू ने बहुत सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया है। मन्मथनाथ गुप्त ने इस संदर्भ में अपनी पुस्तक में लिखा है— “यदि इस कहानी का शीर्षक ‘प्रोलेटारियट का जन्म होता तो शायद यह मैक्सिम गोर्की की एक कहानी हो जाती।”² महेश कहानी में एक छोटे से गांव की निर्धनता से परिपूर्ण विभिन्न आर्थिक अभावों एवं जमींदारों के अत्याचारों का विवरण शरत चन्द्र ने किया है। गफूर नाम का किसान बहुत निर्धन है तथा उसके बैल का नाम महेश है। दो साल से अकाल और जमींदार के अत्याचारों से ग्रस्त गफूर बीमार हो जाता है परन्तु उसे हर दम यही चिन्ता रहती है कि बैल को

1. शरत चन्द्र, नया विधान, (चन्द्रनाथ) प्र० 91 (वही)

2. शरत चन्द्र: व्यक्ति और साहित्यकार, मन्मथनाथ गुप्त, प्र० 116 नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1963

चारा किस प्रकार दिया जाये। उसके पास चारे के नाम पर कुछ भी नहीं है। ऐसे में वह अपने छप्पर से खर खींच कर ही उसे खिला देता है। उसकी दस वर्षीय बालिका उसे ऐसा करने से मना करती है।

इस कहानी में जमींदार के पुरोहित तर्करत्न आकर गफूर को डांटते हैं कि वह अपने बैल को क्या भूखा मारेगा तो गफूर रो पड़ता है और उसके पांव पर गिर जाता है कि उसे कुछ कटिया देदी जाय जिससे वह अपने बैल की भूख को शान्त कर सके। किन्तु पुरोहित गफूर को मार कर और दुत्कार कर चला जाता है। तब वह मजबूरी में खर ही छप्पर से खींच लेता है। उसकी कन्या जो कि दस वर्ष की निर्धनता की इस भयावता को बहुत समीप से देखती है— “अमीना ने पुकारा— अब्बा आओ खाना खाओ। कहकर वह कमरे से निकल आई और सामने देखकर बोली फिर तुमने महेश को छत से खर दिया। उसने कहा बेटी पुराना है खुद बखुद गिर पड़ता है। अमीना बोली मैंने तो भीतर से सुना अब्बा तुमने खर खींचा। वह फिर भी इधर उधर करने लगा। अमीना बोली, अब्बा ऐसा करोगे तो दीवार भी गिर जायेगी। गफूर ने कहा अच्छा जरा मांड तो दे, महेश को पिला दें, अमीना बोली अब्बा आज तो मांड भात में ही सूख गया। सुनकर गफूर सन्न रह गया, ऐसे दुख के दिन में मांड भी खराब नहीं किया जा सकता। यह दस वर्ष की अमीना समझती थी। खाते समय गफूर ने कहा बुखार है। फिर सोच कर बोला ये भात महेश को न दे दो।”¹

1. शरतचन्द्र, महेश, प्र० 17.

महेश कहानी में सबसे अधिक प्रभाव अमीना पर पड़ता है जो बचपन से ही निर्धनता तथा जमींदार समाज के अत्याचार एवं दूषित सामाजिक परम्पराओं को आत्मसात करती है। शरत चन्द्र ने बालिका के माध्यम से सामंती अत्याचारों से युक्त वातावरण का सटीक वर्णन किया है जो उसके खेलने की आयु है उसी में उसे बाप के साथ मजदूरी करनी पड़ती है और फिर भी कभी कभी उसे भूखा रहना पड़ता है। उसके मन की व्यथा को शरत चन्द्र ने स्वाभाविक रूप से वर्णित किया है। भूख से बेहाल महेश जमींदार के पौधों को खा लेता है तो जमींदार गफूर की पिटाई करते हैं। गफूर को गुस्सा आता है और वह महेश के सिर पर मटका मार देता है। जिससे बूढ़े बैल की मृत्यु हो जाता है। अमीना अनाथ हो जाती है और समाज की इस व्यवस्था को देख देख कर संवेदशील अवस्था में उसे जीवन की गाड़ी आगे ढकेलनी होती है। बैल के मरने का प्रायश्चित्त करना पड़ता है घर के सारे बरतन बिक जाते हैं। आर्थिक अभावों से ग्रस्त नारी चित्रण शरत चन्द्र ने बहुत मार्मिक ढंग से किया है।

यह कहानी बंगवाणी में प्रकाशित हुई थी। शरत चन्द्र ने इस कहानी में गरीबी के साथ जो सहानुभूति दिखाई है तथा उसका जो निदान किया है, वह बहुत ही वस्तुवादी है। इस कहानी में नारी चित्रण को यथार्थ रूप देते हुये शरत बाबू ने वर्ग युद्ध का अच्छा दिग्दर्शन कराया है। यह दृश्य कि इसमें मुसलमान किसान है तथा जमींदार वर्ग हिन्दू हैं। इस प्रकार सारे बंगाल की समस्या सामने आ गई। पृष्ठभूमि में समस्या का निदान है।

शरत चन्द्र ने अपनी श्रेष्ठ कहानियों में नारी हृदय के विचित्र और जटिल द्वन्द्व का चित्र खींचा है। इस द्वन्द्व या संघर्ष की अभिव्यक्ति अनेक छोटी बड़ी घटनाओं के बीच हुई है। पारिपार्श्विक अवस्था के परिवर्तन के साथ-साथ इस संघर्ष का स्वरूप बदला है और इसी ने पारिपार्श्विक अवस्था का नियन्त्रण किया है। शरत की रचना 'पथ निर्देश' एक छोटी कहानी है। हेमनलिनी के साथ बिजली बाई की चरित्रगत समानता नहीं है। इन दोनों के जीवन की धारा भी विभिन्न है। यहां पर एक बात कहना सहज होगा कि गुणीन्द्र के घर में हेमनलिनी का आश्रय पाना उसके साथ एकत्र पढ़ना लिखना, उसके मन में प्रणय का संचार, उसका विवाह उसका वैधव्य और उसका अपना यह मत जताना कि विवाह का कोई मूल्य नहीं। हेमनलिनी कोई सजीव मनुष्य नहीं जान पड़ती। लगता है वह एक काठ की पुतली है, फूंक भर देने से एक बार इधर और एक बार उधर आन्दोलित होगी।

शरत चन्द्र की प्रथम पुस्तक 'काशीनाथ' है। इसमें जो सब कहनियाँ हैं, उनमें उनकी प्रतिभा के पूर्ण विकास की सूचना मिलती है। यहां भी नारी के प्रति वही गहरी सहानुभूति वही स्वष्ट सरल एवं बड़ी मधुरता के साथ प्रकट करने का ढंग या भाव एवं व्यक्त करने की उत्तम शैली का प्रयोग हुआ है। 'प्रकाश और छाया', 'मन्दिर' और 'अनुपमा का प्रेम' इन तीनों कहानियों में निषिद्ध प्रेम की विशुद्धता का चित्रण किया गया है। नारी चरित्रों की सृष्टि में शरत चन्द्र की प्रतिभा की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। डॉ० सुबोध चन्द्र सेनगुप्त ने इस संदर्भ में लिखा है— "प्रकाश और छाया का आरंभ

यज्ञदत्त और बालविधवा सुरमा के अवैध प्रणय को लेकर हुआ है। यह चित्र अति सुन्दर है। इनका संबंध स्नेह से, आनन्द से भरपूर है, किन्तु उसमें विषाद की छाया भी है। सुरमा समझती है कि यज्ञदत्त उसके लिये अपना जीवन व्यर्थ कर रहा है। इस व्यर्थता से छुटकारा पाने के लिये वह यज्ञदत्त का ब्याह कर डालने के लिये व्यग्र होती है। पर इस ब्याह में उसका मन एक साथ उत्साह और निराशा से भर गया। इन परस्पर विरुद्ध प्रवृत्तियों की लुकाचोरी से चित्र बहुत सुन्दर हुआ है। वह स्वयं आग्रह के साथ यह संबंध लाई है, किन्तु इसमें यज्ञदत्त का भी उत्साह देखकर निराशा से उसका मन भर गया है। यहां पर सवित्री, राज्यलक्ष्मी आदि नारियों के चरित्रों का पूर्वाभास मिलता है।¹

शरत चन्द्र की कहानी 'मन्दिर' में श्रेष्ठ कला को प्रस्तुत किया गया है। बचपन में बालिका के मन में देवता और देव मन्दिर के प्रति जो आकर्षण जाग उठा है, उसने किशोरावस्था और यौवन ने बढ़कर प्रणय की आसक्ति का विरोध किया है। फिर ये दोनों प्रवृत्तियाँ एक में गुंथ गई हैं और एक ने दूसरी फिर ये दोनों प्रवृत्तियाँ एक में गुंथ गई हैं और एक ने दूसरी को परिपुष्ट किया है। मन्दिर के प्रति अनुराग ही अपर्ण की पति पर प्रीति का विघ्न बन गई थी और शाक्ति नाथ से उसकी मन्दिर में भेंट हुई थी। शैलेश्वर के मन्दिर में तिलोत्तमा और जगतसिंह के मिलन की तरह। यह मिलन अकस्मात नहीं हुआ। इसका कारण ये था कि अपर्णा मन्दिर की पुजारिन है और

1. शरत प्रतिभा, ले० डॉ० सुबोधचन्द्र सेनगुप्त, अनुवादक, प्र० रूप नारायण पाण्डेय हिन्दीग्रन्थ रत्नाकर लिमिटेड बम्बई— 1957 प्रथम संस्करण।

शाक्तिनाथ उस मन्दिर का पुजारी है। अपर्णा दो पुरुषों के संस्पर्श या लगाव में आती थी। दोनों का सम्भाषण सुगन्ध पदार्थ का उपहार देने में चरम सीमा को पहुँचा गया था और अपर्णा ने दोनों के उपहार को स्वीकार नहीं किया था। केवल अपर्णा के चरित्र की सुन्दर अभिव्यक्ति ही नहीं बल्कि इस कहानी में शरत चन्द्र ने कहानी के कौशल को भी जीवन्त रखा है। नारी के मनोवैज्ञानिक और संवेदना से परिपूर्ण चरित्र चित्रण को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

इसी प्रकार शरत चन्द्र की कहानी 'अनुपमा का प्रेम' में भी शरत बाबू की विशेषता को देखा जा सकता है जिसमें उन्होंने नारी चित्रण को सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस कहानी की नायिका मा-शोये रूपवती युवती है। वह अतुल धन सम्पत्ति की अधिकारिणी है। मा शोये बाथिन की वाग्दत्ता है। वह महाजन भी है। दोनों बचपन में एक साथ खेले हैं, लड़े झगड़े हैं, मार पीट भी की है और परस्पर प्यार भी किया है। बाथिन चित्र बनाकर कर्ज चुकाना चाहता है, अपने कर्तव्य में वह तिलमिल भी लापरवाही नहीं करता। उसकी कर्तव्य निष्ठा से मा शोये को उस पर श्रद्धा हुई है पर उस पर क्षणिक असन्तोष भी उत्पन्न हुआ है। क्योंकि किसी भी आमोद आहवाद में मा शोये अपने प्रियतम को साथ नहीं पाती वह केवल चित्र बनाने में लगा रहता है यहां तक कि माशोये उससे बात चीत करने बैठती है तो भी बाथिन जैसे खीझ उठता है। क्यों कि उसे वादे के दिन चित्र पूरा करके देना ही होगा। बाथिन का चरित्र शरत जी ने बहुत सुन्दर चित्रित किया है। उसकी धीरता, स्थिरता, कर्तव्य निष्ठा और

कोमलता का चित्र अत्यन्त हृदय ग्राही है। मा-शोये से उस का सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है माशोये के घर जा कर वह अपमानित होकर चला आता है। पर वह अपने चित्र को बनाने में ही डूबा हुआ है, तल्लीन रहता है।

शरतचन्द्र की कहानी 'विलासी' में नायिका मृत्युञ्ज की बीमारी में कुण्ठा रहित, विश्रामहीन सहायक हीन सेवा करके मृत्युञ्ज को धीरे-धीरे आरोग्य की दशा में ले आई है। रोग से छुटकारा मिलने के बाद दोनों का ब्याह हो गया और दोनों ने स्वच्छन्दता के साथ सुख से जीवन यात्रा का आरम्भ किया। नारी चित्रण के संदर्भ में इस कहानी के विषय में डॉ० सुबोधचन्द्र सेन गुप्त ने लिखा है- "विलासी स्त्री है, स्वभाव से ही कोमल हृदय वाली। उसने जो पाया है, उसे वह जकड़कर पकड़ रखना चाहती है। बार बार भाग्य की परीक्षा करते बैठने में उसे शंका होती है। मृत्युञ्ज की बात जुदा है। विलासी से ब्याह करने में ही उसे बहुत कुछ जाति कुल, सम्मान, धर्म, प्रतिष्ठा आदि छोड़ना पड़ता है। उसने जो पाया है वो बहुत कुछ छोड़कर बहुत साहस करके ही पाया है। अतएव वह निशंक है, जीवन उसके निकट तुच्छ है। एक दिन साँप को पकड़ने जाकर वह दुःसाहसी युवक नियति या भाग्य से अन्तिम परीक्षा में हार गया, साँप के काटने से उसका इस लोक का खेल समाप्त हो गया। इसके सात दिन बाद विलासी ने भी आत्म हत्या कर ली।"¹

1. विलासी, शरतचन्द्र, (दक्षित): शरत प्रतिभा, डॉ० सुबोध चन्द्र सेन गुप्ता, प्र० 141, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई, अनुवादक: रूपनारायण पाण्डेय।

शरतचन्द्र ने दाम्पत्य जीवन को लेकर चार कहानियाँ लिखी हैं— काशीनाथ, बोझा, दर्पचूर्ण, और सती। इन कहानियों में यह देखने को मिलता है कि पति और स्त्री का सम्बन्ध सहज नहीं है, इच्छा रहने पर भी वे परस्पर एक दूसरे के संसर्ग में सुखी नहीं हो पाते। सत्येन्द्र अपनी तीसरी स्त्री को लेकर सुखी हुआ था यह स्पष्ट नहीं हो पाया। सरला और नलिनी की मृत्यु, विशेषरूप से नलिनी के जीवन की दुर्भाग्यमय परिणति कहानी का उपजीव्य है। पहली स्त्री की स्मृति से बोझिल मन लेकर सत्येन्द्र नाथ ने दुबारा विवाह किया इसी से वह नलिनी को अपना लेने में असमर्थ रहा था। धीरे-धीरे उनका आंशिक मिलन हुआ सही, लेकिन थोड़ा सा अन्तर दोनों के बीच रह ही गया। प्राण प्रण से चेष्टा करके भी नलिनी पति के मन पर अधिकार नहीं कर पाती है। साधारण कारण से ही सत्येन्द्रनाथ उसके ऊपर नाराज हो उठता है। सत्येन्द्र के रुठने और क्रोध करने का जो चित्र दिया गया है, वह सम्पूर्ण स्वाभाविक दिखाई नहीं देता है। जिस साधारण कारण से स्त्री पर नाराज होकर उसने तीसरी बार विवाह किया उससे उसकी विकृत मस्तिष्क की पहचान होती है।

शरतचन्द्र की कहानी 'काशीनाथ' में काशीनाथ नामक एक गरीब लड़का है किन्तु निर्लोभ और उदासीन प्रकृति का। कमला पति के प्रति अनुरक्त होने पर भी अत्यन्त अभिमानिनी है। पति पत्नी दोनों का स्वाभिमान बहुत तीक्ष्ण है। इनके दाम्पत्य जीवन के मूल में एक बड़ी चीज़ की कमी रही वह यह कि एक दूसरे की अवस्था को समझ नहीं सके। पति और स्त्री परस्पर को सुखी देखना चाहते हैं, पर चरित्र की

विषमता के कारण और अवस्था के वैगुण्य से वे सुखी नहीं हो पाते यह बड़े भारी आक्षेप का विषय है। किन्तु इसे सत्य के रूप में खड़ा करने के लिये पति पत्नी के प्रतिदिन जीवन के विस्तृत विश्लेषण का प्रयोजन अनेक तुच्छ घटनाओं को लेकर होता है हर रोज़ की इस तुच्छता को रूप ने दे पाने पर यह मेल और झगड़ा सजीव नहीं होता। शरतचन्द्र ने दो एक बड़ी घटनाओं का उल्लेख करके ही यह चित्र खींचने का प्रयास किया है। कमला ऐसी स्त्री है जिसने अपने पति के खिलाफ गवाही देकर नारी चरित्र में एक नया स्वरूप प्रस्तुत किया है।

शरतचन्द्र की कहानी 'दर्प चूर्ण' एक पक्की अवस्था की कहानी है। इससे धनी की बेटी झोंक में आकर चरित्रवान गुणवान पति से विवाह कर सकती है किन्तु प्रतिदिन उसके साथ गृहस्थी चलाने में उसका अहंकार, धन और भोग की उसकी आकांक्षा और धनहीन के प्रति उसकी घृणा का प्रकट होना ऐसे कारण हैं जिससे पति का जीवन विषम हो जाता है। बंगाल के अभिजात सम्प्रदाय की जीवन शैली को शरत चन्द्र ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है। इसमें नारी पात्र इन्दु को शरत चन्द्र ने ऐसे स्वरूप में प्रस्तुत किया है जो कि अभिजात्य वर्ग की पृष्ठभूमि पर आधारित है। समाज का सही मूल्यांकन करके ऐसे नारी चरित्र को प्रस्तुत करने का आशय यही है कि नारी का ऐसा भी रूप होता है कि वो धन सम्पदा को ही सब कुछ समझती हैं। ऐसे में वह निर्धन को अपने व्यंग्य का माध्यम बनाने से नहीं चूकती। शरतचन्द्र ने इस चरित्र को संभवतः इसीलिये प्रस्तुत किया है कि ऐसे वर्ग के लोग उससे एक शिक्षा ग्रहण कर सकें।

शरत चन्द्र की कहानी 'सती' उनकी साहित्यिक प्रतिभा का एक श्रेष्ठ दान है। इसको सर्वश्रेष्ठ कहानियों के वर्ग में रखा जा सकता है। इस कहानी में व्यंग्य रसात्मक शैली में प्रस्तुत हुआ है। और ये व्यंग्य रस तीक्ष्ण विद्रूप के द्वारा कटु नहीं हुआ है। यह प्रभात के प्रकाश की तरह उज्ज्वल और मधुर है। इस संदर्भ में डॉ० सुबोधचन्द्र सेनगुप्त ने लिखा है— “अतिरिक्त सतीत्व के साथ संदेह परायणता का संस्त्रव होने पर बेचारे निरीह पति का जीवन कितना असह्य हो सकता है, इसका अतिमधुर और बहुत ही स्पष्ट चित्र इसमें खींचा गया है। यह चित्र हास्य रस से उज्ज्वल और करुणा से सिन्धु है। चाहे जिस ओर से इस कहानी पर विचार किया जाये इसमें असाधारण शिल्प कौशल देख पड़ता है।निर्मला का संदेह इतना गुरुतर इतना स्पष्ट है कि इसके वर्णन में बाल की खाल निकालने वाले विश्लेषण की जरूरत नहीं है। निर्मला के प्रत्येक सन्देह की अभिव्यक्ति ही अचानक होती है। और प्रत्येक अभिव्यक्ति ही उसके चरित्र के साथ सुसंगत या स्वाभाविक है।”¹

इस कहानी में निर्मला की सन्देह परायणता कहानी का विषय है किन्तु उसका केन्द्र उत्पीड़ित अभागा हरिश्चन्द्र है। बेचारा कुछ भी क्यों न करे, सती स्त्री की अति उग्र द्रष्टि से छुटकारा नहीं पा सकता। मुक्किल से बात करना, कीर्तन सुनना, क्लब जाना, कुछ भी उसके लिये निरापद नहीं है। सच बोलकर उसने देख लिया, झूठ का सहारा लेकर देख लिया पर किसी तरह उसकी जान नहीं बची। मानो सत्य और

1. शरतचन्द्र, 'सती', (उद्धित) शरत प्रतिभा, डॉ० सुबोध चन्द्र सेन गुप्त, प्र० 144, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई, अदुवादक-पं० रूपनारायण पाण्डे।

मिथ्या ने मिलकर उसके विरुद्ध षडयन्त्र किया है। खुद उसने जो एक झूठ की दीवार खड़ी की, वह अब्दुल की केवल एक बात से, लावण्य की निःशब्द प्रगल्भता से धूल में मिल गई। यहां तक कि माटी की देवता शीतला तक उसके विरुद्ध षडयन्त्र करती है। किसी तरह उसका बचाव या छुटकारा नहीं है। इस कहानी में लांछना जब हद दर्ज को पार कर गई है, तब उसने मन के क्षोभ से ब्रजनाथ के साथ अपनी तुलना की है। राधिका के एकनिष्ठ प्रेम की कथा युग युग में गाई है। युग युग में भक्त लोग उसे सुनकर विमुग्ध हुये हैं।

बाल्य स्मृति, हरिचरण, एकादशी बैरागी, मुकदमे का नतीजा, हरिलक्ष्मी और परेश आदि कहानियों में पारिवारिक और सामाजिक जीवन के चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। 'एकादशी बैरागी' कहानी एक हास्यव्यंग्य पूर्ण कहानी है। एकादशी बैरागी एक छोटी जाति का होने के साथ सूदखोर और चालाक मनुष्य है। देनदारों या ऋणियों के साथ उसका बर्ताव बड़ा ही कड़ा और निर्मल है। वह किसी को भी सहज ही एक रुपया भी नहीं देता है और न उन पर छोड़ता है। उसकी बहन का पैर गलती से कुराह में पड़ जाता है। उसे अपने घर में आश्रय देने के फलस्वरूप वह जाति, कुल, गाँव और समाज छोड़ने को बाध्य होता है, किन्तु फिर भी विचलित नहीं होता। इसमें चित्रण कम है किन्तु कोमल हृदय वाली नायिका का उल्लेख है।

शरतचन्द्र ने 'मुकदमे का नतीजा', 'हरिलक्ष्मी', और 'परेश'— ये तीनों कहानियाँ संयुक्त परिवारों के अन्तर्गत लोगों की प्रतिद्वन्द्विता और शत्रुता को लेकर लिखी हैं।

‘मुकदमे का नतीजा’ कहानी में इन्होंने नारी को ग्रामीण समाज का प्रतिनिधि बनाकर प्रस्तुत किया है। कुछ घरेलू बातों को लेकर दोनों भाई एवं उनकी पत्नियाँ आपस में झगड़ते हैं। हद तो यह है कि उनमें मुकदमें बाजी और गिरफ्तारी के षडयन्त्र चलते हैं। इन भाइयों की लड़ाई में एक भाई का साला पांचू तीसरा पक्ष बनकर साथ देता है। मामला खूब जोर पकड़ लेता है, जब सारा काम अंजाम हो गया उसी समय अत्यन्त अचानक सब भरमण्ड हो गया। प्रतिपक्ष शम्भू और उसके पुत्र गंगाराम के विरुद्ध संविधान द्वारा अनुमोदित सब अस्त्र-शस्त्र सजाकर शिबू ने देखा कि उसकी पत्नी ने छिपकर गयाराम के पास जाकर आश्रय लिया है। इसमें गंगामणि नायक स्त्री का चरित्र अप्रत्याशित रूप से खिलकर सामने आता है। वह वास्तव में ग्रामीण समाज की स्त्री है। अपने भतीजे गयाराम के ऊपर उसे स्नेह है, किन्तु स्नेह में कहीं पर भी अस्वाभाविकता नहीं आती है, कोई अतिशय भी नहीं है। क्रोध के समय उसने गयाराम को तरह तरह के कटुवाक्य कहे हैं और गयाराम के पिता तथा सौतेली माता के साथ उसका बैर शिबू के बैरभाव से कम नहीं है। गयाराम के आश्रय से भातृ विरोध ने जो नया रूप धारण किया, उससे यह निश्चित होने पर भी कि ठीक किस भाव में उसका मातृस्नेह अपने को प्रकट करेगा। गंगा मणि का चरित्र जिस प्रकार विकसित हो उठता है, उसमें असामंजस्य कहीं भी नहीं है। इसमें शरत बाबू ने नारी चरित्र बहुत भावुकता पूर्ण किया है। इसमें माता के हृदय के रहस्य का पता चलता है।

शरतचन्द्र की कहानी 'हरिलक्ष्मी' में नारी पात्र हरिलक्ष्मी के चरित्र का सूक्ष्म विश्लेषण भली-भांति देखने को मिलता है। यह अति अपूर्व चित्रण बन कर सामने आता है। इस कहानी में विपिन की पत्नी कमला की लांछना करवाने में हरिलक्ष्मी ने अपने बर्बर पति को प्रतिहिंसा के लिये उत्तेजित किया, और उसके बाद प्रतिपक्षी को छोटा बनाने में हरिलक्ष्मी स्वयं ही छोटी रहने लगी। हरिलक्ष्मी स्वयं ये महसूस करती है कि उसने पति के क्रोध को और भी बढ़ा दिया है। हरिलक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिये शिवचन्द्र ने भी अपनी बुआ कमला को प्रत्येक पग पर उत्पीड़ित किया है। उस उत्पीड़न को कमला ने चुपचाप सहन कर लिया। पर इस बर्बर अत्याचार से दुखी कमला की नीरव दयालुता से हरिलक्ष्मी का उत्साह बुझ जाता है। वह विमूढ़ हो गई है। वह न केवल कमला की दृष्टि में छोटी हुई बल्कि अपनी दृष्टि में भी छोटी हो गई है। —“उसने सोचा है कि मंझली बहू को एक सान्त्वना तो बाकी है— वह है बिना दोष के दुख सहने की सान्त्वना किन्तु उसके अपने लिये कहाँ क्या बच रहा है। इस प्रकार उसके लिये विजय की माला पराजय की ग्लानि ही ले आई। मिथ्या चोरी के अभियोग में मंझली बहू को विचार के लिये उसके पास पकड़कर लाया गया। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। उसे जान पड़ा इतने लोगों के सामने जैसे वह पकड़ी गई है और विपिन की स्त्री ही उसका फैसला करने बैठी है।”¹

शरत चन्द्र ने 'अभागी का स्वर्ग' और 'महेश' ये दोनों कहानियाँ अभागे गरीबों की जीवन चर्या पर लिखी हैं। इन दोनों कहानियों में जिन सब नारियों का चित्रण किया गया है, वे मुख्य होने पर भी गौण हैं, पर फिर भी भारी दिखाई देती हैं। इन कहानियों में पुरुष एवं नारियों के भावपूर्ण चित्रण द्वारा वृहत्तर समाज को प्रस्तुत किया गया है। शरत चन्द्र ने छोटी कहानियों के माध्यम से विराट समाज को रूप दिया है तथा साकार किया है। इनमें पति परित्यक्ता अभागी की व्यक्तिगत कहानी ने अधिक प्रधानता पाई है। जमींदार का गुमाश्ता, दरबान, मुखर्जी उनका बेटा, नाई की जोरू बिन्दी बुआ, रसिक बाध आदि को लेकर जिस समाज की सृष्टि हुई है, उनके चित्र ने अभागी के जीवन को विशालता प्रदान की है।

शरत चन्द्र की रचनाओं में अंकित चरित्रों में केवल दो लोगों ने भोग का वरण भी किया और उनका जीवन सबसे अधिक निष्फल हुआ है। इन की एक नारी पात्रा किरणमयी न धर्म की मानती थी न शास्त्र को स्वयं भगवान को भी नहीं मानती थी। उसकी दृष्टि में किसी आचार किसी संस्कार का मूल्य नहीं था। उसकी दृष्टि में परलोक का भी कोई मूल्य नहीं था। इसी कारण वह केवल इस लोक के सुख को केवल देह के आनन्द को मानती थी। इसी को सब कुछ समझती थी। उसके प्रेम में इस की स्पष्ट छाप देखने को मिलती है। एक प्रकार से शरत चन्द्र ने नारी के चरित्रहीन स्वरूप का भी चित्रण किया है। चरित्रहीन नारी पात्र सरोजनी के प्रति सावित्री के मन में तनिक भी इर्ष्या नहीं थी, यह बात स्पष्ट रूप से नहीं कही जा

सकती। किन्तु उसमें कण भर भी विद्वेष नहीं था। पर उपेन्द्र ने जैसे ही किरणमयी के प्रेम का प्रत्याख्यान किया, उसे स्वीकार नहीं किया वैसे ही उसकी प्रतिहिंसा-वृत्ति जाग उठी और उसने जिस उपाय से बदला लिया वह जैसा नीच वैसा ही वीभत्स भी है। वह प्रेम का अर्थ यौन मिलन को ही समझती थी।

शरत की कहानियों में नारी चित्रण में सामाजिक आदर्श देखने को मिलता है तो कहीं-कहीं नारियों में उसके विद्रोह की भी छाप दिखाई देती है। इनकी कहानियों के विश्लेषण से यह भली-भांति ज्ञात होता है कि उनका मुख्य लक्ष्य चरित्र की सृष्टि है। उन्होंने विशेष रूप से नारी के विभिन्न स्वरूपों के चरित्र चित्रण किये हैं जिनमें अधिकांश में नारी एक आदर्श और समाज के नियमों का पालन करने वाली दिखाई देती है। शरत बाबू की अधिकांश कहानियों में एक नायिका रहती है, जिसकी शक्ति अनन्य साधारण होती है और अनेक बाधाओं के भीतर से वह शक्ति कैसे प्रकाशित होती है— यही उनकी कहानियों का प्रधान वक्तव्य बन जाता है। इनकी कहानियों का मुख्य आधार इनके द्वारा रचित इनकी नायिकायें हैं।

शरत चन्द्र ने लगभग 22 कहानियों का सृजन किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, नाटक, निबन्ध तथा सैकड़ों साहित्यिक चिट्ठियों को लिखा है। शरत चन्द्र की प्रतिभा का श्रेष्ठ विकास परस्पर विरोधी शक्ति के संघर्ष के चित्रण में हुआ है। उनके द्वारा अंकित नारी चरित्रों की विशेषता को साहित्य जगत में एक पहचान मिल चुकी है। इनके पुरुष पात्र बुद्धिजीवी हैं। उसके निकट संस्कार प्रधानतः बुद्धि के मार्ग

से आता है और साधारणतः वह संस्कार बुद्धि को बाँधकर हृदय के गंभीरतम प्रदेश में आघात नहीं करता। पर नारी के निकट हृदय के आवेग का मूल्य बहुत अधिक है। वह समस्त अभिज्ञता और संस्कार को ही अनुभूति से रंग देता है। इसी से समाज शक्ति उसके निकट आकस्मिक प्रवृत्ति की विरोधी बाहरी शक्ति मात्र नहीं है। यह उसके भीतर की चीज़ है। इसे भी उसने अपनाकर ग्रहण कर लिया है। जिस द्वन्द्व या संघर्ष को देखा जाता है वह विशेष करके नारी के मन में ही दिखाई देता है। इसी कारण शरत साहित्य में नारी के चरित्र का स्थान इतना ऊँचा है।

नारी के चरित्र में प्रवृत्ति के साथ सचेतन, संस्कार की इस टक्कर को ही शरतचन्द्र ने वृहत् रूप में दिखाया है। प्रेम का आकर्षण चुम्बक के आकर्षण की तरह प्रबल होता है। और उसके टुकराने की शक्ति बहुत सहज नहीं होती है। शरत चन्द्र ने अपनी कहानियों में जिस ट्रेजडी का चित्र अंकित किया है उसमें मृत्यु के लिये स्थान नहीं है। इनके नारी पात्रों में एक द्वन्द्व एवं संघर्ष को भी स्वाभाविक रूप से देखा जा सकता है। नारी चित्रण में धर्म परायणता तथा कर्तव्यनिष्ठता का स्वरूप देखने को मिलता है। नारी के संस्कारी रूप में धर्मबुद्धि और प्रणय की आकांक्षा के संघर्ष को शरत चन्द्र ने स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। नारी के मन को उन्होंने एक संघर्ष के बीच देखा है, जहाँ स्वतः उठी हुई आकांक्षा की धारा चिरागत संस्कार की पत्थर की दीवार से बाधा उत्पन्न करती है। अनुभूति मनुष्य की वृहत् सम्पत्ति होती है, किन्तु यदि वह साधारण कारण से ही उमड़ पड़ती है तो अकिंचित्कर होना ही प्रमाणित होता है।

आँसुओ की उपमा मोतियों से दी गई है, किन्तु साधारण किरकिरी पड़ने या पलक हिलने ही से जो आँसू बरसते हैं वे नकली या झूठे मोतियों के समान ही मूल्य हीन होते हैं।

हिन्दू विधवा के जन्मार्जित संस्कार के साथ नारी की प्रणयाकांक्षा का चित्रण ही शरत चन्द्र की विशेषता है। शरत चन्द्र की शिल्प निपुणता का चरम विकास वहीं पर अधिक हुआ है जहाँ अर्थ चेतन प्रेम वेदना सचेतन संस्कार और अनुभूति के बाँध को तोड़कर बाहर निकल पड़ी है। इस प्रकार यह भली-भाँति कहा जा सकता है कि नारी चित्रण में शरत चन्द्र ने बहुत विवेक और बुद्धि के साथ अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। इनकी नारी अबला होकर भी सबला कही जा सकती है और कहीं-कहीं, सबला होने के बाद भी वह अबला और असहाय दिखाई देती है। नारी के मन की संवेदना को एक आर्टिक्स्टिक अंदाज में प्रस्तुत करना शरत चन्द्र की निपुणता कही जा सकती है। नारी चित्रण समाज की समुचित व्याख्या के रूप में ग्रहण किये जा सकते हैं। उन्होंने समाज में से ही ऐसे पात्रों को ढूँढा है और उनका चरित्र-चित्रण किया है।

चतुर्थ अध्याय
प्रेमचन्द की कहानियों
में नारी चित्रण

चतुर्थ अध्याय

प्रेमचन्द की कहानियों में नारी चारित्र चित्रण

प्रेमचन्द्र के काल में नारी की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति और उसे प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के प्रभाव प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित नारी चित्रण पर देखा जा सकता है। इस काल में बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह, दहेज विवाह संबन्ध को कभी न टूटने वाला धार्मिक संस्कार मानना आदि वैवाहिक रीतियाँ प्रचलित थी। हिन्दू समाज में स्त्री पुरुष के बीच कुछ ऐसी असमानतायें थीं कि इन कुरीतियों के दुष्परिणाम स्त्रियों को ही अधिक भुगतने पड़ते थे। बाल विवाह के संदर्भ में कृष्णा प्रसाद कौल ने अपनी पुस्तक में लिखा है— “बाल विवाह की प्रथा रहने के कारण छोटे-छोटे बालक बालिकाओं का विवाह कर दिया जाता था। सन् 1901 की जनगणना के अनुसार 80 प्रतिशत लड़कियां पूर्ण वय प्राप्त करने के पहले ही विवाहित हो जाती थीं। 40 प्रतिशत कन्यायें 10-15 वर्ष की अवस्था में और 10 प्रतिशत 5-10 वर्ष के बीच की आयु में ब्याह दी जाती थीं। हर 72 लड़की में एक लड़की का विवाह 1-5 वर्ष की उम्र में हो जाता था।”¹

1. कृष्णा प्रसाद कौल, द पोজিশন ऑফ वीमेन इन इण्डিয়াज सोसाइटी उद्धित: डॉ० गीता लाल, ले० प्रेमचन्द का नारी चित्रण, प्र० 3, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

इस काल में हिन्दू समाज में विवाह में कन्या का मत नहीं लिया जाता था। विवाह के बाद सामाजिक नियमों के अनुसार, स्त्री को बिना किसी प्रकार का विरोध किये, अच्छे या बुरे पति के साथ अपना जीवन निर्वाह करना होता था। पति किसी भी बात पर नाराज होकर स्त्री को तलाक दे दिया करता था। दहेज प्रथा का प्रचलन अधिक था। दहेज न मिलने पर स्त्री को जीवन भर कष्ट भोगने पड़ते थे। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों, 'सुहाग का शव', 'उद्धार', 'एक आंच की कसर' कुसुम आदि कहानियों में इन समस्याओं को प्रस्तुत कर नारी के चरित्र का विभिन्न स्वरूपों में चित्रण किया है।

प्रेमचन्द युग में स्त्री और पुरुषों में सामाजिक और कानूनी दृष्टि से बहुत अंतर था। जहां पुरुष अपनी पत्नी के जीवित रहते हुये भी कई विवाह कर सकता था, वहीं स्त्री के लिये चाहे वह बाल विधवा ही क्यों न हो, पुनर्विवाह पाप था समाज के न्याय का मानदंड स्त्री और पुरुष के लिये एक नहीं था। स्त्री को हर तरफ से कष्ट उठाने पड़ते थे शिक्षा सम्पत्ति आदि का अधिकार नहीं था। उस को पर्दे में रहना पड़ता था, वह पुरुषों के सामने नहीं आ सकती थी। प्रेमचन्द पर्दे के विरुद्ध थे। इसमें सन्देह नहीं है। किन्तु इसके सम्बन्ध में उन्होंने केवल संकेत कर दिया है, उसके दुष्परिणामों का भयावह चित्रण नहीं किया, क्योंकि उन्होंने देखा था, शिक्षा के साथ यह प्रथा आपसे आप समाप्त होती जा रही थी। फिर भी अपनी 'दुराशा' नामक कहानी में उन्होंने

दिखाया है कि पर्दा प्रथा के फलस्वरूप ही एक घर में दिया सलाई न रहने के कारण ठीक होली के दिन सबको भूखे रह जाना पड़ता है।

प्रेमचन्द युग में नारी की दयनीय दशा का एक कारण वेश्यावृत्ति भी था। समाज की कट्टरता के कारण उकसी कितनी कुमारिकायें विधवायें, और सधवायें भी वेश्या वृत्ति के लिये विवश होती थी। प्रेमचन्द युग में वेश्या वृत्ति के प्रति समाज का दृष्टि कोण सहानुभूतिपूर्ण नहीं था। प्रेमचन्द ने इन नारीगत समस्याओं को अपनी कहानियों, वेश्या, दो कब्रें, नरक का मार्ग, एक्ट्रेस, 'आगा पीछा' आदि में बड़ी अच्छी तरह से प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द युग की नारी की दयनीय अवस्था का एक कारण उसकी शोचनीय आर्थिक स्थिति थी। हिन्दु स्त्री का सम्पत्ति में कोई अधिकार नहीं था। वह आर्थिक रूप से पुरुष पर निर्भर थी। प्रेमचन्द ने नारी की विवशता के लिये उसकी आर्थिक पराधीनता को दोषी ठहराया था। विभक्त परिवार में 'बेटों वाली विधवा' कहानी की फूलमति की दुर्गति दिखलाई है। उन्होंने पढ़ी लिखी लड़कियों के स्वावलम्बन का भी चित्रण किया है।

प्रेमचन्द युग में नारी राजनैतिक रूप से भी पिछड़ी हुई थी तथा स्वतंत्रता आंदोलन के माध्यम से कुछ जागरूक नारियां राजनैतिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर भाग लेती थीं। स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय नारियों ने साधारण सैनिक के रूप में ही नहीं बल्कि उच्च पदों पर भी अपनी योग्यता का परिचय दिया। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों 'जेल', 'पत्नी से पति', शराब की दुकान, 'जुलूस', 'समर यात्रा', 'सुहाग की

साड़ी' आदि में राष्ट्रीय आंदोलन को चित्रित किया है तथा उसमें स्त्रियों की भागीदारी पर भी प्रकाश डाला है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में वैवाहिक कुरीतियों का उल्लेख किया है। उन्होंने विवाह के बाद के भी कुछ ऐसे महत्वपूर्ण तथ्यों का उद्घाटन किया है, जो मधुर दाम्पत्य सम्बन्ध में बाधक सिद्ध होते हैं। जैसे पति का पत्नी के प्रति दुर्व्यवहार और पति द्वारा पत्नी की उपेक्षा, उसका महत्व न समझना, उस पर अधिकार जमाना, उससे सहानुभूति न करना, विश्वासघाह आदि। प्रेमचन्द की 'बालक' कहानी में स्त्री को प्यार का भूखा बताया गया है। इस कहानी में गंगू कहता है— "जहां प्रेम नहीं है हुजूर, वहां कोई स्त्री नहीं रह सकती है। स्त्री केवल रोटी कपड़ा ही नहीं चाहती, कुछ प्रेम भी तो चाहती है।"¹

प्रेमचन्द की 'आभूषण' कहानी में कुंवर सुरेश सिंह अपनी पत्नी को इसलिये प्यार नहीं करते कि वह सुन्दर नहीं है। इसका परिणाम यह होता है कि वे दाम्पत्य जीवन के सुख से वंचित रहते हैं। अन्त में उनकी पत्नी अपने पति के घर में न रह कर अपने मायके चली जाती है— "लावण्य हीन स्त्री वह भिक्षक नहीं है, जो चंगुल भर आटे से सन्तुष्ट हो जाये। वह भी पति का सम्पूर्ण, अखण्ड प्यार चाहती है। और कदाचित् सुन्दरियों से अधिक, क्योंकि इसके लिये वह असाधारण प्रयत्न और अनुष्ठान करती है। मंगला इस प्रयत्न में विफल होकर और भी संतप्त होती थी"² रहस्य कहानी में मिस्टर मेहरा और मंजुला में भी स्वभाव भेद के साथ और इसके कारण, सहानुभूति का अभाव

1. मान सरोवर, भाग 2, प्र० 214, प्रेमचन्द

2. मानसरोवर, भाग 6, प्र० 145.

दिखाई देता है। जिससे मंजुला के मन में विद्रोह का भाव दिखाई देता है। वह पति से अलग जीवन व्यतीत करने के लिये एक सेवाश्रम में नौकरी करने चली जाती है—

“मंजुला के जीवन में आत्म दान की मात्रा ही ज्यादा थी। वह देह को इस भावना की पूर्ति का साधन मात्र समझती थी। दुनिया की बड़ी से बड़ी विभूति भी उसे शान्ति न दे सकती थी। मि० मेहरा से उसे केवल इसलिये अरुचि थी कि वह भी साधारण प्राणियों की भांति भोग विलास के प्रेमी थे। जीवन उनके लिये इच्छाओं में बहने का नाम था। अगर उसमें कुछ उदारता होती और मंजुला से मतभेद होने पर भी वह उसकी भावनाओं का आदर करते और कम से कम सुख से ही सहयोग करते, तो मंजुला का जीवन सुखी होता पर उस भले आदमी को पत्नी से जरा भी सहानुभूति न थी और वह हर एक अवसर पर उसके मार्ग में खड़े हो जाते थे और मंजुला मन ही मन सिमट कर रह जाती थी। यहां तक कि उसकी भावनायें विकास का मार्ग न पा टेढ़े मेढ़े रास्तों पर जाने लगीं।”¹

प्रेमचन्द ने नारी के गृहिणी रूप को सामाजिक और आर्थिक अनिवार्यता के रूप में महत्व प्रदान करते हुये, उसके आत्म सम्मान की सर्वत्र रक्षा की है। प्रेमचन्द के युग में दाम्पत्य जीवन की समस्यायें उलझी हुई थीं। प्रेमचन्द ने इसके लिये वैवाहिक कुरीतियों को अभिव्यक्त किया। ‘लांछन’ कहानी में देवी का इतना अपराध अवश्य है कि वह मुन्नू मेहता और शोहदे रजा मियां से घुलमिल कर बातें करती है और पति से

1. प्रेमचन्द, कफन और शेष रचनायें, प्र० 51.

कपट करती है। किन्तु इसमें जितना दोष शोहदों का है उतना देवी का नहीं। वे उसी समय देवी से बातें करने के लिये किसी न किसी बहाने पहुँच जाते हैं, जब उसके पति का दफ्तर से आने का समय होता था। ऐसे में पति को उन शोहरों की चालों से पत्नी को अवगत करना चाहिये, बल्कि वो अपनी पत्नी को क्रोधित होकर पीटते हैं। परिणाम स्वरूप देवी में पति से घृणा और भय के चलते विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है— “रोते रोते देवी की आंखे सूज आयीं। देवी को ऐसा ज्ञात होता था कि श्याम किशोर को उसके साथ कभी प्रेम ही नहीं था। नहीं तो क्या इस जरा सी बात पर यों मुझ पर टूट पड़ते। अब मैं इतनी नीच हो गयी कि मेहतरों से, जूते वालों से, आशनाई करने लगी जहां इज्जत नहीं, मर्यादा नहीं, प्रेम नहीं, विकास नहीं वहां रहना बेहयाई है। कुछ मैं इनके हाथ बिक तो गई ही नहीं कि मारें काटें पड़ी सहा करूं। सीता जैसी पत्नियां होती थीं तो राम जैसे पति भी होते थे”।¹

प्रेमचन्द की विभिन्न कहानियों में नारी अपने दुखी दाम्पत्य जीवन की अभिव्यक्ति के साथ चित्रित होती है। आर्थिक सम्पन्नता भी स्त्री को सुख दे सके ऐसा आवश्यक नहीं है। प्रेमचन्द की कहानी ‘जीवन का शाप’ में भी ऐसी स्त्री का चित्रण देखने को मिलता है जो घर में सारी सुख सुविधाओं के बावजूद भी पति के प्रेम से वंचित है— “आपका यह भाव तभी तक है जब तक आपके पास धन नहीं है। आज तुम्हें कहीं से दो चार लाख मिल जायें तो तुम यों न रहोगे। और तुम्हारे ये भाव बदल

1. प्रेमचन्द, मान सरोवर, भाग 5, प्र० 138.

जायेंगे। यही धन का सबसे बड़ा अभिशाप है। यह नहीं जानते कि ऐश के ये सामान उन मिस्त्री तहखानों में पड़े हुये पदार्थों की तरह हैं, जो मृतात्मा के लिये रखे जाते हैं।”¹

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी के विभिन्न स्वरूपों का चित्रण करते हुये उसकी वात्सल्य भावना से ओत प्रोत ममता का सुन्दर चित्रण किया है। ‘खून सफेद’ कहानी में एक स्त्री का पुत्र बाल्यावस्था में ईसाई पादरी के साथ घर छोड़ कर चला जाता है और ईसाई पादरी उसे पढ़ा लिखा कर बड़ा आदमी बना देता है। बरसों के बाद गांव आने पर उस लड़के को जात बिरादरी से अलग रखने का हुकुम मिलता है। वह स्त्री पुत्र मोह में बिरादरी से भी अलग होने को तैयार रहती है। माँ का एक आदर्श रूप प्रेमचन्द ने इस कहानी में चित्रित किया है— “मैं अपने लाल को अपने घर में रखूंगी और कलेजे से लगाऊंगी। इतने दिनों बाद मैंने उसे पाया है, अब उसे नहीं छोड़ सकती। चाहे बिरादरी छूट जाये। लड़के वालों ही के लिये आदमी आड़ पकड़ता है। जब लड़का ही न रहा, तो भला बिरादरी किस काम आवेगी।”² प्रेमचन्द ने स्त्री के ऐसे चरित्र का चित्रण इस कहानी में किया है कि यह आसानी से कहा जा सकता है कि माता अपने कमजोर, दुर्बल और बीमार बच्चे को सर्वाधिक प्यार करती है। यह उसके निस्वार्थ प्रेम की पराकष्टा है।

1. प्रेमचन्द, जीवन का शाप, मानसरोवर, भाग 2, प्र० 222.

2. प्रेमचन्द, खून सफेद, मानसरोवर, भाग 8, प्र० 15.

प्रेमचन्द के नारी चित्रण में उसके ममतामयी हृदय की अभिव्यक्ति स्वष्ट रूप से देखी जा सकती है। सन्तान का वियोग माता के लिये असह्य होता है। कुछ मातायें तो पुत्र वियोग में पागल भी हो जाती हैं और कुछ उसके वियोग में प्राण तक दे देती हैं। 'स्वर्ग की देवी' कहानी में स्त्री पात्र लीला के दोनों बच्चों की मृत्यु (हैजे से) एक साथ ही हो जाती है, तो उसकी दशा भी शोचनीय हो जाती है। वह चेतना हीन हो जाती है। पिता को भी बच्चों के जाने का दुख होता है किन्तु वह शीघ्र ही अपना दुख भुलाकर दोस्तों के साथ मन बहलाता है। बच्चों की माता लीला जीवन के सारे कर्तव्यों को भूल जाती है। तीज त्योहार में तो उसकी दशा और भी बुरी हो जाती है। और उसका समय रोते ही बीतता है— "लीला का स्वास्थ्य पहले भी कुछ अच्छा न था, अब तो वह और भी बेजान हो गई। उठने बैठने की शक्ति भी न रही। हरदम खोई सी रहती, न कपड़े लत्ते की सुधि थी, न खाने पीने की। उसे न घर से वास्ता था न बाहर से। बच्चे ही उसके प्राणों के आधार थे। जब वही न रहे, तो मरना और जीना बराबर था। रात दिन यही मनाया करती कि भगवान यहां से ले चलो। सुख दुख सब भुगत चुकी। अब सुख की लालसा नहीं है, लेकिन बुलाने से मौत किसी को आयी है?"¹

प्रेमचन्द की कहानियों में जो नारी चित्रण देखने को मिलता है उसमें नारी एक माता के रूप में अलग ही दिखाई देती है। एक आदर्श माता के रूप में 'धक्कार' कहानी में देशद्रोही पुत्र को माता स्वयं दीवार में चिनवा देती है। एक अन्य कहानी

1. प्रेमचन्द, स्वर्ग की देवी, मान सरोवर, भाग 3, पृ० 77.

‘बेटो वाली विधवा’ में एक ऐसी असहाय विधवा का चित्रण है जिसका पति मर गया है और उसके चार शिक्षित बेटे हैं तथा एक बेटी है। चारों बेटे माँ के साथ अन्याय करके उसके दिल को टीस पहुँचाते हैं। वे बड़े कौशल से उसके आभूषण निकलवा लेते हैं और बहन का विवाह बिना दहेज के एक बूढ़े के साथ कर देते हैं। फूलमती को उस दिन ज्ञात होता है कि उसके पुत्र कितने स्वार्थी और निर्मल हैं— “आज जीवन में पहली बार उसका वात्सल्य भग्न मातृत्व अभिशाप बन कर उसे धिक्कारने लगा। जिस मातृत्व को उसने जीवन की विभूति समझा था जिसके चरणों पर वह सदैव अपनी समस्त अभिलाषाओं और कामनाओं को अर्पित करके अपने को धन्य मानती थी, वहीं मातृत्व आज उसे उस अग्नि कुण्ड सा जान पड़ा जिसमें उसका जीवन जल कर भस्म हो रहा था। जहां उसकी कुछ कद्र नहीं, कुछ गिनती नहीं वहाँ अनाथों की भांति पड़ी रोटियां खाये, यह उसकी अभिमानी प्रकृति के लिये असहाय था। दुनिया यही तो कहेगी कि चार जवान बेटों के होते बुढ़िया अलग पड़ी हुई मजदूरी करके पेट पाल रही है। अब अपना और घर का परदा ढंका रखने में ही कुशल है।”¹

प्रेमचन्द ने ‘महातीर्थ’ कहानी के माध्यम से ऐसी नारी का चित्रण किया है जो पराये बच्चे को सुखी रखने के कारण अपना तीर्थ भी छोड़ देती है। बुढ़िया कैलासी के परिवार के सभी सदस्य काल के ग्रास हो जाते हैं। वह अपना मन बहलाने के लिये सुखदा का बच्चा खिलाने की नौकरी कर लेती है। बच्चे (रूदृमणि) को वह इतना प्यार

1. प्रेमचन्द, चार बेटों वाली विधवा, मानसरोवर, भाग-1, प्र० 73-73.

करती है कि जब सुखदा अकारण उसे इस नौकरी से वंचित कर देती है, तो रूद्र एक हफ्ते के अन्दर हुज्क कर बीमार हो जाता है। वह केवल अन्ना अन्ना की रट लगाये जाता है। कैलासी को भी रूद्र का वियोग असाध्य है। वह मुहल्ले के लोगों के साथ तीर्थ यात्रा पर जाने को तैयार हो चुकी थी कि रूद्र के पिता उसे बुलाने आ जाते हैं। यद्यपि कैलासी का तीर्थ तो छूट जाता है किन्तु जिस बच्चे को वह पुत्रवश प्यार करती थी, उसकी जान बचा कर वह 'महातीर्थ' का पुण्य प्राप्त करती है। उसके आते ही बच्चा ठीक होने लगता है।

'माता का हृदय' कहानी में माधवी का होनहार और देशभक्त पुत्र बिना किसी अपराध के पुलिस द्वारा, डाका डालने के अपराध में, गिरफ्तार कर लिया गया और उसे आठ वर्ष का कठोर दण्ड मिला। विधवा माधवी का पुत्र उसके प्राणों का अवलम्ब था। पुत्र के साथ किया गया यह अन्याय उसे प्रतिशोध के लिये प्रेरित करता है। वह पुलिस अधीक्षक बागची के यहां लड़का खिलाने की नौकरी कर उसके परिवार का नाश करने का षडयन्त्र करती है। किन्तु वहां जा कर उसका हृदय मातृत्व की भावना के कारण बदल जाता है, क्योंकि बागची का बच्चा उससे बहुत हिल जाता है और उसे अपनी माता समझने लगता है। एक बार उस बच्चे के भयंकर बीमार पड़ने पर उसे माता से भी अधिक चिन्ता होने लगती है और वह प्रतिशोध भूल कर उस बच्चे के प्राण बचाने के लिये जुट जाती है। माधवी को इतनी पीड़ा अपने पुत्र के जेल जाने पर नहीं हुई थी जितनी कि इस बच्चे की बीमार अवस्था देख कर हुई। "माता का हृदय दया का

ही रस निकलता है। वह देवी है। विपत्ति की क्रूर लीलायें भी उस स्वच्छ और निर्मल स्त्रोत को मलिन नहीं कर सकतीं।¹

प्रेमचन्द ने नारी का माता के रूप में जो चित्रण किया है वह बहुत महत्वपूर्ण है। वेमानते थे कि परिवार में पिता का स्थान तो कोई भी ले सकता है किन्तु माता का स्थान कोई नहीं ले सकता। बालक बिलकुल अनाथ हो जाता है। उनके जीवन का वह स्नेह स्त्रोत ही सूख जाता है, जो छोटे से पौधे के फूलने-फलने के लिये आवश्यक है। माँ में जो एक कठोरता मिश्रित कोमलता होती है, उसे वह अन्यत्र नहीं पाता। दूसरे मातृहीन बालक के प्रति या तो दया मिश्रित स्नेह का प्रदर्शन करते हैं या शुष्क कठोरता का व्यवहार— “माँ तो बच्चे का सर्वस्व हैं। बालक एक मिनट के लिये भी उसका वियोग नहीं सह सकता। पिता कोई हो, उसे परवा नहीं केवल एक उछालने कुदाने वाला आदमी होना चाहिये। लेकिन माता तो अपनी ही होनी चाहिये। वही रूप वही रंग, वही प्यार, वही सब कुछ। वह अगर नहीं है तो बालक के जीवन का स्त्रोत मानों सूख जाता है फिर वह शिव का नन्दी है, जिस पर फूल या जल चढ़ाना लाज़िमी नहीं, अख्तियारी है।”²

इस प्रकार नारी के मातृ रूप के चित्रण में प्रेमचन्द ने उसके सूक्ष्मतम विस्तार की चेष्टा की है। उन्होंने स्त्री के गर्भ धारण से लेकर माँ और सन्तान के सम्बन्धों की अनगिनत अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। जहाँ उन्होंने स्त्री के सन्तान के मंगलमय कल्याण

1. प्रेमचन्द माता का हृदय, मानसरोवर, भाग-3, प्र० 104.

2. प्रेमचन्द, घर जमाई, मान सरोवर, भाग, 1, प्र० 136.

में अनुरक्त हृदय, उसके त्याग, वात्सल्य और सेवा तथा आत्मसमर्पण की पराकष्टा का श्रद्धा-भाव से चित्रण किया है। वहाँ माता के आदर और स्वाभिमान रक्षा पर भी बल दिया है। प्रेमचन्द को माता का अनादर और उपेक्षा करने वाले कुपुत्रों पर ही नहीं, ऐसे पुत्र पर स्नेह लुटाने वाली माताओं पर भी क्रोध आता था। स्त्रीत्व की चरम परणति मातृत्व में है अवश्य और यह भी ठीक है कि स्त्री के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास माता बन कर ही होता है, किन्तु यह आवश्यक नहीं कि मातृत्व के ऊँचे पद पर नारी अपनी सन्तान की कृपा से टिकी रहे। प्रेमचन्द सच्चे अर्थों में उसी नारी को माता समझते हैं, जो दूसरों के बच्चों को भी मातृ भाव से देखती है। इस प्रकार हम देखते हैं, कि प्रेमचन्द ने स्त्री को माता के रूप में एक आदर्शात्मक चित्रण द्वारा समाज में विस्थापित किया है।

प्रत्येक मनुष्य में स्नेह के लिये स्वाभाविक आकांक्षा होती है। बाल्यावस्था में इसकी पूर्ति माता पिता तथा भाई बन्धुओं के बीच होती है। युवावस्था में यही आकांक्षा किसी एक के हो जाने और उसे अपना बना लेने की प्रवृत्ति में परिवर्तित हो जाती है। स्त्री और पुरुष के इसी पारस्परिक स्नेह को 'प्रेम' की संज्ञा दी जाती है। प्रेमचन्द ने स्त्री के इस रूप का चित्रण भी बहुत सुन्दर और यथार्थ रूप में अपनी कहानियों में किया है। प्रेमचन्द के द्वारा नारी के इस स्वरूप के चित्रण के संदर्भ में डॉ० गीता लाल ने लिखा है— 'प्रेमचन्द की नारी पुरुष की ओर साधारणतः उसके सदगुणों के कारण आकृष्ट होती है अथवा यों कहें कि अपने अन्दर उमड़ने धुमड़ने वाले सदभावों को

पुरुष में देख कर अपना प्रेम, अपना हृदय, अपनी सबसे मूल्यवान सम्पत्ति उस योग्य पुरुष को सौंप देती है। इस प्रकार पहले वह पुरुष की भक्ति करती है, उसका सम्मान करती है, बाद में यदि परिस्थितियां अनुकूल रहती हैं, तो यह भक्ति प्रेम का रूप धारण करती है।¹

प्रेमचन्द ने 'विश्वास' कहानी के माध्यम से जो नारी के प्रेम स्वरूप का चित्रण किया है उससे ज्ञात होता है कि विश्वास से भी प्रेम उत्पन्न होता है। किसी स्त्री के प्रति यदि पुरुष विश्वास रखे, तो वह स्त्री का प्रेम पा सकता है। पतितायें भी इसका अनुकूल जवाब देती हैं। इस कहानी की विलासिनी मिस जोशी 'बम्बई के सभ्य समाज की राधिका' है। प्रान्त के गवर्नर मिस्टर जौहरी से उसका प्रेम लोक प्रसिद्ध है। एक समाज सेवी नेता आप्टे को भाषण के कारण गिरफ्तार कर लिया जाता है। आप्टे ने अपने भाषण में मिस जोशी के दूषित चरित्र पर भी आक्षेप किया था। मिस जोशी उससे कहती है कि उसका कलंक मिटा दो। आप्टे इसे स्वीकार करके समाचार पत्रों में इसका खेद प्रकट कर जोशी से माफी मांग लेता है। इस विश्वास के कारण मिस जोशी आप्टे से प्रेम करने लगती है। "मिस जोशी को अब तक अधिकांश स्वार्थी आदमियों ही से सामना पड़ा था, जिन के चिकने चुपड़े शब्दों में मतलब छिपा होता था। आप्टे के सरल विश्वास पर उसका चित्र आनन्द से गदगद हो गया। उन

1. डॉ० गीता लाल, प्रेमचन्द का नारी चित्रण, प्र० 188 हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

कपटी मित्रों के सम्मुख यह आदमी था, जिसके एक एक शब्द में सच्चाई झलक रही थी, जिसके शब्द उसके अन्तस्तल से निकलते हुये मालूम होते थे।”¹

प्रेमचन्द ने ‘एक्ट्रेस’ कहानी में नारी का प्रेम चित्रण करते हुये माना है कि प्रेम पतित और पथभ्रष्ट स्त्रियों को भी कर्तव्य, त्याग और सेवा के लिये प्रेरित करता है। इस कहानी की पैंतीस वर्षीय नायिका ‘तारा’ एक अभिनेत्री है। उसने जीवन भर उच्चवर्गीय लोगों को आकर्षित करके उनसे धन बटोरने का कार्य किया। कुंवर निर्मल कान्त भी उस पर मुग्ध हो जाते हैं। और दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। जब विवाह का दिन नज़दीक आता है तो तारा के मन में आत्मग्लानि उत्पन्न होती है कि वह कुंवर से उम्र में बड़ी है और सौन्दर्य प्रसाधनों द्वारा उसने उन्हें आकर्षित किया यद्यपि वह केवल कुंवर से ही प्रेम करती है किन्तु उन्हें धोखा नहीं देना चाहती। प्रेमचन्द ने स्त्री के इस निश्छल प्रेम चित्रण द्वारा स्त्री भावनाओं का समुचित चित्रण किया है— “तारा का हृदय इस समय गर्व से छलका पड़ता था। वह दुखी न थी, निराश न थी। वह फिर कुंवर साहब से मिलेगी, किन्तु वह निस्स्वार्थ संयोग होगा। वह प्रेम के बताये हुये कर्तव्य मार्ग पर चल रही है, फिर दुख क्यों हो और निराशा क्यों हो।”²

प्रेमचन्द की कहानियों में नारी चित्रण के प्रेम स्वरूप में सच्चाई, आत्मसमर्पण, सहृदयता, त्याग, कोमलता, क्षमा शीलता, विश्वास आदि अनेकों उदात्त भावों को स्पष्ट

1. प्रेमचन्द, विश्वास, मानसरोवर, भाग-3, प्र० 12.

2. प्रेमचन्द, एक्ट्रेस, मानसरोवर, भाग-5, प्र० 234.

रूप से देखा जा सकता है। ये सभी भावनायें 'सेवा' के अन्तर्गत आती हैं। यही कारण है कि प्रेमचन्द का कोई पात्र प्रेम करता है, तो सेवा की ओर अग्रसर होता है। जहां प्रेम होता है, वहां सेवा होती है, लेने से अधिक देने की भावना होती है। 'दो सखियां' कहानी की नारी पात्रा चन्दा सेवा का महत्व समझती है। वह कहानी की अन्य नारी पात्रा पदमा को, जो अपने पति की सेवा नहीं करती और अपना सारा समय अपने ही बनाव सिंगार में व्यतीत करती है, समझाती है— "प्रेम का एक ही मूल मन्त्र है, और वह है सेवा। यह मत समझो कि जो पुरुष तुम्हारे ऊपर भ्रमर की भांति मडराया करता है, वह तुमसे प्रेम करता है। उसकी यह रूपासिक बहुत दिनों तक नहीं रहेगी। प्रेम का अंकुर रूप में है, पर उसको पल्लवित और पुष्पित करना सेवा ही का काम है।"¹

प्रेमचन्द की 'आगा-पीछा' कहानी में श्रद्धा (एक सुधरी हुई वेश्या पुत्री है) भगत राम से प्रेम करती है। भगतराम के माता पिता, जाति से चमार होने पर भी, अपने पुत्र का विवाह एक वेश्या कन्या से नहीं करना चाहते। जब भगत राम दुखी हो कर श्रद्धा को यह समाचार सुनाता है, तो श्रद्धा उसके माता पिता का हृदय परिवर्तन करने के लिये उनकी सेवा करना चाहती है, क्योंकि वह भगत राम के लिये सब कुछ करने को तैयार है। श्रद्धा भगत राम को सान्तावना देती हुई कहती है— "प्यारे मुझसे उनका घृणा करना उचित है। पढ़े लिखे आदमियों में ही ऐसे कितने निकलेंगे। इसमें उनका कोई दोष नहीं। मैं सवेरे उनके दर्शन करने जाऊंगी, शायद मुझे देखकर उनका दिल

1. प्रेमचन्द, दो सखियाँ, मानसरोवर, भाग-4, प्र० 260।

पिघल जाये। मैं हर तरह से उनकी सेवा करूंगी, उनकी धोतियां धोऊंगी, उनके पैर दाबा करूंगी, मैं वह सब करूंगी, जो उन की मनचाही बहु करती। उनके तलवे सहलाऊंगी – भजन गाकर सुनाऊंगी। अम्मा जी के सिर के सफेद बाल चुनूंगी। मैं दया नहीं चाहती, मैं तो प्रेम की चेरी तुम्हारे लिये सबकुछ करूंगी, सब कुछ।”

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी चित्रण में युवतियों को चित्रित किया है जिनमें अपने प्रेमी के लिये त्याग और सेवा की भावना बलवती रहती है। यह नारी का वह स्वरूप है जिस के लिये नारी की महिमा एक पहचान बनकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। प्रेमचन्द की कहानी ‘हार की जीत’ में लज्जावती में अपने प्रेमी के लिये सेवा और त्याग की पराकाष्ठा दिखाई गई है। लज्जावती और शारदा चरण में प्रेम है और दोनों का विवाह भी होने वाला है। इसी बीच शारदा चरण ‘सुशीला’ नाम की एक सुन्दरी पर मुग्ध हो जाता है और कई दिनों के विचार के बाद लज्जावती के पिता को पत्र लिखता है— “मैं थोड़े दिनों से किसी गुप्त रोग में ग्रस्त हो गया हूँ। सम्भव है, तपैदिक का आरम्भ हो, इसलिये मैं इस मई में विवाह करना उचित नहीं समझता।” शारदा चरण लज्जावती से इस भांति पराङ्मुख होना चाहता था कि लज्जावती की निगाह में उसकी इज्जत कम न हो। लज्जावती को जब यह बात मालूम होती है, वह शारदा चरण के लिये सब कुछ सहने को तैयार हो जाती है। उसकी इच्छा है कि अब शारदा चरण और उसके विवाह में एक क्षण भी विलम्ब न हो। लज्जावती लिखती है— “सावित्री ने क्या सबकुछ जानते हुये भी सत्यवान से विवाह नहीं किया था। फिर मैं

क्यों डरूँ? अपने कर्तव्य मार्ग से क्यों डिगूँ? मैं उनके लिये व्रत रखूंगी, तीर्थ करूंगी, तपस्या करूंगी। हम और वह इसी महीने में एक दूसरे के हो जायेंगे, हमारी आत्मायें सदा के लिये संयुक्त हो जायेंगी, फिर कोई विपत्ति, कोई दुर्घटना मुझे उनसे जुदा नहीं कर सकेगी।”¹ इस प्रकार राधा चरण उसके प्रेम और त्याग से प्रसन्न हो कर लज्जावती से ही शादी कर लेता है। वह सुशीला के मुकाबले लज्जावती को तपस्वनी मानता है जो अपना जीवन अर्पण कर देती है।

‘त्यागी का प्रेम’ कहानी में प्रेमचन्द ने ऐसी नारी का चित्रण किया है जो अपने प्रेमी को अपना सर्वस्व प्रदान कर देती है। वह गर्भवती हो जाती है तथा एक दुर्बल बालक को जन्म देती है किन्तु लोक लज्जा के कारण अपने प्रेमी गोपीनाथ का नाम किसी से नहीं लेती। वह नहीं चाहती कि गोपीनाथ को लोक कलंकित करें। वह इतने भयंकर कष्ट उठाती है कि जो असहनीय है किन्तु प्रेम के नाम पर वह बड़े बड़े बलिदान करने को तैयार है। इस प्रकार वह प्रेमचन्द द्वारा चित्रित एक त्याग की मूर्ति होने का अनुभव कराती है— “अब वह दुखिया एक तंग मकान में रहती थी, कोई पूछने वाला न था। बच्चा कमजोर खुद बीमार कोई आगे न पीछे, न कोई दुख का संगी, न साथी। शिशु को गोद में लिये दिन के दिन बेदाना पानी पड़ी रहती थी। पर धन्य है, उसके धैर्य और सन्तोष को। लाला गोपीनाथ से न मुहँ में शिकायत थी और न दिल में। सोचती इन परिस्थितियों में उन्हें मुझसे पराङ्मुख ही रहना चाहिये। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। उनके बदनाम होने से शहर की कितनी बड़ी हानि

1. प्रेमचन्द, हार की जीत, मान सरोवर, भाग-8, प्र० 171.

होती। सभी उन पर सन्देह करते हैं पर किसी को यह साहस तो नहीं हो सकता कि उनके विपक्ष में कोई प्रमाण दे सके।¹

प्रेमचन्द की कहानियों में नारी के विशुद्ध और आदर्श प्रेम के उपर्युक्त चित्रणों से हमें ज्ञात होता है कि उनकी मान्यता है कि जहां वास्तविक प्रेम होगा, वहां किसी भी दशा में सेवा त्याग, आत्मसमर्पण, क्षमा, उदारता आदि दिव्य भावों का ही वास होगा, न कि प्रतिक्रिया, प्रतिहिंसा, प्रतिशोध अथवा ईर्ष्या द्वेष, क्रोध और घृणा जैसी अधम वृत्तियों का प्रेमचन्द के नारी चित्रण में उनकी यह मान्यता भी उभरकर सामने आती है कि प्रेम के उच्च आदर्शों का पालन नारियां ही कर सकती हैं, पुरुष नहीं, क्योंकि पुरुष बहुधा प्रेम को वासना से प्रथक नहीं रख पाते। प्रेमचन्द द्वारा नारी चित्रण से भलीभांति ज्ञात होता है कि नारी को जब सच्चा प्रेम मिलता है तो सहज की उसका आत्म सुधार होता है। वे नारियां भी जिनका अस्तित्व समाज में तितलियों की भांति है और जो अपने रंग रूप के आकर्षण से जहां तहां प्रेम मधुपान करती रहती है, अथवा वे नारियां भी जो प्रेम की हाट सजाती हैं, जिन्हें सच्चे प्रेम की सुगन्ध भी नहीं मिलती यदि कभी विशुद्ध प्रेम के सम्पर्क में आती है, तो उनकी भी आत्मा उसके प्रकाश से निर्मल हो जाती है। फिर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि ये वे ही नारियां हैं जो चांदी के चन्द टुकड़ों के लिये प्रेम का व्यवसाय किया करती थीं। नारी के प्रेम सम्बन्धी दृष्टि कोण पर डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं— “ प्रेमचन्द के मत से प्रेम एक पावन वस्तु है। वह मानसिक गन्दगी को दूर करता है, मिथ्या चार को हटा देता है और नई ज्योति से

1. प्रेमचन्द, त्यागी का प्रेम, मानसरोवर, भाग-6, प्र० 42.

तामसिकता का ध्वंस करता है। यह बात उनकी किसी भी कहानी और किसी भी उपन्यास में देखी जा सकती है। यह प्रेम ही मनुष्य को सेवा और त्याग की ओर अग्रसर करता है। जहाँ सेवा और त्याग नहीं वहाँ प्रेम भी नहीं वासना का प्राबल्य है। सच्ची प्रेम सेवा त्याग में ही अभिव्यक्ति पाता है। प्रेमचन्द का पात्र जब प्रेम करने लगता है तो सेवा की ओर अग्रसर होता है और अपना सर्वस्व परित्याग कर देता है।¹

प्रेमचन्द युग में नारी पुरुष के अत्याचारों से यों ही पीड़ित थी, किन्तु विधवा तो पुरुष और स्त्री दोनों की दृष्टि में पतित थी। उसे घर के सारे कार्य करने पड़ते थे, सबकी सेवा और खुशामद करनी पड़ती थी, फिर भी वह आदर और सहानुभूति का नहीं, घृणा का पात्र समझी जाती थी। उसके भाग्य में जीवनभर दुख भोगना ही लिखा था। उस पर से समाज और परिवार का अपमान, अवहेलना तथा पुरुषों द्वारा दिये जाने वाले प्रलोभन। यदि वे ऐसे प्रलोभन में फँस जातीं, तो उनके लिये सिवा आत्महत्या, वेश्या वृत्ति अथवा धर्म परिवर्तन के और कोई रास्ता नहीं रह जाता था। अपने परिवार और समाज में उनके लिये कोई स्थान नहीं रहता था। इस प्रकार उस युग में नारी नैतिक और आर्थिक दोनों ही समस्या से जूझ रही थी।

प्रेमचन्द ने विधवा समस्या के किसी भी पहलू और अंग को नहीं छोड़ा है। उनकी 'धिक्कार' कहानी में नारी पात्र मानी की दशा बहुत बुरी है। वह निराधार विधवा है और अपने चाचा के घर विपत्ति के दिन काट रही है। उससे तीन आदमियों का

1. डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, प्र० 437.

काम लिया जाता है, फिर भी घर का कोई प्राणी उससे खुश नहीं रहता। उसकी चचेरी बहन ललिता भी बात-बात पर उसे गालियां देती है। ललिता के विवाह में मानी विधवा को सब के साथ नहीं बैठने दिया जाता है— “सभी स्त्रियां सुन्दर वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित हैं। विधवा मानी के शरीर पर कोई आभूषण नहीं है, न उसे अच्छे कपड़े ही मिले हैं, फिर भी वह प्रसन्न हैं। नव वधु का श्रंगार किया जा रहा है। कल की बालिका को वधू वेश में देखने की इच्छा का मानी संवरण नहीं कर पाती और मुस्कराती हुई उस कमरे में प्रवेश करती है, जिसमें ललिता का श्रंगार किया जा रहा है। सहसा उसे चाची की कठोर आवाज सुनाई पड़ती है, तुझे यहाँ किसने बुलाया था, निकल जा यहाँ से। वह इसी दुख में एकान्त में जा कर खूब रोती है और आत्महत्या करना चाहती है।”¹

‘बेटों वाली विधवा’ कहानी में भी प्रेमचन्द ने फूलमति का ऐसा ही चित्रण किया है जिसमें उसे पति के मरने के बाद परिवार में बहुत तिरस्कृत जीवन व्यतीत करना पड़ता है। फूलमति की अपने ही पुत्रों द्वारा मिलने के कारण विधवा की दयनीयता और बढ़ गयी है। फूलमति जब सधवा थी, तब चारों बहुयें बारी बारी से उसके पांव दवाती थीं और पूरे परिवार की सेवा करती थीं। सारा घर उसके इशारों पर चलता था। परन्तु पति की मृत्यु के बाद फूलमति के अधिकारों की काया पलट हो गयी। बेटे उससे कहते हैं कि सारी जायदाद में माँ का कोई अधिकार नहीं है। वो केवल रोटी कपड़े ही ले सकती है। फूलमति की आत्मा इस वज्रघात पर चीत्कार कर उठी— “मैंने ही घर

1. प्रेमचन्द, धिक्कार मान सरोवर, भाग-1, प्र० 203.

बनवाये, मैंने सम्पत्ति जोड़ी, मैंने तुम्हें जन्म दिया, पाला और आज इस घर में गैर हूँ? अपना घर द्वारा लो। मुझे तुम्हारी आश्रिता बन कर रहना स्वीकर नहीं। इससे कहीं अच्छा है कि मर जाऊं। वाह रे अंधेर मैंने पेड़ लगाया और मैं ही उसकी छांह में नहीं खड़ी हो सकती, अगर यही कानून है, तो इसमें आग लग जाये।”¹

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी चित्रण द्वारा विधवा समस्या के प्रत्येक पक्ष पर प्रकाश डाला है। बाल विधवा, अनाथ और निःसन्तान युवती विधवा, सम्पत्तिक अधिकारों से वंचित विधवा तथा तिरस्कृत लांक्षित और अपमानित जीवन व्यतीत करने वाली विधवा। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में इनके समाधान करने के लिये भी प्रकाश डाला है। उन्होंने, ‘नैराश्य-लीला’, नामक कहानी में एक ऐसी बाल विधवा की कथा लिखी है। पंडित अयोध्यानाथ की पुत्री कैलाश कुमारी अपने माता पिता की इकलौती सन्तान है। उसका विवाह बारह वर्ष की आयु में होता है और गौना होने के पहले ही वह विधवा हो जाती है। जब उसे यह भी नहीं मालूम कि विवाह क्या होता है। आरम्भ में घर वालों ने उसके साथ सहानुभूति की। फिर उसको एक पाठशाला खोल कर दी गयी। जिसमें वह तन मन से सेवा करती थी। एक बच्चे के अत्यधिक बीमार होने पर उसके घर पर भी रही। समाज को ये सब मंजूर न था। पाठशाला बन्द करवा दी गयी। उसे अपनी दयनीयता का यथार्थ ज्ञान होने लगा— “तो कुछ मालूम भी तो हो कि संसार मुझसे क्या चाहता है। मुझमें जीत है, चेतना है, जड़ क्यों कर बन जाऊं? मुझसे यह नहीं हो सकता कि अपने को अभागिनी दुखिया समझूं और एक टुकड़ा रोटी

1. प्रेमचन्द, बेटों वाली विधवा, मान सरोवर, भाग-1, पृ० 73

खा कर पड़ी रहूँ ऐसा क्यों करूँ? संसार मुझे चाहे जो समझे मैं अपने को अभागिनी नहीं समझती। मैं अपने आत्म सम्मान की रक्षा आप कर सकती हूँ। मैं इसे अपना घोर अपमान समझती हूँ कि पग-पग पर मुझ पर शंका की जाये। नित्य कोई चरवाहों के समान मेरे पीछे लाठी लिये घूमता रहे कि किसी खेत में न जा पड़ूँ। यह दशा मेरे लिये असहाय है।”¹

प्रेमचन्द विधवा विवाह के पक्षधर थे। उन्होंने अपनी कहानियों में बाल विधवाओं के पुनर्विवाह के चित्रण प्रस्तुत किये हैं। ‘नाग पूजा’ कहानी में तिलोत्तमा के पति को सांप ने उसी समय काट लिया जब वह विदा कराने के बाद डोली में बैठ रहा था। उसने अपने पति की सूरत भी न देखी थी। तिलोत्तमा के पिता से उसका दुख देखा नहीं गया उन्होंने उसके पुनर्विवाह का निश्चय किया। इसमें सामाजिक बाधाएँ आने लगीं। जिसका विवाह किया जा रहा हो उस नारी का चित्रण प्रेमचन्द ने बहुत जानदार ढंग से किया है— “तिलोत्तमा पर सारा घर जान देता था। सभी ध्यान रखते थे कि उसका रंग ताजा न होने पाये। लेकिन उसके चहरे पर उदासी छाई रहती थी, जिसे देखकर लोगों को दुख होता था। पहले तो माँ भी इस सामाजिक अत्याचार पर सहमत न हुई। लेकिन बिरादरी वालों का विरोध ज्यों ज्यों बढ़ता गया, उसका विरोध ढीला पड़ता गया। सिद्धांत रूप से तो किसी को कोई आपत्ति न थी, किन्तु उसे व्यवहार में लाने का साहस किसी में न था। कई महीनों के लगातार प्रयास के बाद एक कुलीन सिद्धान्तवादी, सुशिक्षित वर मिला, उसके घर वाले भी राजी हो गये। तिलोत्तमा को

1. प्रेमचन्द, नैराश्य लीला, मानसरोवर, भाग-3, प्र० 69.

समाज में अपना नाम बिकते देख कर दुख होता था। वह मन में कुढ़ती थी कि पिताजी नाहक मेरे लिये समाज में नक्कू बन रहे हैं। अगर मेरे भाग्य में सुहाग लिखा होता तो वह वज्र ही क्यों गिरता? उसे कभी-कभी ऐसी शंका होती थी। कि मैं फिर विधवा हो जाऊंगी।¹

प्रेमचन्द युग में विधवा विवाह वैदिक रीति से होते थे। उन्होंने नाग पूजा की तिलोत्तमा का विवाह वर्णन कर ऐसी बाल विधवा नारी का चित्रण किया है जो समाज सुधार का एक क्रियात्मक उदाहरण था। समाज सुधारकों के दल दूर से विवाह में सम्मिलित होने के लिये आने लगे, विवाह वैदिक रीति से हुआ था मेहमानों ने खूब व्याख्यान किये। पत्रों ने खूब आलोचनायें की। बाबू जगदीशचन्द्र के नैतिक साहस की सराहना होने लगीं 'धिकार' कहानी में विधवा मानी का पुनर्विवाह उसका चचेरा भाई अपने मित्र से कर देता है, किन्तु मानी के चाचा उसे कुलटा, हरजाई, पापिष्ठा, अभागिनी आदि न जाने क्या क्या कहते हैं। और मानी इसी लिये आत्महत्या कर लेती है कि जीवन में अभी न जाने कितने अनादर और अपमान उसे और उसके पति को सहने पड़े। प्रेमचन्द ने ऐसी नारियों का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। विधवा के प्रश्न के उन्होंने समाधान प्रस्तुत किये और इसे एक समस्या के रूप में देखा। प्रेमचन्द मानते थे कि आत्माभिमान प्रत्येक जीव का धर्म होता है किन्तु भारतीय नारियों में इसकी कमी है। इससे उनमें आत्म निर्भरता और स्वतंत्रता की भावना आती ही नहीं है। उनका व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है। वे सुहाग को बड़ी निभूति समझती हैं चाहे उनके पति

1. प्रेमचन्द, नागपूजा, मानसरोवर, भाग-7, प्र० 292.

उनकी बात भी न पूछें। ऐसी अवस्था में विधवा स्त्री का समाज में निरादर होता है और वह शुभ कार्यों, विशेषतः विवाह में अशुभ समझी जाती है। इस प्रकार के नारी चित्रण प्रेमचन्द द्वारा किये गये जिसे साहित्य में समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति माना गया।

किसी भी समाज के लिये यह लज्जा की बात है कि वह अपने एक महत्वपूर्ण अंग, नारी जाति को घृणित पेशा करने के लिये विवश करे। किसी कारण एक बार पतित, पथभ्रष्ट हो जाने वाली नारी के साथ समाज का व्यवहार नारी के प्रति उसके दृष्टिकोण का परिचायक है। ग्रहिणी और माता के बाद की अधिकारिणी नारी को, परिस्थिति निरपेक्ष नैतिक मानदण्ड के सहारे पतित घोषित कर, जिस प्रकार पुरुषों की वासना तृप्ति के लिये बाध्य किया जाता है, वह समाज की अमानुषिक क्रूरता का प्रमाण है। प्रेमचन्द ने अपने पात्रों से बहुधा इस अवांछनीय मनोवृत्ति की आवेशपूर्ण आलोचना कराई है। प्रेमचन्द ने नारियों के पतन के निम्न कारणों का उल्लेख किया है— समाजिक कुरीतियां, विधवा की बुरी समाजिक स्थिति, अपने ही घर में नारीको समुचित सम्मान न मिलना, बुरी आर्थिक स्थिति के साथ भोग विलास की लालसा, नैतिक और धार्मिक शिक्षा का अभाव, धन का लोभ, रूप का अभिमान, पति के द्वारा अपेक्षा, अज्ञानता, घर से निकाली हुई स्त्री, कुटनियों और स्त्रियों का अनैतिक व्यवसाय करने वालों का मायाजाल तथा एक बार गलत रास्ते पर कदम बढ़ाने वाली नारी को फिर स्थान न मिलना इत्यादि। 'वेश्या' कहानी में वेश्या माधुरी कहती है— "नारी अपना बस

रहते हुये कभी पैसों के लिये अपने को समर्पित नहीं करती। यदि वह ऐसा कर रही है, तो समझ लो कि उसके लिये और कोई आश्रय और कोई आधार नहीं है.....।”¹

प्रेमचन्द की ‘नरक का मार्ग’ कहानी की नायिका एक धनी वृद्ध से ब्याही जाती है, जो उसके रूप, यौवन और श्रंगार को सन्देह की दृष्टि से देखता है, उसका आदर सम्मान करना तो दूर की बात है। उसके घर में एक नौकर रखा गया है तब से उसका वृद्ध पति तरह-तरह के कटाक्ष करता है। पति की मृत्यु के बाद वह प्रेम की खोज में घर से निकल पड़ती है। उसे एक कुटनी बुढ़िया मिलती है जो उसे वेश्यावृत्ति के मार्ग पर ले जाती है। कहानी की नायिका को बहुत दुख होता है वह कहती है—

“आह! वह बुढ़िया जिसे मैं आकाश की देवी समझती थी, नरक की डायन निकली। मेरा सर्वनाश हो गया। मैं अमृत खोजती थी, विष मिला, निर्मल स्वच्छप्रेम की प्यासी थी, गन्दे, विशाक्त नाले में गिर पड़ी। वह दुर्लभ वस्तु न मिलनी थी, न मिली। लेकिन मेरे अधः पतन का अपराध मेरे सिर नहीं, मेरे माता पिता और उस बूढ़े पर है, जो मेरा स्वामी बनना चाहता था। मैं फिर कहती हूँ, अब भी अपनी बालिकाओं के लिये मत देखो धन, मत देखो जायदाद, मत देखो कुलीनता, केवल वर देखो। स्त्री सब कुछ सह सकती है, दारुण दुख बड़े से बड़ा संकट, अगर नहीं सह सकती तो अपने यौवन काल की उमंगों का कुचला जाना। रही मैं मेरे लिये अब इस जीवन में कोई आशा नहीं। इस अधम दशा को भी उस दशा से न बदलूंगी, जिससे निकल कर आई हूँ।”²

1. प्रेमचन्द, वेश्या, मानसरोवर, भाग-2, प्र० 53.

2. प्रेमचन्द, नरक का मार्ग, मानसरोवर, भाग-3, प्र० 30.

प्रेमचन्द ने 'दो कब्रें' कहानी में नारी की आर्थिक कठिनाइयों से त्रस्त अवस्था का चित्रण किया है। 'लांछन' कहानी में नारी की मजबूरियों का चित्रण प्रेमचन्द ने सटीक ढंग से किया है। 'निर्वासन' कहानी में मर्यादा अपने पति परशुराम के साथ गंगा स्नान करने जाती है। सेवा समिति का एक युवक मर्यादा को सेवा समिति कार्यालय में ले जाता है, जहां खोई हुई अन्य स्त्रियाँ भी हैं। परशुराम एक व्यक्ति से अपनी पत्नी का हुलिया बता कर कहता है कि वह खो गई है। एक व्यक्ति मर्यादा को बहला फुसला कर एक तंग गली के मकान में ले जाता है, और कहता है कि उसके पति उसे दूर रह रहे हैं और उसे लेने यहीं आयेंगे। मर्यादा समझ जाती है कि उसे छला गया है और वह कोठे पर आ गई है। वह किसी तरह वहाँ से अवसर देखकर भाग कर एक हफ्ते बाद अपने पति के घर आ आती है। किन्तु उसका पति उसे अपने साथ रखने को तैयार नहीं है और उस पर तरह तरह के आरोप लगाता है कि वह एक हफ्ते तक पता नहीं किस किस के साथ रही होगी। इतना अपमान सहते हुये मर्यादा वहाँ नहीं रहना चाहती। वह यह कहते हुये चली जाती है— "समझ लूंगी कि मैं विधवा भी हूँ और बाँझ भी चलो मन! अब इस घर में तुम्हारा निबाह नहीं। चलो जहाँ भाग्य ले जाये।"¹ प्रेमचन्द ने इस नारी का जिस प्रकार चित्रण किया है वह सटीक है।

प्रेमचन्द की कहानी 'आगा-पीछा' में कोकिला वेश्या की पुत्री श्रद्धा को भी विभिन्न परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। जब श्रद्धा पैदा होती है तो कोकिला की जीवन प्रणाली ही बदल जाती है। वह अपनी बच्ची को वासना के प्रचण्ड आधातों का

1. प्रेमचन्द, निर्वासन, मानसरोवर भाग-3, प्र० 52.

शिकार नहीं बनाना चाहती। वह अपना घृणित पेशा छोड़ देती है और दान तथा व्रत से अपनी पिछली कालिमायें धोने का प्रयत्न करती है। श्रद्धा के सामने वह वचन और कर्म से, विचार और व्यवहार से नारी जीवन का ऊंचा आदर्श रखती है। जब श्रद्धा युवती होती है, तो विद्यालय में समाज में सर्वत्र सभी उसका बहिष्कार करते हैं और उससे बोलते तक में अपना अपमान समझते हैं। श्रद्धा विवाह करने की इच्छुक नहीं है, उसका विचार है वह पढ़लिख कर डाक्टर या वकील बनेगी, क्योंकि अब तो स्त्रियों के लिये सभी मार्ग खुल गये हैं। उसे अपनी माता पर अभिमान है, क्योंकि वह दलदल में फंस कर फिर निकल आई थी। श्रद्धा इसलिये अविवाहित नहीं रहना चाहती कि उसे विवाह से घृणा है, बल्कि इसलिये कि समाज उसे स्वीकार नहीं करेगा। एक दिन उसकी माता पूछती है कि वह विवाह क्यों नहीं करना चाहती तो श्रद्धा कहती है— “मैं कुंवारी रह कर जीवन व्यतीत करना चाहती हूँ। विद्यालय से निकलकर कालेज में प्रवेश करूंगी और दो तीन वर्षों बाद हम दोनों स्वतंत्र रूप से रह सकती हैं। डॉक्टर बन सकती हूँ। वकालत कर सकती हूँ, औरतों के लिये सब मार्ग खुल गये हैं। अम्माजी प्रेम विहीन संसार में कौन है। प्रेम मानव जीवन का श्रेष्ठ अंग है। जब कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा, जो मुझे वरने में अपनी मान हानि न समझेगा, तो मैं तन मन धन से उसकी पूजा करूंगी, पर किसके सामने हाथ पसार कर प्रेम की शिक्षा माँगू? यदि

किसी ने सुधार के क्षणिक आवेश में विवाह कर भी लिया तो मैं प्रसन्न न हो सकूंगी।
इससे तो अच्छा है कि मैं विवाह का विचार ही छोड़ दूँ।¹

प्रेमचन्द की कहानी 'दो कब्रें' में सुलोचना जोहरा नामक वेश्या की पुत्री है। जोहरा का एक रईस से प्रेम हो गया था। सुलोचना इसी रईस की सन्तान थी। उसके जन्म के तीन साल बाद ही जोहरा की मृत्यु हो जाती है। सुलोचना का पालन पोषण वही रईस करता है। वह बड़ी होकर कालेज जाती है। सबकुछ जानते हुये भी प्रोफेसर रामेन्द्र उससे विवाह कर लेता है। किन्तु विवाह के बाद समाज के लोगों के विचार उन दोनों के लिये बदल जाते हैं। वे उनके घर अपनी स्त्रियों को नहीं जाने देते हैं। सुलोचना के जब पुत्री होती है तो उसके जन्मोत्सव पर मित्रों का न आना रामेन्द्र को दुखी बना देता है। वे क्रोध में पागल हो जाते हैं और चाहते हैं कि जाकर मित्रों से पूछें कि आप लोग समाज सुधार का राग अलापते हैं, तो वह किस बल पर? प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी चित्रण में वेश्यावृत्ति के उन्मूलन हेतु सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है।

प्रेमचन्द ने नारी चित्रण के राष्ट्रीय जाग्रति वाले स्वरूप को भी महत्व दिया है। स्वदेशी आन्दोलनों का प्रेमचन्द पर अधिक प्रभाव देखने को मिलना है। राष्ट्रीय भावना पर उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखी और उसमें विशेष रूप से नारी के सहयोग को चित्रित किया है। 'रानी सारंधा' कहानी की सारंधा के चरित्र में वीरता जातीय अभिमान,

1. प्रेमचन्द, आगा-पीछा, मान सरोवर, भाग-4, प्र०.114।

स्वाधीनता, आत्म गौरव आदि वीरोचित गुणों का समन्वय करके उसका सटीक चित्रण किया है। बाल्यावस्था से ही उसमें ये गुण बीज रूप में थे। एक बार उसका भाई रणयुद्ध में पीठ दिखाकर भाग आया था। उसकी पत्नी ने तो उसके लौटने पर हर्ष व्यक्त किया किन्तु सारंधा के तेवर पर बल पड़ गये थे और गुस्से में उसने कहा— “भैया तुमने कुल की मर्यादा खो दी। ऐसा कभी न हुआ था। उस दिन उसका भाई उलटे पांव लौट गया और कुछ महीनों बाद विजय प्राप्त कर के ही लौटा। सारंधा के भाई की पत्नी उससे कहती है— “अपना पति होता तो छाती में छिपा लेती, सारंधा ने कहा जिस दिन ऐसा होगा मैं भी अपना वचन पूरा करके दिखाऊंगी उसकी छाती में छुरा चुभा दूंगी।”¹ एक समय ऐसा भी आता है जब सारंधा का विवाह हो जाता है और उसके पति तथा उसे शत्रुओं ने घेर लिया। जब बचने की कोई आशा न रही तो उसके पति ने कहा कि तुम मुझे तलवार से मार दो, क्योंकि दुश्मनों ने घेर लिया है और उनके हाथों मरने से अच्छा है कि स्वयं ही मृत्यु को गले लगा लें। सारंधा ने पहले अपने पति के तलवार सीने में चुभो दी और बाद में स्वयं भी अपने पेट में तलवार चुभो कर अपने प्राण देश की रक्षा में लगा दिये किन्तु पराजित नहीं हुई।

प्रेमचन्द ने अपनी कुछ कहानियों में अंग्रेज सरकार द्वारा किसानों पर किये जा रहे अत्याचारों तथा स्त्रियों और बच्चों पर जुल्म की अभिव्यक्ति की है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में इस प्रकार के आतंक का बहुत स्वाभाविक चित्रण किया है और

1. प्रेमचन्द, रानी सारंधा, मान सरोवर, भाग-6, प्र० 25.

दिखलाया है कि नारियों पर इसकी क्या प्रतिक्रिया हुई थी। 'जेल' कहानी की मृदुला उस युग के किसानों की सच्ची हालत की अभिव्यक्ति इन शब्दों में खींचती है— "अनाज का भाव दिन बा दिन गिरता जाता है। खेत की उपज से बीजों तक के दाम नहीं आते। मेहनत और सिंचाई उसके ऊपर। इस पर सरकार का हुक्म है कि लगान कड़ाई के साथ वसूल किया जाये।"¹ इसमें स्त्रियां भी आगे आती हैं और सरकारी नौकरों के खिलाफ लाम बन्द हो कर उनके अपने हक और दुर्दशा के बारे बताती हैं। उनके ठीक ढंग से व्यवहार न करने की दशा में अपने आंचल को कमर पर कस कर लाठी हाथ में लेकर उनसे मुकाबला करती हैं।

प्रेमचन्द की कहानी 'पत्नी से पति' में नारियों की जाग्रति के चित्रण स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किये गये हैं। इसकी नायिका गोदावरी को सभी विदेशी वस्तुओं से घृणा है और उसके पति को सभी भारतीय वस्तुओं से चिढ़ है। वह सरकारी कर्मचारी है। पहले तो वह पति को स्वदेशी प्रेम के बारे में बताती है फिर उनका दिल रखने के लिये खिलायती वस्तुओं का प्रयोग करने लगती है। एक दिन उसके घर के सामने कांग्रेसियों द्वारा खिलायती वस्तुओं की होली जलाई जाती है। उसका पति इस काम को सिरफिरों का काम बताता है तो उसे गुस्सा आ जाता है वह उबल पड़ती है और तीक्ष्ण शब्दों में पति का तिरस्कार किये बिना नहीं रह पाती— "तुम्हें अपने भाइयों का जरा भी ख्याल नहीं आता? भारत के सिवा और भी कोई देश है, जिस पर किसी दूसरी जाति का

1. प्रेमचन्द, पत्नी से पति, मान सरोवर, भाग-7, प्र० 18

शासन हो? छोटे छोटे राष्ट्र भी किसी दूसरी जाति के गुलाम बन कर नहीं रहना चाहते। क्या एक हिन्दुस्तानी के लिये यह लज्जा की बात नहीं है कि वह अपने थोड़े से फायदे के लिये सरकार का साथ दे कर अपने ही भाइयों के साथ अन्याय करें?"¹ और गोदावरी धीरे-धीरे अपने पति को भी स्वदेशी आन्दोलन के लिये प्रेरित करके अपना साथ कर लेते हैं।

इसी प्रकार प्रेमचन्द की कहानी 'जुलूस' की मिट्टन बाई का पति दरोगा है। वह पूर्ण स्वराज का नारा लगाने वाले एक जुलूस को आगे जाने से रोकता है तथा उन पर अपना बेटन चलाता है और घोड़ा दौड़ा देता है। नेता घायल हो जाता है। मिट्टन अपने पति को आड़े हाथों लेती है— "तुम कम से कम इतना तो कर ही सकते थे कि उन पर डण्डे न चलाने देते। तुम्हारा काम आदामियों पर डण्डे चलाना है? तुम ज्यादा-ज्यादा उन्हें रोक सकते थे। कल को तुम्हें अपराधियों की बेंत लगाने का काम दिया जाये तो शायद तुम्हें बड़ा आनन्द आयेगा, क्यों? तुम समझते हो उस दल में कोई भला आदमी न था? उसमें कितने आदमी ऐसे थे जो तुम्हें नौकर रख सकते हैं। मगर बे गुनाहों के खून से हाथ रंग कर तरक्की पाई तो क्या पाई"² बाद में जुलूस के नेता की मृत्यु हो जाती है और लोग उसको लेकर फिर जुलूस निकालते हैं। उसमें मिट्टन बाई भी जाती है। इस बार फिर उसका दरोगा पति ड्यूटी पर है। वह उसे देखकर दिल ही दिल में कोसती है। वह शहीद की पत्नी से मिलने उसके घर जाती

1. प्रेमचन्द पत्नी से पति, मान सरोवर, भाग-7, प्र० 18.

2. प्रेमचन्द, जुलूस, मान सरोवर, भाग-7, प्र० 59.

है तो उसे अत्यधिक आश्चर्य होता है कि उससे पहले उसका दरोगा पति वहाँ उपस्थित है और शहीद की पत्नी से क्षमा याचना कर दुःख प्रकट कर रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि पत्नी के कहने से दरोगा का हृदय परिवर्तन हो चुका था। यह प्रेमचन्द के नारी चित्रण का परिणाम है कि हमें नारियों में देश के प्रति जाग्रति देखने को मिलती है।

प्रेमचन्द युग में स्वराज्य की माँग ने ग्रामीण नारियों और पुरुषों के हृदय में भी नवजीवन का मन्त्र फूँक दिया था। गाँवों में यदि कोई सत्याग्रही जत्था पहुँच जाता था, तो उनका सोया हुआ आत्म सम्मान जाग उठता, वृद्धों और वृद्धाओं के रक्त में भी जोश की गर्मी आ जाती थी। प्रेमचन्द की 'समर यात्रा' कहानी में एक ऐसे ही गाँव की कथा है। सत्याग्रहियों को देखकर इस कहानी की पचहत्तर साल की बुढ़िया नौहरी नाचने लगती है, उसका बुढ़ापा भाग जाता है, उसमें इतनी शक्ति आ जाती है कि वह पकड़ धकड़ के लिये आये हुये दरोगा को भी फटकारती है। "जानते हो, यह लोग जो यहां आये हैं, कौन हैं? यह वह लोग हैं, जो हम गरीबों के लिये अपनी जान तक झोंकने को तैयार हैं। तुम उन्हें बदमाश कहते हो, तुम जो घूस के रुपये खाते हो, जुआ खेलाते हो चोरियां करवाते हो, डाके डलवाते हो, भले आदमियों को फंसाकर मुट्ठियां गरम करते हो और अपने देवताओं की जूतियों पर नाक रगड़ते हो, तुम उन्हें बदमाश कहते हो? मैं तो बूढ़ी औरत हूँ लेकिन और कुछ न कर सकूंगी, तो जहाँ यह लोग सोयेंगे, वहाँ झाड़ू तो लगा दूंगी, इन्हें पंखा तो झल दूंगी। जब वह

जत्थों के साथ जाती है तो मानों उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ते।”¹ वृद्ध नारियों तक का प्रेमचन्द ने राष्ट्रीय जाग्रति के परिप्रेक्ष्य में जो चित्रण किया है वह देखते ही बनता है।

स्वराज आन्दोलन में लगे हुये स्वयं सेवकों का नारियां बड़ा सम्मान करती हैं। प्रेमचन्द की ‘अनुभव’ कहानी में कुछ स्वयं सेवकों को जेठ की तपती दुपहरी में शरबत पिलाने के अपराध में एक युवक को एक वर्ष की सजा हो जाती है और उसकी पत्नी अकेली एवं निराधार हो जाती है। उसके पिता और ससुर जो सरकारी नौकरी में है भय से मुंह छिपा लेते हैं। उस युवक का मित्र जो कि शिक्षक है अपनी पत्नी के साथ वहाँ आता है और उसकी पत्नी जो आन्दोलन से जुड़ी है उस महिला को अपने घर ले जाते हैं। इस अपराध में उसकी नौकरी छूटने को होती है। तो उसकी पत्नी उसे इस्तीफा देने के लिये कहती है। बेचारी निस्सहाय स्त्री लज्जा से कटी जाती है। कहाँ तो बाप और ससुर उसका मुंह नहीं देखना चाहते और कहाँ ये उसका आदर सम्मान। अन्त में वह अपने मन की बात उस शिक्षक की पत्नी से कहती है और उसका उत्तर एक देश भक्त नारी के मनो भावों का उत्तम चित्रण प्रतीत होता है— “अच्छा बता तेरे प्रियतम क्यों जेल गये? इसीलिये तो कि स्वयं सेवकों का सत्कार किया था। स्वयं सेवक कौन हैं? यह हमारी सेना के वीर हैं, जो हमारी लड़ाइयाँ लड़ रहे हैं। स्वयं सेवकों के भी तो बाल बच्चे हैं होंगे माँ बाप होंगे वह भी तो कोई कारोबार करते होंगे

1. प्रेमचन्द, समर यात्रा मान सरोवर, भाग-7, प्र०-72

पर देश की लड़ाई के लिये उन्होंने सब कुछ त्याग दिया है। ऐसे वीरों का सत्कार धरने के लिये जो आदमी जेल में डाल दिया जाये, उसकी स्त्री के दर्शनों से भी आत्मा पवित्र होती है। मैं तुझ पर अहसान नहीं कर रही हूँ, तू मुझ पर एहसान कर रही है”।¹

‘तावान’ कहानी की अम्बा भी ऐसी ही देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत नारी के रूप में प्रेमचन्द द्वारा चित्रित की गई है। वह बीमार है बच्चों के खाने का ठिकाना नहीं है, पति के पास रुपये नहीं हैं कि देशीमाल खरीद कर बेचे। अम्बा बीमार है मगर डॉक्टर को दिखाने के लिये पैसे नहीं हैं। उसका पति देश भक्त है वह विदेशी माल नहीं बेचना चाहता घर में दो दिन से चूल्हा नहीं जला है। एक दिन वह चुपके से मोहर तोड़ देता है, पिकैट कमेटी के लोग उस पर एक सौ रुपये का दण्ड लगा देते हैं। अम्बा अपने पति को कांग्रेस के दफ्तर में भेजती है वहाँ से भी कोई मदद नहीं मिल पाती है। वह कहते हैं आन्दोलन में इतने घर तबाह हो रहे हैं और होंगे। ‘तावान’ भी माफ नहीं किया जा सकता क्योंकि तब बड़े व्यापारी भी मुहर तोड़ेंगे और तावान लगाने पर माफी मांगेंगे। अम्बा के दिल में कांग्रेस वालों की बात बैठ जाती है और वो तावान अदा करने के लिये अपना घर रेहन रखने की बात करती है। अपने परिवार के भविष्य के विषय में उसका निश्चय दृढ़ है ही— “मेरी दवा दारू की चिन्त न करो। ईश्वर की जो इच्छ होगी वह होगा। बाल बच्चे भूखों मरते हैं तो मरने दो। देश में

1. प्रेमचन्द, अनुभव, मान सरोवर, भाग-1, प्र०-265

करोड़ों आदमी ऐसे हैं, जिनकी दशा हमारी दशा से खराब है। हम न रहेंगे, देश तो सुखी रहेगा।”¹

प्रेमचन्द द्वारा चित्रित नारी चरित्रों में वीरता साहस, आत्मगौरव न्याय भाव, देशभक्ति, स्वाधीनता आदि वीरोचित गुणों का विलक्षण समन्वय है। गांधी जी के आह्वान पर भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हजारों की संख्या में सभी स्तर और वर्गों की नारियों ने भाग लिया। गांधीजी ने शराब और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना देने के लिये नारियों को ही चुना था। क्योंकि उनमें पुरुषों से अधिक साहस और आत्मत्याग होता है। नारियाँ देश और समाज की वास्तविक स्थिति से परिचित हैं और समझती हैं कि मजदूरों, काश्तकारों और गरीबों की अवस्था में स्वराज मिलने के बाद भी सुधार नहीं होगा तो वह वास्तविक स्वराज्य न होगा।

प्रेमचन्द के जीवन में नारी शिक्षा की पाश्चात्य प्रणाली भी आधुनिक शिक्षा हेतु प्रचालित थी। बहुसंख्या नारियां स्कूलों और कालेजों में अध्यापन करने लगीं थीं, कुछ डॉक्टरी और वकालत भी करने लग गई थीं और प्रायः प्रत्येक वर्ष उच्चतर शिक्षा के लिये कुछेक विदेश भी जाने लगी थीं। हांलाकि प्रेमचन्द आधुनिक शिक्षा में अंग्रेजी की शिक्षा नारियों के लिये श्रेष्ठ नहीं मानते थे, किन्तु वे नारी शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। प्रेमचन्द की शिक्षित नारी अपने को जागरूक तथा पुरुषों से न डरने वाली स्त्री के रूप में पाठकों के सामने आती है। विश्वास कहानी की मिस जोशी उच्च शिक्षा प्राप्त युवती

1. प्रेमचन्द, तावन, भाग-7, प्र०-72.

और एक कन्या पाठशाला की शिक्षिका हैं। किन्तु उसका व्यक्तिगत जीवन कलुषित ओर विलासपूर्ण है। वह प्रान्त के गवर्नर की प्रेयसी हैं। वह जन सेवक मिस्टर आप्टे के सम्मुख इसके लिये अपनी शिक्षा दीक्षा को दोषी ठहराती हैं—“मेरी उच्च शिक्षा ने ग्रहणी जीवन से मेरे मन में घृणा पैदा कर दी। मुझे किसी पुरुष के अधीन रहने का विचार अस्वाभाविक जान पड़ता था। मैं गृहिणी की जिम्मेदारियों और चिन्ताओं को अपनी मानसिक स्वाधीनता के लिये विष तुल्य समझती थी। मैं तर्क बुद्धि से अपने स्त्रीत्व को मिटा देना चाहती थी, मैं पुरुषों की भांति स्वतंत्र रहना चाहती थी। क्यों किसी की पाबन्द होकर रहूँ क्यों अपनी इच्छाओं को किसी व्यक्ति के साँचे में ढालूँ? क्यों किसी को यह कहने का अधिकार दूँ कि तुम ने यह क्यों किया, वह किया? दाम्पत्य मेरी निगाह में तुच्छ वस्तु थी।”¹

प्रेमचन्द ने उच्च शिक्षित नारियों का चित्रण युग के यथार्थ रूप में किया है। ‘मिस पदमा’ कहानी की पदमा तो उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद मिस जोशी से भी दो कदम आगे बढ़ जाती है। विवाह को वह पराधीनता ही नहीं, अप्राकृतिक बन्धन भी समझती है और मुक्त योग के सिद्धान्त में विश्वास रखती है। उसके दर्जनों प्रेमी हैं—“विवाह को उन्होंने एक अप्राकृतिक बन्धन समझा था और निश्चय कर लिया था कि स्वतन्त्र रहकर जीवन का उपभोग करूंगी। एम०ए० की डिग्री ली, फिर कानून पास किया और प्रैक्टिस शुरू कर दी। रूपवती थी, युवती थी, म्रदुभाषिणी थी और

1. प्रेमचन्द, विश्वास, मान सरोवर, भाग-3, प्र० 15.

प्रतिभाशालिनी भी थी। मार्ग में कोई बाधा न थी। देखते देखते वह अपने साथी नवजवान मर्द वकीलों को पीछे छोड़ कर आगे निकाल गई और अब उसकी आमदनी कभी कभी एक हजार से भी ऊपर बढ़ जाती। पदमा को विलास से घृणा न थी घृणा थी पराधीनता से, विवाह को जीवन का व्यवसाय बनाने से। जब स्वतंत्र रहकर भोग विलास का आनन्द उड़ाया जा सकता है तो फिर क्यों न उड़ाया जाये? भोग में उसे कोई नैतिक बाधा न थी इसे वह केवल देह की एक भूख समझती थी।¹

प्रेमचन्द ने 'दो सखियां' कहानी के माध्यम से उच्च शिक्षित और सामान्य शिक्षित स्त्रियों का सजीव चित्रण किया है। उन्होंने दिखाया है कि किस प्रकार एक स्त्री तो विवाह के संस्कार का सम्मान भी करती है और ससुराल में जाकर सबकी सेवा करना भी उसका काम रहता है और वह उसमें अपनी खुशी समझती है। इस कहानी में चन्दा ने प्रेमा की भांति कालेज की शिक्षा न सही, पर माध्यमिक शिक्षा पाई है। पदमा और चन्दा दोनों सखियां साथ साथ पढ़ी हैं, किन्तु पारिवारिक आचार विचार के कारण दोनों में बहुत अन्तर है। चन्दा आधुनिक शिक्षा पाकर भी विवेकशील बनती है। पदमा के पिता नये ख्याल के आदमी हैं और नारी की स्वाधीनता तथा समानता के पक्षपाती हैं। इस पारिवारिक वातावरण में पली बड़ी पदमा पर स्कूली शिक्षा का अकल्याणकर प्रभाव पड़ता है। चन्दा का वैवाहिक जीवन सम्बन्धी आदर्श भी विवेक और कर्तव्य भावना पर आश्रित है— "मैं विवाह को सेवा और त्याग का व्रत समझती हूँ और इसी भाव से

1. प्रेमचन्द, मिस पदमा, मान सरोवर, भाग-2, प्र० 92

उसका अभिवादन करती हूँ। मेरी इच्छा है कि यहाँ सभी मुझसे खुश रहें।
पति देव का मुझसे प्रेम है, यह मेरे लिये काफी है।¹

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में कुछ ऐसी नारियों को, जिन्हें अक्षर ज्ञान तक नहीं है, जो समाज में नीच समझी जाती हैं, जिन्हें जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं के लिये भी कठोर श्रम करना पड़ता है, किन्तु जिन्होंने संसार की पाठशाला में सेवा, त्याग, कर्तव्य और सद्व्ययता का पाठ पढ़ा है, इस प्रकार चित्रित किया है कि वे पाठकों की दृष्टि में आदरणीय बन जाती हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में ऐसी शताधिक नारियों का वर्णन है, जिन्हें पुस्तकीय शिक्षा नहीं मिली है, किन्तु वे अपने पतित्व और मातृत्व का सम्पूर्ण दायित्व गम्भीरतापूर्वक संभालती हैं। प्रेमचन्द मानते थे कि नारी को ऐसी शिक्षा मिले कि वह पुरुष की सहयोगी हो प्रतिद्वन्द्वी नहीं, जैसे कि आधुनिक शिक्षा में हो जाता है। नारी शिक्षा का आदर्श निर्मित होने से नारी का स्वस्थ विकास होता है और नारियां परिवार एवं समाज के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करती हैं।

भारत की सभ्यता आध्यात्मिक प्रधान रही है तथा पाश्चात्य शिक्षा में भौतिक प्रधान गुण देखने को मिलता है। पश्चिम की सभ्यता व्यक्ति के सुख को महत्व देती है और भारत की सभ्यता समाज कल्याण को। आधुनिक शिक्षा ने लोगों को पाश्चात्य सभ्यता के समीप पहुंचा दिया है। प्रेमचन्द समाज के उन दलित शोषित वर्गों के प्रति सहानुभूतिशील थे, जिनमें भारतीय नारी की भी गणना होती है। वे अन्य वर्गों की तरह

1. प्रेमचन्द, दो सखियां, मान सरोवर भाग-4, प्र० 214.

भारतीय नारी समाज की स्थिति में भी सुधार चाहते थे। किन्तु वह यह नहीं चाहते थे कि भारतीय नारी पाश्चात्य सभ्यता और नारी से प्रभावित होकर नारीत्व के परम्परागत महान आदर्शों से विमुख हो जायें। वे उसको भारत की पतिपरायण रमणी के रूप में देखना चाहते थे। यूरोप की आमोदप्रिय युवती के रूप में नहीं।

प्रेमचन्द की 'शान्ति' कहानी का नायक पश्चिमी सभ्यता से अभिभूत है। वह भारतीय संस्कारों के बीच पली हुई अपनी सती साध्वी सलज्ज, नम्र, धर्म-भीरु तथा सेवा परायण पत्नी से असन्तुष्ट है और उसे स्वतंत्रता, समानता, सुख भोग, पुस्तकावलोकन मन की शिक्षा देता है। श्यामा उसकी पत्नी यदि रामायण और अन्य धार्मिक पुस्तकें पढ़ती हैं तो वह उसे उनके बदले अंग्रेजी लेखकों की पुस्तकें पढ़ने के लिये कहता है। श्यामा धीरे-धीरे उसके रंग में रंगने लगती है। अब उसका मन घर के काम में नहीं लगता और वह अपना अधिक समय श्रृंगार तथा पढ़ने में ही लगाती है। वह सास की आज्ञाओं का उल्लंघन करती है। घर पर नौकरों को रखा गया वे खुद कोई काम नहीं करती थीं। सिनेमा तथा अन्य पाश्चात्य अन्धानुकरण के कारण आमदनी से अधिक खर्च होने लगा। सोसाइटी के कार्यक्रमों में भाग लेना आरम्भ कर दिया। घर का वातावरण बिल्कुल अंग्रेजी हो गया था। बाद में श्यामा के पति को इस भूल का अहसास होता है और वो फिर से अपने पहले वाले भारतीय सभ्यता के जीवन में लौट जाना चाहते हैं— "मैं इस प्रकार के जीवन के बाहरी रूप पर लट्टू हो रहा था, परन्तु अब मुझे उसकी आन्तरिक अवस्थाओं का बोध हो रहा है। यहाँ न तो हृदय को शान्ति

है न आत्मिक आनन्द। यह एक उन्मत्त अशान्तिमय, स्वार्थ विलाप युक्त जीवन है। यहाँ न जाति है न धर्म न सहानुभूति न सहृदयता मैं अब फिर अपने घर जाकर वही पहले की सी जिन्दगी बिताना चाहता हूँ। मुझे अब इस जीवन से घृणा हो गई है। मैं फिर तुम्हे वही पहले की सी सलज्ज नीचा सिर करके चलने वाली, पूजा करने वाली, रामायण पढ़ने वाली पतिश्रद्धा से परिपूर्ण स्त्री देखना चाहता हूँ मैं विश्वास करता हूँ तुम निराश नहीं करोगी।¹

प्रेमचन्द के नारी चित्रण में यह बात भी देखने को मिलती है कि वे अपनी नारी पात्राओं से यह अभिव्यक्त नहीं कराना चाहते कि वह नीच पति की खुशामद करें। 'कुसुम' कहानी की कुसुम का विवाह होता है और वह कई बार अपनी ससुराल जाती है, किन्तु उसका पति उससे बात तक नहीं करना चाहता। वह रोती रोती कांटा हो जाती है और डॉक्टर तपैदिक का सन्देह करते हैं। कुसुम को किसी से यह ज्ञात होता है कि उसका पति यह आशा करता है कि कुसुम के पिता उसे विलायत पढ़ने भेज देंगे और पूरा खर्चा वहन करेंगे। कुसुम यह बात अपने पिता को बताती है। पिता एक हजार रुपये भेजने को तैयार हो जाते हैं किन्तु कुसुम उन्हें ऐसा करने से रोक देती है। वह ऐसे आदमी का मुँह भी नहीं देखना चाहती थी जिसके लियें संसार में धन ही सबसे बड़ी वस्तु है। उसने स्वतंत्र रहने का निश्चय कर लिया था। उसने पति के पास एक पाई भी नहीं भेजने दी। स्पष्ट है कि प्रेमचन्द भारतीय नारी में भारतीय समाज के

1. प्रेमचन्द, श्यामा, मानसरोवर, भाग-7, प्र० 93.

आदर्शों को स्वाभाविक रूप से चित्रित करते हैं। वे भारतीय नारी को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रतिष्ठा दिलाने का प्रयास करते हुये उसका चित्रण करते हैं।

प्रेमचन्द की तुलना प्रायः शरत चन्द्र और प्रसाद से यह कहकर की जाती है कि इनकी अपेक्षा प्रेमचन्द ने नारी मनोविज्ञान को समझने में अधिक सफलता नहीं पाई है। किन्तु प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारियों का जैसा यथार्थ चित्रण किया है वह हमें स्वाभाविकता का अदुर्भाव कराता है। प्रेमचन्द ने कभी धरती का दामन नहीं छोड़ा क्योंकि उनका मानना था कि आकाश में उड़ने वाली चिड़िया को भी दाने के लिये पृथ्वी पर उतरना पड़ता है। यथा तथ्य चित्रण की सीमा रेखा उन्होंने वहीं तक खींची जहाँ तक पहुँच कर कथा साहित्य का उद्देश्य अमर्यादित नहीं हो जाता। प्रेमचन्द की 'एक्ट्रेस' कहानी की तारा के चरित्र चित्रण में प्रेमचन्द की आदर्शवादी कला के दर्शन होते हैं निर्मलकान्त का सच्चा प्रेम पा कर वह एक्ट्रेस से प्रेम की देवी बन जाती है। वह पैंतीस बसन्त देख चुकी है किन्तु आप भी शृंगार द्वारा काल के चिन्हों को इस प्रकार मिटा देती है कि देखने में एक नवयौवना प्रतीत होती है। उसे पता है कि निर्मल कान्त उससे आयु में बहुत छोटे हैं जब उन्हें सच्चाई का पता चलेगा तो बहुत दुख होगा। वह सच्चे प्रेम के कारण ही उन्हें दुखी नहीं देखना चाहती है, इसलिये वह विवाह से छह घण्टे पूर्व घर छोड़ कर चली जाती है।

प्रेमचन्द ने नारी पात्रों के जो चित्रण किये हैं उनको वर्गीकृत करके उन्हें, मध्यवित्त परिवार की नारियाँ, जमींदार वर्ग की नारियाँ तथा किसान मजदूर वर्ग की

नारियों के रूप में किया जा सकता है। इन तीनों श्रेणियों में उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से सुदृढ़ नारी चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया है। वास्तविकता यह है कि उन्होंने जीवन को इतने धैर्य के साथ, इतनी तटस्थता और सूक्ष्मता के साथ देखा था कि उसके समक्ष सामान्य रूप से परिचय का कोई महत्व नहीं। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी की मनोवैज्ञानिक मनोदशाओं को भली भांति चित्रित किया है। प्रत्येक वर्ग की नारी को उसके निभाये गये पात्र के अनुकूल ही प्रस्तुत किया है।

प्रेमचन्द को जो विश्वास था वो उनका दर्शन था, उसका प्रभाव उनके नारी पात्रों के चरित्र चित्रण पर स्वाभाविक रूप से पड़ा ही है किन्तु वह प्रेमचन्द की ही विलक्षण प्रतिभा थी कि उन्होंने अपने इन नारी पात्रों पर अपने उन विश्वासों को बलपूर्वक आरोपित नहीं किया वह सब कुछ उनका अंग सा प्रतीत होता है, हमारे यहाँ आज भी करोड़ों की संख्या में ऐसी नारियाँ मिलती हैं जो त्याग सेवा और पवित्रता की मूर्ति हैं, जो भीषण से भीषण परिस्थितियों में अपने भाग्य पर संतुष्ट रहती हैं और अत्याचारों को चुपचाप सहती हैं। जो नारियाँ भाग्य पर विश्वास नहीं करती, वे अन्यायों और अत्याचारों का विरोध करती हैं, लड़ती-झगड़ती हैं। परन्तु उनकी वासना भी उन पर कभी हावी नहीं होती। कभी कभी परिस्थितियाँ उन्हें पतन का मार्ग दिखलाती भी हैं, तो उनका त्याग कर वे बहुधा अपना जीवन सुधार लेती हैं। प्रेमचन्द ने ऐसे ही सजीव नारी पात्रों को अपनी कहानियों में स्थान दे कर नारी के प्रति अपने विचारों की सुदृढ़ अभिव्यक्ति की है।

पंचम अध्याय
शरतचन्द्र तथा
प्रेमचन्द्र की कहानियों
में नारी चरित्रः
एक तुलनात्मक
अध्ययन

शरतचन्द्र एवं प्रेमचन्द्र की कहानियों में नारी चरित्र : एक तुलनात्मक अध्ययन

साहित्य के क्षेत्र में शरत चन्द्र एवं प्रेमचन्द्र, दोनों लेखकों ने अपने रचनात्मक लेखन द्वारा, विविध स्तरों पर पाठकों को आनन्दित एवं आन्दोलित किया है। यह एक जटिल कार्य होता है, इसके लिये गहरी जीवन दृष्टि की अनिवार्यता अपेक्षित होती है। शरत चन्द्र एवं प्रेमचन्द्र दोनों ने ही मानवीय जीवन की समग्रता को अपनाकर अनेकानेक समसामायिक समस्याओं को अपनी रचनाओं में उठाया है। उन्होंने समस्याओं के समाधान योजना को लक्ष्य न बनाकर अपने कलाशिल्प का श्रेष्ठ सदुपयोग किया है। शरत चन्द्र और प्रेम चन्द्र के कथा साहित्य में कथा फलक बहुत बड़े हैं, वस्तुतः उनकी यह व्यापकता इस बात को सिद्ध करती है कि उन्हें रचनाकार के रूप में जीवन के बड़े भाग का अनुभव था। जीवन से उनकी आत्मीयता, सूक्ष्म विवरणों की निजी आन्तरिक पहचान उनकी प्रतिबद्धता का उदाहरण बनकर सामने आती है। दोनों ने ही अपनी कहानियों में मानवीय अनुभवों को जो आयाम प्रदान किये हैं उनसे हमें न केवल क्षेत्र विशेष अपितु पूरे भारत वर्ष की संस्कृति एवं समाज के दर्शन होते हैं।

शरत चन्द्र और प्रेमचन्द्र ने जीवन को जिस रूप में देखा और अपनी रचनाओं के लिये चुना उसे उनकी जीवन दृष्टि कहा जा सकता है। दोनों कथाकारों ने यह स्वीकार किया कि जीवन में आनन्द और सुख की प्राप्ति करना मनुष्य का अभीष्ट लक्ष्य होता है। इसलिये दोनों ने ही अपनी कृतियों में आनन्द का समर्थन किया है। प्रेमचन्द्र ने आनन्द को जीवन को तत्त्व माना है। शरत चन्द्र ने आनन्द को जीवन का तत्त्व मानने की अपेक्षा संसार के सुख और ऐश्वर्य का उपभोग करने का समर्थन किया है। प्रेमचन्द्र ने अपनी कहानियों में मानव जीवन की विषमताओं का कारण अर्थ पर आधारित समाजिक व्यवस्था माना है। यही धारणा है कि प्रेमचन्द्र की अधिकांश कहानियों में आर्थिक परिस्थितियाँ ही जीवन की विषमता का कारण बनी हैं। प्रेमचन्द्र की कहानियों के नारी पात्रों में आर्थिक अभावों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

प्रेमचन्द्र और शरत चन्द्र की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि दोनों की जीवन दृष्टि में अन्तर होने के कारण उनकी रचना दृष्टि में भी अन्तर सामने आता है। इस संदर्भ में सुरेन्द्रनाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक में लिखा है— “प्रेमचन्द्र ने मानव जीवन की बाह्य परिस्थितियों के पार्श्व में उसकी विषमताओं का विश्लेषण किया है जबकि शरत चन्द्र ने मानव हृदय का सूक्ष्म अंकन करके उसके अन्तर और बाह्य दोनों ही स्थितियों के विषमता भरे चित्र उपस्थित किये हैं। प्रेमचन्द्र की रचनाओं को देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनके ‘व्यक्ति’ में मनुष्य की अन्तर्विषमताओं को डटकर समाना करने की शक्ति नहीं है। ऐसे स्थलों पर उनका

आदर्श से भरा हुआ स्वर बोल उठा है। शरत चन्द्र ने आत्मविश्लेषण पद्धति को अपनाया है। वे मनुष्य की अन्तःकरण की प्रेरणा को भी महत्व देते हैं, इसलिये उनके 'व्यक्ति' को समस्त द्वन्द्व और विरोध अन्तःकरण के बीच उपस्थित हुआ है। एक स्थल पर वे कहते हैं— संसार में सिर्फ बाहरी घटनाओं को अगल बगल लम्बी सजा कर उससे सभी हृदयों का पानी नहीं नापा जा सकता।¹

प्रेमचन्द्र की कहानियों में जीवन में दुख को भी अनिवार्य प्रक्रिया माना गया है। प्रेमचन्द्र ने समाज में रहकर मानव जीवन में दुख को अनुभव किया। शरतचन्द्र ने भी अपनी कथाओं में मानव जीवन के सुख दुख पर विस्तार से विचार किया है। शरत चन्द्र जीवन में सुख के अधिक समर्थक दिखाई देते हैं इसी कारण उन्होंने दुख को जीवन का स्थायी तत्त्व नहीं माना है। उनकी कहानियों में आशावादिता को प्रमुख स्थान दिया गया है। शरत चन्द्र तो यह भी नहीं मानते कि सुख के लिये दुख भी मनुष्य को भोगना चाहिये क्योंकि यह अनिवार्य नहीं है कि सुख के लिये बिना दुख उठाये ये उपलब्धि प्राप्त नहीं होगी।

प्रेमचन्द्र की कहानियों में ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास का भी चित्रण हुआ है। परन्तु प्रेमचन्द्र की वैचारिक प्रतिबद्धता और धर्म आदि की भावनाओं में पर्याप्त अन्तर भी है। प्रेमचन्द्र के इस दृष्टिकोण को उनकी कहानियों के पात्रों में देखा जा सकता है विशेष रूप से नारी पात्रों में कि वे किस प्रकार ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करते हैं।

1. प्रेमचन्द्र और शरतचन्द्र के उपन्यास: मनुष्य का विम्व, प्र० 3 डॉ० सुरेन्द्र नाथ तिवारी।

इसी से पाप पुण्य के प्रति इनका दृष्टिकोण अधिक रुढ़िवादी है। महाजन के ऋण को न चुका पाना इनके पात्रों की दृष्टि में पाप है। प्रेमचन्द की दृष्टि नैतिक मूल्यों पर आधारित होने पर भी जीवन की नवीन मान्यताओं की ओर उन्मुख रहती है। शरतचन्द्र ने अन्ध-विश्वास और भावुकता से पूर्ण पाप पुण्य की भावना का समर्थन नहीं किया है। शरत चन्द्र का पाप पुण्य विषयक दृष्टिकोण प्रेमचन्द की भांति नैतिक धारणाओं पर आश्रित प्रतीत नहीं होता है। मानव हृदय की दुर्बलता को अधिक सहानुभूति पूर्वक सोचने के कारण शरत चन्द्र ने जीवन में पाप पुण्य की भावना की नवीन मान्यतायें स्थापित की हैं। परिणाम स्वरूप पाप पुण्य की सारहीन मान्यताओं का विरोध शरतचन्द्र की कथाओं में देखने को मिलता है। स्पष्ट है कि शरत चन्द्र के नारी पात्र भावनाओं में आकर पाप-पुण्य को परिभाषित नहीं करते।

प्रेमचन्द के नारी पात्र आर्थिक तंगी एवं विषमताओं तथा सामाजिक विसंगतियों के चलते अनेक द्वन्द्वों से गुजरते हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में नारी अपने दुखी दाम्पत्य जीवन का कारण आर्थिक विपन्नता को मानती है। आर्थिक सम्पन्नता भी स्त्री को सुख दे सके ऐसा आवश्यक नहीं है। प्रेमचन्द की कहानी जीवन का शाप में ऐसी नारी का चित्रण देखने को मिलता है। घर में सारी सुख सुविधाओं के होने पर भी पति प्रेम से वंचित रहती है। “आपका यह भाव तभी तक है जब तक आप के पास धन नहीं है। आज तुम्हें कहीं से दो चार लाख मिल जायें तो तुम यों न रहोगे। और तुम्हारे ये भाव बदल जायेंगे। यही धन का सबसे बड़ा अभिशाप है। यह नहीं जानते कि

ऐश के ये सामान उन मिस्त्री तहखानों में पड़े हुये पदार्थों की तरह हैं, जो मृतात्मा के लिये रखे जाते हैं”।¹

शरत चन्द्र ने अपने नारी पात्रों की आर्थिक विपन्नता एवं सम्पन्ता को बहुत कुशलता के साथ अपनी कथाओं में प्रस्तुत किया है। शरत चन्द्र के नारी पात्र भी पैसे की अधिकता को एक नशा मानते हैं और धनी तथा निर्धन का अन्तर बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनकी कथा ‘मंझली बहिन’ में भी इसी प्रकार का चित्रण किया है। इनकी नारी पात्र कादम्बिनी का आचरण इसलिये कड़वा बन जाता है कि वो संसार में पैसे को ही सब कुछ मानती है। पैसे के नशे में मदहोश होकर वह किसी का भी अपमान कर देती है। जबकि उसकी दूसरी बहन हेमांगिनी इस प्रकृति की नहीं है उसका हृदय कोमल और सरल है। वह अनाथ किशन को देखकर दृवित हो जाती है और उसका वात्सल्य किशन का रक्षक बन कर सामने आता है। वह किशन से कहती है— “देख किशन तू अपनी मंझली बहन से कभी कोई बात मत छिपाना। जब जिस चीज़ की ज़रूरत हो चुपचाप यहाँ आकर माँग लेना भाई तुझे मेरे सिर की सौगंध है आज से मुझे अपनी मरी हुई माँ की जगह ही समझना।”²

शरत चन्द्र और प्रेमचन्द्र दोनों ने ही अपने नारी चरित्र चित्रण में यह स्पष्ट किया है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की दशा में नैतिक सदाचारों का हनन होने लगता है। तुलनात्मक रूप से निर्धन वर्ग के अन्दर आदर और सम्मान तथा सदाचार

1. प्रेमचन्द्र, जीवन का शाप, मानसरोवर, भाग-2, प्र० 222

2. शरतचन्द्र, मंझली दीदी, प्र० 28

की भावना बलवती रहती है। शरत चन्द ने बंगाल की नारियों की दुरावस्था को देखकर सबसे सशक्त तर्क पूर्ण तथा प्रभाव पूर्ण विद्रोही भावना को अभिव्यक्त किया इस संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है— “स्त्री समाज की वकालत शरत चन्द ने नितांत बौद्धिक स्तर पर की है। उनका निबंध नारी का मूल्य उनके गहन अध्ययन चिंतन तथा संवेदन शीलता का सूचक है। भले को बुरे से अलग करना वह भली भांति जानते थे। प्राचीन तथा नवीन में जहां भी जो कुछ अच्छा तथा शुभ है वह उनके लिये ग्राह्य है। इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन उन्होंने अपने साहित्य में किया है। बंगाल की नारी समाज के लिये शरत चन्द ने जो कुछ भी किया उसका सही मूल्यांकन आने वाले युग के सामाजिक इतिहासकार ही कर पायेंगे। जिस कार्य को बड़े से बड़े सुधारक भी एक साथ मिलकर नहीं कर पाये, उस कार्य को शरत की कला ने मानों अनायास ही सम्पन्न कर दिया। इस दृष्टिकोण से बंगाल के नारी समाज को मुक्ति दिलाने का श्रेय बहुत कुछ शरत चन्द को दिया जा सकता है।”¹

कहानीकार अपनी कथाओं के पात्रों के माध्यम से मानव जीवन की विविधता और विषमताओं को अभिव्यक्त करती है। कहानीकार मनुष्य की परिस्थितियों उसके वैयक्तिक अस्तित्व और उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को विभिन्न स्वरूपों में उपस्थित करता है। प्रेमचन्द और शरत चन्द ने भी अपनी कथाओं में नारी पात्रों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों की सहज अनुभूति करवाई है। मानवतावादी

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, ले० शरत चन्द्र के नारी पात्र प्र० 336, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

कहानीकार समग्र मानवता को अपने परिवेश में फसकर मानव मूल्यों और आदर्शों का निर्माण करता है। वह अपनी कथाओं में प्रचलित वादों और तर्कों से अलग हटकर मानव की समसामयिक जीवन के अनुरूप स्थापना करता है। इस सम्बन्ध में साम्प्रतिक परिवर्तनों का प्रभाव भी कहानीकार पर पड़ता है क्योंकि मनुष्य निरन्तर विकासशील प्राणी है। प्रेमचन्द और शरत चन्द अपनी कहानियों में मानवीय गुणों के आधार पर आदर्शों की कल्पना में रत दिखाई देते हैं। शरत चन्द्र ने स्वयं लिखा है— “साहित्य के सृजन के अन्तराल में जो स्रष्टा रहता है यदि वह छोटा हुआ तो उसकी स्रष्टि भी बड़े होने में बाधा पाती है। इस बात पर मैं विश्वास करता हूँ।”¹

प्रेमचन्द और शरत चन्द्र ने मनुष्य के यथार्थ स्वरूप को अपनी कहानियों में अंकित करने की सफल चेष्टा की है। वस्तुतः कहानी मानवजीवन की विविधता को विस्तार से चित्रित करने के लिये उपयुक्त साधन है। प्रेमचन्द कहानी को मानव चरित्र का चित्र मानते हैं। शरत चन्द्र के विचारों में भी साहित्य मानवात्मा की बंधन ही अभिव्यक्ति है। वह कहते हैं— “मनुष्य के स्वरूप को पहचान, साहित्य की यथार्थ सामग्री है।”² शरत चन्द्र के विचार से साहित्य दार्शनिक मतवादों से घिरा नहीं है। वह मानव की यथार्थ स्थिति को निर्देश करता है— “बुरे की वकालत करने के लिये कोई भी साहित्यिक कभी किसी दिन साहित्य की महफिल में खड़ा नहीं होता किन्तु बहलाकर नीति की शिक्षा देना भी वह अपना कर्तव्य नहीं मानता। थोड़ा गहरे पैठ कर

1. शरत चन्द, पत्रावली, प्र० 118

2. शरत चन्द, पत्रावली, प्र० 120

देखने से उसकी सारी साहित्यिक दुर्नीति के मूल में शायद एक ही चेष्टा हाथ लगेगी वह यही कि वह मनुष्य को मनुष्य ही सिद्ध करना चाहता है”¹

प्रेमचन्द ने यह स्वीकार किया है कि कहानीकार का काम केवल पाठकों का मन बहलाना नहीं है। कहानीकार एक पथ प्रदर्शक का काम करता है वह मनुष्यत्व को जगाता है मानव की जीवन प्रक्रियाओं के घात प्रतिघात को साहित्य मुखर करता है। प्रेमचन्द और शरत चन्द्र दोनों कहानीकार इस बात को मानते हैं। दोनों कहानीकारों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि साहित्य का काम मनुष्य को मनुष्य सिद्ध करना है। दोनों ने अपनी कहानियों के नारी पात्रों द्वारा इस बात को भली भाँति प्रस्तुत किया है। शरत चन्द्र के नारी पात्रों का सूक्ष्म अध्ययन उनकी नारी सम्बन्धी विशिष्ट धारणाओं का स्पष्ट परिचायक हैं। शरत चन्द्र ने अपने नारी पात्रों में सुधारवादी तथा जाग्रति की भावना को उत्पन्न कराने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने नारी पात्रों के माध्यम से समाज में यह सन्देश देना देना चाहा है कि बाल विवाह प्रथा नारी शिक्षा के लिये हानिकारक है। उन्होंने विधवा विवाह को प्रोत्साहन देकर अपने निरीह और अबला नारी पात्रों को एक स्पष्ट प्रोत्साहन दिया है। नारी के मन को शरत चन्द्र ने एक संघर्ष के बीच देखा है, जहाँ उसकी स्वतः उठी हुई आकांक्षा की धारा को संस्कारों से सामना करना पड़ता है। ‘रामेर सुमति’ शरत चन्द्र की उत्कृष्ट कथाओं में से एक है। स्नेह, ममता और वात्सल्य का सर्वोत्तम चित्रण उन्होंने नारी पात्रों के माध्यम से किया है।

1. शरत प्रतिभा, प्र० 231

‘रामेर सुमति’ कथा में बालक राम की माता का देहान्त हो जाता है और वह अपनी बड़ी भाभी नारायणी के स्नेह ही छाया में पलता बड़ता है। नारायणी अपने पुत्र तुल्य देवर राम के प्रति अगाध स्नेह रखती है। वह उसे क्रोध आने पर मारती भी है किन्तु उसके हृदय की ममता में कोई कमी नहीं होती। राम को कोई बुरा भला कहे, यह नारायणी सहन नहीं कर पाती। “भगवान जाने क्या बात है। अब अगर तुम मेरी घर गृहस्थी में दखल दोगे तो, सच कहती हूँ, मैं नदी में डूब मरूंगी। तब दूसरा ब्याह करना और राम को न्यारा करके जो जी में **आये करना। न मैं देखने आऊंगी, न कुछ कहूंगी सुनूंगी, मगर मेरे सामने नहीं।**”¹

शरत चन्द्र की ‘रामेर सुमति’ की नारायणी की तरह प्रेमचन्द की कहानी ‘लांछन’ की नारी पात्रा देवी की भी यही दशा है कि उस पर विभिन्न प्रकार के लांछन लगाये जाते हैं। दोनों कहानी कारों ने ही नारी पात्रों के इस दुख को भली भांति अभिव्यक्त किया है जिसमें नारी पात्रायें बिना किसी कारण के अपने पति तथा परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा समय-समय पर प्रताडित की जाती हैं। प्रेमचन्द ने ‘लांछन’ कहानी में नारी पात्र देवी को इसी दयनीय दशा से ग्रस्त दिखाया है गांव के कुछ शोहदे देवी के पति को गुमराह करते हैं तथा देवी के आने के समय ही देवी से कुछ बात करते हैं जिससे कि देवी के पति को यह शंका हो जाये कि उसकी पत्नी बदचलन है। पति के इस व्यवहार से उसकी पत्नी देवी दुखी हो जाती है और उसके अन्दर विद्रोह की एक

1. शरत चन्द्र, रामेर सुमति, प्र० 19

भावना जन्म लेने लगती है— “रोते रोते देवी की आंखे सूज आयीं। देवी को ऐसा ज्ञात होता था कि श्याम किशोर को उसके साथ कभी प्रेम ही नहीं था। नहीं तो क्या इस जरा सी बात पर यों मुझ पर टूट पड़ते। अब मैं इतनी नीच हो गई कि मेहतरों से, जूते वालों से, आशनाई करने लगी.....जहाँ इज्जत नहीं मर्यादा नहीं, प्रेम नहीं, विकास नहीं वहाँ रहना बेहयाई है। कुछ मैं इनके हाथ बिक तो गई ही नहीं कि मारे काटें पड़ी सहा करूँ। सीता जैसी पत्नियाँ होती थी तो राम जैसे पति भी होते थे।”¹

प्रेमचन्द और शरत चन्द्र आधुनिक साहित्यकार हैं अतः युगीन सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव इनके नारी पात्रों में देखने को मिलता है। ऐतिहासिक पुनर्जागरण के समय संस्कृति का जो स्वरूप था उसी आधार पर दोनों लेखकों की रचनाओं में सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव देखा जा सकता है। प्रेमचन्द की कथाओं में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव संघर्ष के रूप में नहीं प्रस्तुत हुआ है। प्रेमचन्द स्पष्ट रूप से भारतीय संस्कृति के समर्थक थे। उनकी कहानियों में भी भारतीय संस्कृति के स्वरूप देखे जा सकते हैं जिनका प्रभाव उनके नारी पात्रों में अभिव्यक्त हुआ है। प्रेमचन्द के नारी पात्रों में अपनी संस्कृति के प्रति असीमित आस्था और विश्वास है। प्रेमचन्द ने विज्ञान की उपलब्धियों को अस्वीकार नहीं किया है किन्तु पाश्चात्य संस्कृति की सतही मान्यताओं का विरोध अवश्य किया है।

1. प्रेमचन्द, लाँछन कहानी, मानसरोवर, भाग 5, प्र० 138

शरत चन्द्र की कथाओं में प्राच्य और पाश्चात्य दोनों संस्कृतियों का चित्रण परस्पर संघर्ष के रूप में अंकित हुआ है। शरत चन्द्र के सांस्कृतिक द्रष्टिकोण में पाश्चात्य संस्कृति को लेकर गहरा द्वन्द्व है। शरत चन्द्र के समय में बंगाल में एक वर्ग पाश्चात्य संस्कृति से पूर्णतः प्रभावित हो चुका था किन्तु कुछ लोग भारतीय संस्कृति के भी समर्थक थे। शरत चन्द्र की कहानियों में इस द्वन्द्व की अभिव्यक्ति को इनके नारी पात्रों में देखा जा सकता है। शरत चन्द्र की कहानियों में दोनों संस्कृतियों के स्वरूप का प्रभाव इनके नारी पात्रों में सहज देखा जा सकता है। शरत चन्द्र की कहानी 'अभागी का स्वर्ग' में निर्धन नारी पात्र इस बात के लिये तरसती है कि वह भी अपने पति से पहले मृत्यु को प्राप्त हो जाये तथा पूर्ण धार्मिक रीति रिवाज़ से उसकी शव यात्रा को निकाला जाये। यह भारतीय संस्कृति का ही एक स्वरूप है जो शरत चन्द्र ने अभिव्यक्त किया है— “मन ही मन बोली, सौभाग्यवती माँ हो तुम, स्वर्ग जा रही हो। हमें भी आशीर्वाद देती जाओ। तुम्हारी तरह मुझे भी कंगाली के हाथ की आग मिले लड़के के हाथ की आग कोई मामूली बात थोड़े ही है। पति—पुत्र, कन्या, नाती, पोते, पौती, नौकर चाकर, आत्मीय, परिजन पूरी ग्रहस्थी भरी पूरी छोड़कर स्वर्ग चला जाना, इतने बड़े सौभाग्य की सीमा वह बूढ़ भी नहीं पा रही थी। गर्व से उसका हृदय भर उठा था।”¹

1. शरत चन्द्र, अभागी का स्वर्ग, प्र० 21

दूसरी ओर शरत चन्द्र ने अपनी कथाओं में ऐसे नारी पात्रों का भी चित्रण किया है जो समाज की पुरानी रीति रिवाजों के प्रति विद्रोह का रवैया अपनाती हैं। ऐसी नारियाँ निश्चित रूप से पाश्चात्य संस्कृति की नारियों से प्रेरित दिखाई देती हैं। तभी तो वह अपने पति को उसकी गलत बात पर डाँट देती हैं और स्त्री पुरुष के समानाधिकार की भावना को अभिव्यक्त करती हैं— “फिर ज़बान से यह गाली निकाली तो तुम्हारे इस मुँह में जलती हुई चूल्हे की लकड़ी जो न दूँ तो मैं पाँचू घोषाल की लड़की नहीं तरकारी काटने की मेरी छुरी देख रखो। साले बहनोई की एक साथ नाक काटकर तब जान छोड़ूंगी। मेरा नाम भामिनी है, यह रहे।”¹

प्रेमचन्द की कहानियों में लोक संस्कृति का जो चित्रण है वह सम्पूर्ण भारत का न होकर उत्तर प्रदेश का ही है। इसी क्षेत्र की नारी पात्र उनकी कहानियों में दिखाई देते हैं। भारत में सभी प्रदेशों की भिन्न-भिन्न सामाजिक प्रथाएँ हैं। उन्हीं सामाजिक प्रथाओं एवं परम्पराओं पर आधारित उन प्रदेशों का सांस्कृतिक जीवन भी भिन्न है। बंगाल की सामाजिक प्रथाएँ उत्तर क्षेत्र की सामाजिक परम्पराओं से भिन्न हैं। इसलिये यह नहीं कहाँ जा सकता कि लोक संस्कृति का जो स्वरूप उत्तर भारत के गाँवों में पाया जाता है वही बंगाल में भी है। ऐसी स्थिति में प्रेमचन्द को सम्पूर्ण भारतीय ग्राम्य संस्कृति का प्रतिनिधि कहानीकार भी नहीं कहा जा सकता है। प्रान्तीय स्तर पर शासन व्यवस्था के चलते बंगाल में भूमिका स्थायी बन्दोवस्त रहा है तथा उत्तर प्रदेश में

1. शरत चन्द्र, अरक्षणाय, प्र० 24

इजाफा लगान व्यवस्था का चलन रहा है। इस कारण बंगाल में किसान और जमींदारों में अधिक संघर्ष नहीं देखने को मिलता जब कि उत्तर प्रदेश में जमींदार और किसानों में सतत संघर्ष रहा है।

प्रेमचन्द और शरत चन्द्र के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रेमचन्द भारतीय लोक संस्कृति के चित्रण में ग्रामीणों के उत्सव और पवों के बीच किसानों की दरिद्रता, अभाव और जमींदारों के आतंक की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं। इससे इनके नारी पात्र भी प्रभावित होते हैं। शरतचन्द्र की कहानियों में ग्रामीण सांस्कृतिक जीवन में अपेक्षकृत प्रेमचन्द द्वारा चित्रित कहानियों जैसा संघर्ष नहीं पाया जाता है। शरतचन्द्र की दृष्टि कुलीन वर्ग और मध्य वर्ग की समस्याओं पर अधिक देखी जा सकती है। उन्होंने ग्रामीण समाज की विभिन्न स्थितियों पर अधिक विचार नहीं किया। पूंजीवाद और साम्यवाद के संघर्ष से प्रेरित नव्य सांस्कृतिक चेतना का प्रभाव भी प्रेमचन्द की कहानियों में आंकित हुआ है। पूंजीवाद और साम्यवाद के आधार पर आधुनिक युग में नयी चेतना उत्पन्न हुई जिससे समाज में नये वर्गों की स्थापना हुई है तथा जिनमें प्रत्येक वर्ग के सांस्कृतिक स्तर में मूलभूत अन्तर उत्पन्न हुआ है।

शरतचन्द्र की कहानियों में मध्यवर्ग अपने युग की सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा प्रभावों से परिपूर्ण रूप से अंकित हुआ है। इसी से मध्यवर्गीय युवक की प्रेम वृत्ति को शरत चन्द्र ने रोमांस के साथ पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। प्रेम में रोमान्स की भावना निश्चित रूप से यूरोप की देन है। शरत चन्द्र की रचना चन्द्रनाथ में चन्द्र नाथ

सरयू नामक नारी पात्र से विशेष प्रेम करता है— “सरयू के पास आने पर चन्द्रनाथ ने जोर से उसका हाथ पकड़ कर कहा लोग तुम्हारा त्याग करने को कहते हैं। लेकिन मुझमें यह साहस नहीं। तुम्हें विश्वास नहीं होता? मैं सारा विश्वास हार चुका हूँ। पल भर में ही सरयू के उदास और पीले चेहरे पर रक्त की एक रेखा झलक आई। और भरी आँखों में पल भी के लिये चमक आ गई। उसने कहा मुझ पर भी विश्वास नहीं, कुछ नहीं, तुम सब कुछ कर सकती हो? सरयू ने उसके मुँह के पास लाकर अविचलित स्वर में कहा तुम मेरे क्या हो क्या तुम यह नहीं जानते? एक दिन तुमने ही मुझे अपनी ओर देखने को कहा था। आज मैं उपाय बता दूँगी।”¹

शरत चन्द्र ने ‘चन्द्रनाथ’ में नारी की ऐसी व्यथा प्रस्तुत की है जो कि नारी की करुण और दयनीय स्थिति की स्वाभाविक अभिव्यक्ति कही जा सकती है। चन्द्रनाथ की पत्नी अपनी होने वाली सन्तान के प्रति संवेदनशील है और वह मरने के बजाय घर त्यागने का कदम उठाना चाहती है। शरत चन्द्र ने समाज व्यवस्थाओं पर व्यंग्य करते हुये अपने नारी पात्रों की संवेदनाओं को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। समाज की रूढ़ियाँ और कठोर व्यवस्थायें सरयू को असहाय और बेजान बना देते हैं। वह इन सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का साहस भी नहीं कर पाती है। इसलिये वह परिस्थितियों से समझौता करती है। चन्द्रनाथ की सामाजिक व्यवस्था की अवहेलना करने में असमर्थ है। जब चन्द्रनाथ पुरुष होकर सामाजिक व्यवस्था के कठोर घेरे से

1. शरत चन्द्र, चन्द्रनाथ, प्र० 37

बाहर नहीं जा पा रहा तो उसकी पत्नी सरयू एक नारी होकर उन कुरीतियों का भला सामना किस साहस के साथ करती। वह घर त्यागने को विवश हो जाती है। वह संतान प्रेम के चलते विष ग्रहण नहीं करती— “उस रात अपने कमरे में लौटकर सरयू रो पड़ी म नही मन बोली नहीं मैं किसी तरह भी विष नहीं खा सकूंगी। अकेली होती तो मर भी सकती थी लेकिन अब मैं अकेली तो नहीं हूँ। मैं तो माँ हूँ। माँ होकर सन्तान की हत्या कैसे कर सकती हूँ? इसलिय मैं नहीं मरूंगी। लेकिन मेरे सुख के दिन अब बीत चुके हैं। इसमें रत्तीभर भी सन्देह नहीं है।अपना दुर्भाग्य मैं स्वयं ही भोगूंगी। इसके लिये तुम दुख मत करो। मेरे जैसी अभागिन को घर लाकर तुमने बहुत कुछ सहा है अब मत सहो।”¹

कहानीकार अपनी रचनाओं में सौन्दर्यानुभूति का चित्रण भी करता है। कवि की अपेक्षा कहानीकार की कुछ सीमायें होती हैं और कल्पना के माध्यम से अपनी कहानियों में सौन्दर्य चित्रण द्वारा नारी पात्रों के चित्रण को सशक्त स्वरूप प्रदान करता है। प्रेमचन्द और शरत चन्द्र की सौन्दर्य भावना में एक अन्तर देखने को मिलता है। दोनों कहानीकारों की सौन्दर्य भावना विश्वमंगल की ओर उन्मुख हुई है। दोनों कहानीकारों ने सत्य को अत्यधिक निष्ठा के साथ अपने उपन्यासों में अंकित करना चाहा है। सत्य के प्रति दृष्टि का अन्तर दोनों कहानी कारों की रचनाओं में देखा जा सकता है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के नारी पात्रों के माध्यम से जिस सत्य का उद्घाटन किया है वह

1. शरत चन्द्र, चन्द्रनाथ, प्र० 34-35

संघर्षरत मनुष्य की विविध स्थितियों का है। शरतचन्द्र की कहानियों का सत्य व्यक्ति के रागात्मक सम्बन्धों के बीच अभिव्यक्त हुआ है। शरत चन्द्र ने सत्य को जीवन की विविधता में अंकित करने की अपेक्षा जीवन की एक ही सुनिश्चित प्रणाली में पाया है।

शरत चन्द्र ने सौन्दर्य में अकथनीय वस्तु को पाया है। शरतचन्द्र की कल्पना, सौन्दर्य की चरम अभिव्यक्ति की ओर ले जाती है। शरत चन्द्र सौन्दर्य को देखकर उस पर मुग्ध ही नहीं होते उसके गुण को भी जानते हैं। उनकी एक रचना में यह अभिव्यक्ति इस प्रकार हुई है— “अचला के भावपूर्ण नेत्र सुरेश के हृदय में इतनी गहराई से उतर गये थे कि सुरेश को कहना पड़ा। उस चेहरे के सौन्दर्य में कोई अलौकिकत्व नहीं था, बातचीत, व्यवहार ज्ञान और विद्या बुद्धि में कहीं कुछ अपूर्वता भी नहीं मालूम हुई, मगर फिर भी न जाने क्यों उसे बार बार यही ख्याल होने लगा कि ऐसी एक आश्चर्य जनक चीज़ वह देख कर आया है जो अब तक कहीं भी उसके देखने में नहीं आयी।”¹ शरत चन्द्र ने अपनी कहानियों में सौन्दर्य की परम्परा को भली भाँति जारी रखा है।

शरत चन्द्र ने सौन्दर्य में कल्पना का सहाना लिया है। निसंदेह शरत चन्द्र ने अपनी अनुभूति और कल्पना के द्वारा जो चित्र अंकित किये हैं वे अत्यंत सुन्दर और मनोहर हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने नारी पात्रों की सुन्दरता का प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुतीकरण करते हुये उनके प्राकृतिक सौन्दर्य को भी अभिव्यक्त किया है। प्रेमचन्द्र

1. शरत चन्द्र, ग्रहवाह, प्र० 22

की सौन्दर्य भावना वस्तुपरक है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी पात्रों का सौन्दर्य चित्रित करते समय वास्तविकता को अधिक महत्व दिया है। प्रेमचन्द के अधिकतर नारी पात्र ग्रामीण परिवेश के हैं तथा प्राकृतिक सुन्दरता पर ही उनका चित्रण देखने को मिलता है। प्रेमचन्द ने नारी पात्रों के चित्रण में कल्पना शक्ति का अधिक प्रयोग नहीं किया है। इसी कारण कहीं उनके द्वारा रचित नारी पात्र पुरुष की दृष्टि में समा नहीं सके हैं और असुन्दर स्त्री को इसका परिणाम भी दुखद रूप में भुगतना पड़ा है। प्रेमचन्द की 'आभूषण' कहानी में कुंवर सुरेश सिंह इस लिये अपनी पत्नी को प्यार नहीं करते क्योंकि वह सुन्दर नहीं है। इसका परिणाम यह होता है कि वे दाम्पत्य जीवन के सुख से वंचित रहते हैं। अन्त में उनकी पत्नी उन्हें छोड़कर अपने मायके चली जाती है और परिवार बिखर जाता है— "लावण्य हीन स्त्री वह भिक्षक नहीं है चुंगल भर आटे से सन्तुष्ट हो जाये। वह भी पति का सम्पूर्ण अखण्ड प्यार चाहती है। और कदाचित् सुन्दरियो से अधिक क्योंकि इसके लिये वह असाधारण प्रयत्न और अनुष्ठान करती है। मंगला इस प्रयत्न में विफल होकर और भी संतप्त होती थी।"¹

प्रेमचन्द और शरतचन्द ने नारी के सौन्दर्याकन में केवल एन्द्रिकपक्ष को महत्व नहीं दिया है। इसी से नारी का भव्य और दिव्य सौन्दर्य प्रेमचन्द और शरतचन्द की कहानियों में अंकित हुआ है। दोनों कहानीकारों ने नारी के शृंगार-प्रसाधित रूप की अपेक्षा सरल और स्वाभाविक सौन्दर्य की प्रशंसा की है। किंतु प्रेमचन्द ने नारी के

1. प्रेमचन्द, आभूषण, मानसरोवर भाग-6, पृ० 145

सौन्दर्य को कहीं-कहीं स्पष्ट अभिव्यक्त नहीं किया है, वरन् पुरुष पर नारी के सौन्दर्य का प्रभाव दिखाकर उसे केवल सुन्दरी कह दिया है। शरत चन्द ने नारी के सौन्दर्य का पुरुष पर प्रभाव दिखा कर उसे महत्वपूर्ण बना दिया है। डॉ० सुबोध चन्द्र सेनगुप्त ने शरतचन्द्र की नारी चित्रण की विशेषता के बारे में लिखा है— “अक्सर शरत चन्द्र रमणी के रूप का सीधे वर्णन न करके दूसरे के ऊपर उसका प्रभाव दिखा कर रूप-माधुरी की ओर हमारी दृष्टि आकर्षित करते हैं।”¹

कहानियों में मानवीय गुणों के साथ नारी चित्रण प्रेमचन्द एवं शरत चन्द ने भलीभांति किया है। दोनों कहानीकारों ने गिरे हुये व्यक्ति में श्री महान महान् तथा मानवीय गुणों की संभावना को व्यक्त किया है। गिरे हुये व्यक्ति को भी उन्होंने ऊंचा करके देखा है। जीवन की विषम स्थितियों से बाध्य होकर मनुष्य कभी-कभी निम्न श्रेणी के कार्य करने को प्रस्तुत हो जाता है। प्रेमचन्द और शरत चन्द ने अपनी कहानियों में मनुष्य की ऐसी स्थितियों को उद्घाटित करके मनुष्य में स्थित मानवीय गुणों को प्रदर्शित किया है। दोनों कहानीकारों ने व्यक्ति की महत्ता को स्वीकार करते हुये, मानवता से बड़े किसी अन्य सत्य को नहीं स्वीकार। जीवन के विविध आयामों में वे मानवता और मानववादी प्रवृत्तियों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास करते हैं। यही कारण है कि प्रेमचन्द और शरत चन्द ने ‘सुमन’, ‘जोहरा’, ‘चन्द्रमुखी’ और सावित्री

1. डॉ० सुबोधचन्द्र सेनगुप्त, शरत प्रतिभा, प्र० 215

जैसी नारियों में भी मानवीय गुणों की सम्भावना की है तथा वे अनुकरणीय आदर्श भी उपस्थित करने में सफल रहे हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों में निम्न वर्ग को मानवीय आदर्शों से परिपूर्ण अंकित किया गया है। प्रेमचन्द ने साधारण नारियों में भी उच्चकोटि के मानवीय आदर्शों की कल्पना की है। यह बात बिना किसी संकोच के कही जा सकती है कि प्रेमचन्द की दृष्टि शरत चन्द की अपेक्षा मानव मूल्यों को समझने में अधिक उदार और सहानुभूतिपूर्ण हो गयी है। जबकि शरतचन्द्र की कहानियों में नारी पात्र अधिकतर मध्यवर्ग के समाज से सम्बन्धित हैं। कहानीकार अपने पात्रों के हृदय की गहराई में पैठकर उनके यथार्थ जीवन को भी अंकित कर सकता है तथा अनुभूति और कल्पना के सम्मिश्रण से अनोखा व्यक्तित्व भी निर्माण कर सकता है। शरत चन्द के मध्यवर्गीय पात्रों में विभिन्न प्रवृत्तियों तथा संस्कारों का अंकन हुआ है।

शरतचन्द के मध्यवर्गीय नारी पात्र मध्यवर्ग की ह्रासोन्मुख संस्कृति के प्रतीक हैं। शरत चन्द के मध्यवर्गीय पात्रों में प्रबुद्ध मध्यवर्ग की नास्तिकता की ओर अग्रसर होने, प्राचीन मूल्यों में अनास्था तथा विस्तृत सामाजिक जीवन से उदासीनता और अपने आप में सिमटकर चलने का संकेत किया गया है। यद्यपि प्रेमचन्द और शरत चन्द के मध्यवर्गीय नारी पात्र अपने वर्ग की सामान्य प्रवृत्तियों को लेकर चलते हैं, अन्तर केवल इतना है कि शरत चन्द के नारी पात्रों में उनके निजी विशेषताओं के प्रभाव को देखा

जा सकता हैं। जबकि प्रेमचन्द वर्गीय स्थितियों को उभारते हैं। शरत चन्द के मध्यवर्गीय नारी पात्रों का चित्रण मूलतः प्रेम-वृत्ति पर आधारित हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण अधिकतर ग्रामीण परिवेश का है। यही कारण है कि किसान पात्रों को प्रेमचन्द की कहानियों में प्रमुखता मिली है। शरत चन्द की कहानियों में किसान वर्ग की नारी पात्रों का प्रणयन अधिक नहीं हुआ है। प्रेमचन्द ने अपनी कुछ कहानियों में अंग्रेज सरकार द्वारा किसानों पर किये जा रहे आत्याचारों तथा स्त्रियों और बच्चों पर जुल्म की अभिव्यक्ति की है। प्रेमचन्द के द्वारा चित्रित नारी पात्रों पर थी इसका प्रभाव देखने को मिलता है। प्रेमचन्द की 'जेल' कहानी में मृदुला उस युग के किसानों की वास्तविक दशा से अवगत कराती है— "अनाज का भाव दिन बा दिन गिरता जाता है। खेत की उपज से बीजों तक के दाम नहीं आते। मेहनत और सिंचाई उसके ऊपर। इस पर सरकार का हुकुम है कि लगान कड़ाई के साथ वसूल किया जाये।"¹ इसमें नारियाँ आगे आकर सरकारी नौकरों के खिलाफ लामबन्द होकर अपने अधिकार और दुर्दशा के बारे में बताती हैं। उनके ठीक व्यवहार न करने पर अपना आंचल कमर में कस कर लाठी हाथ में लेती हुई आगे आती हैं।

इसी प्रकार शरत चन्द की कहानी में भी किसान परिवार पर जमींदारों के अत्याचारों का वर्णन किया। 'महेश' नामक कहानी में शरत चन्द ने दस वर्षीय बालिका

1. प्रेमचन्द, जेल, मानसरोवर भाग-7, पृ० 18

अमीना के माध्यम से निर्धन परिवार के दुखद चित्रण को अभिव्यक्त किया है। : नामक किसान बहुत निर्धन है तथा उसके बैल का नाम महेश है। दो साल से अ और जमींदार के अत्याचारों से ग्रस्त गफूर बीमार हो जाता है परन्तु उसे हर दम चिन्ता रहती है कि बैल को चारा किस प्रकार दिया जायें उसके पास चारे के नाम कुछ भी नहीं है। ऐसे में वह अपने छप्पर से खर खींच कर ही उसे खिला देत उसकी दस वर्षीय बालिका उसे ऐसा करने से मना करती है क्योंकि इस नारी पा निर्धनता की इस भयावता को बहुत समीप से देखा है— “अमीना ने पुकारा अब्बा : खाना खाओ। कहकर वह कमरे से निकल आई और सामने देखकर बोली फिर महेश को छत से खर दिया। उसने कहा बेटी पुराना है खुद व खुद गिर पड़त अमीना बोली मैंने तो भीतर से सुना अब्बा तुमने खर खींचा। वह फिर भी इधर कूदने लगा। अमीना बोली, अब्बा ऐसा करोगे तो दीवार भी गिर जायेगी। गफूर ने अच्छा जरा मांड तो दे महेश को दें, अमीना बोली अब्बा आज तो मांड भ ही सूख गया। सुनका गफूर सन्न रह गया, ऐसे दुख के दिन में मांड भी खराब किया जा सकता। यह दस वर्ष की अमीना समझती थी। खाते समय गफूर ने बुखार है। फिर सोच कर बोला ये भात महेश को न दे दो।”¹

शरत चन्द्र और प्रेमचन्द्र दोनों कहानिकारों ने समाज के निम्न वर्ग तथा वि मजदूरों को दर्द समझा है और उनके कष्टों को अपनी कहानी में अभिव्यक्त किय

1. शरत चन्द्र, महेश, प्र० 17

इन कहानियों में उनके नारी पात्र असहाय मुद्रा में सामने आकर अपनी निर्धनता बेबसी का प्रदर्शन करके पाठकों के हृदय को द्रवित करते हैं। प्रेमचन्द और शरत के नारी पात्रों में मानव के यथार्थ जीवन को अंकित करने का प्रयास किया गया यथार्थ से तात्पर्य है कि मानव के दिन प्रतिदिन के व्यवहार में प्रस्फुटित होने की वास्तविकता इस दृष्टि से प्रेमचन्द और शरत चन्द के पात्र इतने सजीव और वास्तविक हैं कि लगता है जैसे उन पात्रों से पाठकों का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है तथा पढ़ने वाले उनको अपने जीवन में जीते हैं। प्रेमचन्द ने नारी पात्रों के बीज, समाज से प्राप्त और अपने पात्रों का निर्माण किया है। शरत चन्द ने अधिकांश चरित्र प्रत्यक्ष जीवन से लिए हैं तथा अपने सम्पर्क में आने वाले अनेक व्यक्तियों को अपनी कहानियों में उनके रूप में प्रस्तुत किया है। शरत चन्द के पात्रों के सम्बन्ध में राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह ने लिखा है— “प्रायः उनके उपन्यासों में ऐसे पात्रों का समावेश है जो किसी भी जीवित थे तथा जिनके सम्पर्क में वे आ चुके थे। इसका सबसे प्रमुख दृष्टांत ‘श्रीमद् रामायण’ है। इसके प्रारम्भिक अंश में जिन चरित्रों व घटनाओं की चर्चा है, उनमें से अधिकांश सत्य हैं और भागलपुर से सम्बद्ध हैं।”¹

शरत चन्द के पात्रों का मनोवैज्ञानिक यथार्थ परिस्थितियों से प्रेरित है। शरत चन्द के पात्र परिस्थितियों से बदलते ही नहीं, परिस्थितियों को भी बदल देते हैं। इस प्रक्रिया में वे स्वयं भी बदल जाते हैं। सव्यसांची (पथ के दावेदार) स

1. राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, आजकल— अप्रैल 1959 (शरतबाबू लेख) प्र० 23

(चरित्रहीन) सुरेश (गृहदाह) कमल (शेष प्रश्न) आदिपात्र परिस्थितियों से यथेष्ट हैं। इसी प्रकार उनकी कहानियों के नारी पात्र हैं जो कि परिस्थितियों में बदलाव का कारण बनते हैं। मनोवैज्ञानिक यथार्थ की दृष्टि से विचार करते हुये इलाचन्द जोशी ने शरत चन्द के पात्रों के सम्बन्ध में लिखा है— “यथार्थ जीवन के पात्रों और घटनाओं के साथ सूक्ष्म एक्स-रे परिक्षण और उसके बाद सूक्ष्म ही चीड़ फाड़ के द्वारा समाज की खड़ी हुई भावधाराओं और उन विकृत भावधाराओं से रोजग्रस्त पात्रों के अन्दर में जड़ जमाये हुये विकारों को दूर करने की कला से न तो वह परिचित ही थे और न इतनी गहराई तक जाना इन्हें अभीष्ट था।”¹

शरत चन्द मानव की वृत्तियों को लेकर उनकी वास्तविकता को परिस्थितियों से पुष्ट कर चित्रित कर देने में कुशल हैं। इसी से शरत चन्द की कहानियों में नारी पात्रों का जो व्यक्तित्व तैयार हुआ है बदलते हुये सामाजिक मूल्यों में भी प्रभावित करने वाला है। प्रेमचन्द की कहानियों में नारी पात्र यथार्थवादी आदर्श की निश्चित सीमाओं से बाहर नहीं आ सके हैं। प्रेमचन्द नारी पात्रों के चित्रण में यथार्थवादी दृष्टि तो रखते हैं किन्तु यथार्थ को शिष्टता और आदर्श से जकड़े रहते हैं।

क्रियाशीलता की दृष्टि से प्रेमचन्द और शरत चन्द के नारी पात्रों में अन्तर दिखाई देता है। प्रेमचन्द की तुलना में यह गतिशीलता शरत चन्द्र की कहानियों के पात्रों में कुछ कम दिखाई देती है। शरत चन्द के नारी पात्र भी गतिशील हैं किन्तु

1. इलाचन्द जोशी, आजकल, नवम्बर, 1952 (शरत साहित्य) प्र० 14

प्रेमचन्द की तुलना में कुछ स्थिर प्रतीत होते हैं। यद्यपि शरत चन्द्र के पात्र यदि स्थिर नहीं हैं। इसका कारण ये है कि शरत चन्द्र के पात्रों में चिरन्तन और शाश्वत तत्वों को अभिव्यक्त किया गया है। इसी कारण इनके नारी पात्रों में प्रेमचन्द के नारी पात्रों की अपेक्षा विविध कर्मशीलता उतनी नहीं दिखाई देती है। शरत चन्द्र की कहानियों में पुरुष पात्रों से कहीं बढ़कर उनके नारी पात्र हृदय पर प्रभाव डालते हैं। दलित अपमानित भारतीय नारी के साथ शरत चन्द्र ने पग-पग पर जिस समझदारी से भरी सहानुभूति का परिचय दिया है वह भारतीय साहित्य की अमर वस्तु है। इसीलिये बंगाल की नारियों ने विशेष रूप से उनका सानन्द अभिनन्दन किया है। धर्म, गता गतानुगतिकता तथा पैसे के संयुक्त मोर्चे के अभियान के आगे युगों से पिसती हुई भारतीय नारियों ने उनकी कहानियों में जैसे अपनी स्वतंत्रता को लौटा हुआ अनुभव किया है।

भारतीय समाज में नारियों के पैरों में पड़ी भारी बेड़ियां शरत चन्द्र की कहानी के नारी पात्रों की मनमोहक अभिव्यक्ति से टूटती दिखाई देती है। समाज में महिलाओं ने यह भी जाना कि जीवन में उनका भी कुछ भाग है, जो सर्वदा गौण ही हो, ऐसा नहीं। शरत चन्द्र की रचनाओं में वार नारियों का चरित्र तक सहानुभूतिपूर्वक चित्रित है। उनको देखकर ऐसा लगता है कि वे भी मनुष्य योनि की प्राणी होने का अनुभव करती हैं। वे महसूस करती हैं कि उनका दिल भी मनुष्य की भाँति धड़कता है। शरत चन्द्र की कहानियों में भी उपन्यासों की तरह नारी पात्रों का विविधता पूर्ण चित्रण किया गया

है। मन्मथनाथ गुप्त ने इस विषय पर लिखा है— “इसमें सन्देह नहीं कि उनके उपन्यास नारी चरित्र प्रधान हैं। उनके नारी चरित्र उनके पुरुष चरित्रों से कहीं अधिक जोरदार हैं। सावित्री, किरणमयी, अभया, अन्नदा, माधवी, सुरबाला, राजलक्ष्मी, चन्द्रमुखी इत्यादि एक से एक अद्भुत चरित्र हैं जो पाठक के हृदय पटल पर अपने को अंकित कर देते हैं।”¹

इन्हीं कारणों से बंगाल की नारियों ने शरत चन्द में ऐसी विभूति देखी, जिसने उनको पालतू पशु की अवस्था से उठाकर मनुष्यता की मर्यादा को स्थापित किया। शरत चन्द की 57वीं जन्मतिथि के उपलक्ष्य में बंगाल के सारे नारी संघों की ओर से जो अभिनन्दन दिया गया उसमें कहा गया— “पराधीन देश के अधः पतित समाज की असहया अंतः पुर चारिणियों के हृदय की मूक आनन्द वेदना को तुमने भाषा में मूर्त कर दिया है। अपनी निविड़ सहानुभूति ढालकर तुमने उनके दुर्गतिपूर्ण जीवन के सुख दुखों की सब अनुभूतियों को साहित्य में सत्य करके प्रत्यक्ष कर दिया है। हे नारी चरित्र के परम रहस्य ज्ञाता हम लोग तुम्हारी वन्दना करती हैं। सब तरह का आत्मापमान तथा सब तरह की हीनता की हालत में भी नारी की प्राकृतिक विशेषतायें सब देशों के सभी समाजों में मौजूद हैं, तुमने उसके अक्रतिम रूप को प्रत्यक्ष किया है, उसकी सत्य प्रकृति का अध्ययन किया है। हे सन्नारियों के अतंर्यामी, हम तुम्हारी वन्दना करती हैं। आज के इस विशेष दिन में हम यही जताने आई हैं कि हम तुम्हारी प्रतिभा को वरण

1. मन्मथनाथ गुप्त, शरत चन्द: व्यक्ति और साहित्यकार प्र० 85, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

करती हैं। हम लोग तुम पर श्रद्धा करती है, हम तुमको प्यार करती हैं। हम लोग तुमको अपना ही करके समझती हैं। हे नारियों के परम श्रद्धेय मित्र, तुम हम लोगों के परम प्रिय हो, तुम हम लोगों के परम आत्मीय हो हम तुम्हारी वन्दना करती हैं।”¹

प्रेमचन्द और शरत चन्द की कहानियों में अभिव्यक्त नारी पात्रों के तुलनात्मक अध्ययन से यह भली भांति ज्ञात हो जाता है कि प्रेमचन्द अपनी कहानियों में नारी पात्रों को ग्रामीण परिवेश में स्थापित कर सफल कहानी कार का दर्जा पाते हैं किन्तु ये भी स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि शरत चन्द्र ने अपने नारी पात्रों के चित्रण द्वारा समाज में एक क्रान्ति का सा वातावरण निर्मित किया है। शरत चन्द के सम्मान में जो अभिनन्दन महिला समाज द्वारा किया गया वो अपने आप में अनुकरणीय है। किसी भी साहित्यकार को इस प्रकार का सम्मान ये दर्शाता है कि शरत चन्द पाठकों के दिलों में कितना अमिट स्थान बनाने में सफल हुये हैं। प्रेमचन्द के विषय में नारी समाज ने इस प्रकार का अभिनन्दन नहीं किया है उसका कारण ये है कि प्रेमचन्द एक ही परिवेश की नारियों के यथार्थ चित्रण द्वारा कहानी को मार्मिक स्वरूप तो देते हैं किन्तु पाठकों की इस प्रकार की संवेदन प्रतिक्रिया से वंचित रहते हैं। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि शरत चन्द ने नारी चित्रण को समाज के प्रत्येक वर्ग का ऐसा समर्थन मिला कि यह अनूठी मिसाल कहीं जा सकती है। इस उदाहरण से शरत चन्द, प्रेमचन्द पर भारी पड़ते दिखाई देते हैं।

1. वही, प्र० 85-86 (उद्धित)

शरत चन्द ने मध्यवर्गीय नारियों के चरित्र-चित्रण द्वारा उनके सुखों और दुखों को अभिव्यक्त किया है। अपनी कहानियों में उन्होंने मध्यमवर्ग की गृहस्थी की बड़ी लड़कियों के विवाह आदि की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द ने भी अपनी विभिन्न कहानियों में नारी के विविध व्यवहारों को स्पर्श किया है। प्रेमचन्द की कहानियों में नारी चित्रण के प्रेम स्वरूप में सच्चाई आत्मसमर्पण, सहृदयता, त्याग कोमलता, क्षमा-शीलता, विश्वास आदि अनेकों उदात्त भावों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ये सभी भावनायें सेवा के अन्तर्गत आती हैं। यही कारण है कि प्रेमचन्द का कोई पात्र प्रेम करता है, तो सेवा की ओर अग्रसर होता है। जहाँ प्रेम होता है वहाँ सेवा होती है, लेने से अधिक देने की भावना होती है। दो सखियाँ कहानी की नारी पात्र 'चन्दा' सेवा का महत्व समझती है। वह कहानी की अन्य नारी पात्र पदमा को, जो अपने पति की सेवा नहीं करती और अपना सारा समय अपने ही बनाव सिंगार में व्यतीत करती है, को समझाती है— “प्रेम का एक ही मूल मन्त्र है, और वह है सेवा यह मत समझो कि जो पुरुष तुम्हारे ऊपर भ्रमर की भांति मडराया करता है, वह तुमसे प्रेम करता है। उसकी यह रूपासिक बहुत दिनों तक नहीं रहेगी। प्रेम का अंकुर रूप में है, पर उसको पल्लवित और पुष्पित करना सेवा ही का काम है।”¹

शरत चन्द के नारी पात्र भी प्रेम और सेवा में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। पत्नी अपने जीवन को सफल बनाने के लिये ये ही कामना करती है कि वह पति की

1. प्रेमचन्द, दो सखियाँ, मानसरोवर, भाग -4, प्र० 260

सेवा करती रहे तथा उसके पुत्र द्वारा ही उसे मुख्याग्नि प्रदान की जाये। शरत चन्द्र की रचना अभागी का स्वर्ग में यही चित्रण देखने को मिलता है जब एक नारी पात्र कंगाली की माँ एक शवयात्रा को देखती है तो उसके हृदय में जो भावना बलवती होती है वो परिवार एवं पति के प्रेम कीप उत्कृष्ट उदाहरण कहा जा सकता है— “बड़ी इच्छा हुई कि दौड़कर जाकर वह एक बूंद अलता दुलाकर अपने माथे पर लागा ले। रामनाथ की पवित्र ध्वनि के साथ जब बेटे के हाथों मुख्याग्नि संस्कार हुआ तो उसकी आंखों से अविरल धारा बह चलीं मन ही मन बोली, सौभाग्यवती माँ हो तुम स्वर्ग जा रही हो। हमें भी आशीर्वाद देती जाओ। तुम्हारी तरह मुझे भी कंगाली के हाथ की आग मिले। लड़के के हाथ की आग कोई मामूली बात थोड़े ही है। पति—पुत्र, कन्या, नाती—पोते, नौकर चाकर आत्मीय, परिजन, पूरी गृहस्थी भरी पूरी छोड़कर स्वर्ग चला जाना इतने बड़े सौभाग्य की सीमा वह दूढ़ भी नहीं पा रही थी। गर्व से उसका हृदय भर उठा था।”¹

भारतीय नारी का सम्मानित पद राजनीतिक सामाजिक, परिस्थितियों के कारण कालान्तर में क्षीण होने लगा और आधुनिक युग तक आते आते वह की देवी के स्थान पर दासी बनती जा रही थी। आधुनिक नारी की सामाजिक स्थिति इतनी दयनीय हो गयी कि वह पुरुष की छाया मात्र रह गयी। एक समय था जब भारतीय नारी में अनेकानेक कुरीतियाँ और रूढ़ियाँ पनप रही थीं आधुनिक नारी की असहाय स्थिति ने

1. शरत चन्द्र, अभागी का स्वर्ग, प्र०-21

युग के कलाकारों और विचारकों का ध्यान सहज ही में आकर्षित किया है। आधुनिक युग में नारी-पुरुष के बीच एक भावनात्मक सामंजस्य और संतुलन की आवश्यकता का अनुभव किया गया। अतीत की सम्मानित नारी की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित कर समाज में नारी को समुचित स्थान देने के प्रयास किये गये। प्रेमचन्द और शरत्चन्द भी इन स्थितियों से प्रभावित हुये और अपनी रचनाओं द्वारा नारी के विविध पात्रों को अपने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया।

औद्यौगिक क्रान्ति ने जहां समस्त यूरोप को सुधार की लहर से आप्लावित कर दिया था वहाँ नारी समाज को भी नवजागरण से सचेत कर दिया था। यूरोप की नारी की स्वतंत्र भावना का प्रभाव भारतीय समाज में भी देखने को मिलता है। तत्कालीन भारतीय समाज सुधारकों ने समाज को नये प्रकाश में गतिमय करने का प्रयास किया तथा भारतीय नारी की स्थिति पर विचार किया गया। भारतीय नारी समाज के विषय में डॉ० जे०एन० फर्कहर ने लिखा है— “राजा राममोहन राय ने पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित होकर बंगाल में ब्रह्म समाज की स्थापना की जिसके प्रमुख कार्यों में तत्कालीन बंगाल की नारी की स्थिति को भी सुधारना था। राय साहब स्वयं बहुविवाह, बाल विवाह आदि के विरोधी तथा विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। धार्मिक परिवर्तनों के साथ-साथ वे शिक्षा और हिन्दू परिवार के सुधारों में अधिक रुचि रखते थे।”¹

1. डॉ० जे०एन० फर्कहर, मोडन रिलीजन्स मूवमेंट इन इण्डिया, प्र० 115

आधुनिक कथा साहित्य में नारी की स्थिति विशेष ध्यान देने योग्य है। नारी आधुनिक कथा साहित्य की धूरी रही है। आधुनिक कहानियों में नायक की अपेक्षा नायिका का चरित्र अधिक आकर्षण रूप में प्रस्तुत किया गया है। नारी के विद्रोही व्यक्तित्व के कारण ही उसी के आसपास आधुनिक कहानी की कथा घूमती रही है। प्रेमचन्द और शरत चन्द आधुनिक कहानीकार हैं अतः इनकी कहानियों में आधुनिक भारतीय नारी की विभिन्न परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। जिस कार्य को राजा राममोहन राय और महात्मा गांधी आदि ने सामाजिक आन्दोलनों के द्वारा करने का प्रयत्न किया उसे प्रेमचन्द और शरत चन्द ने अपनी कहानी कला के माध्यम से भारतीय समाज के सम्मुख बहुत कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द की कहानियों में गाँधी के नारी विषयक विचारों का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। भारतीय राजनीति में गाँधी का प्रभाव सन् 1920 के बाद पड़ना प्रारम्भ हुआ। अतः प्रेमचन्द की कहानियों में गाँधी का प्रभाव स्पष्ट रूप से अंकित हुआ है। गांधी की ही भांति प्रेमचन्द ने भी नारी की स्वतंत्र स्थिति और पुरुष की समानता का समर्थन किया है। 1930-32 के आस पास लिखी गई कहानियों में नारी को पारिवारिक क्षेत्र से बाहर निकाल कर व्यापक सामाजिक, राजनैतिक धरातल पर उपस्थित करने का सफल प्रयास देखा जा सकता है।

शरत चन्द के नारी विषयक विचारों में नवजागरण का प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है। शरत चन्द के समय बंगाल में नारी एक समस्या के रूप में व्याप्त थी। विगत

शताब्दी आंदोलनों का प्रभाव मंद हो जाने पर भी उनकी छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। इस प्रकार पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नारी समाज और प्राचीन हिन्दू संस्कृति के अनुरूप नारी वर्ग शरत चन्द के समय में एक संघर्ष के रूप में अवश्य विद्यमान रहा है। परिणामतः शरत चन्द पर एक ओर ब्रह्म समाज की नारी विषयक धारणाओं का गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है जिससे शरतचन्द ने यूरोप के नारी मुक्ति आन्दोलन की भाँति नारी स्वातंत्र्य भावना पर बल दिया है तथा विधवा विवाह का समर्थन किया है। दूसरी ओर प्राचीन मान्यताओं और प्राचीन संस्कृति पर आस्था व्यक्त की है। जिससे भारतीय नारी का बहुरूप प्रतिष्ठित किया है। वस्तुतः शरत चन्द ने नारी को युग-युग के संस्कारों से मुक्ति दिलाकर, उसके स्वतंत्र अस्तित्व और उसकी सुदृढ़ पारिवारिक स्थिति का ही समर्थन किया है। प्रेमचन्द की भाँति व्यापक राजनीतिक सामाजिक धरातल पर नारी के कर्तव्यों की विवेचना नहीं की है और अन्ततः नारी को उसके गृहस्थिक रूप को सर्वश्रेष्ठ स्वीकार किया है।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी की सामाजिक परिधि को विस्तृत कर उसे नव्य चेतना से अनुप्राणित किया है जिससे प्राचीन सामाजिक रूढ़ियों और मान्यताओं पर गहरा आघात हुआ है। प्रेमचन्द नारी के गृहिणी रूप का समर्थन भी करते हैं किन्तु साथ ही उसके सामाजिक उत्तर दायित्व तथा पुरुष के साथ उसके समान अधिकार की ओर भी संकेत करते हैं। इसी से प्रेमचन्द के कहानी साहित्य में नारी पुरुष के साथ पैर बढ़ाती हुई दिखाई पड़ती है। यहीं प्रेमचन्द की नारी विषयक भावना अधिक

प्रगतिशील दिखाई पड़ती है जो कि उनके नारी पात्रों को यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान करती है। प्रेमचन्द की कहानी 'बेटों वाली विधवा' में नारी पात्र फूलमति अपने साथ दुर्व्यवहार को सहन न करके उसके खिलाफ आवाज उठाती है और वो प्राचीन नारी की तरह शान्त रह कर दुख उठाने की अपेक्षा विद्रोही प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति करती है—

“मैंने ही घर बनवाये, मैंने सम्पत्ति जोड़ी, मैंने तुम्हें जन्म दिया, पाला और आज इस घर में गैर हूँ? अपना घर द्वारा लो। मुझे तुम्हारी आश्रिता बनकर रहना स्वीकार नहीं। इससे कहीं अच्छा है कि मर जाऊँ। वाह रे अंधेर मैंने पेड़ लगाया और मैं ही उसकी छांह में नहीं खड़ी हो सकती, अगर यही कानून है, तो इसमें आग लग जाये।”¹

प्रेमचन्द ने अपनी अन्य कहानियों में भी नारी पात्रों को संघर्ष के साथ-साथ जागरूकता के प्रदर्शन को महत्व दिया है। उनकी कहानियों में नारी ये जान चुकी है कि उसे अपनी मंजिल पाने के लिये समाज में विद्रोह की भावना को आत्मसात करना होगा।

प्रेमचन्द और शरतचन्द्र ने अपनी कहानियों में नारी पात्रों के सौंदर्य के अंकन में केवल ऐन्द्रिक पक्ष को महत्व नहीं दिया है। इसी से नारी का भव्य और दिव्य सौन्दर्य शरतचन्द्र और प्रेमचन्द की कहानियों में अंकित हुआ है। नारी का सौन्दर्य शरतचन्द्र के उपन्यासों में आश्चर्य की भावना से पूर्ण अंकित हुआ है। नारी के असीमित सौंदर्य को देख कर पुरुष वर्ग अचम्भा करने लगते हैं। नारी के सौंदर्य वर्णन में शरतचन्द्र की यह

1. प्रेमचन्द, बेटों वाली विधवा, मानसरोवर, भाग-1, प्र० 73

भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। शरतचन्द्र की रचना में विराज के असीमित सौन्दर्य को देखकर राजेन्द्र इतना विमोहित हो गया कि— “उसे जैसे एकाएक विश्वास नहीं हुआ कि मनुष्य के भी इतना रूप होता है। वह इस ओर से आँखें न फेर सका। चित्र लिखित सा टकटकी लगाकर, इस अतुल असीम रूपराशि, को मगन होकर निहारने लगा।”¹ प्रेमचन्द्र ने भी नारी के सौन्दर्य का वर्णन करते समय उसके असीमित रूप को देखकर अपनी रचनाओं में इसी प्रकार का आश्चर्य किया है— मनोरमा का सौन्दर्य अत्यंत भव्यता के साथ चित्रित किया गया है— “कितनी रूप छटा है, मानो ऊषा के हृदय से ज्योतिर्मय मधुर संगीत की कोमल, सरस, शीतल ध्वनि निकल रही हो।”²

शरतचन्द्र की रचनाओं में नारी पात्रों के रूप में सौन्दर्य भावना में नारी का सौन्दर्य प्रेमचन्द्र की तुलना में अधिक भावनामय स्वरूप में अंकित हुआ है। शरतचन्द्र की रचनाओं में नारी सौन्दर्य चरम अभिव्यक्ति की ओर उन्मुख दिखाई देता है। प्रेमचन्द्र के नारी पात्रों के जो नाम रखे गये हैं उनमें सौन्दर्य भावना का अभाव है। जबकि शरतचन्द्र के नारी पात्रों के नाम में ही सौन्दर्य की झलक देखने को मिलती है। प्रेमचन्द्र ने अपने नारी पात्रों के चित्रण में समाज की तत्कालीन परिस्थितियों तथा राजनैतिक उथल-पुथल का विशेष ध्यान रखा है। साथ ही प्रेमचन्द्र ने नारी पात्रों के मानसिक संघर्ष और अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण भी किया है। इस दृष्टि से प्रेमचन्द्र के नारी

1. शरतचन्द्र, विराज बहू, प्र० 27

2. प्रेमचन्द्र, काया कल्प, 132

पात्रों का चित्रण भारतीय नारी की अनेक समसामयिक समस्याओं को अभिव्यक्त करता है तथा समाज में नारी की यथार्थ स्थिति को प्रकट करता है। शरतचन्द्र ने पारिवारिक जीवन में नारी की स्थिति तथा समाज द्वारा होने वाले उत्पीड़न की कथा को अपने नारी पात्रों में साकार किया है। वस्तुतः नारी जीवन की करुणा दिखाना शरतचन्द्र का प्रमुख उद्देश्य रहा है। यही कारण है कि शरतचन्द्र के नारी पात्र कहानी के कथानक पर छाये रहते हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों में नारी पात्र राजनैतिक चेतना से परिपूर्ण हैं तत्कालीन राजनैतिक उथल-पुथल से प्रेमचन्द के नारी पात्र केवल प्रभावित ही नहीं हैं बल्कि उनमें नेतृत्व ग्रहण करने की क्षमता भी दिखाई देती है। शरतचन्द्र के कथा साहित्य में राजनैतिक चेतना से परिपूर्ण नारी पात्रों की अधिक अवतरण नहीं है। शरतचन्द्र ने नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार तो किया है किन्तु उसे परिवार से बाहर निकालकर विस्तृत सामाजिक धरातल पर नहीं प्रस्तुत किया है। परिणाम स्वरूप शरतचन्द्र के नारी पात्र राजनीतिक चेतना से अपरिचित हैं पारिवारिक और सीमित सामाजिक परिधि के अन्दर ही उनके चरित्र का विकास हुआ है।

शरतचन्द्र के कुछ नारी पात्र असीमित प्रणय आकांक्षा और उद्दाम लालसा के द्योतक हैं। प्रेम के अथाह सागर में वे डूबते उतरते हैं। प्रायः प्रेमवृत्ति को ही केन्द्र बनाकर नारी पात्रों का प्रणयन हुआ है। अतः प्रेमचन्द की अपेक्षा शरतचन्द्र के नारी पात्रों में प्रेम के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं। नारी पात्रों में प्रेम के असफल होने पर

प्रेमचन्द और शरतचन्द्र दोनों ही कहानीकारों ने कहीं-कहीं आत्मघातक मृत्यु का आश्रय लिया है। शरतचन्द्र की रचनाओं में इस प्रवृत्ति को पार्वती (देवदास) तथा माधवी (बड़ी बहन) में देखा जा सकता है। मनोरमा (कायाकल्प) संध्या (ब्राह्मन् की बेटी) और रमा (ग्रामीण समाज) में प्रेम की दृष्टि से गहरी निराशा अभिव्यक्त हुई है।

प्रेमचन्द ने परिस्थितियों वश समाज में गिरी हुई नारी को मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण नायिका पद पर प्रतिष्ठित किया है। शरतचन्द्र ने अपनी रचनाओं में समाज से च्युत, लांछित और अपमानित नारी को नायिका के रूप में प्रतिष्ठित कर जिस विद्रोह का परिचय दिया है वह विशेष उल्लेखनीय है। वेश्याओं और हीन सामाजिक स्थिति वाली नारियों में आत्मबल भरकर शरतचन्द्र ने नारी चरित्रांकन में जिस नवीन स्वर की घोषणा की है वह प्रेमचन्द में अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ अभिव्यक्त हुआ है। शरतचन्द्र की वेश्या पात्रायें भी मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण हैं।

षष्ट अध्याय

उपसंहार



षष्ठ अध्याय

उपसंहार

बंगला साहित्य में शरतचन्द्र अचानक ही पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हुये। उस समय पाठक रवीन्द्रनाथ एवं प्रभात कुमार की कहानियों से स्पष्ट रूप से जुड़े हुये थे। यकायक बंगला साहित्य में एक साधारण परिवार के व्यक्ति के कथा जगत में आने से तूफान सा मच गया। यह व्यक्ति कोई और नहीं महान कथाकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के नाम से जाना गया। अचंभे की बात यह है कि उस समय पहले से ही टेगौर और प्रभात कुमार पूर्ण रूप से बंगला साहित्य में प्रतिस्थापित कथाकार थे। शरतचन्द्र के नाम से बंगला कथा साहित्य में एक युग 1876—1938 महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

शरतचन्द्र की रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद होने के कारण वह बंगला साहित्य की धरोहर न होकर सम्पूर्ण भारत के लिये महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शरतचन्द्र ने बंगाली समाज की मूलभूत मान्यताओं पर ही प्रश्न चिन्ह नहीं लगाये बल्कि उनकी कथाओं के विषय निर्बल तथा निम्न वर्ग के व्यक्ति भी थे। उन्होंने व्यक्ति को उसकी सारी कमियों के साथ सहानुभूति से देखा और उसे आत्मीयता के साथ अनुभव किया। उन्होंने अपनी कथाओं में सभी प्रकार चित्रण स्थापित करते हुये नारी के प्रेम एवं त्याग को भी लेखन का भाग बनाया। शरतचन्द्र की कथाओं में वे सभी बिन्दु स्पष्ट रूप

से दिखाई देते हैं जिन पर सम्पूर्ण विश्व में आन्दोलन आयोजित होते रहे हैं। शरत चन्द्र का वैचारिक दृष्टिकोण निर्बल एवं असहाय समाज के संदर्भ में कार्ल मार्क्स के कम्युनिस्ट मसविदे से भी अधिक विस्तृत है। मार्क्सवाद के अनुसार जो व्यक्ति किसी सम्पत्ति का स्वामी नहीं है वह निर्बल वर्ग है, परन्तु शरतचन्द्र ने इस समाज को किसी परिधि में नहीं बांधा है।

शरतचन्द्र के लेखन में जिन सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ है वह अन्य किसी बंगला कथाकार के लेखन में नहीं दिखाई देता है। शरतचन्द्र का जन्म 1876 में बंगाल के हुगली जिले के एक छोटे से गांव देवानन्दपुर में हुआ था। इनके पिता एक साधारण व्यक्ति थे। बचपन में शरतचन्द्र का मन पढ़ाई लिखाई में नहीं लगता था और वो सदैव मछली पकड़ने के लिये आतुर रहते थे। शरतचन्द्र ने भागलपुर में एक विद्यालय में प्रवेश लिया किन्तु उसमें अच्छी शिक्षा न होने के बावजूद भी वह अपनी बुद्धिमत्ता के आधार पर ज्ञानी लड़कों में गिने जाते थे। पारिवारिक झगड़ों के कारण शरतचन्द्र का परिवार भागलपुर से फिर देवानन्दपुर आ गया। यहाँ शरतचन्द्र हुगली ब्राँच स्कूल में भर्ती हुए। यहाँ भी ये लड़कों की टोली के सरदार बन गये थे।

शरतचन्द्र के पिता का मन देवानन्दपुर में फिर नहीं टिक सका और वो सपरिवार भागलपुर वापिस आ गये। 1894ई० में भागलपुर में शरतचन्द्र ने 18 साल की आयु में एंट्रेंस परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद वे भागलपुर के तेज नारायण जुबिली कॉलेज में भर्ती हुये। शरतचन्द्र ने रवीन्द्र साहित्य के साथ-साथ अंग्रेजी उपन्यासकारों

विकेन्स, थैकरे, मिसेज हेनरी उड आदि के उपन्यासों को पढ़ा। शरतचन्द्र के पास एफ०ए० की परीक्षा शुल्क के 20 रुपये न होने के कारण पढ़ाई से वंचित होना पड़ा। वे शरास्ती लड़कों के सरदार बन गये।

भागलपुर में शरतचन्द्र के नेतृत्व में एक साहित्यिक गोष्ठी की स्थापना हुई। सुरेन्द्र गंगोपाध्याय, गिरीन्द्र नाथ गंगोपाध्याय, निरूपमा देवी, विभूति भूषण भट्ट, योगेश चन्द्र मजूमदार आदि प्रसिद्ध बंगला साहित्यकार इसमें सम्मिलित थे। शरतचन्द्र इस गोष्ठी के सभापति थे। शरतचन्द्र बाद में हावड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के सभापति भी बनाये गये। उनके मन में भी क्रान्तिकारी विचारधारा बलवती रहती थी। शरतचन्द्र अपनी गतिविधियों के कारण समाज से बाहर कर दिये गये थे। इस घटना से इनके भावुक हृदय को ठेस पहुँची और वे सब कुछ छोड़ कर घर से चले गये थे इस समय वे एफ०ए० के द्वितीय वर्ष के छात्र थे। सन् 1895 में माता के स्वर्गवास के बाद घर की आर्थिक स्थिति की बदहाली को दूर करने के लिये बानली एस्टेट में नौकरी करने लगे।

शरतचन्द्र के जीवन में एक समय ऐसा भी था जब उन्होंने गेरुये वस्त्र धारण कर लिये थे और संन्यासी का रूप धारण कर लिया। संन्यासी जीवन के आखिरी दिनों में वे मुजफ्फरपुर में थे। वहाँ सन् 1903 में उनको ये समाचार प्राप्त हुआ कि उनके पिता का देहान्त हो गया है। इन्होंने अपनी साईकिल बेच कर पिता के स्वर्गवास की क्रियायें श्राद्ध आदि कराया। बाद में शरतचन्द्र के परिवार के भाई-बहन विभिन्न

रिश्तेदारों के यहाँ रहने लगे और स्वयं शरतचन्द्र कलकत्ते के एक वकील रिश्तेदार के घर रहकर नौकरी की खोज करने लगे।

नौकरी न मिल पाने की दशा में वो आवरागी की ओर उन्मुख हो गये और अपनी एक कहानी लिखकर उसको बेचकर एक हारमोनियम खरीदा गया। शरतचन्द्र की 'मन्दिर' नामक कहानी को प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसके बाद शरतचन्द्र नौकरी करने के लिये रंगून चले गये। सन् 1906ई में शरतचन्द्र ने एग्जामिनर ऑफ पब्लिक वर्क्स एन्ड एकाउन्ट्स विभाग में 30/- रुपये महीना पर नौकरी करली। शरत चन्द्र ने एक गरीब कन्या से विवाह कर लिया। बंगाल में प्लेग के कारण उनकी पत्नी और बेटे का निधन होने के कारण वह फिर जीवन में अकेले रह गये।

शरतचन्द्र ने बाद में एक गरीब ब्राह्मण महिला के साथ शादी की। सन् 1916 तक साहित्यिक रूप में शरतचन्द्र की स्थिति बदल चुकी थी। कृतित्व के आधार पर शरतचन्द्र सफल साहित्यकार कहे जा सकते हैं। 1919 तक साहित्य जगत में शरतचन्द्र की स्थिति बहुत मज़बूत हो चुकी थी। शरतचन्द्र ने 'बगान' नाम से तीन खंडों में अपनी रचनाओं को एक संग्रह तैयार किया जिसमें 'बोझा', 'काशीनाथ', 'अनुपमार प्रेम', 'कोरेल ग्राम', 'बड़ दीदी', 'चन्द्रनाथ' तथा हरिचरण देवदास और 'बाल्य स्मृति' थी। बड़ी दीदी के प्रकाशन के बाद शरतचन्द्र छः वर्षों तक खामोश रहे फिर उसके बाद वे साहित्य में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ लेकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हुये। बाद में एक के बाद एक 'पंडित' मशाई, बैकुटेर विल, मेज दीदी, दर्पपूर्ण, पल्ली समाज, श्रीकान्त, आरक्षणीया, निष्कृति,

मामलार फल, गृहदाद, देना पावन, नवा वेधान, हरि लक्ष्मी, एकादशी, वैरागी, विलासी, अभागीर स्वर्ग, अनुराध, सती ओ परेश, शेष प्रश्न आदि प्रकाशित हुये।

शरतचन्द्र की एक रचना 'पथ का दावेदार' ऐसी पुस्तक थी जो ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पाठक के मन को उत्तेजना पहुँचाती थी। इस की 3000 प्रतियाँ तो एक माह में ही बिक गई और 5000 प्रतियाँ तीन महीने में दूसरे संस्करण के रूप में प्रकाशित हुई। इसके बाद इस पुस्तक को अंग्रेजी शासन ने ज़ब्त कर लिया। सरकार इन पर मुकदमा भी चलाने जा रही थी। किन्तु कुछ प्रभाव शाली लोगों के कारण वह रुक गया। शरतचन्द्र के कृतित्व के सम्बन्ध में अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा उसको पाठकों की व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई। वह यदि अपने लेखन में अश्लीलता भी दिखाते थे तो उसके अन्त में वही समाज के लिये एक ऐसा पाठ होता था जो सामाजिक मर्यादा के लिये मान्य होता था। शरदचन्द्र के कथानक में 'मानवीय' सुख दुख पर विस्तार पूर्वक विचार देखने को मिलते हैं। शरतचन्द्र जीवन में सुख समर्थक थे। इसलिये दुख को उन्होंने जीवन का स्थायी तत्व नहीं माना है। वे अपनी कहानियों में सुख को ही जीवन का लक्ष्य मानते हैं। फिर भी शरतचन्द्र के कई अन्य उपन्यासों तथा कहानियों में गरीबी एक घटक के रूप में सामने आई है।

शरतचन्द्र के जीवन परिचय और कृतित्व के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि उन्होंने दुख को भी सकारात्मक स्वरूप देने का प्रयास किया है।

अपनी कहानियों में शरतचन्द्र ने कई स्थलों पर सुख और दुख के अनेक पक्षों पर विस्तार पूर्वक विचार व्यक्त किये हैं इससे यह प्रतीत होता है कि शरतचन्द्र यह भी नहीं मानते कि सुख की प्राप्ति के लिये दुख भोगना अनिवार्य है तथा बिना दुख के सुख की उपलब्धि सम्भव नहीं है। शरतचन्द्र की कहानियों के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि उनका कृतित्व प्रेम तत्व से परिपूर्ण है। उन्होंने प्रेम को जीवन में अत्यधिक महत्व दिया है।

शरतचन्द्र की रचनाओं में प्रेम एक मर्यादा के रूप में देखने को मिलता है। प्रेम में शरतचन्द्र मर्यादा और संयम के समर्थक अवश्य हैं किन्तु उनके अनुसार संयम और मर्यादा शब्दों को बड़ा कहकर अतिरंजित कर डाला गया है। वे वास्तविकता के पक्षपाती दिखाई देते हैं तथा हृदय की सुमधुर भावना का समर्थन ही उनकी कृतियों में अभिव्यक्त हुआ है। शरतचन्द्र विज्ञान में भी रुचि रखने वाले इंसान थे वे विज्ञान की पुस्तकें बड़े चाव से पढ़ा करते थे। सन् 1915 में भारत वर्ष पत्र में 'जड़जगत' नामक एक लेख में उन्होंने प्रतिवाद पर प्रकाश डाला है।

शरतचन्द्र ने अपनी कहानियों में प्रत्येक पात्र चाहे वो नारी वर्ग के हों अथवा पुरुष वर्ग के सभी की अभिव्यक्ति को मानव समाज के अनुकूल बनाकर प्रस्तुत किया है। कृतित्व के आधार पर उनके रचना संसार को एक सफल तथा समाज के उपयोगी अंग के रूप में स्वीकार करने की चेष्टा सामान्यतः प्रत्येक पाठक करता है। रवीन्द्रनाथ तथा बंकिम चन्द्र चटर्जी के बाद शरत चन्द्र की लोकप्रियता भी उनकी रचनाओं के

आधार पर की जाती है। अत्यन्त अभाव ग्रस्त तथा जीवन के बिखराव की परिस्थितियों में उन्होंने जो कुछ भी समाज में देखा सुना तथा अनुभव किया उसको विभिन्न पात्रों की सहायता से अपने पाठकों तक पहुँचा कर एक पाठ बनाकर प्रस्तुत किया। उन्होंने विशेष रूप से अपने द्वारा चित्रित नारी पात्रों को एक सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है।

जिस प्रकार बंगला साहित्य में शरतचन्द्र का नाम अंग्रेजी साहित्यकारों में गिना जाता है उसी प्रकार हिन्दी साहित्य में भी प्रेमचन्द एक हृदय स्पर्शी कथाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। प्रेमचन्द जुलाई, सन् 1880 में बनारस के लमही नामक ग्राम में पैदा हुये थे। इनका नाम धनपत राय रखा गया और इनको नवाब राय के नाम से भी जाना जाता था। प्रेमचन्द के पिता एक निम्न मध्य परिवार के व्यक्ति थे। प्रेमचन्द की पढ़ाई पाँचवे वर्ष में प्रारम्भ हो गई थी। मौलवी साहब से फारसी का ज्ञान प्राप्त किया। प्रेमचन्द जब आठ वर्ष के थे तभी इनकी माँ का देहान्त हो गया और पिता ने दूसरी शादी कर ली थी। बचपन में निर्धनता तथा माता के अभाव में उनको वह वातावरण नहीं मिल सका जिसका इच्छुक बचपन होता है।

प्रेमचन्द 13 वर्ष की आयु तक हिन्दी नहीं जानते थे। उन्हें उर्दू उपन्यास पढ़ने का उन्माद था। प्रेमचन्द ने अपनी प्रथम रचना 13 वर्ष की आयु में सन् 1893 में लिखी। प्रेमचन्द का विवाह 15 वर्ष की आयु में कर दिया गया। कुछ समय बाद इनके पिता की भी मृत्यु हो गयी। 1899 में प्रेमचन्द सरकारी अध्यापक की नौकरी करने लगे। उन्होंने सन् 1898 में उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया। 1908 में स्कूल के डिप्टी

इंस्पेक्टर पद पर हमीरपुर में तैनात हुये। प्रेमचन्द ने अपनी साहित्य साधना के द्वारा हिन्दी साहित्य को अनमोल रत्न प्रस्तुत किये। प्रेमचन्द बहुत सीधे सादे और सबसे प्रेम करने वाले इंसान थे। उनके जीवन में कोई दोहरा रूप नहीं था वो जो घर पर थे वही बाहर भी।

प्रेमचन्द अपने जीवन के सन् 1921-1936 के काल में नौकरी के इस्तीफे के बाद वह लेखन कार्य में व्यस्त हो गये। प्रेमचन्द जीवन की जिन विषमताओं से गुज़रे थे उनके अनुभव ने उन्हें कट्टर भाग्यवादी बना दिया था। जीवन में मिलने वाली असफलताओं और विषमताओं के आधार पर प्रेमचन्द भाग्यवादी हो गये थे। सन् 1923 में उन्होंने बनारस में 'सरस्वती' प्रेस की स्थापना की। 1928 में प्रेमचन्द ने 'माधुरी' का सम्पादन प्रारम्भ किया। 1930 में बनारस से 'हंस' का सम्पादन किया। प्रेमचन्द ने 'जागरण' पत्र निकाला किन्तु उसमें घाटा हुआ। 1934 में बम्बई के अजन्ता मूवीटोन से 9000/- रु० सालाना का आमन्त्रण मिला। मगर प्रेमचन्द को फिल्मी दुनिया भी रास नहीं आई और बम्बई छोड़ दिया।

प्रेमचन्द का जीवन आर्थिक रूप से अत्यन्त अभावों में व्यतीत हुआ। निजी जीवन में वह शादी करके भी खुश न रह सके। प्रेमचन्द अधिकतर खामोश रहते थे और कभी कभी जब बहुत खुश होते थे तो ठहाकों के साथ हँसते थे। वे सदैव ही आडम्बरो से दूर रहे। उनके व्यक्तित्व में सरलता, सौम्यता तथा सहानुभूति के साथ चित्त की उदारता भी दिखाई देती है। स्त्री पुरुष सम्बन्धों के विषय में उनकी अवधारणा थी कि

नारी पुरुष के जीवन में प्रेरणा और शक्ति का संचार करती है। लेकिन यह नहीं मानते कि नारी केवल भोग की वस्तु है, नारी के वे मातृत्व के पथ पर बढ़ती हुई अखण्ड शक्ति मानते थे। उन्होंने नारी की चरमता उसके मातृत्व में मानी है। प्रेमचन्द के व्यक्तित्व के गहन सर्वेक्षण के बाद कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी उद्देश्य से यदि रचना की है तो वह यही मानवतावाद है और क्रान्ति भी। अपनी 56 वर्ष की आयु और 36 वर्ष के रचना काल में प्रेमचन्द ने बहुत कुछ पढ़ा बहुत कुछ जीवन संघर्ष के क्रम में अनुभव से प्राप्त किया और बहुत कुछ लिखा। संस्कार अनुभव और परिस्थितियों की प्रतिक्रिया जितनी प्रबल प्रेमचन्द में हुई उतनी उनके समकालीन किसी अन्य साहित्यकार में नहीं। प्रेमचन्द के लिये साहित्य रचना विलास नहीं था विवशता थी भीतर की कुरेदन और तड़प उन्हें अभिव्यक्ति के लिये मजबूर करती थी।

प्रेमचन्द ने 1901 से लेकर 'सेवा सदन' के प्रकाशन तक अनेक उपन्यास और कहानियों की रचना की। इनमें कृष्णा, वरदान, प्रेमा और श्यामा, उपन्यास हैं। सोजे वतन, सप्तसरोज और नवनिधि कहानी संग्रह हैं। 'वरदान' कहानी का एक दृश्य शरतचन्द्र के 'देवदास' के एक दृश्य से मिलता जुलता है। 'वरदान' के बाद 'सोजेवतन' क्रम की कहानियों आती हैं। ये कहानियाँ देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत हैं। प्रेमचन्द ने 'सप्त सरोज' और 'नवनिधि' की कहानियों में से 'बड़े घर की बेटी', 'पंच परमेश्वर', सौत राजा हरदौल', 'रानी सारन्ध', विक्रमादित्य की कटार', को अपनी सर्वश्रेष्ठ कहानियों में गिना है।

प्रेमचन्द नारी को अनंत प्रेरणा का स्रोत मानते हैं। प्रेमचन्द का मानना था कि ऐसी कहानी जिसमें जीवन के किसी अंग पर प्रकाश न पड़ता हो, जो सामाजिक रूढ़ियों की तीव्र आलोचना न करती हो, जो मनुष्य में सद्भावों को दृढ़ न करे या जो मनुष्य में कुतूहल का भाव न जागृत करे, कहानी नहीं है। कृतित्व के आधार पर उनके द्वारा रचित उपन्यास वरदान सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, काया कल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि हैं। इनके कहानी संग्रह निम्न प्रकार हैं— सप्त सरोज, नवनिधि, प्रेमपूर्णिमा, प्रेम पचीसी, प्रेम प्रसून, प्रेम प्रमोद, प्रेम प्रतिभा, प्रेमद्वादशी, प्रेमतीर्थ, प्रेमचतुर्थी, अग्नि समाधि तथा अन्य कहानियाँ पांचफूल समर यात्रा और ग्यारह अन्य राजनैतिक कहानियाँ, सप्त सुमन, प्रेरणा, प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ मान सरोवर आदि संग्रह के रूप में हैं।

शरतचन्द्र के साहित्य से पूर्व के युग में उसका प्रधान विषय मनुष्य के व्यक्तिगत दुख सुख पर केन्द्रित रहता था उन्होंने व्यक्ति और समष्टि की व्यक्ति के हृदय के समस्त पक्षों को उभारने का प्रयास किया। शरतचन्द्र की प्रतिभा का श्रेष्ठ विकास एक परस्पर विरोधी शक्तियों के संघर्ष के चित्रण में हुआ है। इसीलिये उनके द्वारा रचित नारी एवं पुरुष पात्रों के चरित्र विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शरतचन्द्र की नारी को एक द्वन्द्व एवं संघर्षपूर्ण परिस्थिति में देखा जा सकता है। नारी के चरित्र में प्रवृत्ति के साथ सचेतन संस्कार की इस टक्कर को शरतचन्द्र ने व्यापक रूप में देखा है। प्रेम का आकर्षण चुम्बक के आकर्षण की तरह प्रबल होता है, उस आकर्षण के वेग से बचना

बहुत कठिन होता है। यह प्रेम आकर्षण शरतचन्द्र की कहानियों में उनके द्वारा रचित नारी पात्रों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

यह ठीक है कि नारी निर्माण में पुरुष का भी सहयोग होता है। शरतचन्द्र ने इसी अनुपात से अपनी कहानियों में नारी पात्रों को प्रधानता प्रदान की है। शरतचन्द्र ने अपने निबंध 'नारी मूल्य' में बहुत ही विदग्धतापूर्ण ढंग से नारी के महान मूल्य का निर्धारण किया है। उनके नारी पात्रों का सूक्ष्म अध्ययन उनकी नारी संबंधी विशिष्ट धारणाओं का स्पष्ट परिचायक है। जिस समय शरतचन्द्र ने लिखना प्रारम्भ किया था उस समय सुधारवादी आन्दोलनों की लहर चल रही थी। कलकत्ता में ब्रह्मसमाज के आंदोलन के फलस्वरूप जातीय विभेदों के विरोध में स्वर मुखर हो रहे थे। सती प्रथा को बंद करने के प्रयास हो रहे थे। विधवा विवाह को बढ़ावा दिया जा रहा था। नारी शिक्षा में बाल विवाह के कारण व्यवधान होता था। बाल विवाह एक धार्मिक कार्य की तरह माना जाता था, फलस्वरूप 18-20 वर्ष की आयु तक पहुँचते अधिकांश नारियाँ विधवायें हो जाया करती थीं। विधवा विवाह निषिद्ध था इसलिये विधवाओं की एक बड़ी संख्या समाज के लिये विकट समस्या बनकर सामने खड़ी थी।

बंगाल की नारियों की दुरावस्था को देखकर तत्कालीन कलाकारों विचारकों ने आवाज़ उठाई, परन्तु शरतचन्द्र का विद्रोह सबसे सशक्त तर्कपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक था। बंगाल की नारी समाज के लिये शरतचन्द्र ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जो कुछ भी किया उसका सही मूल्यांकन आने वाले युग के सामाजिक इतिहास कार ही

कर सकेंगे। जिस कार्य को बड़े से बड़े सुधारक भी एक साथ मिलकर नहीं कर पाये, उस कार्य को शरतचन्द्र की कला ने मानों अनायास ही सम्पन्न कर दिया नारी के मन को शरतचन्द्र ने एक संघर्ष के बीच देखा है, जहाँ उसकी स्वतः उठी हुई आकांक्षा की धारा को संस्कारों से सामना करना पड़ता है। 'रामेर सुमति' के माध्यम से स्नेह, ममता और वात्सल्य का सर्वोत्तम परिपाक उन्होंने नारी चित्रण के माध्यम से किया है। नारी का नारीत्व वात्सल्य में है, इस तथ्य का प्रतिपादन हमें शरत की इस कहानी में स्पष्ट रूप से मिलता है।

शरतचन्द्र की विभिन्न कहानियों में नारी के मन की मूल संवेदना और मनोवेगों की अनुभूति अधिक व्यापक रूप से की गई है। इनकी कहानियों में चित्रित माताओं का प्रेम कोरा अतिमानवीय नहीं है। नारी का व्यापक वात्सल्य सचमुच ही श्रद्धेय है। शरतचन्द्र द्वारा नारी के प्रिया स्वरूप के विकारों का वर्णन करते करते थक जाने के बाद वे उसके जननी स्वरूप का अंकन करके हृदय को पवित्रता एवं शान्ति देते हैं। शरतचन्द्र ने 'अरक्षणीया' के माध्यम से यह प्रस्तुत किया है कि नारी के व्यक्तित्व में यदि रूप रंग की कमी भी होती है तो उसकी विनम्रता उसे पूरी कर देती है। शरतचन्द्र ने 'अभागी का स्वर्ग' में निर्धनता और सम्पन्नता के दोनों पक्षों से सम्बन्धित नारियों का चित्रण बहुत मार्मिक ढंग से किया है।

शरतचन्द्र ने अपनी रचना 'प्रकाश और छाया' में नारी पात्रों की संवेदनाओं को स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है। एक अन्य रचना 'विलासी' में पाठकों को नारी के

उस चित्रण की अभिव्यक्ति मिलती है जिसमें निम्न जाति की लड़की बड़ी बहादुरी से एक पुरुष की घने जंगल में रक्षा करती है। 'मुकदमे का परिणाम' रचना में शरतचन्द्र एक ही नारी के दो स्वरूपों की मनोदशा तथा संवेदनाओं को बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें नारी पात्रा ममतामयी के साथ-साथ प्रतिशोध वाला आचरण भी प्रस्तुत करती है। शरतचन्द्र ने अपनी कहानियों में नारी चित्रण में प्रवृत्ति के साथ सचेतन, संस्कार की टक्कर को बहुत रूप में दिखाया है।

शरतचन्द्र के नारी पात्रों में एक द्वन्द्व एवं संघर्ष को भी स्वाभाविक रूप में देखा जा सकता है। नारी चित्रण में धर्म परायणता तथा कर्तव्य निष्ठता का स्वरूप देखने को मिलता है। नारी के संस्कारी रूप में धर्मबुद्धि और प्रणय की आकांक्षा के संघर्ष को शरतचन्द्र ने अपनी रचनाओं के नारी पात्रों में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। नारी के मन को उन्होंने एक संघर्ष के बीच देखा है, जहाँ स्वतः उठी हुई आकांक्षा की धारा चिरागत संस्कार की पत्थर की दीवार से बाधा उत्पन्न करती है। विधवा नारी के जन्मार्जित संस्कार के साथ नारी की प्रणयाकांक्षा का चित्रण ही शरत चन्द्र की विशेषज्ञता है। इनकी शिल्प निपुणता का चरम विकास वहीं पर अधिक हुआ है जहा अर्थ प्रेम वेदना सचेतन संस्कार और अनुभूति के बाँध को तोड़कर बाहर निकल पड़ी है। नारी चित्रण में शरतचन्द्र ने बहुत विवेक और बुद्धि के साथ अपनी अभिव्यक्ति प्रदान की है। इनकी नारी अबला होकर भी सबला कही जा सकती है और कहीं कहीं सबला होने के बाद भी वह अबला और असहाय दिखाई देती है। नारी के मन की

संवेदना को बड़े कलात्मक स्वरूप में प्रस्तुत करना शरतचन्द्र की निपुणता कहीं जा सकती है। नारी चित्रण समाज की समुचित व्याख्या के रूप में ग्रहण किये जा सकते हैं। उन्होंने समाज में से ऐसे पात्रों को ढूँढा है और उनका चरित्र चित्रण किया है।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में चित्रित नारी पात्रों पर समसामयिक काल की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के प्रभाव को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। इस काल में बाल विवाह वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह आदि वैवाहिक रीतियाँ प्रचलित थीं। समाज में स्त्री पुरुष के मध्य कुछ ऐसी असमानताएँ एवं विसंगतियाँ थीं जिनके दुष्परिणाम अन्ततः नारियों को ही भुगतने होते थे। प्रेमचन्द युग में स्त्री और पुरुषों में सामाजिक और कानूनी दृष्टि से बहुत अंतर था। जहाँ पुरुष अपनी पत्नी के जीवित रहते हुये भी कई विवाह कर सकता था, वहीं स्त्री के लिये चाहे वह बाल विधवा ही क्यों न हो, पुनर्विवाह पाप था। समाज के न्याय का मानदंड स्त्री और पुरुष के लिये एक नहीं था। नारी को प्रत्येक ओर से कष्ट उठाने पड़ते थे। शिक्षा सम्पत्ति आदि का अधिकार नहीं था। उसे पर्दे में रहना होता था और वह पुरुष के सामने नहीं आ सकती थी।

समाज में व्याप्त कट्टरता के कारण कितनी कुमारिकायें विधवायें और सधवायें भी वेश्यावृत्ति के लिये विवश होती थीं। प्रेमचन्द युग में वेश्या वृत्ति के प्रति समाज का दृष्टि कोण सहानुभूतिपूर्ण नहीं था। प्रेमचन्द ने इन नारीगत समस्याओं को अपनी कहानियों वेश्या, दो, कब्रें, नरक का मार्ग, एक्स्ट्रेस, आगा पीछा आदि में स्पष्ट रूप से

अभिव्यक्त किया है। प्रेमचन्द युग में नारी राजनैतिक रूप से पिछड़ी हुई थीं। किन्तु कुछ जागरूक नारियाँ स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़चढ़ कर भाग लेती थीं। प्रेमचन्द ने अपनी विभिन्न कहानियों में राष्ट्रीय आंदोलन को चित्रित करते हुये नारी की भागीदारी पर भी प्रकाश डाला है।

प्रेमचन्द ने नारी के गृहिणी रूप को सामाजिक और आर्थिक अनिवार्यता के रूप में महत्व प्रदान करते हुये, उसके आत्मसम्मान की सर्वत्र रक्षा की है। प्रेमचन्द के युग में दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ उलझी हुई थी। उन्होंने इसके लिये वैवाहिक कुरीतियों को अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी के विभिन्न स्वरूपों का चित्रण करते हुये उसकी वात्सल्य भावना से ओत प्रोत ममता का सुन्दर चित्रण किया है। प्रेमचन्द के नारी चित्रण में उसके ममतामयी हृदय की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। सन्तान का वियोग माता के लिये असह्य होता है, यह उनकी कहानी 'स्वर्ग की देवी' में देखा जा सकता है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी के प्रेम के स्वरूप का जो चित्रण किया है उसमें विश्वास को सर्वोपरि रखा है।

प्रेमचन्द की रचनाओं में प्रेम पतित और पथभ्रष्ट स्त्रियों को भी कर्तव्य, त्याग और सेवा में प्रेरित देखा जा सकता है। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी चित्रण में युवतियों को चित्रित किया है जिनमें अपने प्रेमी के लिये त्याग और सेवा की भावना बलवती रहती है। यह नारी का वह स्वरूप है जिसके लिये नारी की महिमा एक

पहचान बन कर पाठकों के सम्मुख आती है। प्रेमचन्द ने नारी पात्रों के चित्रण द्वारा विधवा समस्या के किसी भी पक्ष को नहीं छोड़ा है। बाल विधवा, अनाथ और निसन्तान युवती 'विधवा' साम्प्रतिक अधिकारों से वंजित विधवा तथा तिरस्कृत लांछित और अपमानित जीवन व्यतीत करने वाली विधवा आदि सभी पर अपनी अभिव्यक्ति प्रदान की है।

प्रेमचन्द ने उच्च शिक्षित नारियों का चित्रण युग के यथार्थ रूप में किया है। उन्होंने नारी के जो चित्रण किये हैं उसमें मध्यवर्गीय, जमींदार तथा किसान, मजदूर वर्ग की नारियों सम्मिलित हैं। उन्होंने नारी की मनोवैज्ञानिक मनोदशाओं को भली-भाँति चित्रित किया है। प्रत्येक वर्ग की नारी को उसके निभाये गये पात्र के अनुकूल ही प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द का जो विश्वास था वो ही उनका दर्शन था, उसका प्रभाव उनके नारी पात्रों के चरित्र-चित्रण पर स्वाभाविक रूप से पड़ा है। प्रेमचन्द ने अपनी प्रतिभा के बल पर उन नारियों का स्पष्ट चित्रण किया है जो भीषण परिस्थितियों में भाग्य पर निर्भर होकर अत्याचारों को सहन करती रहती हैं। जो नारियाँ भाग्य पर विश्वास नहीं करती वो अन्यायों और अत्याचारों का विरोध करती हैं। उनकी वासना भी कभी उन पर हावी नहीं होती। कभी-कभी परिस्थितियाँ उन्हें पतन का रास्ता दिखाती हैं तो वे उसका त्याग कर अपना जीवन सुधार लेती हैं। उन्होंने नारी के प्रति अपने विचारों की सुदृढ़ अभिव्यक्ति की है।

साहित्यिक रूप से शरतचन्द्र और प्रेमचन्द को उनके रचनात्मक लेखन के लिये याद किया जाता है। शरतचन्द्र एवं प्रेमचन्द दोनों ने ही मानवीय जीवन की समग्रता को अपनाकर अनेकानेक समसामयिक समस्याओं को अपनी कहानियों में उठाया है। उन्होंने समस्याओं के समाधान योजना को लक्ष्य बनाकर अपने कलाशिल्प का श्रेष्ठ सदुपयोग किया है। प्रेमचन्द के साथ शरतचन्द्र का तुलनात्मक अध्ययन इनकी कहानियों के आधार पर करने पर ज्ञात होता है कि दोनों की जीवन दृष्टि में अन्तर होने के कारण उनकी रचना दृष्टि में भी अन्तर दिखाई देता है।

प्रेमचन्द की कहानियों में जीवन में दुख को भी अनिवार्य प्रक्रिया माना गया है। शरतचन्द्र ने भी अपनी कथाओं में मानव जीवन के दुख-सुख पर विस्तार से विचार किया है। शरतचन्द्र की कहानियों में नारी पात्र आशावादिता के साथ दिखाई पड़ते हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में नारी पात्रों में ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास का भी चित्रण हुआ है। वे अपनी कहानियों में एक प्रकार की ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करते हैं। शरतचन्द्र ने अपनी कहानियों के नारी पात्रों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि ये आवश्यक नहीं कि सुख की प्राप्ति के लिये दुख का उठाना अनिवार्य है। वह यह मानते हैं कि सुख के लिये बिना दुख उठाये भी यह उपलब्धि प्राप्त हो सकती है।

शरतचन्द्र और प्रेमचन्द के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन करने से ये भली-भाँति ज्ञात होता है कि कहीं कहीं पर दोनों कहानीकारों की विचारधारा में एक

अन्तर देखने को मिलता है। प्रेमचन्द की दृष्टि नैतिक मूल्यों पर आधारित होने पर भी जीवन की नवीन मान्यताओं की ओर उन्मुख रहती हैं। शरतचन्द्र ने अन्ध-विश्वास और भावुकता से पूर्ण पाप पुण्य की भावना को समर्थन नहीं किया है। शरतचन्द्र का पाप पुण्य विषयक दृष्टिकोण प्रेमचन्द की भाँति नैतिक धारणाओं पर आश्रित प्रतीत नहीं होता है। मानव हृदय की दुर्बलता को अधिक सहानुभूतिपूर्वक सोचने के कारण शरतचन्द्र ने जीवन में पाप-पुण्य की भावना की नवीन मान्यतायें स्थापित की हैं। परिणामस्वरूप पाप-पुण्य की सारहीन मान्यताओं का विरोध शरतचन्द्र की कहानियों में देखने को मिलता है। स्पष्ट है कि शरतचन्द्र के नारी पात्र भावनाओं में आकर पाप-पुण्य को परिभाषित नहीं करते।

प्रेमचन्द के नारी पात्र आर्थिक तंगी एवं विषमताओं तथा सामाजिक विसंगतियों के चलते अनेक द्वन्द्वों से गुजरते हैं। इनकी कहानियों में नारी अपने दुखी दामपत्य जीवन का कारण आर्थिक विपन्नता को मानती हैं। आर्थिक सम्पन्न स्त्री सुखी हो यह आवश्यक नहीं है। इस विषय पर दोनों कहानी कारों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ज्ञात होता है कि शरतचन्द्र ने अपने नारी पात्रों की आर्थिक विपन्नता एवं सम्पन्नता को बहुत कुशलता के साथ अपनी कथाओं में प्रस्तुत किया है। शरतचन्द्र के नारी पात्र भी पैसे की अधिकता को एक नशा मानते हैं और धनी तथा निर्धन बड़ी गहनता से अभिव्यक्त करते हैं। शरतचन्द्र और प्रेमचन्द दोनों ने ही अपने नारी चरित्र चित्रण में यह स्पष्ट किया है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की दशा में नैतिक सदाचारों का हनन होने

लगता है। शरतचन्द्र ने बंगाल की नारियों की दुरावस्था को देखकर सबसे सशक्त तर्क पूर्ण तथा प्रभाव पूर्ण विद्रोही भावना को अभिव्यक्त किया है।

प्रेमचन्द स्पष्ट रूप से भारतीय संस्कृति के समर्थक थे। उनकी कहानियों के नारी पात्रों में अपनी संस्कृति के प्रति असीमित आस्था और विश्वास दिखाई देता है। प्रेमचन्द ने विज्ञान की उपलब्धियों को अस्वीकार नहीं किया है किन्तु पाश्चात्य संस्कृति की सतही मान्यताओं का विरोध अवश्य किया है। शरतचन्द्र की कहानियों में प्राच्य और पाश्चात्य दोनों संस्कृतियों का चित्रण परस्पर संघर्ष के रूप में अंकित हुआ है। शरतचन्द्र के सांस्कृतिक दृष्टिकोण में पाश्चात्य संस्कृति को लेकर गहरा द्वन्द्व है। शरतचन्द्र की कहानियों में दोनों संस्कृतियों के स्वरूप का प्रभाव इनके नारी पात्रों में सहज देखा जा सकता है। इसकी ओर शरतचन्द्र ने अपनी कहानियों में ऐसे नारी पात्रों का भी चित्रण किया है जो समाज की पुरानी रीति रिवाजों के प्रति विद्रोही रवैया अपनाती हैं। ऐसी नारियाँ निश्चित रूप से पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित होती हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों में लोक संस्कृति का जो चित्रण है वह सम्पूर्ण भारत का न होकर उत्तर प्रदेश का ही है। इस क्षेत्र की नारी पात्र उनकी कहानियों में दिखाई देते हैं भारत में सभी प्रदेशों की भिन्न-भिन्न सामाजिक प्रथाएँ हैं। ऐसी स्थिति में प्रेमचन्द को सम्पूर्ण भारतीय ग्राम्य संस्कृति का प्रतिनिधि कहानीकार भी नहीं कहा जा सकता है। प्रेमचन्द और शरतचन्द्र के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रेमचन्द भारतीय लोक संस्कृति के चित्रण में ग्रामीणों के उत्सव और पर्वों के बीच किसानों की

दरिद्रता, अभाव और जमींदारों के आतंक की ओर संकेत करते हैं। इससे इनके नारी पात्र भी प्रभावित होते हैं। शरतचन्द्र की कहानियों में ग्रामीण सांस्कृतिक जीवन में अपेक्षाकृत प्रेमचन्द्र के द्वारा चित्रित कहानी जैसा संघर्ष नहीं पाया जाता है। शरतचन्द्र की दृष्टि कुलीन वर्ग और मध्य वर्ग की समस्याओं पर अधिक देखी जा सकती है। उनकी कहानियों के ग्रामीण परिवेश की नारियाँ अधिक नहीं दिखाई देती हैं।

शरतचन्द्र की कहानियों में मध्यवर्ग अपने युग की सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा प्रभावों से परिपूर्ण रूप से अंकित हुआ है। शरत चन्द्र ने नारी के करुण और दयनीय स्थितियों को भी स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। प्रेमचन्द्र और शरतचन्द्र की सौन्दर्य भावना में एक अन्तर देखने को मिलता है। दोनों कहानीकारों की सौन्दर्य भावना विश्वमंगल की ओर उन्मुख हुई है। प्रेमचन्द्र ने अपनी कहानियों के नारी पात्रों के माध्यम से जिस सत्य का उदघाटन किया है वह संघर्षरत मनुष्य की विविध स्थितियों का है। शरतचन्द्र की कहानियों का सत्य व्यक्ति के रागात्मक सम्बंधों के बीच अभिव्यक्त हुआ है। शरतचन्द्र ने सत्य को जीवन की विविधता में अंकित करने की अपेक्षा जीवन को एक ही सुनिश्चित प्रणाली में पाया है। शरतचन्द्र की कल्पना, सौन्दर्य की चरम अभिव्यक्ति की ओर ले जाती है।

शरतचन्द्र ने सौन्दर्य में कल्पना का सहारा भी लिया है। अपनी कहानियों में उन्होंने नारी पात्रों की सुन्दरता का प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुतीकरण करते हुये उनके प्राकृतिक सौन्दर्य को भी अभिव्यक्त किया है। प्रेमचन्द्र की सौन्दर्य भावना वस्तु परक

है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में नारी पात्रों का सौन्दर्य चित्रित करते समय वास्तविकता तथा यथार्थ को अधिक महत्व दिया है। प्रेमचन्द और शरतचन्द्र अपनी कहानियों में नारी पात्रों में मानवीय गुणों के आधार पर आदर्शों की कल्पना में रत दिखाई देते हैं। दोनों कहानीकारों ने स्वीकार किया है कि साहित्य का काम मनुष्य को मनुष्य सिद्ध करना है।

शरतचन्द्र के नारी पात्रों का सूक्ष्म अध्ययन उनकी नारी सम्बन्धी विशिष्ट धारणाओं का स्पष्ट परिचायक है। उन्होंने नारी पात्रों में सुधारवादी तथा जागृति की भावना को उत्पन्न कराने का प्रयास किया है। यह स्पष्ट संदेश दिया है कि बाल विवाह नारी शिक्षा के लिये हानिकारक है। प्रेमचन्द और शरतचन्द्र आधुनिक साहित्यकार हैं अतः युगीन् सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव इनके नारी पात्रों में देखने को मिलता है। शरतचन्द्र के मध्य वर्गीय नारी पात्र इस वर्ग की हासोन्मुख संस्कृति के प्रतीक हैं। शरतचन्द्र के नारीपात्रों में नास्तिक प्रवृत्ति, प्राचीन मूल्यों के लिये अनारस्था तथा उदासीनता के संकेत मिलते हैं। शरतचन्द्र ने अधिकांश नारी पात्र प्रत्यक्ष जीवन से ग्रहण किये हैं। अपने संपर्क में रहने वालों को उन्होंने कहानी के पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के नारी पात्र अपनी जगह एक विशेष स्थान रखते हैं तो शरत चन्द्र के नारी पात्र अपनी जगह। दोनों ही उच्चकोटि के कहानीकार हैं। नारी पात्रों के चित्रण में दोनों ने अपनी विशेषता की अभिव्यक्ति की है।

ग्रंथपंजि
संदर्भ, सहायक ग्रन्थ
की सूची
पत्र-पत्रिकायें आदि

ग्रंथपंजि

संदर्भ, सहायक ग्रन्थ की सूची पत्र- पत्रिकायें आदि

1. अमृतराय- प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962
2. अमृतराय, लेख नवभारत, नागपुर 25.7.1954
3. इलाचन्द जोशी, आजकल, नवम्बर, 1952 (शरत साहित्य)
4. इलाचन्द जोशी, हंस पत्रिका, उद्धित: राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द: एक अध्ययन मध्य प्रदेशीय प्रकाश, समिति, भोपाल।
5. गोर्की, मैक्सिम : कल्वर एन्ड प्यूपिल
6. गुप्त, प्रकाश चन्द्र : हिन्दी साहित्य की जनवादी धारा
7. गुप्त, सुबोधचन्द्र सेन, शरत प्रतिभा, अनुवाद: पं० रुपनारायण पाण्डेय हिन्दी ग्रन्थ रचनाकर प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई।
8. गुप्त, सुरेन्द्रनाथ दास, सौंदर्यतत्त्व (अनुवादक डॉ० आनंदप्रकाश दीक्षित)
9. गोरखपुरी, फिराक, हंस पत्रिका, प्रेमचन्द अंक, उद्धित: राजेश्वर गुरु, ले० प्रेमचन्द: एक अध्ययन, मध्यप्रदेशीय प्रकाशक समिति, भोपाल-1958
10. गोरखपुरी, फिराक, तरल, आजकल, अक्टूबर-1952 उद्धित: प्रेमचन्द: एक अध्ययन, ले० राजेश्वर गुरु, मध्य प्रदेशीय प्रकाशक समिति, भोपाल

11. घोष, बिजन एंव सेन प्रवीर: बंगाली फिक्शन-ए पैनारेमिक व्यू, बुक भाई, कलकत्ता-1975
12. चक्रवर्ती, अरुषा: शरतचन्द्र-रिबेल एण्ड ह्यूमनिस्ट, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, 1985।
13. चक्रवर्ती बिप्लव: आधुनिक हिन्दी साहित्य- गति-ओ-प्रकृति, भारती बुक एजेन्सी Vol. II, कलकत्ता-2005
14. चक्रवर्ती, बिप्लव: होरीजन्स ऑफ इण्डिया नोवेल, पुस्तक बिवानी, कलकत्ता-2004
15. चक्रवर्ती, निरंजन : शरत चन्द्र-ओ-भारतीय साहित्य, निखिल भारत-बंग साहित्य सम्मेलन, नई दिल्ली-1976
16. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, शरत के नारी पात्र, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।
17. तिवारी, राम बहल : हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर, विश्व भारती रिसर्च केन्द्र, शान्ति निकेतन-1989
18. तिवारी, सुरेन्द्रनाथ, प्रेमचन्द्र और शरत चन्द्र के उपन्यास: मनुष्य का बिम्ब, सुषमा पुस्तकालय दिल्ली-1969

19. दास सिसिर बुअर: ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर-1911-1956, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली-1995
20. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास
21. प्रेमचन्द, प्रभात, ग्वालियर, 6-10-1952, उद्धृत: प्रेमचन्द एक अध्ययन, राजेश्वर गुरु, पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1963
22. प्रेमचन्द, कफन और शेष रचनायें
23. प्रेमचन्द, अनुभव, मान सरोवर, भाग-1
24. प्रेमचन्द, घर जमाई, मान सरोवर, भाग, 1
25. प्रेमचन्द, चार बेटों वाली विधवा, मानसरोवर, भाग-1
26. प्रेमचन्द, धिक्कार मान सरोवर, भाग-1
27. प्रेमचन्द, जीवन का शाप, मानसरोवर, भाग 2
28. प्रेमचन्द, मिस पदमा, मान सरोवर, भाग-2
29. प्रेमचन्द, वेश्या, मानसरोवर, भाग-2
30. प्रेमचन्द माता का हृदय, मानसरोवर, भाग-3
31. प्रेमचन्द, विश्वास, मानसरोवर, भाग-3
32. प्रेमचन्द, स्वर्ग की देवी, मान सरोवर, भाग 3

33. प्रेमचन्द, नरक का मार्ग, मानसरोवर, भाग-3
34. प्रेमचन्द, निर्वासन, मानसरोवर भाग-3
35. प्रेमचन्द, नैराश्य लीला, मानसरोवर, भाग-3
36. प्रेमचन्द, आगा-पीछा, मानसरोवर, भाग - 4
37. प्रेमचन्द, दो सखियाँ, मानसरोवर, भाग-4
38. प्रेमचन्द, एक्ट्रेस, मानसरोवर, भाग-5
39. प्रेमचन्द, लांछन कहानी, मानसरोवर, भाग 5
40. प्रेमचन्द, आभूषण, मानसरोवर भाग-6
41. प्रेमचन्द, त्यागी का प्रेम, मानसरोवर, भाग-6
42. प्रेमचन्द, रानी सारंधा, मान सरोवर, भाग-6
43. प्रेमचन्द, जुलूस, मान सरोवर, भाग-7
44. प्रेमचन्द, जेल, मानसरोवर भाग-7
45. प्रेमचन्द, तावन, भाग-7
46. प्रेमचन्द, नागपूजा, मानसरोवर, भाग-7
47. प्रेमचन्द, पत्नी से पति, मान सरोवर, भाग-7
48. प्रेमचन्द, श्यामा, मानसरोवर, भाग-7

49. प्रेमचन्द, समर यात्रा, मान सरोवर, भाग--7
50. प्रेमचन्द, खून सफेद, मानसरोवर, भाग 8
51. प्रेमचन्द, हार की जीत, मान सरोवर, भाग-8
52. प्रेमचन्द, कफन, उद्धृत' राजेश्वर गुर ले० प्रेमचन्द: एक अध्ययन
53. प्रेमचन्द : कफन और चन्द कहानियाँ
54. प्रेमचन्द : काया कल्प
55. प्रेमचन्द : गोदान
56. प्रेमचन्द : रंगभूमि
57. प्रेमचन्द : साहित्य का उद्देश्य
58. प्रेमचन्द : सेवासदन
59. फर्कुहर, जे०एन०, माडर्न रिलीजस मूवमेंट इन इण्डिया
60. बन्धोपाध्याय, ए०के०: हिस्ट्री ऑफ माडर्न बंगाली लिटरेचर, माडर्न बुक ऐजेन्सी प्रा०लि०, कलकत्ता-1986
61. मदान, इन्द्रनाथ - शरतचन्द्र: चिंतन व कला
62. मजुमदार, आर०सी०: स्टोरी ऑफ माडर्न बंगाली, जी० भारद्वाज एण्ड कं० कलकत्ता-1981

63. म्योर, एडविन : दि स्ट्रक्चर ऑफ दि नावेल
64. मिश्र, श्रीपति : कहानी कला और प्रेमचन्द
65. लाल, गीता : प्रेमचन्द का नारी, चित्रण, हिन्दी साहित्य संसार, पटना।
66. वर्मा, निर्मला, प्रेमचंद रचना संचयन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली-1994
67. शर्मा, राम विलास : प्रेमचंद और उनका युग
68. शर्मा, राम विलास : प्रेमचंद रचनावली, जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली-1996
69. शरत चन्द्र, अभागी का स्वर्ग, बंगाल की श्रेष्ठ कहानियां सम्पादक
बासुभट्टाचार्य, पराग प्रकाशन, दिल्ली।
70. शरत चन्द्र : ग्रहदाह
71. शरत चन्द्र अक्षरणीया
72. शरत चन्द्र, बिंदुर छेले बिंदु का छल्ला
73. शरत चन्द्र, भेजदिदी (मंझली बहिन)
74. शरत चन्द्र, महेश
75. शरतचन्द्र, रामेर सुमति
76. शरत चन्द्र विलासी
77. शरत चन्द्र : शेष प्रश्न

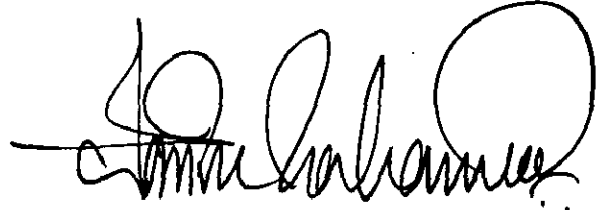
78. शरत्चन्द्र : श्रीकान्त
79. शरत् चन्द्र : श्रीकान्त (पर्वदो)
80. शरत्चन्द्र : हरिलक्ष्मी
81. शरत् चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखा गया पत्र 31.5.1913.
82. शरत् पत्रावली
83. शरत् चन्द्र, प्रकाश और छाया, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1987
84. शरत् चन्द्र मुकदमे का परिणाम
85. शरत् चन्द्र, चन्द्रनाथ, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली
86. शरत् चन्द्र (उद्धित: शरत् चन्द्र व्यक्ति और साहित्यकार, मन्मथनाथ गुप्त, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
87. शरत् चन्द्र, नन्दी ग्राम, नवप्रभात साहित्य दिल्ली 1997.
88. शरत् चन्द्र, चन्द्रनाथ
89. शरत्चन्द्र, विराज बहू
90. शिवरानी : प्रेमचन्द घर में
91. सेन, एस०पी० डिक्शनरी ऑफ नेशनल बायोग्राफी, Vol. I, इन्स्टीट्यूट 3 हिस्टोरिकल स्टडीज़, कलकत्ता-1972

92. सिंह, राजेश्वर प्रसाद नारायण, आजकल— अप्रैल 1959 (शरतबाबू लेख)
93. सीतारमैया, पट्टाभि : कांग्रेस का इतिहास

पत्र-पत्रिकायें, जर्नल/बुलेटिन आदि

- अवध अखबार
- आज
- आलोचना
- आजकल
- इन्दु
- खिलौना
- जागरण
- दैनिक हिन्दुस्तान
- नया पथ
- नया जमाना
- प्रतीक
- प्रवासी
- बनारस अखबार
- बंगवासी
- भारती

- मुधमती
- मनोहर कहानी
- यमुना
- लहर
- विश्व भारती
- विशाल भारत
- सुधाकर
- सरस्वती पत्रिका
- हंस
- हिन्दी प्रदीप



(जसीम मोहम्मद)

सेण्टर फॉर कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ
इण्डियन लैंग्वेजेज एण्ड कल्चर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़

परिशिष्ट



Research Paper Published

Aligarh Research Journal, Year 01, Vol. 01, Issue 01, National Half Yearly, September 2011

TAGORE'S INFLUENCE TO URDU LITERATURE -A STUDY



- Jasim Mohammad

Preface: Like other major languages and literatures of India and abroad, Urdu language and literature, one of the rich and sweet language in Indian sub continent, is highly influenced by the great poet Rabindranath Tagore and his creative writings. Scholars and renowned personalities of Urdu literature, in many occasions, visited shantiniketan and met Rabindranath deep heartedly. Many of them had spent for a long time at shantiniketan and were enlightened themselves by the immortal poet Rabindranath, especially for his ... Pious but great personality as well as in domestic thirst of love for the human beings. Hence, as the space allotment for the article is limited, I will not be able to explain the facts in details but will try to putdown the poets in a nut shell though in keeping the realm of factuality.

Historical Facts:

Janab Lam Ahmad Akbarbadi means latifuddin Ahmad Akbarbadi met with Rabindranath atleast for four times. Akbarbadi was one of the front line personalities as a romantic story writer of Urdu literature. Other eminent writers in this field were sazzad Hyder Ialdarm, Niaz Fatepurei, Majnu Gorokhpuri, Hijab Ismile, Hakim Ahmmad Sujaya and Nazar Sazzad Hyder. All romantie waves which

were the main flows of their writings were the active influence of Tagore. 'All India Rodio', in the first half of 1970, had broad casted a valuable 'Radio talks' entitled 'Tagore Aour Adabe Latif' where two famous Urdu literaturists- Lam Ahmmad Akbarbadi and Dr. Shanti Ranjan Bhattacharya took part in the very gala discussions.

Dr. Abdul Rahman Bijnori, one of the great personalities in Urdu literature, had translated a number of songs in Urdu from 'Gitanjali'. This translation works of Bijnori were published in Urdu in two volumes namely 'Baki-a-te Bijnori' and 'Iadgare Bijnori'.

Famous freedom fighter and literary scholar Asaf Ali was very friendly with Dr. Bijnori and he had convinced Asaf Ali to become fan of Tagore's writings. Thus Asaf ali really became interested in translating many of Tagore's creative writings. He had translated Tagore's popular drama 'eitra' in Urdu journal 'Tamuddin' in 1919. By the influence of Dr. Bijnori, Janab Mufti Muhammad Anarul Haque also translated many Dramas written by Tagore into Urdu and those were published in a book form in 1926.

Other Important Informations:

Now let us have a look how other important Urdu writers worked out with Tagore's writings

	Name of the book	Translation	Publisher	Year, etc
3.1	'Gitanjali (Whole book)	Niaz Fatepuri	Agra	1914
3.2	Gitajnali (")	Nirmaal Chandar	Agra	1940
3.3	Some of Tagore's Famous Poetry	Qamar Jalalbadi (Tagore ki Nazme)	Lahore	Untraced
3.4	Selected Poems	Muhammad Ziauddin (Kalam-e-Tagore)	Visva Bharati (Tagore ki Nazme)	1935
3.5	Selected Short Story, (Pujarini)	Janab A.H. Aga	Punjab Literature company, Lahore	1944
3.6	Selected Short Story (Bagban Aour Digar Afsane)	Do	Do	1944
3.7	Selected Short Story (Karba Aour Dusre Asane)	Gyan Swarup Bedi	Daira-e-Adabia Lahore	Untraced

3.8	Selected Short Story (Khamosh Muhabbat Aour Digar Afsane)	Munshi Premchand	National Literature Company, Lahore	Untraced
3.9	Short Stories-Book Form (Daulatka Nasha)	Shad Amritsari	Frontier Book Dipo, Lahore	1943
3.10	Short Stories Book Form (Hasin Tare Aour Dusre Afsane)	Tirathram Firozपुरi	Azad Book Dipo Lahore	1945
3.11	Short Stories	Book Form (Khamosh Husna Aour Digar Afsane)	Narayan Dutt Sahagal & Sons, Lahore	1945
3.12	Short Stories	Book Form (Phool Aour Kaliaan)	Do	1945
3.13	Short Stories	Book Form (Otan Parast) Tirathram Firozपुरe	Bharat Pustak Bhandar, Amritsar	1944

Tagore's Novels, Dramas, Treatises etc. translated into Urdu:

4.1	Novel, Chokher Bali	Translators, 3 famous Urdu writers	Sahitya Academy, New Delhi	1913
4.2	Do	(Tirchhi Chiton) Gauri Shankar Lal Aktar	Narayan Dutt Sahagal & sons, Lahore	1943
4.3	Do	Iardani Jalandhari	Do	1943
4.4	Gora & Rajarshi	3 Renowned Urdu writers: Shanti Narayan Shad & Munshi Prem Chand: Tufan	Bharat Pustak Bhandar, Amritsar	Untraced
4.5	Bauthakuranir Hut	(Dulhan) Munshi Prem Chand	Kitabistan-e-Urdu samtha, Lahore	Untraced
4.6	Bantha Kuranir Hut	'Andhere Mein' Janab Nashtar Mianwali	Narayan Dutt Sahagal & sons Lahore	Untraced
4.7	Char Adhaya	Manzila Ishaq	Hali Publication Delhi	Untraced
4.8	Chaturanga	Gulam Mohd Khan	Anjuman Taraqqi -e-Hind Lahore	1960
4.9	Gora	Iazdani Jalandhari & Ratiq Ram Sharan Varadwaj	Ketabistan Delhi	1960
4.10	Nauka Dubi	Gauri Shankarlal Akhter & Iazdani Jalandhari: 'Uljhan'	Untraced	Untraced
4.11	Jogajog	Raushanlal Gupta & Munshi Prem Chand	Untraced	Untraced

Evidences are given below within a frame work of chronological set up:

Tagore's Drama:

Urdu writers has translated quite a number of Tagore's Dramas. These are translated in high standard and almost with the high flavour of real essence. Famous writers, in this field, are: Asaf Ali (Chitrangada)

Janab Khalil Ahmad (Tagore Ke Drame)

Saliq Batalib (Chitrangada)

Jamil Kandhyepuri (Dakkhana), Staged in London Theater.

& Asi Ramangari, Hanif Hashmi, E. Khayam etc.

Tagore's Treatises (Pravandha):

Maqsd-e-Hasti (Book Form, one of the oldest but successful Urdu translations)

10 Pravandhas, translated by Naol Kishore Press, Lahore 1914.

Book Form: Majamin-e-Tagore, Punjab Literature company 1914.

In Fine

Tagore's all Kind of creative writings got highly appreciation in Urdu Literature in many ways just after hundred years of Tagore's Birthday. Urdu Journals started translating of Tagore's Literature in many aspects on the headline 'Rabindra Sankhaya'. World famous Urdu writer Firaq Gorakhpuri with the request of Sahitya Academy, New Delhi, translated 101 Poems of Tagore in to Urdu. Reputed Urdu weekly Journal 'A-oami Daur' & Publication Division, Central Government's Journal 'Ajkal' (Urdu) also published special issue on Rabindranath 'Rabindra Sankhay' in 1961.

Besides this, we can notice a long list of Urdu writers of whom almost every one is noted name in the

field of Urdu literature has well translated of Tagore's writings in many ways. List in mentioned below:

- a) Khaliq Dehelbi
- b) Mian Bashir Ahmmad
- c) Sazzad Ansari
- d) Sagar Nizami
- e) Durga Prosad Sahaya 'Surur'
- f) Akhtar Hydrabadi
- g) Hamidullah Afsar Merathi
- h) Ali Sardar Zafri (Renowned Leftist Urdu Poet)
- i) Rahat Ara Begum
- j) Janab Saliq Laukhnavi
- k) Prof. Shamiullah Asad
- l) Firoz Abid
- M) Dr. Shanti Ranjan Bhattacharya (Famous Urdu Writer on Tagore 'Hayat-o-Khidmat')

References:

1. Urdu Journal: 'Ruhe Adab'
2. Iadon ki Barat: Jash Molihabadi
3. Rabindranath Thakur: 'Hayat-o-Khidmat', Shanti Ranjan Bhattacharya.
4. The Five Towards National Integration: Dr. T.B. Chakrabarty.
5. Urdute Rabindranath: Pushpita Mukhopadhaya.

(Writer of this article is a Research Scholar, Center for Comparative Study of Indian Languages & Culture, AMU, Aligarh)

TAGORE'S CONCEPT ON MAN'S EDUCATION AND CULTURE:

"Whatever name our logic may give to the truth of human unity, the fact can never be ignored that we have our greatest delight when we realize ourselves in others, and this is the definition of love. This love gives us the testimony of the great whole, which is the complete and final truth of man. It offers us the immense field where we can have our release ..., where the largest wealth of the human soul has been produced through sympathy and co-operation, through disinterested pursuit of knowledge; through a strenuous cultivation of intelligence for service that knows no distinction of colour and clime. The Spirit of Love dwelling in the boundless realm of the surplus, emancipates our consciousness from the illusory bond of separateness of self; if is ever trying to spread its illumination in the human world. This is the spirit of civilization".

['Tagore's Educational Philosophy and Experiment',
Visra-Bharati Research Publication, 8 May, 1961, p.p. 25-26].

Research Paper Published

Aligarh Research Journal, Year 02, Vol. 02, Issue 02, National Half Yearly, September 2012

BENGALI VERSION OF CHICAGO ADDRESSES

(SOME IMPORTANT ASPECTS)

Collocated and Compiled
by Jasim Mohammad

চিকাগো বক্তৃতা

ধর্মসভার প্রথম দিনের অধিবেশন

(১১ই সেপ্টেম্বর, ১৮৯৩)

প্রাচ্য ধর্মসম্প্রদায়গুলির প্রতিনিধিবর্গ কার্ডিন্যাল গিবসের উভয়পার্শ্বে উপবিষ্ট ছিলেন। তাঁদের পরিহিত নানা বর্ণের বেশবাস যেন কার্ডিন্যাল সাহেবের সঙ্গে প্রতিদ্বন্দ্বীমুখর হয়েছিল। হিন্দু, বুদ্ধ ও মহম্মদ-মতাবলম্বীদের মধ্যে গৈরিক বেশ-পরিহিত স্বামী বিবেকানন্দ ছিলেন লক্ষণীয় উজ্জ্বল ব্যক্তিত্ব। তাঁর উন্নত শির পীতবর্ণের উষ্মীষে মণ্ডিত হয়ে মুখলাবণ্যকে উদ্ভাসিত করে তুলেছিল।

অন্যান্য বক্তাদের বক্তৃতা-সমাপ্তির পর শ্রোতৃমণ্ডলীর সামনে বিবেকানন্দকে পরিচিত করানো হল। তিনি শ্রোতৃবর্গকে ‘আমেরিকাবাসী ভগিনী ও ভ্রাতৃবৃন্দ’ বলে সম্বোধন করার পর তাৎক্ষণিকভাবে উষ্ণ করতালিধ্বনিতে তাঁকে অভিনন্দন জানানো হল। পরে তিনি প্রত্যুত্তরে নিম্নোক্ত অভ্যর্থনাসূচক বাক্যে বলেন :

অভ্যর্থনা উত্তর

“হে আমেরিকাবাসী ভগিনী ও ভ্রাতৃবৃন্দ—আজ আপনারা আমাকে আপনাদের যে উষ্ণ ও সাদর অভ্যর্থনা জানিয়েছেন, আমি তার উত্তরদানের জন্যে এখানে দাঁড়িয়েছি—এর জন্যে আমার হৃদয় আনন্দে উচ্ছ্বসিত হয়ে উঠেছে। পৃথিবীর প্রাচীনতম সন্ন্যাসী-সমাজের পক্ষে আপনাদের ধন্যবাদ জানাচ্ছি। সর্বধর্মের প্রসূতি-স্বরূপ সনাতন হিন্দুধর্মের প্রতিনিধি হয়ে এবং পৃথিবীর অজস্র

হিন্দু নরনারীর পক্ষে আপনাদের ধন্যবাদ জানাচ্ছি। অতি-দূর দেশবাসী জাতিসমূহের মধ্যে এখানে যাঁরা সমবেত, এখানে উপস্থিত বিভিন্ন দেশে পরধর্ম সহিষ্ণুতার ভাবপ্রচারের গৌরবের যাঁরা অংশীদার, প্রাচ্যদেশীয় প্রতিনিধিদের সম্পর্কে যাঁরা মত প্রকাশ করেছেন—সভামধ্যে উপবিষ্ট সমুদয় বিশিষ্ট-জনদের আমি ধন্যবাদ জানাই। আমি সেই ধর্মভূক্ত বলে নিজেকে গৌরবান্বিত বলে মনে করি যে, ধর্ম জগৎকে চিরকাল সমদর্শন ও সর্বমত গ্রহণে সর্বতোভাবে শিক্ষা দিয়ে এসেছে। সকল ধর্মকেই আমি সত্য বলে বিশ্বাস করি। আমি সেই ধর্মপ্রিয়—সংস্কৃত ভাষায় রচিত যে ধর্মের ক্ষেত্রে ইংরেজি ‘এক্সক্লুশন’ শব্দটি প্রয়োগ করে তাকে কখনোই হেয় করা যায় না। পৃথিবীর সমুদয় ধর্ম ও জাতিকে, ব্রহ্ম-উপদ্রুত ও আশ্রয়লিপ্সু জনগণের যে জাতি আশ্রয়স্থল—নিজেকে সেই জাতির অন্তর্ভুক্ত বলে আমি গৌরবান্বিত বোধ করি। আমি আপনাদের কাছে এই সমাচার জানিয়ে গর্ববোধ করছি যে, যে বছর রোমানদের ভয়ঙ্কর উৎপীড়ন সমস্ত পবিত্র দেবালয়কে নস্যাৎ করেছিল—সেই বছরেই দক্ষিণ ভারতে আশ্রয়প্রার্থীদের আয়রা সাদরে গ্রহণ করেছিলাম। আমার হৃদয়ে আজও সেই মহান স্মৃতি ধারণ করে আছি। জরথুষ্ট্রের অনুগামী সুবৃহৎ পারসিক জাতির অবশিষ্টাংশকে যে ধর্ম উদার আশ্রয় দিয়েছিল এবং আজও সেই ধর্মকে প্রতিপালন করছে—আমি সেই ধর্মভূক্ত।

যে পবিত্র স্তোত্রটি প্রতিদিন কোটি কোটি নরনারীর কণ্ঠে ধ্বনিত হয় এবং অতি বাল্যকাল থেকে আমি আবৃত্তি করে আসছি—তার একটি শ্লোকের অংশ আপনাদের কাছে আমি উদ্ধৃত করছি : “কটীনাং

বেচিহাদ্বজ্জকুটিল নানা পথ জুয়াং। নৃণামেকো গমাত্মমসি পর সার্বর্ঘ্য ইব।” অর্থাৎ হে প্রভো, বিভিন্ন পথবাহী হলেও যেমন একই সমুদ্র সকল নদীর সঙ্গমস্থল— সেইরূপ নানা রুচির সরল ও কুটিল পথগামীদেরও তুমিই গন্তব্যস্থল।

এই মহাধর্মসম্মেলনে গীতা প্রচারিত সেই সত্যেরই আমি পরিপোষকতা করছি—“যে যথা মাং প্রদ্যন্তে তাংস্তথৈব ভজ্যাম্যহম্। মম বর্জ্যানুবর্তন্তে মনুষ্যাঃ পাথ সর্বশঃ”—অর্থাৎ যিনি যে মত আশ্রয় করেই আসুন না কেন, আমি তাঁকে সেইভাবেই গ্রহণ করে থাকি। হে অর্জুন, মনুষ্যাগণ সর্বতোভাবে আমার নির্দিষ্ট পথেই চলে না।

এই সুন্দর পৃথিবীকে বহুকাল সাম্প্রদায়িকতা, সন্ধীর্ণতা ও তাদের ফলজাত ধর্মোন্মত্ততা আচ্ছন্ন করে রেখেছে। এগুলি জগতে মহাউপদ্রব সৃষ্টি করেছে, সভ্যতাকে রক্তসিক্ত করে ধ্বংস করেছে, সভ্যতাকে বিধ্বস্ত করে মানুষ মহাজাতিকে হতাশায় নিমগ্ন করেছে। এই পৈশাচিক শক্তির বাইরে সম্পূর্ণত অবস্থান করলে সমগ্র মানব সমাজ আজকের রূপ থেকে সমুন্নত হতে পারত। কিন্তু আজ সেই অপশক্তির মৃত্যুক্ষণ উপস্থিত। আজ এই মহাধর্মসভার সম্মানার্থে যে ঘণ্টাধ্বনি নিনাদিত হল—তা সর্ববিধ ধর্মোন্মত্ততার ক্ষেত্রে মুক্তি আনবে। সুনির্দিষ্ট সমাপ্তি ঘটাবে তরবারি-সৃষ্ট বা লেখনী-উৎসারিত সমস্ত নির্ঘাতনের। আমি সর্বতোভাবে আশা পোষণ করি—একই লক্ষ্যমুখীন ব্যক্তিবর্গের মধ্যে সর্ববিধ অসম্মতাবের নিরসন ঘটবে।

ভ্রাতৃত্ব

১৫ই সেপ্টেম্বর, ১৮৯৩

(১৫ই সেপ্টেম্বর, শুক্রবার অপরাহ্নে ধর্মসমিতির পঞ্চম দিবসীয় অধিবেশনের সময় বিভিন্ন ধর্মাবলম্বীগণ স্ব স্ব ধর্মের প্রাধান্য প্রতিষ্ঠার জন্যে বাগ্বিতণ্ডায় রত হন। অবশেষে স্বামী বিবেকানন্দ এই গল্পটি বলে সকল বিবাদ মোচন করেন।)

আমি আপনাদের ছোট একটা গল্প বলব। ইতিপূর্বেই একজন বক্তার মুখে আপনারা শুনেছেন—“এসো, আমরা পরস্পরের নিন্দাবাদ থেকে বিরত হই।” আপনাদের অস্তিত্বের ক্ষুদ্র পরিসরকেই সমগ্র জগৎ বলে ভুল করেন। মুসলমানও আপনার ক্ষুদ্র গণ্টিকেই একান্ত নিজস্ব বৃহৎ জগৎ বলে ভুল করেন। হে আমেরিকাবাসীগণ, আমাদের এই ক্ষুদ্র জগৎগুলির অচলায়তন ভাঙবার জন্যে আপনারা

সামনে উপস্থাপিত গল্পটির মাধ্যমে এই মতভেদের কারণ সুস্পষ্টভাবে বোঝা যাবে।

কোন এক কূপে একটি ব্যাঙ বসবাস করত। সেখানে তার বহুকালেরই বাস—সেই কূপেই জন্ম, সেখানেই লালিত। আকারে সে খুব ছোট। অবশ্য সেকালে বর্তমান কালের মতো ক্রমবিকাশবাদী ছিলেন না। অন্ধকার কূপে বসবাসে চিরাভ্যস্ত সেই ব্যাঙ-টি দৃষ্টিশক্তি হারিয়েছিল কিনা সেবিষয়ে বলবার কেউ নেই। গল্পের ও বক্তব্যের সুবিধার্থে ব্যাঙ-টিকে চক্ষুস্থান ধরে নেওয়া গেল। প্রতিদিন উৎসাহের সঙ্গে কূপমধ্যস্থ যাবতীয় কীটগুলি খেয়ে কূপের জল সে স্বচ্ছ রাখত। এজাতীয় উৎসাহ বর্তমানকালের কীটানুতত্ত্ববিদ পণ্ডিতদেরও শ্লাঘার বিষয়। ফলে সে ক্রমে স্থূল দেহের অধিকারী হয়ে উঠল। ঘটনাক্রমে একদিন সমুদ্রবাসী আর একটি ব্যাঙ, সেই কূপে এসে পড়ল।

কূপমণ্ডকের তখন সংশয়পূর্ণ জিজ্ঞাসা : “তুমি কোথেকে এলে?”

সে উত্তর দিল : “সমুদ্র থেকে এসেছি।”

—“সমুদ্র? সে কতো বড়? আমার এই কূপের চেয়েও বড়?” এই বলেই কূপমণ্ডক কূপের এক প্রান্ত থেকে অন্য প্রান্ত লাফিয়ে দেখাল।

তখন সাগরবাসী ব্যাঙ-টি বলল : “ভাই রে, এই ক্ষুদ্র কূপের সঙ্গে তুমি সাগরের তুলনা করছো কি বলে?”

তা শুনে কূপমণ্ডক আর একবার লাফ দিয়ে দুই লাফের যোগফল হিসেবে জানতে চাইল : “তোমার সমুদ্র কি এত বড়?”

—“সমুদ্রের সঙ্গে কূপের তুলনা করে তুমি মুখের ন্যায় প্রলাপ বকছ?”

এরপর কূপমণ্ডক বলল : “আমার কূপের ন্যায় কিছুই বড় হতে পারে না। এর চেয়ে কিছু বড় থাকা সম্ভব নয়। এ লোকটা নিশ্চয়ই মিথ্যাবাদী—অতএব একে তাড়িয়ে দাও।”

হে ভ্রাতৃগণ এই সন্ধীর্ণ ভাবই আমাদের পরস্পরের মতভেদের কারণ। আমি একজন হিন্দু—আমি আমার নিজের ক্ষুদ্র কূপে বসে একেই সমগ্র জগৎ বলে ভ্রাতৃ ধারণা পোষণ করছি। আবার খ্রিস্টাবলম্বী নিজের যে যত্নশীল, হয়েছেন তার জন্য আমি আপনাদের ধন্যবাদ জানাচ্ছি। আশা করি, আপনাদের এই মহৎ উদ্দেশ্য সম্পাদনে ঈশ্বর ভবিষ্যতের সহায় হবেন।

Courtesy: Dr. Pradyot Sengupta: ‘Swamijee Chicago Baktritamala’

Jasim Mohammad research scholar of comparative literature, A.M.U., Aligarh has done a good job for arranging Bengali version of Chicago address, though in brief, for the Bengali scholars in particular and for the general readers in general. Mr. Jasim is a dynamic editor of ‘The Aligarh Movement’. He is also associated with many other Journals & Magazines in many capacity.